Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष

शांति के अचूक उपाय

परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री

प्रमोद सागर जी

www.pramodsagar.com

महामाया पब्लिकेशन्स

नज़दीक चौक अड्डा टांडा, जालन्धर शहर-144008 (पंजाब)

0181-2212696, 3251696, 5001696, 5064696, 5011696

मूल्य : 70-00 रूपये

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष शांति के अचूक उपाय By PRAMOD SAGAR

विशेष चेतावनी

भारतीय कॉपीराइट एक्ट के तहत प्रस्तुत में निहित समस्त प्रकाशित सामग्री के सर्वाधिकार इस पुस्तक के लेखक महोदय के पास पूर्णत: सुरक्षित है। अतएव कोई भी सज्जन अथवा कम्पनी इस पुस्तक का नाम, टाईटल, कवर डिजाईन, चित्र, फोटोग्राफ्स तथा प्रकाशित मैटर को किसी भी तरह से तोड़-मरोड़कर आंशिक अथवा पूर्णरुप से किसी पुस्तक, लेख अथवा सामयिक (न्यूजपेपर, मैग्जीन इत्यादि) में बिना हमारी लिखित अनुमति के प्रकाशित करने की कुचेष्टा ना करें, अन्यथा समस्त कानूनी हर्जे-खर्चे के वे स्वयं जिम्मेवार होंगे। इस पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को सिर्फ तत्विषयक संबंधी सामान्य जानकारी देना मात्र ही है। किसी भी साधना कर्म अथवा टोटके इत्यादि को सिद्ध करने से पूर्व संबंधित विषय के विशेषज्ञ से मार्गदर्शन अवश्य ले लेवें। अल्पज्ञान अथवा किताबी ज्ञान के आधार पर किए गए किसी भी 'सिद्धि कर्म' में अनिष्ट या असफलता के लिए लेखक अथवा प्रकाशक की कतई भी जिम्मेवारी नहीं होगी। प्रस्तुत पुस्तक का उपयोग सिर्फ जनकल्याण की भावना के लिए ही करें।

लेखक :

प्रमोद सागर
गंगापुर सिटी - 322201 (राजस्थान)
हैल्पलाईन : 098285-35525
ई-मेल : jyotishi@sify.com
www.pramodsagar.com

प्रकाशक : महामाया पब्लिकेशन्स
नज़दीक चौक अड्डा टांडा,
जालन्धर शहर - 144 008 (पंजाब)
(0181)-2212696, 5064696, 3251696
5001696, 5011696

लेआउट : यूनिक कन्सेप्ट

मुद्रक : महामाया प्रिंटर्स

PUBLISHED IN INDIA

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

- प्रस्तावना ---------- 15
- वास्तुदोष ---------- 26
- क्या है पितृगण ? ---------- 31
- पितर दोष के कारण ---------- 34
- पितर दोष एक नजर में ---------- 39
- ज्योतिष शास्त्र में पितर दोष ---------- 40
- पितर दोष से संतान कष्ट ---------- 43
- पितर श्राप के कारण संतति निरोध ---------- 47
- मातृश्राप के कारण संतान सुख में कमी ---------- 52
- भ्रातृ श्राप के कारण संतान सुख में कमी ---------- 57
- मातुल श्राप के कारण संतान सुख में कमी ---------- 61
- ब्रह्म श्राप के कारण सुख में कमी ---------- 63
- पत्नी श्राप के कारण संतान सुख में कमी ---------- 66
- प्रेत श्राप के कारण संतान सुख में कमी ---------- 69
- पितर दोष के कारण व्यापार में हानि ---------- 72
- पितर दोष के कारण गृह क्लेश ---------- 75
- पितर दोष के कारण स्त्री सुख हानि ---------- 78
- कालसर्प योग और पितर दोष ---------- 81
- लाल किताब और पितर दोष ---------- 84
- लाल किताब के अन्य ऋण ---------- 87
- शनि से निर्दयता का ऋण ---------- 94
- पितर दोष शांति के सामान्य उपाय ---------- 97
- पितर दोष शांति हेतु प्रयोग ---------- 98
- अदृश्य देव साधना ---------- 99
- श्वेतार्क गणपति प्रयोग ---------- 100
- पितरदोष के निवारक महायाक्षिणी प्रयोग ---------- 101
- विजय गणपति प्रयोग ---------- 103
- पितर दोष शांति हेतु सुलेमानी प्रयोग ---------- 104
- सर्वसिद्धि प्रयोग ---------- 105
- भाग्योदयकारक पारद गणपति प्रयोग ---------- 106
- सर्वबाधा नाशक दिव्य प्रयोग ---------- 107

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

- स्फटिक गणेश प्रयोग ---------- 108
- नरसिंह कवच प्रयोग ---------- 109
- दरिद्रतानाशक मुद्रिका प्रयोग ---------- 110
- सिद्ध पीतांबरा कवच प्रयोग ---------- 111
- इच्छापूरक वित्तेश्वराय प्रयोग ---------- 112
- पितर शांति हेतु दशमहाविद्या कवच प्रयोग ---------- 113
- पितरदोष अशुभता निवारक प्रयोग ---------- 115
- पितर दोष पीड़ानिवारक हनुमान साधना ---------- 116
- पितर दोषों के निवारणार्थ विशिष्ट उपाय ---------- 117
- मनुष्य जीवन में पंच महायज्ञ का महत्व ---------- 119
- श्राद्ध कर्म का महत्व ---------- 122
- त्रिपिण्डी श्राद्ध ---------- 124
- नारायण बली कर्म ---------- 126
- देव पितरादि शांति स्तोत्र ---------- 129
- चमत्कारी पितृ बीसा ---------- 132
- सिद्ध शाबर मंत्र प्रयोग ---------- 134
- पितर शांति के लिए श्रीमद्भागवद्गीता ---------- 137
- पितर दोष निवारण हेतु पीपल पूजा ---------- 139
- हनुमान उपासना और पितर दोष ---------- 140
- मनोकामना भाग्यशाली लॉकेट ---------- 141
- चमत्कारी पारद शिवलिंग ---------- 149
- मंत्रसिद्ध चैतन्य रुद्राक्ष माला ---------- 156
- दिव्य कामदेव पैकेट ---------- 157
- विद्युत सम्मोहन यंत्र ---------- 159
- सिद्ध चमत्कारी तांत्रिक वस्तुएं ---------- 161
- नवरत्न श्री यंत्र लॉकेट ---------- 166
- प्रचण्ड शक्तिमान दिव्य कवच ---------- 167
- दुर्लभ चौंसठ योगिनी कवच ---------- 179
- संकटमोचन हनुमंत रक्षा कवच ---------- 180
- फोटो द्वारा गुरु दीक्षा ---------- 182
- अद्भुत चमत्कारी दीक्षाएं ---------- 183

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्य विभूति का संक्षिप्त परिचय

ज्योतिष, अध्यात्म, परलोक विद्या, वास्तु, फेंगशुई और तंत्र-मंत्र-यंत्र के क्षेत्र में **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** का नाम आज किसी परिचय का मोहताज नहीं है। प्राचीनतम तथा परंपरागत गूढ़ रहस्यमयी विद्याओं का निरंतर अनुसंधान करते हुए जनसामान्य के लिए उसे सहज व उपयोगी बना देना ही सद्गुरुदेव श्री श्री के जीवन का एकमात्र मिशन बन चुका है।

समृद्ध व्यवसायिक प्रतिष्ठित परिवार में जन्म लेकर भारतीय संस्कारों और परम्परागत संस्कृति भरे माहौल के मध्य में लालन-पालन के दौरान ही धर्म और अध्यात्म का बीज इनके अन्त: स्थल की गहराइयों में पल्लवित होने की प्रक्रिया प्रारंभ कर चुका था। **जन्म से ही अद्भुत अलौकिक शक्तियों के स्वामी** होने का अहसास आपश्री की माता जी को आपश्री के जन्म से कुछ क्षण पूर्व ही एक दिव्य स्वप्न में हुई दैवीय आकाशवाणी के माध्यम से हो चुका था। जैसे-जैसे आपश्री की आयु बढ़ती गई और सद्गुरुदेव श्री श्री के अद्भुत व्यक्तित्व की दिव्यता और अलौकिकता का परिचय अन्य लोगों को भी मिलने लगा।

पेशे से वस्त्र व्यवसायी पिता के **20 मई** के पावन दिन ऐश्वर्यपूर्ण वातावरण में जन्म लेने और समृद्धशाली जीवन शैली प्राप्त होने के बावजूद भी मोह-माया से दूर कहीं शून्य की तलाश में **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** का मन सदैव भटकता रहता था। ज्यादातर समय विभिन्न विषयक पुस्तकों के अध्ययन-मनन में व्यतीत करना इनकी नियमित दिनचर्य बन चुकी थी। औपचारिक रूप से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बावजूद भी धर्म, दर्शन और आध्यात्मिक साहित्य के प्रति लगाव में निरंतर वृद्धि होती जा रही है। आपश्री की पुश्तैनी विशाल हवेली का अधिकांश हिस्सा लाइब्रेरी में तब्दील हो चुका था उसमें रखी हजारों पुस्तकों के प्रत्येक शब्दाक्षर से **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** का अनन्य आत्मीय रिश्ता कायम हो चुका था।

स्वाध्याय की आदत के चलते सद्गुरुदेव ने बाल्यकाल में ही गीता, रामायण, महाभारत, कुरान, बाइबिल, गुरुग्रंथ साहिब सहित वेद, पुराणों, उपनिषदों के साथ-साथ उपलब्ध समस्त धार्मिक ग्रंथों को मानस में आत्मसात कर लिया, किंतु ज्ञान-पिपासा में वृद्धि होती जा रही थी और आपके अंदर की अद्भुत अलौकिक शक्तियां भी आंदोलित होती जा रही थी कि यकायक 02 फरवरी 2002 को प्रात: ब्रह्ममुर्हूत के अमृतकाल की बेला में ठीक 02:22 मिनट पर आपश्री को **'बुद्धत्व'** की दिव्यतम उपलब्धि हुई और संबोधि के इस अतुलनीय क्षण में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अकस्मात् *उपलब्ध आत्मज्ञान की इस अनुपम उपलब्धि ने* **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** के जीवन की दशा और दिशा दोनों में ही अभूतपूर्व परिवर्तन कर दिया।

आपश्री ने ज्योतिष, हस्तरेखा, तंत्र-मंत्र-यंत्र, शकुन-अपशकुन, स्वप्नफल, अंकविद्या, रेकी, योग, दर्शन, धर्म, अध्यात्म, कुण्डलिनी, प्राणविज्ञान, सम्मोहन, सामुद्रिक विज्ञान, रत्न-रुद्राक्ष, ब्रह्मविद्या, परलोक विज्ञान, टेलीपैथी, आत्मविद्या, शाबरविद्या, कीमियागिरी, ध्यान, झेन, तिब्बती तंत्र, भृगुज्योतिष, टैरोकार्ड, प्राकृतिक चिकित्सा, एक्युप्रेशर, स्पर्श चिकित्सा, प्राणायाम, संगीत, भूत-प्रेतविद्या, अघोर तंत्र, मंत्र चिकित्सा और विचार तरंग विज्ञान के साथ-साथ प्राचीनतम धर्म, दर्शन, योग, संस्कृति, कर्मकांड तथा परा-अपरा विद्याओं के गूढ़तम रहस्यों की पर्तों को खोलने में अभूतपूर्व सफलताएं प्राप्त की हैं। सद्गुरुदेव श्री श्री के अंतर्मन में निहित ज्ञान के असीम भंडार और सद्गुरुदेव श्री श्री की अलौकिक शक्तियों को समय-समय पर निकटस्थ जनों ने प्रत्यक्षरूपेण महसूस किया है।

यही कारण है कि **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** की अद्भुत दिव्य शक्तियों का लाभ लेने, गुरु दीक्षा लेने और सद्गुरुदेव श्री श्री का दिव्य वरदहस्त प्राप्त करने वालों में आम आदमी के साथ-साथ देशभर के नामी राजनीतिज्ञ, उद्योगपति, खिलाड़ी और फिल्मी कलाकारों के साथ-साथ उच्च वर्ग की संभ्रांत और नामी हस्तियां भी शामिल हैं। ये सभी दिग्गज शख्सियतें सद्गुरुदेव श्री श्री से समय-समय पर मार्गदर्शन प्राप्त करके लाभ उठाते हैं।

कठोर साधना एवं स्वाध्याय के पश्चात् प्राप्त अद्भुत अलौकिक ज्ञान को विशुद्ध रूप में अपनी दिव्य पुस्तकों के माध्यम से जनकल्याण हेतु सार्वजनिक करने के लिए **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** दृढ़ संकल्पित हैं। स्वभाव से अत्यंत हंसमुख और विनम्र व्यक्तिव के स्वामी सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी ने विभिन्न गूढ़ एवं रहस्यमयी विधाओं पर लगभग 900 से भी ज्यादा पुस्तकों का लेखन किया है, जिनमें से 151 से भी अधिक पुस्तकें हिन्दी और पंजाबी भाषा में प्रकाशित हो चुकी हैं तथा शेष पुस्तकें अभी प्रकाशन क्रम में हैं।

प्रचार-प्रसार से दूर निरंतर स्वाध्याय, साधना एवं स्व-व्यवसाय में संलग्न **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** अपने एकाकी स्वभाव के कारण मेल-मुलाकातों से दूर रहना ही पसन्द करते हैं। किंतु फिर भी इस दिव्य विभूति की अद्भुत अलौकिक शक्तियां और शुभाशीर्वाद समस्त चराचर जगत के लिए बिना किसी भेद-भाव के सदैवमेव उपलब्ध है। ***-प्रकाशक***

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपके अनुभव

हमारे **महामाया पब्लिकेशन्स, जालंधर** द्वारा प्रकाशित एवम् परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी की दिव्य पुस्तकों में वर्णित चमत्कारी उपायों को दुनिया भर के करोड़ों पाठकों ने सफलतापूर्वक आजमाकर अपने अनुभवों को हमें पत्रों एवं टेलिफोन के माध्यम से अवगत कराया है। यहाँ हम अपनी इस नवीन पुस्तक में कुछेक चुनिंदा अनुभवों को आपकी जानकारी के लिए प्रकाशित कर रहें हैं।

मैं जितने ख्वाब और उम्मीदें लेकर इस मायानगरी मुंबई में आया था कि टी.वी. और फिल्म इण्डस्ट्री में अपना मुकाम बना सकूं। मगर संघर्ष कर-करके तथा डायरेक्टरों व प्रोड्यूसरों के ऑफिसों के धक्के खा-खाकर मैं तो आत्महत्या ही करने चला था कि एक दिन मेरे पड़ौस में रहने वाले शर्मा अंकल जी ने मुझे आपका नंबर देकर सलाह लेने के लिए कहा। सच कहता हूँ उस वक्त तो मैंने बुझे मन से ही आपके यहाँ फोन मिलाकर आपके सचिव महोदय गुप्ता जी से बात की और आपके आदेशानुसार **दुर्लभ चौंसठ योगिनी कवच** मँगवाकर विधिपूर्वक अपने गले में धारण किया ही था कि अगले हफ्ते ही मुझे एक टी.वी. सीरीयल में काम मिल गया और आज आपकी कृपा और आशीर्वाद से ही मैं एक **सफल टी.वी. स्टार** बन सका हूँ। गुरूदेव अगर मैं सात जनम भी ले लूँ तो आपका अहसान मैं चुका नहीं पाऊँगा। आप मेरे अराध्य देव बन गये हैं। शत-शत प्रणाम करता हूँ।

- राहुल भट्ट
मुंबई

डियर पंडित जी, आपको यह Letter लिखते हुए मेरे मन कह रहे है कि हमारे Life में जो Success आज मुझे मिले है। वो सारा कुछ आपके ही दिया हुए हैं। वरना मेरे **टैरो रीडिंग** का Business तो सही नहीं चल रहे थे और हम भी बहोत जियादे Problems में थे। फिर एक दिन मुंबई वाले मेरे Friend ने आपसे मेरे लिए बात करके **त्रिकाल सिद्धि कवच** तथा **अभिमंत्रित टैरो कार्ड** मँगवाकर हमें भेजे। अभी पूरा एक साल होने को आया है मेरा टैरो रीडिंग भी Successfully चल रहा है और Life में कोई टेंशन भी नहीं है। मैं आपका आभारी रहेंगे। हमारा हिन्दी कमजोर है इसलिए Letter में कोई Mistake हो तो Sorry माँगते हैं हम।

- शुभांगिनी
कोलकाता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पिछली तीन पीढ़ियों से हमारे परिवार में **हीरे-जवाहरातों का व्यापार** इतने सुचारू रूप से चल रहा था मगर गुजरात में 26 जनवरी के दिन आये विनाशकारी भूकम्प ने हमारी जिंदगी को इतना तहस-नहस कर डाला कि हमारी फैमिली सड़क पर आ गई और हमारे जैसे कल के अरबपतियों को उस हादसे ने सड़क का भिखारी बना दिया। जीने की आस ही नहीं बची थी। तभी एक शाम शिव मंदिर में कांतिभाई मिले और आपके बारे में बताया। फिर उन्होंने ही आपके सचिव से सम्पर्क करके मेरे लिए फोटो पर आपके यहाँ **अष्टलक्ष्मी साधना** तथा **कनकधारा अनुष्ठान** करवाया। इधर जो **चमत्कार** फिर मेरी जिंदगी में आरंभ हुए कि कुछ ही महिनों में हम लोग पहले से अधिक समृद्ध हो गये। हार्दिक नमन है आपके चरणों में। हमें अपनी शरण में बनाये रखना। जय श्री कृष्णा गुरूदेव।

-राजू भाई शाह
बड़ोदरा (गुजरात)

वैसे तो हमारे यहाँ **तंत्र-मंत्र** इत्यादि पर कोई विश्वास नहीं किया जाता है। मगर जब आफतें गले पड़ रही हों और लाख उपाय करने के बावजूद भी हम मुश्किलों से पीछा नहीं छुड़ा पा रहें हों तो फिर सोचने पर मजबूर होना पड़ा कि कहीं हमारे ऊपर कोई **टूणा-टामण** तो नहीं कर दिया? जब हमने आपके यहाँ अपनी फोटो भेजकर जानकारी ली तो हमारा शक सही निकला कि हमारे ऊपर व्यावसायिक प्रतिद्वन्द्वियों ने **तांत्रिक अभिचार कर्म** करवाके हमारा सबकुछ बाँध दिया था। मगर बहुत-बहुत शुक्रगुजार हैं हम आपके कि गुरूजी आपने हमारे लिए **प्रचण्ड चामुण्डा साधना** करवाके जो हमें **बँधनमुक्ति कवच** पूरी फैमिली को धारण करवाया था। उसके परिणामस्वरूप हमारे जीवन की गाड़ी फिर से पटरियों पर तेजी से दौड़ने लग गयी है।

-सरदार गुरूमुख सिंह
पटियाला (पंजाब)

आज बहुत ही हिम्मत करके आज आपको यह पत्र लिख रहा हू। क्योंकि मुझे अच्छी तरह मालूम है कि आप जैसे महापुरूष लोगों का कल्याण करके भूल जाते हैं। मगर गुरूदेव मेरे जीवन में जो अलौकिकता और दिव्यता की अलख जोत आपने जगाई थी। आज आपकी ही बदौलत मेरे जैसा तुच्छ प्राणी इस कलियुग में **सूक्ष्म शरीर की यात्रा** वाली सिद्धि को सफल कर सका है। कामाख्या मंदिर में आपश्री से प्रत्यक्षरूपेण ली गई **गुरूदीक्षा** और आपके द्वारा ही प्रदत्त **अद्भुत चमत्कारी कुण्डलिनी कवच** को धारण करने के पश्चात मैंने उच्चस्तरीय साधनाओं में सफलता हासिल की हैं। अब मैं सबकुछ त्यागकर सदैव के लिए हिमालय की घाटियों में साधना करने जा रहा हू।

- तांत्रिक शंभूनाथ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आपकी कृपा और आशीर्वाद से मेरे सुपुत्र विवेक का विवाह मुंबई के एक बहुत बड़े जौहरी की इकलौती लड़की से तय हो गया है। नवम्बर में शादी का मुहूर्त निकला है। आपको वर-वधू को आशीर्वाद देने अवश्य आना है, मैं आपके लिए फ्लाईट की टिकिट भेज दूंगा। यह सब कुछ आपके द्वारा प्रदत्त '**शीघ्र विवाह कवच**' और गोपनीय '**महाकाल साधना**' का ही परिणाम है। वरना मैं तो बिल्कुल ही निराश हो चुका था। आपका ये अहसान मैं जीवन भर याद रखूँगा।

- सत्यप्रकाश श्रीवास्तव
चण्डीगढ़

जब से मेरे पति और मैंने आपसे मुंबई में '**गुरुदीक्षा**' ली है, वास्तव में हमारे जीवन की पूरी दिशा ही परिवर्तित हो चुकी है। आश्चर्यजनक रुप से मेरे पति ने सिगरेट, शराब और माँसाहार को बिल्कुल त्याग दिया है और आपके द्वारा पहनाएं गये '**दुर्लभ चौंसठ योगिनी कवच**' के पश्चात् तो हमारे व्यापार में चमत्कारी लाभ होने लगे हैं। अगले महीने हम **दुबई** में एक नया शोरुम खोलने जा रहे हैं। आपको आशीर्वाद देने हेतु हमारे साथ अवश्य ही दुबई चलना पड़ेगा। वरना आपकी ये बेटी आपसे नाराज हो जाएगी।

- श्रीमति मोनिका
मेरठ

मुझे आज भी याद है, जब होटल जे. डब्ल्यू मेरियोट, मुंबई में एक शाम '**फिल्मी सितारों की पार्टी**' में अपनी सहेली के माध्यम से मेरी आपसे मुलाकात हुई और आपने सिर्फ मुझे एक झलक देखकर ही तुरंत अपने गले की '**नवरतन माला**' उतारकर मुझे सौंप दी और उस माला को धारण करने की विधि समझाते हुए कहा कि ''इसे पहन लेना और विवाह करके विदेश बसने की तैयारी कर लो।'' मैं तो सुनकर स्तब्ध ही रह गई। किंतु विधिनुसार माला धारण की और **आश्चर्य ...!** कि पांचवें दिन ही मेरा संबंध तय हो गया तथा सिर्फ तीन दिनों के भीतर ही विवाह करके पति के साथ '**न्यूयॉर्क**' आ गई। आज हम दोनों पति-पत्नी सिर्फ आपके आशीर्वाद से ही सफलता प्राप्त कर सके हैं।

- सोनल बाजपेयी
मुंबई

टेलीफोन पर आपसे हुई वार्त्ता के अनुरुप मैंने जैसे ही '**नवरत्न श्री यंत्र लॉकेट**' को अपने गले में सोने की चेन के साथ धारण किया था कि अगले ही दिन मेरे पुत्र का टेलीफोन आ गया और उसने हमें '**मेनहट्टन**' बुलाने के लिए टिकिट भेज दिये हैं। भाई साहब, यह तो सचमुच किसी चमत्कार से कम नहीं था

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरे लिए। हम सभी भक्त मिल कर यहां आपका एक '**विशाल आश्रम**' स्थापित करना चाहते हैं। कृपया हमें इसके लिए अपना शुभाशीर्वाद प्रदान करें।

- पं. सीताराम शास्त्री
सोलन

आपकी पुस्तकें खरीदना, पढ़ना और उनमें दिये गए अत्यंत सरल किंतु अत्यधिक शक्तिशाली तांत्रिक प्रयोगों को आजमाकर देखना मेरे जीवन का मिशन बन चुका है। आपकी कृपा और आशीर्वाद से अभी तक किए गए समस्त प्रयोगों में पूर्ण सफलता प्राप्त की है और अन्यान्य लोगों को भी प्रेरित कर रहा हूँ। डॉ. सक्सैना तो आपकी कृपाशीर्वाद और '**नवग्रह कवच**' के चमत्कार का लाभ उठाते हुए इंग्लैण्ड चले गए हैं। कुछ सामग्रियों की लिस्ट और ड्राफ्ट भेज रहा हूँ। कृपया शीघ्र कूरियर से पैकेट भिजवा दें।

- महेश जायसवाल
आगरा

मेरे एक Friend ने मुझे सिडनी (आस्ट्रेलिया) से आपकी एक पुस्तक "**दुर्लभ चमत्कारी तांत्रिक प्रयोग**" भेजी थी। हालांकि मैं संस्कृत नहीं जानने की वजह से कभी प्राचीन भारतीय विद्याओं का अध्ययन नहीं कर पाया था, मगर आपकी पुस्तक सरल हिंदी भाषी होने के कारण आद्योपांत गहन अध्ययन किया और कुछेक सफलतम प्रयोग भी किये हैं। यदि आप आदेश दे तो मैं यहाँ गोवा में आपके लिए एक office अथवा सेंटर खोलना चाहता हूँ जिससे यहां के लोग भी आपकी कृपा और आशीर्वाद प्राप्त कर सकें।

- विक्टर फर्नांडीस
वास्कोडी गामा (गोवा)

मेरी जन्मपत्री में स्थित '**कालसर्प दोष**' के कारण मेरे विवाह में अकारण विलम्ब हो रहा था और मुझे कहीं नौकरी भी नहीं मिल रही थी। अपनी मौसी के कहने पर मैंने आपके यहाँ फोन पर बातें की और आपके आदेशानुसार '**कालसर्प दोष शांति**' का **अनुष्ठान** कराया व '**कालसर्प दोष नाशक कवच**' भी प्राप्त करके गले में पहना। तीन महीने में ही मेरा विवाह भी तय हो गया और एक बहुराष्ट्रीय कम्पनी में नौकरी भी मिल गई। अभी मैं ट्रेनिंग के लिए '**इटली**' में हूँ। आपने तो मेरे जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल दी है। आभार प्रकट करती हूँ।

- मृदुला भसीन
देहरादून

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमस्कार है पंडित जी आपको! मैं काठमांडो से शेरबहादुर, पिछले साल मुंबई मैं अशोक जी के फिल्म स्टूडियो में आपसे मुलाकात किया था और आपने मुझे देखते ही मेरी तीस साल पुरानी कार ड्राईवरी की नौकरी छोड़कर वापिस नेपाल जाकर लक्कड का धंधा करने का आदेश दिया था। आज आपकी ही कृपा से हर महीने इतना कमा लेता हूँ जितना कि मुझे साल भर मुंबई में कुल तनख्वाह भी नहीं मिलती थी। आपकी दी हुई **चमत्कारी नवरतन माला** मेरे गले में आज भी है।

-शेर बहादुर
काठमाण्डो (नेपाल)

आपको पत्र तो लिख रहा हूँ मगर आपने जो मेरे जीवन और व्यापार की कायाकल्प कर दी है उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास कोई शब्द नहीं है। बस यही तमन्ना है कि आप आज्ञा देवें तो अपने आँसुओं से आपके **श्री चरणों** को धोना चाहता हूँ। कहाँ तो मैं अपना प्रकाशन व्यवसाय बंद करके तथा कर्जदारों से तंग आकर सपरिवार आत्महत्या करने चला था, कि अचानक हमारे इलाके के विधायक महोदय की सलाह पर आपसे संपर्क किया और **प्रभु कृपा** देखिये कि आपने मेरे लिए जो कुछ किया उसका वर्णन तो इस लघु पत्र में संभव ही नहीं है।

- मनोज गर्ग
नई दिल्ली

खम्मा घणी! हुकुम आप जी के आशीर्वाद और आपके द्वारा निर्मित किये हुए विशिष्ट **'बगलामुखी कवच'** के चमत्कार से आश्चर्यजनक रुप से हमारी खानदानी सम्पत्ति का विवाद सुप्रीमकोर्ट से मेरे पक्ष में हो गया है। आपका अहसान नहीं भूलूंगा जीवन भर। हुकुम मेरी इच्छा है कि मेरे फतेहपुर बेरी दिल्ली वाले फार्महाऊस को आप अपने **आश्रम** में तब्दील करके मेरी उस भूमि को अपने चरणकमल से पवित्र कर दें। जय माता दी।

- ठाकुर रणजीत सिंह
जोधपुर (राजस्थान)

आदरणीय अंकल जी, आपको शायद याद होगा कि एक वर्ष पूर्व मेरे पिता जी डॉ. के.के. जैन ने आपसे मेरे शीघ्र विवाह हेतु **'मंगली दोष + कालसर्प दोष शांति'** के लिए अनुष्ठान करवाया था और आपने मुझे एक **'विशिष्ट कवच'** भी गले में पहनने हेतु दिया था। आज मैं सुखी दाम्पत्य जीवन जी रही हूँ और आपके

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आशीर्वाद से पच्चीस दिन पूर्व ही मुझे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई है। कृपया हमारे ऊपर अपना आशीर्वाद बनाए रखिएगा जी। मेरे बेटे के लिए भी आप कोई **खास कवच** बनाकर जरूर भेजिएगा। *- श्रीमति नीलम जैन*

बेंगलौर

मैं अभी रविवार को ही '**जाम्बिया**' आकर पहुँचा था। यहाँ आते ही एक भारतीय व्यापारी से मुलाकात हो गई और आश्चर्य की बात है कि वो भी आपके ही शिष्य निकले। हम दोनों ही गुरु भाईयों ने पुराने संस्मरण एक दूसरे को सुनाए। आपके आशीर्वाद से उन्होंने ही मुझे रहने के लिए मकान का इंतजाम भी करा दिया है। उनकी और मेरी एक साथ खिंचवाई हुई फोटो आपको भेज रहा हूँ।

- सुनील पाटनी

जाम्बिया (दक्षिण अफ्रीका)

सलाह पर '**नवरत्न लॉकेट**' धारण करके लाभ प्राप्त किया था। अतएव प्लीज मुझे भी आप अत्यंत शक्तिशाली **चमत्कारी नवरतन लॉकेट** शीघ्र भिजवा देवें। *- सैम दलाल*

कोलकाता

अस्सलाम वालेकुम! जनाब सागर साहेब मैं खुद एक मौलवी हूँ और सभी मजहबों में मेरी आस्था और विश्वास है। आपकी सभी किताबें मैं पढ़ता रहता हूँ और मैंने **सऊदी** में बसे हुए मेरे अनेक परिचितों को भी आपकी किताबें भेजी है। सऊदी के मेरे परिचित आपसे मुलाकात करने के लिए उत्सुक हैं। वे लोग चाहते हैं कि आप **दुबई** में बसे हुए भारतीयों को अपने **रूहानी इल्म** से रुबरु करावें। आगे जैसी आपकी आज्ञा हो तो मुझे सूचित करें। खुदा हाफ़िज *- मौलवी रफीक*

इन्दौर

मेरे भैय्या को '**जापान**' की एक Electronic Company में नौकरी मिल गई है और अगले महीने वो जापान जा रहे हैं। वास्तव में यह सब कुछ आपका ही किया हुआ चमत्कार है। यदि आप उन्हें '**नवरत्न जडित श्रीयंत्र लॉकेट**' नहीं पहनाते तो यह सब संभव नहीं होता। कृपया मेरे पति के लिए भी वैसा ही एक '**चमत्कारी लॉकेट**' और भिजवा दें। आप जब भी अहमदाबाद आवें तो हमारे घर पर अवश्य ही पधारें। *- श्रीमति निधि श्रीवास्तव*

अहमदाबाद

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेरा विवाह हुए दस साल हो चुके थे। मगर एक भी दिन हम दोनों पति-पत्नी ने सुख-शांति के साथ नहीं गुजारा। रोजाना के झगड़े और खिटपिट से तंग आ चुके थे। मुझे याद है कि तब मेरे एक उच्चाधिकारी ने मुझे आपसे सम्पर्क करने को कहा और मैंने जब आपसे बातें करके तथा आपके आदेशनुसार हम दोनों पति-पत्नी ने '**गृह क्लेश निवारक कवच**' मंगवाकर धारण किया था। सच कहूँ तो सात महीने होने को आए और इतना सुकून मिला है कि पिछले दस साल में भी नहीं मिला था।

- संजय गुप्ता

नोएडा

मेरी तो रेडीमेड गारमेंट्स की फैक्ट्री ही बंद होने के कगार पर थी। न जाने किस दुश्मन ने मेरी फैक्ट्री को बंधवा दिया था। पूरे आठ साल तक जिस तकलीफ से मैं गुजरा हूँ, ईश्वर ऐसा दु:ख किसी को भी न दे। फिर जाने वो कौन सी शुभ घड़ी थी कि पटना स्टेशन पर मिले एक सैन्य अधिकारी से आपके विषय में पता चला और उन्होंने ही आपसे contact करके सारी जानकारी दी। फिर आपकी सलाह के मुताबिक "**प्रचण्डा चामुण्डा अनुष्ठान**" कराया और "**बंधन मुक्ति यंत्र**" मंगवाकर स्थापित किया। एक वर्ष हो चुका है और चमत्कारी रुप से सभी परेशानियों से छुटकारा भी मिल चुका है। आदेश करें कि मैं तुच्छ प्राणी आपके लिए क्या कर सकता हूँ।

- धनंजय

पटना

भाईजान! आपकी दुआओं से आज मैं तमाम प्रेतबाधाओं से निजात पा चुका हूँ और अपने परिवार के साथ खुशहाल जीवन जी रहा हूँ। आपका "**प्रेत बाधा मुक्ति कवच**" अभी भी मैंने अपने गले में पहना हुआ है। मेरा परिवार आपका अहसानमंद रहेगा। अगले माह **हज यात्रा** पर जा रहा हूँ। अल्लाह से सिर्फ आपकी सलामती की दुआ के इलावा और कुछ नहीं माँग सकूंगा।

-शाहनबाज खान

लखनऊ

विश्वास ही नहीं होता कि दो वर्ष पूर्व माल रोड पर अचानक आपसे हुई मुलाकात मेरे **भाग्योदय** का कारण बन जाएगी। कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि जिनकों मैं भगवान मानकर पूजा करता हूँ उनके दर्शन अचानक मुझ गरीब के द्वार पर ही हो जाएंगे। अब तो मेरी एक प्रार्थना को स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें कि मैं यहां शिमला में ही आपका '**गुरुधाम**' खोलना चाहता हूँ। अपने भक्त की पुकार को आप अवश्य ही सुनेंगे, ऐसा मेरा अटूट विश्वास है।

- डॉ. कैलाश नाथ

शिमला

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कामाख्या घाटी में हम सभी भक्तगण मिलकर आपके सानिध्य में **गोपनीय साधना केंद्र'** की स्थापना करना चाहते हैं। उपयुक्त जगह कीतलाश और आवश्यक समस्त संसाधन हमने एकत्रित कर लिए हैं ।मगर आपकीआज्ञा के बिना कुछ भी प्रारंभ कर पाने में असमर्थ है। कृपया हमें अवश्य ही आज्ञा प्रदान करें ताकि शीघ्रता से इस प्रोजेक्ट को पूरा कर लिया जावे।

- पं. कामेश्वर प्रसाद
गुवाहाटी

बंधुवर श्री **महाकाल कृपा** और आपके आशीर्वाद से पिछली अमावस की रात को आप के द्वारा बताई गई साधना को सफलतापूर्वक सम्पन्न कर लिया है। वास्तव में जिस साधना के लिए मैं पिछले छब्बीस साल से प्रयासरत होने के बावजूद भी सफलता प्राप्त नहीं कर सका था। आपके आशीर्वाद मात्र से उसे सिर्फ पंद्रह दिनों में ही सम्पन्न कर लिया है। आप अपना वरदहस्त सदैव मेरे मस्तक पर बनाए रखें। यहां प्रयाग में हमने चालीस एकड़ भूमि का चयन किया है। अगर आप आज्ञा दें तो **'गुरुधाम'** बनाने के लिए हम सभी सहयोगी मित्र और शिष्यगण उत्सुक हैं। मगर आपकी आज्ञा की प्रतीक्षा है।

- तांत्रिक भीमनाथ
प्रयाग

उपरोक्तांकित समस्त विचार पत्र लेखकों/श्रद्धालुओं/साधकों/पाठकों के अपने निजी अनुभवों पर आधारित हैं। यह कतई भी आवश्यक नहीं हैं कि पुस्तकों में वर्णित टोटकों, प्रयोगों अथवा साधनाओं या फिर तांत्रिक वस्तुओं से अन्य व्यक्तियों/साधकों को भी उतनी ही मात्रा में अथवा मनोवांछित परिणाम प्राप्त हों। अतएव पाठकों से हमारा विनम्र अनुरोध है कि स्वविवेकानुसार निर्णयोपरांत ही पुस्तक में वर्णित प्रयोगों को आजमाकर/संपन्न करके देखें। अट्टू श्रद्धा और विश्वास से ही सफलता की प्राप्ति होती है। - प्रकाशक

विशेष :- यदि परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी द्वारा रचित दिव्य पुस्तकों में वर्णित उपायों/प्रयोगों को आपने भी आजमाकर देखा हो तो अपने निष्पक्ष अनुभवों एवम् प्रतिक्रियाओं को हमें तुरंत लिखकर भिजवाएँ। हम आपके प्रतिक्रियात्मक पत्रों को सद्गुरुदेव श्री श्री की आगामी दिव्य कृतियों में सम्मिलित करने का हरसंभव प्रयास करेंगें।

- गुरूसेवक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रस्तावना

वैसे तो किसी भी परिवार में अशांति के बहुत से कारण होते हैं तथापि कुछ ऐसे रहस्यमयी कारण होते हैं कि बहुत प्रयास करने के बाद भी अशांति का मूल कारण बुद्धि से परे दिखाई देता है। यद्यपि हमारे लेखन का विषय **पितर दोष** है लेकिन अन्य कारणों का भी विवेचन इसलिए आवश्यक है कि उपरोक्त सभी कारणों पर विचार किए बिना यह तय होना मुश्किल है कि अशांति के मूल में क्या बात है ? यदि किसी के पास जन्मपत्री है तब तो मूल कारण तय करने में आसानी रहती है। यदि जन्मपत्री उपलब्ध न हो तब जरूरी हो जाता है कि दैवज्ञ ज्योतिषी सभी कारणों का सूक्ष्म अध्ययन करने के बाद ही इस नतीजे पर पहुंचे कि जिस परिवार के बारे में वह विचार कर रहा है उसकी परेशानियों का मूल कारण क्या है ? माना कोई व्यक्ति किसी दैवज्ञ के पास आकर कहे कि उसे **पितर दोष** है और आप उपचार बताईए? जन्मपत्री भी उसके पास नहीं। दैवज्ञ ज्योतिषी ने उसे **पितर दोष निवारण के उपाय** बताए, उन उपायों को करने के बाद भी उसे शांति न मिले। अब वह व्यक्ति कहेगा कि सर्व धर्म शास्त्र झूठे हैं, कोरे बकवास हैं, फला पण्डित जी ने हजारों रुपयों का खर्चा कराया और नतीजा कुछ नहीं, जबकि उसके परिवार की अशांति का मूल कारण पितरदोष न होकर प्रेत दोष हो।

कई बार देखने में आया है कि कोई परेशान व्यक्ति वर्षों तक विभिन्न देवी-देवताओं के दर भटकता रहा। लेकिन उसे कहीं भी शांति नहीं मिली, कालान्तर में वह किसी वास्तुशास्त्री से मिला, वास्तु शास्त्री ने उसके मकान में कुछ संशोधन करवाए। उसके कुछ समय बाद ही उस परिवार में शांति का वातावरण निर्मित होने लगा। इसी प्रकार के अन्य अनुभव भी देखने में आए हैं, ऐसा ही एक किस्सा देखने को मिला, एक बार एक महिला मुंबई से अपने बच्चे को लेकर परम पूजनीय सद्गुरुदेव के पास आई और कह रही थी, ये बच्चा दिन भर खाट तोड़ता है, कुछ करने-धरने का मन ही नहीं करता। लड़का जवान था शरीर से हट्टा-कट्टा था, देखने में ऐसा प्रतीत हो रहा था कि उस लड़के को घर में किसी प्रकार का अर्थाभाव जीवन में देखने को नहीं मिला होगा। अब महिला कहती है मेरे बच्चे पर किसी ने टोना करवा दिया है। अब उस महिला को कौन समझाए कि आपके लाड़-प्यार और पुत्र पर धन की वर्षा ने उनको निकम्मा बना दिया है। ये सब भौतिक कारण हैं अर्थात् व्यक्ति भौतिकवाद के चक्कर में अपने चारों ओर ऐसा चक्रव्यूह तैयार कर लेता है कि वह उससे निकल नहीं पाता। ऐसी स्थितियों

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

में वह तान्त्रिक-मान्त्रिकों के चक्कर में आता है और बर्बाद हो जाता है, अत: परिवार की अशांति का मूल कारण जानना जरूरी है, जब तक कारण पता नहीं, तब तक उपचार संभव नहीं।

1. भौतिक कारण : भौतिक कारण हमारे अपने द्वारा उत्पन्न किए जाते हैं इन कारणों के मूल में व्यक्ति की हठधर्मिता, स्वयं का रचित आडम्बर एवं स्वयं को औरों से अधिक ज्ञानी, बुद्धिमान एवं श्रेष्ठ मानना होता है कभी-कभी व्यक्ति जानते-बूझते हुए भी ऐसे कर्म करता है जो पारिवारिक कलह का कारण बनते हैं।

इस संदर्भ में एक व्यक्ति का उदाहरण लेते हैं वे दयावान हैं ईश्वर भक्त भी हैं, बहुत सारी धार्मिक पुस्तकों को भी उन्होंने पढ़ रखा है, खुद को सर्वाधिक ज्ञानी मानते हैं। खुद को ज्ञानी मानना उनका अहंकार नहीं है, परन्तु ये उनका स्वभाव बन गया है कि अन्य जन उनसे कम ज्ञानी हैं। अपने आपको बुद्धिमान और श्रेष्ठ वक्ता का अवतार मानने वाले ऐसे लोग मित्र समूह में विदूषक बनते हैं प्रत्यक्षत: उनकी कार्य योजना बहुत ही मनभावन और आकर्षक होती है, परन्तु उन योजनाओं के क्रियान्वन पर वे भारी हानि उठाते हैं। इस हानि के मूल में उनकी बुद्धिहीनता ही दृष्टिगोचर होती है लेकिन वे इस बात को स्वीकार नहीं करते।

बाहरी रूप से वे सज्जन दयावान लेकिन दया के पात्रों का बुद्धिपूर्ण निर्णय नहीं कर पाते। कभी कोई व्यक्ति उन्हें दया का पात्र लगा तो बिना सोचे-विचारे उस पर सब कुछ लुटाने को तैयार किन्तु जब उन्हें लगता है कि वह व्यक्ति उनकी मान्यताओं पर खरा नहीं उतर रहा उससे घृणा करने लग जाएंगे और सदैव के लिए उनके मन में यह बात बैठ जाएगी कि अमुक आदमी बुरा है, उसके लिए, मैंने यह किया वह किया और उसने ही मेरे विश्वास को आघात पहुंचाया। पर वास्तव में ऐसा होता नहीं है। यह आवश्यक नहीं कि उनकी मिथ्या धारणाओं को व्यक्ति माने ही। ऐसी वृत्ति बाहर ही नहीं घर-परिवार में भी कलह का कारण बनती है। ऐसे लोगों के सामने एक दिन ऐसी स्थिति भी आती है कि उनसे समाज ही नहीं परिवार के लोग भी कटने लग जाते हैं और जब ऐसी स्थिति पैदा हो जाती है तो अकेलापन ऐसे व्यक्ति को भविष्य में विक्षिप्त भी बना दे, कोई आश्चर्य नहीं। एक छोटी-सी प्रवृत्ति समस्त जीवन में जहर घोल देती है, उनके सद्गुणों, आध्यात्म ज्ञान यहां तक की जीवन को भी खोखला बना देती है। अत: समय रहते ऐसे व्यक्तियों को अपने आपको सुधार लेना चाहिए।

भौतिक कारणों में यह तो हुई मनुष्य की वृत्ति एवं स्वभाव की चर्चा जो कि उसके दुख का कारण बनती है, द्वितीय कारण वे होते हैं जिनके चलते व्यक्ति अपने परिवार के सदस्यों को संतुष्ट नहीं कर पाता। एक परिवार को देखिए पति-पत्नी के अलावा तीन कन्याएं एक पुत्र है। इस दम्पत्ति को पुत्र प्राप्ति काफी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनौतियों के बाद हुई, परिवार अच्छा खाता-पीता है, धन की कोई कमी नहीं एक ही कर्णधार (लड़का) होने के कारण लड़के का पालन पोषण में कोई कमी नहीं रखी गई, लड़के पर पांच रुपए की आवश्यकता के स्थान पर दस रुपए खर्च किए जाते, पिता का ध्यान पूरी तरह से अपने व्यवसाय में रहता, मां के अधिक लाड़-प्यार ने बच्चे को बिगाड़ दिया, बड़ा होने पर लड़का कुसंगति में पड़ गया। आए दिन पुलिस घर के चक्कर काटने लगी अन्ततः एक दिन लड़के को पुलिस पकड़ कर ले गई। मां-बाप परेशान और तनावग्रस्त। क्या करे ? समाज में स्वयं की और पूर्वजों की प्रतिष्ठा को बचाना है। काफी धन खर्च करके अपने रक्त को बचाते हैं लेकिन कब तक। एक बार, दो बार वह पुत्र मोह है कि छूटता नहीं। वास्तव में इस अपार क्षति के मूल में पुत्र मोह ही है, स्वयं या पूर्वजों के सम्मान की रक्षा नहीं। एक बार जेल जाने के बाद वो सम्मान कहां रहा। लड़के ने उनकी इस कमजोरी को भांप लिया और फिर भावनाओं की ब्लेकमेलिंग शुरु हो गई। प्रति माह देवी जैसी मां से रुपये ले जाएं, मां पुत्र मोहवश पिता से छुपकर रुपया दे भी देती है ये हम सभी के जीवन की आम घटना है। रुपये की तंगी होने पर लड़के ने घर के सामान चुरा के बेच डाले। भारी सूद पर ऋण लेकर अनैतिक कार्यों पर खर्च कर डाला। तगादा होने पर पिता को चुकाना पड़ा, क्योंकि पिता को डर था कि वे लोग कहीं उसके पुत्र के साथ मारपीट न कर दे। अन्ततः यह सोचकर कि विवाह के बाद उसमें सुधार आएगा, उसका विवाह कर दिया। विवाह के बाद उसके कुकर्मों में कमी तो आई, परन्तु कुछ करने को तैयार नहीं। परिवार के लिए एक और आफत लड़के के साथ-साथ पुत्र वधु का खर्चा और घर में बढ़ गया। अर्थात् अब माता-पिता पर दोनों के पालन-पोषण का भार हो गया। विवशता है वे कर भी रहे हैं, सब कुछ सहते हैं पर मोहग्रस्तता से मुक्ति फिर भी नहीं चाहते हैं, आए दिन घर में कलह हो, होती रहे, हानि हो, होती रहे। समाज में स्वयं का एवं पूर्वजों का सम्मान भले ही समाप्त हो पर मोह नहीं छूटता। यह नर्क से भी बदतर स्थिति है पर विवशता है उसे भोगना ही है क्या करें ? हम अपने शत्रु को ही नहीं पहचान पा रहे हैं जो पुत्र के छद्मवेश में हमारे घर में ही मौजूद है। पुत्र जन्म का उत्सव मनाया जा रहा है वह इतना क्रूर निर्दयी कुपुत्र बनेगा कि न तो मरने ही देगा और न शांति से जीने ही देगा। इस प्रकार की अनेक परिस्थितियां परिवार में अशांति-क्लेश का कारण बनती हैं, जिन्हें अज्ञानी लोग देविक बाधा या **पितर दोष** या फिर कोई अभिचार मान लेते हैं, जबकि सूक्ष्मता से देखने पर ये कारण केवल और केवल भौतिक ही होते हैं, जिनकी जिम्मेदारी हमारे स्वयं की ही है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

2. दैविक कारण - यदि आक्स्मिक रूप से अकल्पित दुर्घटनाएं घटने लगे, घर की शांति छिन जाए। व्यापार-व्यवसाय चौपट हो जाए, किसी दुर्घटना में परिवार के सदस्यों की मृत्यु हो जाए, जबकि साथ वाले उस दुर्घटना में बच जाएं अथवा घर में मौतों का सिलसिला रुके नहीं, कोई कारण समझ में न आए। इन सबके मूल में किसी न किसी रूप में दुर्दैव ही होता है। दैविक कारण इस जन्म में अथवा पूर्व जन्म में किए गए पाप कर्मों के उदय होने के कारण अशांति के रूप में ही हमारे सामने आते हैं।

दूसरे दैविक कारणों में किसी दैव के लिए मानी गई मनौती होती है। जिसे व्यक्ति कार्य पूर्ण होने पर भूल जाता है अथवा किसी परिवार की वे मान्यताएं होती हैं जो विशेष पर्व आदि के अवसर पर उस मान्यता को करना आवश्यक होता है। यदि परिवार उनको भूल जाता है तो कोई न कोई नुकसान या व्याधि अवश्य हो जाती है ये अलग बात है कि परिवार को भूल का पता चलने पर तत्तसम्बन्धी देव से क्षमा याचना की जाती है या उन मान्यताओं को निभाया जाता है तो वे दोष जल्द ही ठीक भी हो जाते हैं।

हम अब उन दैविक कारणों की चर्चा करेंगे जो मनुष्य की छोटी-मोटी भूलों के कारण पैदा होते हैं और भूल सुधार के साथ ही समाप्त हो जाते हैं, ऐसी ही एक घटना सुनील के साथ घटित हुई। सुनील का विवाह एक ऐसी लड़की से हुआ जिसके परिवार में एक ऐसी देवी की मान्यताएं हैं, कि लड़की ब्याह कर जब दूसरे परिवार में जाती है तो उसके पति को भी उस देवी के मंदिर जो कि एक विशेष स्थान पर है माथा टेकने जाना पड़ता है, सुनील के मन में यह मन तो बना लिया कि मुझे जाना है लेकिन कब ? समय बीतता सुनील की पत्नी ने एक वर्ष बाद सुन्दर कन्या को जन्म दिया, लेकिन जन्म के बारह घण्टे बीतने पर भी नवजात ने अपनी आंखें नहीं खोलीं। डॉक्टर ने हर प्रकार से निरीक्षण करने के बाद कहा कि लड़की बिल्कुल स्वस्थ है और आंखें भी पूरी तरह ठीक हैं लेकिन वह बच्ची आंख क्यों नहीं खोल रही, इसका जवाब डॉक्टर के पास न था। सुनील के मन में भय उत्पन्न हुआ कि लड़की कहीं अंधी तो नहीं ? भय और आशंकाओं के मध्य अचानक परिवार के किसी सदस्य को ऊपर वर्णित देवी की याद आई, बुजुर्गों ने कहा हो न हो यह देवी का ही कोप है अब किया क्या जाए ? एक बुजुर्ग ने कहा कि एक नारियल और ग्यारह रुपये मन में यह धारणा कर रख दो कि, 'हे मां जो अपराध हमसे हुआ है उसे क्षमा करो मैं सपत्नीक और शिशु को लेकर आपके दरबार में शीघ्र ही माथा टेकने आऊंगा।' सलाहनुसार कार्य किया गया, आधा घंटा भी नहीं बीता कि अस्पताल से खबर आई कि उस नवजात बच्ची ने अपनी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

आंखें खोल दी हैं और उसकी आंखें बिलकुल ठीक हैं। देवीय प्रकोप का होना व उपाय से शीघ्र ही समाप्त होने के उदाहरणों की कमी नहीं है, बहुत से परिवारों का ऐसी घटनाओं से पाला पड़ा है। अत: हमारी सलाह तो यही है कि जब भी किसी देवी या देवता के प्रति मन में कुछ करने की धारण करे तो उसी यथाशीघ्र में जितनी शीघ्रता दिखाएंगे उतना ही अच्छा रहेगा।

3. अभिचारिक कारण - अभिचार का अर्थ होता है कि किसी शत्रु के द्वारा हमारे ऊपर किया गया टोना अथवा मारण प्रयोग। वास्तव में जन सामान्य में इस विषय में ही सर्वाधिक भ्रम पाए जाते हैं। उन भ्रमों का मुख्य कारण विषय के प्रति अज्ञान और ईश्वर पर अविश्वास। एक ऐसे व्यक्ति को देखिए, जिनके नित्य कर्म में मानस पाठ और अन्य कई मंत्रों की एक-एक माला शामिल है। वे पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। एक दिन अचानक उन्हें चक्कर आता है और वे अचेत हो जाते हैं इस घटना के कुछ समय पूर्व ही एक निम्न जाति के व्यक्ति से जमीन के मामले में उनका वाद-विवाद हुआ था। ये सज्जन गांव में रहते हैं। स्वास्थ्य खराब होने पर गांव में चिकित्सालय की व्यवस्था ना हो पर एक ओझा (तांत्रिक-मांत्रिक) को बुलाया गया। ओझा ने पानी हाथ में लेकर कुछ मंत्र पढ़कर मुंह पर छींटे मारे, थोड़े प्रयास के बाद उन महानुभाव को होश आ गया। ओझा ने उन्हें बताया कि किसी ने आपके ऊपर मूठ चलाई है, अगर मैं समय पर नहीं आता तो आप बचते नहीं। महानुभव को ओझा की बात जम जाती है और यहीं से शुरु हुआ तरह-तरह के भ्रमों का सिलसिला। उन्हें अपने ईष्ट देव, गुरुदेव, पर भी विश्वास नहीं रहा। जगह-जगह तांत्रिक-मांत्रिकों के चक्कर और चमत्कारों को देख-देख लुटते रहे। जब तक संभले आर्थिक व्यवस्था चरमरा चुकी थी। नित्य ही आवश्यक कार्यों को अधर में छोड़ घूमने के चक्कर में व्यापार भी खराब। अब पछताते हैं ?

मनोहर लाल शर्मा बचपन से ही हनुमान जी को ईष्ट मानकर उनकी आराधना करते हैं, नित्य ही हनुमान चालीसा, सुन्दर काण्ड आदि करना उनकी प्रात: चर्या में शामिल है। एक दिन वे बीमार पड़े। अस्पताल ले जाया गया। चिकित्सकों ने उपचार किया, मगर रोग है कि घटने के बजाए बढ़ता ही गया। कभी उन्हें लगता कि हृदय रोग है और कभी लगता कि ब्लड़ प्रेशर बढ़ गया है। जान-पहचान वाले पूछ-परख के लिए आने लगे। ऐसे में एक दिन उनकी भेंट एक घोर अंधविश्वासी मित्र से होती है। मित्र शर्मा जी के मन में यह बात बिठा देता है कि वे अभिचार के शिकार हैं।

शर्मा जी ने एक दिन **परम पूजनीय गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** से संपर्क किया। सद्गुरुदेव श्री श्री ने उनकी शंका को नकारते हुए कहा कि उन्हें कोई

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विशेष रोग नहीं है बल्कि वे वात रोग के शिकार हैं। लेकिन विनाश काले विपरीत बुद्धि वाली कहावत चरितार्थ करते हुए शर्मा ने गुरुदेव की बातों का विश्वास नहीं किया और स्वयं को अभिचार का शिकार मानकर दिनों-दिन घुलते रहे। ओझा लोग तंत्र के नाम पर हाथ की सफाई और जादू भरे चमत्कार दिखा-दिखाकर शर्मा जी को हजारों रुपयों की चपत लगाते हैं, निरंतर अविश्वास के कारण उनकी प्रात:चर्या भी छूट जाती है, ईश्वर भक्ति का आडम्बर टूटने लगता है। ऐसे में ही एक दिन उनकी मुलाकात एक विद्वान आचार्य से होती है, जो उनके मन में एक भ्रम और डाल देते हैं कि गृहस्थ को तो हनुमान उपासना करनी ही नहीं चाहिए। ईष्ट और गुरु सेवा से पतित शर्मा विक्षिप्त होने लगते हैं। अन्तत: एक दिन गुरुदेव ही दया करके शर्मा को इस मनोरोग से मुक्ति दिलाते हैं। आखिर ऐसा क्यों हुआ ? आध्यात्म प्रवृत्ति का व्यक्ति इतना निर्बल कैसे हुआ ? हम जो भी कर रहे हैं उसमें हमें विश्वास नहीं। बस करे जा रहे हैं, उसका अस्तित्व भी है या नहीं, यदि विश्वास ही हो तो भटकाव क्यों ?

आज के वातावरण में अंधविश्वास इतना बढ़ गया है कि कोई भी सज्जन अस्वस्थ होने पर कुछ दिनों के उपचार से यदि ठीक नहीं होता है तो तुरंत ही यह मान लिया जाता है कि किसी ने कुछ कर दिया। इस वातावरण को खराब किया है कथित व्यवसायिक तांत्रिकों ने एवं झूठे सिर हिलाने वाले लोगों ने।

हमारे जीवन में कई मर्तबा ऐसी ही घटनाओं से वास्ता पड़ा, जिनके मूल में कोई अभिचार कर्म नहीं था, फिर भी उसे अभिचार कर्म मानकर लोग भ्रमित होते रहे। किसी व्यक्ति का व्यापार मंदा हुआ नहीं कि उसके मन में एक ही शंका आती है कि किसी ने कुछ करा दिया। आश्चर्य तो तब होता है जब उच्च शिक्षित और अधिकारी वर्ग के लोग भी इस भ्रम के शिकार होकर लुटते रहते हैं। निहायत दोयम दर्जे का आदमी साधू के वेश में अपनी ऐन्द्रिजालिक क्रियाओं के चमत्कारों से मूर्ख बना देता है। क्या यह शिक्षित लोगों के लिए शर्म की बात नहीं ?

अब अभिचार के क्रूर और सकारात्मक पक्ष को देखते हैं रमेश कभी अत्यन्त निर्धन एक उद्योग में श्रमिक था वह उसकी पत्नी दो पुत्र और पुत्रवधुएं, सभी मिलकर अथक परिश्रम करते। लेकिन सम्पन्नता परिश्रम से कम और भाग्य से अधिक मिलती है। यदि परिश्रम मात्र से संपन्नता मिलती तो सारा मजदूर वर्ग लखपति हो जाता, किन्तु ऐसा नहीं है।

भाग्यवश रमेश पर ईश्वर की कृपा हुई, पुत्रों ने ऋण प्राप्त कर अपना अलग उद्योग स्थापित कर लिया। काम चल निकला धन वर्षा होने लगी। झुग्गी के स्थान पर विशाल भवन हो गया। पुत्र वधुओं के शरीर सोने के आभूषणों से लद गए। घूमने के लिए एक ही नहीं दो-दो कार दरवाजे पर घुरघुराने लगी। घर में नौकर--

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चाकर हो गए। रमेश की पड़े-पड़े तोंद बढ़ गई वह अपनी कोठी के लोन में बैठा अपनी तोंद पर हाथ फेर कर अपने समाज की सरपंची करने लगा। उसकी सम्पन्नता उसके समाज के लोगों को खटकने लगी। एक कहावत है लोग अपने दुख से दुखी नहीं हैं, वरन् दूसरे के सुख से दुखी हैं, यही मामला यहां भी है, रमेश जी ऐसी जाती के हैं। जिसमें अभिचार कर्म को जानने वालों की कमी नहीं। ऐसी ही कोई कुदृष्टि रमेश की सम्पन्नता पर शनि को वक्र दृष्टि की तरह पड़ी। यहीं से उल्टा चक्र प्रारम्भ हुआ।

रमेश का अच्छा-खासा उद्योग घाटा देने लगा, एक महीने के भीतर ही उसके ट्रकों के 8 टायर ऐसे फटे जिनका ठीक होना सम्भव नहीं था। दूसरे ही मास में उसके एक ट्रक से एक्सीडेंट हुआ जिसमें 5 लोग मर गए लाखों रुपये खर्च कर इस आफत से पीछा छुड़ाया। इससे भी आगे उसकी फैक्ट्री से निकलने वाला माल घटिया होने की वजह से बाजार से वापस आने लगा, जबकि पहले उस फैक्ट्री से निकलने वाले माल की बाजार में बहुत अच्छी साख थी। आर्थिक रूप से बर्बाद और कर्जदार होने के बाद घर के सामान बिकने तक आ गई। घर में लड़ाई-झगड़े बढ़ने लगे जबकि पहले उस परिवार के आपसी प्रेम और सौहार्द के उदाहरण दिए जाते थे। घर में अलग-अलग चूल्हे हो गए, यहां तक भी ठीक था पर एक दिन बड़ा लड़का पागलों जैसे व्यवहार करने लगा और छोटा घर छोड़कर भाग गया। पुत्र वधुएं मर्यादा का उल्लंघन करने लगीं।

कोई पुण्य वश **परम पूजनीय सद्गुरूदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** उस गांव में पधारे। रमेश जी उनके चरणों में जा पड़े, तब जाकर यह पता चला कि यह उसके किसी शत्रु द्वारा कराए गए अभिचार कर्मों का परिणाम है, गुरूदेव उसके घर पधारे और वहीं डेरा डाला। गुरूदेव ने कोई चमत्कार नहीं दिखाया, बस सात दिनों तक अन्न-जल ग्रहण किए बिना रात्रिकाल में कुछ क्रियाएं कीं। हानि तो उसी दिन से रुक गई, जिस दिन से गुरूदेव ने अपने चरण उस घर में रखे। सातवें दिन वह पुत्र भी वापस आ गया जो घर छोड़कर भाग गया था। पागल लड़का भी दस दनों में ही ठीक हो गया। बिखरा परिवार फिर से एकजुट होने लगा और मात्र 6 माह से ही स्थिति फिर से संतोषजनक हो गई।

शिवदयाल संपन्न किसान हैं, 500 बीघा खेत चार कर्तव्यनिष्ट पुत्र। खेतों में टक्रों अनाज पैदा होता है, तिजोरी रुपयों से भरी रहती है, कहीं किसी प्रकार की कोई कमी नहीं, दो-दो ट्रैक्टर घर में हैं, हर प्रकार से संपन्न और समृद्ध। एक दिन खेत पर काम करने वाले एक शूद्र जाति के कामगार को किसी त्रुटि के लिए छोटे बेटे ने थप्पड़ मार दिया। बस यहीं से बुरे दिन शुरु हो जाते हैं, सबसे पहले फसल

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जो कि खलिहान में कटी ढेर में रखी थी, एक रात आधे से अधिक गायब हो जाती है दस टन अनाज के स्थान पर कुछ क्विण्टल अनाज ही रह जाता है, जबकि रात भर जागकर चार बेटों ने खलिहान की रखवाली की थी।

उसके कुछ सप्ताह बाद ही कोठे में रखा 20 क्विंटल से अधिक सरसों का बीज गायब हो गया, जबकि कोठे में लगा ताला तोड़ा भी नहीं गया और रात भर कोठे के आगे खाट लगाकर उसके दो पुत्र सोते थे।

शिवदयाल समझ नहीं पाते हैं कि आखिर खलिहान का अनाज और कोठे में रखा बीज रहस्यमयी ढंग से कैसे गायब हुआ। गांव के ओझाओं से सम्पर्क किया जाता है वे कुछ क्रियाएं करते हैं कुछ दिन शांति भी रहती है, लेकिन एक दिन आधी रात के समय में जब शिवदयाल सो रहे थे और उनकी एक पुत्र वधु उनसे आ लिपटती है शिवदयाल जानते थे कि पुत्र वधू सुशील और चरित्रवती है। सदैव स्वयं को घूंघट में छिपाकर रहने वाली पुत्र वधू वही अचेत हो जाती है होश में आने के बाद उसे घटना का कुछ पता नहीं।

कुछ समय बीता होगा कि शिवदयाल की 16-17 वर्ष की पुत्री एकांत में अपने बड़े भाई से नग्न होकर लिपट जाती है। बड़ी मुश्किल से भाई ने बहन को अपने से अलग किया। एक थप्पड़ भी कसकर लगा दिया, इसके बाद लड़की भी अचेत हो जाती है, होश में आने पर उसे भी घटित याद नहीं। स्थिति ऐसी हो गई कि घर का प्रत्येक सदस्य एक-दूसरे को शंका भरी नजरों से देखने लगा।

दिन बीतते जाते हैं नई फसल तैयार हो जाती है, फसल का ढेर खेत के मध्य में लगा दिया जाता है इस बार शिवदयाल कई ओझाओं को अपने खलिहान में बुला लेता है लेकिन हर प्रयास के बाद भी रात में फसल खलिहान से गायब हो जाती है कुल 12 टन फसल में से 10-12 क्विंटल फसल ही रहती है।

प्रत्येक कार्य उल्टा होने लगा, पुत्री का तय विवाह संबंध टूट गया, आस-पास के गांवों में फैला लेन-देन डूबने लगा। साल भर में ही स्थिति ऐसी आ गई कि शिवदयाल आत्महत्या करने को उद्यत हुआ। एक दिन शिवदयाल हरिद्वार के लिए रवाना हो गए यह सोचकर कि मरूंगा तो किसी तीर्थ में जाके। वहां जाकर उन्होंने एक पहाड़ की चोटी से गंगा में कूदने का मानस बनाया। जब वे पहाड़ पर चढ़ रहे थे तो रास्ते में **परम पूजनीय सद्गुरूदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** से मुलाकात हुई। गुरूदेव ने उन्हें हिम्मत बंधाते हुए **शतचण्डी अनुष्ठान** करने की सलाह दी और संकल्प करा दिया।

शिवदयाल घर वापस आए और धन की व्यवस्था करके वापस रवाना हुए, हरिद्वार में ही एक देवी के मंदिर में शतचण्डी अनुष्ठान प्रारम्भ हुआ। पूर्णाहुति

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हुई। शिवदयाल अनुष्ठान पूर्ण कर जब गांव में लौटे तो मार्ग में ही वह शूद्र जाति का कामगार साथ में वे तीन व्यक्ति जिन्होंने शिवदयाल के परिवार पर अभिचार कर्म किया था, मिल गए और उनके चरणों में गिरकर अपने किए की माफी मांगने लगे, उन्होंने स्वीकार किया कि हम चारों ने मिलकर अभिचार कर्म किए थे। मैली को उन्होंने ही शिवदयाल की को पुत्रवधु और पुत्री पर भेजा था। उन्होंने ही प्रेत सिद्धि की सहायता से अनाज और बीज गायब करवाया था। **शतचण्डी अनुष्ठान** से भगवती की कृपा से शिवदयाल इस अभिचार कर्म से मुक्त हुए।

यह तो हुई ऐसे परिवारों की दास्तान जिन पर अभिचार कर्म किए गए और कुछ काल तक उसे भोगने के बाद गुरूकृपा वश वह समाप्त भी हुआ। आगे कुछ ऐसे प्रकरणों की चर्चा करेंगे, जिन पर अभिचार कर्म किए गए हैं।

पन्द्रह वर्ष पुरानी बात है एक परिचित जो कि एक कस्बे में रहते हैं उनके ऊपर ईश्वर की ऐसी कृपा हुई कि उनको व्यापार में बहुत मुनाफा हुआ एक पुरानी कहावत है कि पैसा ही पैसे को खींचता है। उन महाशय पर लक्ष्मी की ऐसी ही कृपा हुई। लक्ष्मी आई तो साथ में अहंकार भी ले आई, अड़ोस-पड़ोस के लोगों से उनका जीवन स्तर ऊंचा उठने लगा और पड़ोसी उन्हें अपने सामने क्षुद्र नजर आने लगे, पड़ोस के एक परिवार को उनकी सम्पन्नता खटकने लगी। आए दिन किसी न किसी बात पर खटपट रहने लगी। एक दिन दुर्घटनावश पड़ोस के किसी सदस्य की मृत्यु हो गई, लेकिन मरने से पहले वह दुर्भावनावश दुर्घटना में परिचित का हाथ होने का बयान दे गया। पुलिस केस हुआ, जेल बन्दी हुई और शत्रुता और भी गहरी हुई। गांव वालों ने परिचित व्यक्ति का साथ दिया। पुलिस की जांच में भी वह निर्दोष साबित हुए और वे परिचित व्यक्ति बाईज्जत बरी हुए लेकिन उनके पड़ोसी को चैन नहीं और उसने किसी से मिलकर परिचित की स्त्री पर अभिचार कर्म करवाया।

मूल कारण के उपचार के अभाव में स्त्री काल कलवित हो गई। परिवार पर कराए अभिचार के परिणामस्वरूप अच्छा-खासा चलता हुआ व्यापार बन्द हो गया। आर्थिक रूप से पूरी तरह से बर्बाद हो गए। उनका एक बेटा बाहर जाकर रहने लगा और वहां जाकर उसने अपना अच्छा काम भी जमा लिया। एक बार वह अपने परिवार से मिलने गांव वापस आया। जब वह वापस पहुंचा तो वहां जाने के बाद वह विक्षिप्त हो गया। उसे अपना काम-धाम छोड़कर वापस आना पड़ा। ऐसा नहीं है कि इस मामले में उपचार के प्रयास नहीं किए गए। विभिन्न तांत्रिक-मांत्रिकों के शरण में वो अब तक जा चुके हैं और लाखों रुपया बर्बाद कर चुके हैं लेकिन कहीं से भी उनको पूर्ण संतुष्टी नहीं मिली है कुछ समय तक उनकी

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्थिति ठीक रहती है, थोड़ा-सा आगे बढ़ते हैं और फिर वही स्थिति आ जाती है। विभिन्न ओझाओं से सम्पर्क के दौरान यह बात तो उनको पक्की मालूम चली कि उनके परिवार पर अभिचार कर्म किए गए हैं। लेकिन उसका पूर्ण उपचार आज तक उनको नहीं मिला है और अभिचार कर्म की पीड़ा को वे आज तक भोग रहे हैं। विवश है वे इसे भोगने के लिए क्योंकि अभिचार कर्म को न तो पुलिस ही मानती है न ही न्यायालय जहां जाकर व्यक्ति को न्याय मिलता है। इसी कारण से विभिन्न तान्त्रिक लोग अखबारों में विज्ञापन के जरिए लिखते हैं, ''समस्त समस्याओं के समाधान के लिए मिले प्रेम, वशीकरण, व्यापार में असफलता मूठ करनी स्पेशलिस्ट'' अर्थात् खुले आम विज्ञापनों के जरिए मौत का ठेका ले रहे हैं क्या कोई गुण्डा इस प्रकार से अखबार में **मौत की सुपारी लेने** का विज्ञापन दे सकता है ? नहीं ना। फिर सरकार तांत्रिकों के दिए गए ऐसे विज्ञापनों पर रोक नहीं लगाती। क्योंकि एक बात तो सभी जानते हैं कि मूठ देने से व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो क्या यह किसी व्यक्ति को मार डालने का अप्रत्यक्ष सौदा नहीं ? क्या सरकार में बैठे लोग मूठ से परिचित नहीं ? क्या हमारे देश के नेता तंत्र-मंत्र और अभिचार के बारे में नहीं जानते। यदि ऐसा है तो चुनाव जीतने के लिए बड़े-बड़े अनुष्ठान क्यों करवाते हैं।

अब एक सीधे-साधे ग्रामीण का उदाहरण लेते हैं छोटा-सा परिवार है, उसकी बीवी, दो छोटे बच्चे और काम चल जाए इतना रोजगार। सब कुछ सामान्य चल रहा था, एक दिन ग्रामीण बीमार हुआ। बीमार भी ऐसा कि चलने-फिरने में असमर्थ हो गया। व्यापार चौपट हो गया, धीरे-धीरे जमीन-दुकान बिक गई। स्वास्थ्य निरन्तर गिरता गया। डॉक्टरी इलाज से हारकर परम पूजनीय सद्गुरूदेव की सहायता ली गई, सद्गुरूदेव ने बताया कि उस ग्रामीण के ऊपर मसाण की चौकी, किसी शत्रु व्यक्ति ने रखवा दी है। पूजनीय गुरूदेव मंत्रों से उस बेचारे ग्रामीण का ईलाज करते हैं, कुछ उतारा भी करते है, इससे ग्रामीण के स्वास्थ्य में निरन्तर फायदा हुआ और कुछ काल बाद वह बिल्कुल स्वस्थ हुआ।

अभिचार कर्म का ही एक अन्य प्रकार देखते हैं, एक महाशय के जीवन में एक ऐसा भी समय आया जब उसे अपना पुश्तैनी मकान, जिससे उसके पूर्वजों सामान्य जीवन बिताया, पराया लगने लगा। रात को उसे डरावने स्वप्न आने लगे और दिन भर उसे ऐसा लगता कि उसका एक पुत्र दुर्घटना में मर गया है, ऐसा महसूस होने पर अनेक बार वें महाशय अपनी दुकान को छोड़कर घर भागकर आते, किन्तु हर बार उन्हें अपना पुत्र घर पर सही सलामत मिलता। इस अदृश्य भय और आतंक से घबराकर वे महाशय एक दिन वह घर ही नहीं, गांव तक

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

छोड़ने का मन बना लेते हैं, भाग्यवश वे **परम पूजनीय सद्गुरूदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** के सम्पर्क में आए तो गुरूदेव ने बताया कि उन पर उनके शत्रु ने उच्चाटन प्रयोग करवाया है। गुरूदेव ने उन महाशय को एक **दिव्य ताबीज** बनाकर दिया और कुछ प्रयोग बताए। उन साधनों को करने एवं उस **दिव्य ताबीज** पहनने से उन महाशय की समस्या कुछ समय में ही हल हो गई और वे महाशय उसी घर में प्रेमपूर्वक रहने लगे।

इस प्रकार से अभिचार कर्म कई तरह के होते हैं, मूठ चलाकर व्यक्ति को मारना, उच्चाटन से उस जगह को छोड़ने को मजबूर करना, चौंकी बिठाकर व्यक्ति को पागल कर देना, प्रेत भेजकर कोई नुकसान करवाना, मैली लगाकर बुद्धि भ्रष्ट कर देना आदि इन सबका विस्तार पूर्वक विवेचन परम पूजनीय सद्गुरूदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी की पुस्तकों में मिलता है अतएव ज्ञान पिपासु अध्ययन करे और उनसे बचकर रहें।

जय गुरूदेव॥ जय महाकाल॥ जय शमशानकाली॥

-स्वामी सर्वानंद
(गुरू सेवक)

पितर दोष निवारक कवच

इस पुस्तक को अध्ययन करके तथा अपनी जन्मकुण्डली ग्रह स्थितियों को देखकर आप यह तो बहुत अच्छी तरह से समझ चुके होंगे कि पिछले काफी समय से आपके जीवन, परिवार और व्यवसाय में चल रही कठिनाईयों का एकमात्र कारण सिर्फ **पितर दोष** का होना ही है। फिर अब इसकी शांति के लिए उपाय करना ही आपका बुद्धिमतापूर्ण निर्णय होगा। यदि आप इस पुस्तक में वर्णित पितर शांति हेतु कठिन प्रयोगों अथवा साधनाओं के कर पाने में झिझक अथवा घबराहट महसूस कर रहे हों और कोई अन्य सरल-सहज उपाय की तलाश में हों, तो हम आपके लिए विशेष गोपनीय विधियों से शुद्ध चांदी अथवा सोने से निर्मित **पितर दोष निवारक कवच** को विधिपूर्वक बनवाकर तथा मंत्रसिद्ध चैतन्यादि करवाकर उपलब्ध करवा सकते हैं। यह अद्भुत चमत्कारी कवच आपको सदैव के लिए सिर्फ अपने गले में धारण करना है और बस फिर सारी परेशानियों का निवारण स्वत: ही होने लग जाता है। इस **चमत्कारी कवच** को घर बैठे ही प्राप्त करने के लिए आज और अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन **09828535525** पर सम्पर्क कीजिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वास्तुदोष

वास्तुदोष भी परिवार में कलह एवं अवनति का बहुत बड़ा कारण होता है, यहां वास्तु एवं भूमि दोष की चर्चा एक ही बिन्दु के तहत इसलिए की जा रही है, क्योंकि दोनों एक दूसरे से विशेष रूप से सम्बन्ध रखते हैं बगैर भूमि के वास्तु का निर्माण सम्भव नहीं है और वास्तु निर्माण किए बिना खाली भूमि पर भी निवास सम्भव नहीं। सबसे पहले हम वास्तु का परिवार पर क्या प्रभाव होता है, यहां हम वास्तु सम्बन्धी नियमों की सूक्ष्म में चर्चा करेंगे। किसी भी वास्तु में चार मुख्य दिशाएं एवं चार कोण दिशाएं निश्चित् रूप से पाई जाती हैं वे दिशाएं निम्न हैं -

- पूर्व दिशा
- दक्षिण दिशा
- पश्चिम दिशा
- उत्तर दिशा
- ईशान कोण
- अग्नी कोण
- नेर्ऋत्य कोण
- वायव्य कोण

नैर्ऋत्य कोण	पश्चिमी भाग	वायव्य कोण
दक्षिणी भाग	ब्रह्म स्थान	उत्तरी भाग
अग्नि कोण	पूर्वी भाग	ईशान कोण

ईशान कोण : यह कोण वास्तु में इष्ट देवता का स्थान होता है, सभी वास्तु ग्रंथों में इस दिशा में पूजा घर का होना शुभ बताया जाता है, निर्माण में इस कोण को हल्का रखा जाता है, एवं भूमिगत पानी के टैंक का निर्माण भी इसी दिशा में प्रशस्त है। इस दिशा में शौचालय, रसोई अथवा भारी निर्माण का निषेध है, ऐसा करने से यह भाग दूषित होकर अशुभ परिणाम देने लगता है। यदि ईशान में कोई वास्तुदोष हो तो ईष्ट की सिद्धि समाप्त होने लगती है, आर्थिक नुकसान व्यापार में घाटा एवं विभिन्न मानसिक परेशानियां परिवार को घेर लेती हैं।

अग्नि कोण - इस दिशा में रसोई या अग्नि सम्बन्धी कार्य करने का निर्देष वास्तुशास्त्रों में है। यदि इस स्थान पर पानी का टेंक या कुआं आदि हो तो वास्तु दोष पूर्ण हो जाता है। इस कोण का संबंध रोगों से है यदि यह कोण दूषित हो जाए तो परिवार में तरह-तरह के रोग होने लगते हैं। जिनमें से उदर संबंधी विकार विशेष रूप से देखने को मिलते हैं, इस कोण के दोषों का मुख्य प्रभाव महिलाओं पर पड़ता है, महिलाओं की माहवारी को गड़बड़ भी अग्निकोण के वास्तुदोष के कारण ही संभव होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नेर्ऋत्य कोण - इस कोण में शौचालय आदि के निर्माण का संकेत वास्तुशास्त्र देते हैं, लेकिन शौचालय का निर्माण ठीक नेर्ऋत्य कोण में न करके दक्षिण भाग की तरफ करना शुभ रहता है। इस कोण को वास्तु में भारी रखना चाहिए। यदि नेर्ऋत्य में वास्तु दोष हो तो **पितर दोष** की सम्भावना प्रबल रहती है।

वायव्य कोण - इस कोण में मुख्य रूप से अतिथियों का कमरा होना चाहिए, क्योंकि इस कोण में रहने वाली वस्तुएं अधिक नहीं टिक पाती, यदि घर में कुंवारी लड़की हो और उसका विवाह न हो रहा हो तो उसे भी वायव्य कोण को कमरे में रहना चाहिए, ऐसा करने से उसका विवाह शीघ्र होता है। यदि इस कोण में कोई वास्तु दोष हो तो हड्डियों के रोग विशेष रूप से होते हैं एवं मानसिक उन्माद भी पाया जाता है।

पूर्व दिशा - इस दिशा में वास्तु निर्माण सदैव नीचा रखना चाहिए एवं पूर्व दिशा को यथा संभव खुला रखना चाहिए। जिससे प्रात:काल की सूर्य रश्मियों के घर के भीतर आने से हानिकारक कीटाणुओं का नाश हो सके।

दक्षिण दिशा - वास्तु का दक्षिण भाग सदैव भारी व ऊंचा रखना चाहिए। घर में स्टोर एवं भारी अलमारियां एवं कोई भारी मशीन आदि को इसी कोण में रखना चाहिए। यदि वास्तु का दक्षिण भाग दोष पूर्ण हो तो परिवार में **प्रेत बाधा** होने की सम्भावना रहती है।

पश्चिम दिशा - पश्चिम दिशा का वास्तु सदैव पूर्व दिशा के वास्तु से ऊंचा रहना चाहिए, पश्चिम दिशा में समान्यतया स्थान घर, अध्ययन कक्ष आदि का निर्माण शुभ होता है। ओवरहेड टैंक भी इसी दिशा में रखना शुभ होता है।

उत्तर दिशा - उत्तर दिशा में निर्माण सदैव दक्षिण से नीचा रखना चाहिए। उत्तर दिशा में ही पैसा रखने की अलमारी रखे। लेकिन उत्तरी भाग के कमरे में अलमारी को इस प्रकार रखना चाहिए कि वह उस कमरे की दक्षिण दीवार से सटी रहे और उसका दरवाजा उत्तर की तरफ खुले।

भूखंड की आकृति का विचार - भवन निर्माण करते समय भूखंड की आकृति पर अवश्य ही विचार करना चाहिए। भूखण्ड चौकोर अथवा आयताकार ही शुभ होता है। कभी भी भूखण्ड के पांच कोण, छ: कोण, त्रिकोण, आठ कोण, आदि नहीं होने चाहिए ऐसा भूखण्ड अशुभ होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

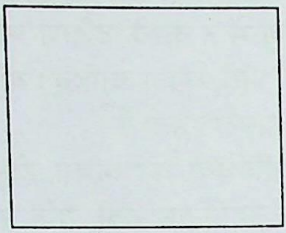

सर्वोत्तम भूखंड

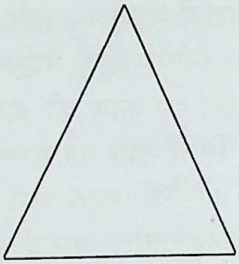

अशुभ भूखंड

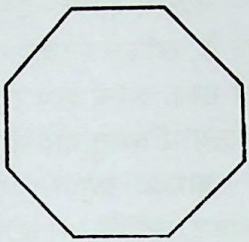

अशुभ भूखंड

❖ यदि भूखण्ड में आठ कोण होंगे तो उसका अत्यन्त अशुभ फल मिलता है, आठ कोण का भूखण्ड होने पर भाई-बंधुओं को परेशानी होती है। घर में अग्नि से क्षति हो सकती है। परिवार में किसी को मृत्युदण्ड या फांसी हो सकती है।

❖ मछली के पेट की तरह उठा हुआ भूखण्ड दरिद्र कर देता है, कुटुम्ब की वृद्धि को रोक देता है, व्यक्ति को निस्संतान रहना पड़ सकता है।

❖ भूखण्ड की भुजाएं निर्बल हों या भवन हाथ कटे मनुष्य सदृश्य हों तो घर में अत्यन्त दुख, मृत्यु पर मृत्यु हो और यदि ऐसे भवन में किसी का विवाह हो जाए तो पुरुष या स्त्री विधुर या विधवा हो जाए।

सिंह मुखी एवं गौमुखी भूखण्ड - भवन सदैव गौमुखी बनाना चाहिए, सिंह मुखी भवन अशुभ प्रभाव देता है। गौ मुखी भवन में निवास करने से सुख शांति रहती है, जबकि सिंह मुखी भवन में रहने से सदैव आर्थिक तंगी बनी रहती है। कितना भी कमाया जाए, लेकिन पैसा रुकता नहीं है।

मुख्य द्वार - किसी भी भवन के मुख्य द्वार का विशेष महत्व होता है, प्रत्येक दिशा में द्वार के क्या परिणाम होते हैं, वे अग्रलिखित हैं -

◦ मुख्य द्वार यदि पूर्व में हो तो सर्वोत्तम है, द्वार से अच्छे लोगों का आना-जाना हो और सभी प्रकार के सुख मिलते हैं।

◦ मुख्य द्वार यदि उत्तर में होगा तो शुभ होता है, आध्यात्मिक या धार्मिक कार्य शुभ रहते हैं।

◦ मुख्य द्वार यदि पश्चिम में हो तो उत्तम होता है।

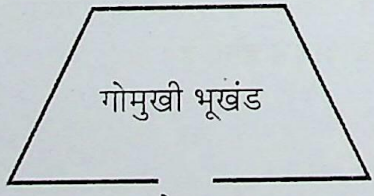

प्रवेश द्वार

प्रवेश द्वार

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❖ मुख्य द्वार यदि दक्षिण में हो तो अशुभ होता है इसके दुष्प्रभाव से भवन का स्वामी सुखी न रहे, स्त्री की मृत्यु हो जाए या मृत्यु कष्ट होता है, परिवार में सदैव कष्ट और कलह बना रहता है।

मकान में सीढ़ियाँ - सीढ़ियां कभी भी ईशान्य दिशा में नहीं बनानी चाहिए, पश्चिम या उत्तर के भाग में सीढ़ियां सर्वोत्तम हैं, चढ़ते समय सीढ़ियां सदैव दाहिने हाथ की तरफ मुड़नी चाहिए, इनकी संख्या सदैव विषम होनी चाहिए अर्थात् तीन का भाग दे तो दो शेष बचना चाहिए, लेकिन संख्या बीस या दस नहीं होनी चाहिए। मध्य चौक में जीना नहीं होना चाहिए। प्रमुख जीना कभी भी पूजा घर, तिजोरी का कमरा, रसोईघर और कबाड़ खाना इनसे शुरु नहीं होना चाहिए। जीने के नीचे की कोठरी में तिजोरी नहीं रखनी चाहिए। अनेक जगह पर टूटा हुआ या हिलता हुआ जीना अशुभ होता है। इससे घर में मानसिक क्लेश रहता है, झगड़ा होता रहता है, ऐसे जीने की तत्काल मरम्मत करनी चाहिए।

वास्तु का शुभाशुभ विचारने के लिए भवन बनाते समय इन पर भी विचार कर लेना चाहिए :

❖ रात को सोते समय सिर पूर्व दिशा में रखें या दक्षिण दिशा में रखें, याद रखें पूर्व या दक्षिण में सिर रखकर सोना स्वास्थ्य की दृष्टि से लाभप्रद है।

❖ आग से अग्नि से संबंधित सभी कार्य दक्षिण या दक्षिण पूर्व (अग्नि कोण) में करें।

❖ खाली स्थान, अतिथि के लिए पश्चिम या उत्तम पश्चिम (वायव्य कोण) में शुभ होता है। इसी स्थान में वाहन या पालतू (दूध देने वाले) जानवरों को रखना चाहिए।

❖ यदि भवन के समीप कोई पीपल का वृक्ष हो तो उसकी सेवा करने से शुभ फल मिलेगा। यदि सेवा नहीं करेंगे तो उसकी छाया जहां तक पड़ेगी वहां तक भवन में अनिष्ट होता है।

❖ भवन के पास यदि कुआं है तो यदि उसमें श्रद्धासहित थोड़ा कच्चा दूध डालते रहेंगे तो शुभ फल होगा वरना अनिष्ट होता है।

❖ भवन में यदि कीकर का पेड़ हो तो संतान को हानि पहुंचाएंगा, इससे बचने के लिए सूर्य उदय होने के पूर्व लगातार चालीस शनिवार तक उसकी जड़ में पानी डालें।

❖ कब्रिस्तान या श्मशान के आसपास बनाया भवन निस्संतान या दत्तक संतान होने की निशानी है। इसका उपाय यह है कि भवन के ईशान कोण में कुआं बनाने से शुभ प्रभाव होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वास्तुदोष निवारण के चमत्कारी उपाय :

❖ यदि रसोई गलत स्थान पर हो गई हो तो अग्निकोण में एक लाल रंग का बल्व लगा दें और सुबह-शाम उसे अवश्य जलाएं।

❖ बीम के दोष शांत करने के लिए बीम को टाइल्स से ढक दें और बीम के दोनों ओर बांस से बनी बांसुरियां लगाएं।

❖ द्वार दोष एवं वेध दोष को दूर करने के लिए **मोती,** शंख, सीप, समुद्र झाग, कोड़ी, तांबे या सोने की तुशा लाल कपड़े या मोली में बांधकर दरवाजे पर लटकाएं।

❖ याद रखें गणपति की दृष्टि में अमृत है और पीठ में विष। अतएव दरवाजे के दोनों ओर **वास्तु गणपति** लगाएं।

❖ यदि मकान में चोरी या आगजनी की घटनाएं हों तो **मंगल वास्तु यंत्र** की स्थापना करे, यह यंत्र ईशान कोण में दो फुट गहरा गड्ढा खोदकर स्थापित किया जाता है। (इस यंत्र को प्राप्त करने के लिए केंद्र से सम्पर्क कर सकते हैं।)

❖ घर के समस्त वास्तुदोषों को दूर करने के लिए मुख्य द्वार के एक ओर केले का एवं दूसरी ओर तुलसी का पौधा गमले में लगाएं।

❖ वास्तुदोषों के निवारणार्थ घर के मुख्य दरवाजे पर **असली काले घोड़े की नाल** लगाएं। (यह नाल आप हमारे केंद्र की हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।)

❖ यदि आपका मकान चारों तरफ से ऊंचे मकानों से घिरा हो तो मकान की छत पर लम्बा झण्डा लगाएं।

❖ वास्तु निर्माण के प्रारम्भ में एक चांदी का शेष नाग पूर्व दिशा में जमीन में अंदर स्थापित करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

क्या है पितृगण ..... ?

हमारे प्राचीन पुराणों में पितरों के बारे में बृहद विवरण उपलब्ध है। पुराणों के अनुसार पितरों के सात गण हैं। इनमें देवता, योगी, यक्ष आदि के तीन अमूर्त तथा चार वर्णों के चार मूर्त पितर हैं। इस प्रकार सात पितर शास्त्रों में बताए गए हैं। प्रत्येक पितर के संदर्भ में अधिक जानकारी अग्रलिखित हैं :

1. वैराज नामक योगी पितृ गण – वैराज नामक अमूर्त पितृगण वैराज नामक प्रजापति की संतान है, इसलिए वैराज नाम से प्रसिद्ध है और देवगणों से पूजित है। ये पितृगण सनातन लोकों को प्राप्त करने के पश्चात् योग मार्ग से च्युत हो जाते हैं तथा ब्रह्मा के दिन के अन्त में पुनः ब्रह्मवादी रूप में उत्पन्न होते हैं उस समय ये पूर्व जन्म की स्मृति हो जाने से पुनः सर्वोत्तम सांख्य योग का आश्रय लेकर योगाभ्यास द्वारा आवागमन के चक्र से मुक्त करने वाली सिद्धि प्राप्त कर लेते हैं, इस कारण से दाताओं द्वारा योगियों को ही श्राद्धीय वस्तु प्रदान करनी चाहिए। वैराज नामक पितरों की मानसी कन्या मेना हिमवान की पत्नी मानी गई हैं। मैनाक उसका पुत्र हैं तथा तीन पुत्रियां उमा, एकपर्णा, अर्पणा उनके नाम हैं। ये सभी कन्याएं योगाभ्यास में निपुण, कठोर व्रत में तत्पर तथा लोक में सर्वश्रेष्ठ विष्णु को तथा एक ब्रह्माजी को प्रदान कर दी।

2. अग्निष्वात्त नामक देव पितृ गण – मरीचि के वंशज देवताओं के पितृगण जहां निवास करते हैं वे लोक सोमपथ के नाम से विख्यात है। देवता लोग उन पितरों का ध्यान किया करते हैं। वे यज्ञपरायण पितृगण अग्निष्वात्त नाम से प्रसिद्ध है। जहां वे रहते हैं वहां पर अच्छोदा नाम की एक नदी प्रवाहित होती है, जो इन्हीं पितरों की मानसी कन्या है, (अच्छोद नदी और अच्छोद सरोवर वर्तमान में कश्मीर में है तथा परम प्रसिद्ध है) प्राचीन काल में पितरों ने वहीं एक अच्छोद नामक सरोवर का निर्माण भी किया था पूर्वकाल में अच्छोदा ने वर्षों तक कठोर तपस्या की उसकी तपस्या से संतुष्ट होकर पितृगण उसे वर प्रदान करने के लिए उसके सामने प्रकट हुए। वे सबके सब दिव्य रूप धारी थे, उनके शरीर पर दिव्य सुगन्ध का अनुलेप लगा हुआ था तथा गले में दिव्य पुष्पों की माला लटक रही थी। वे सभी नवयुवक कामदेव के समान सौंदर्यशाली थे। उन पितरों में अमावसु नामक पितर को देखकर वर की अभिलाषा रखने वाली सुन्दरी अच्छोदा व्यग्र हो उठी और उनके साथ रहने की याचना करने लगी। इस मानसिक कदाचार के कारण सुन्दर अच्छोदा योग से भ्रष्ट हो गई और इसके परिणाम स्वरूप वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वर्गलोक से भूतल पर गिर पड़ी, उसने पहले कभी पृथ्वी का स्पर्श नहीं किया था। जिस तिथि को अमावसु ने अच्छोद ने प्रणय निवेदन को ठुकराया था वह तिथि उनके धैर्य के प्रभाव से लोगों द्वारा अमावस्या नाम से प्रसिद्ध हो गई। इसी कारण यह तिथि पितरों की परम प्रिय है इस तिथि में किया गया श्राद्धादि कार्य अक्षय फल देता है।

3. वहिर्षद नामक यज्ञ पितृ गण - स्वर्ग में विभ्राज नामक अत्यंत तेजस्वी लोक है जहां पर श्रेष्ठ उत्तम महिर्षद नामक पितृगण निवास करते हैं। जहां मयूरों से युक्त हजारों विमान विद्यमान रहते हैं। जहां संकल्प के लिए प्रयुक्त होने वाले वर्हि (कुशा) फल देने के लिए उन्मुख होकर उपस्थित रहते हैं एवं जहां की शलाओं में पितरों को श्राद्ध प्रदान करने वाले लोग आनन्द मनाते रहते हैं। देवताओं और असुरों के गण, गंधर्वों और अप्सराओं के समूह तथा यक्षों तथा राक्षसों के समुदाय स्वर्ग में उन पितरों के निर्मित यज्ञ का विधान करते रहते हैं।

4. सुकाली नामक शूद्र पितृगण - महर्षि वशिष्ठ के पुत्र रूप सुकाली नामक पितर हैं ये सब के सब मानस नामों से विख्यात हैं। अत्यन्त स्वरूप वाले तथा धर्म की मूर्ति हैं, ये सभी स्वर्ग लोक से परे ज्योतिर्मासी लोकों में निवास करते हैं, जहां श्राद्धकर्ता शूद्र भी सम्पूर्ण कामनाओं की पूर्ति करने वाले विमानों में विराजमान होकर क्रीड़ा करते रहते हैं। इन पितरों की गौ नाम की मानसी कन्या स्वर्ग लोक में विराजमान है जो साध्यों की कीर्ति का विस्तार करने वाली हैं।

5. आज्यषा नामक वैश्य पितृगण - अभीष्ट कामनाओं एवं भोगों का फल प्रदान करने वाले काम दुध नामक अन्य पितृलोक में उत्तम व्रत परायण सुस्वधा नाम वालें पितर निवास करते हैं। वे पितर ही प्रजापति कर्दम के लोकों आज्यप्पा नाम से प्रसिद्ध है। महर्षि पुलह के अंग से उत्पन्न हुए वैश्य गण उनकी पूजा अर्चना करते हैं, श्राद्धकर्ता सभी वैश्य गण इन लोकों में पहुंचकर दस हजार जन्मान्तरों में देखे और अनुभव किए हुए भी अपने हजारों माता, भाई, बहन, पिता, मित्र, संबंधी और बांधवों को देखते हैं। इन पितरों की मानसी कन्या विरजा नाम से विख्यात थी जो राजा नहुष की पत्नी और ययाति की माता थी।

6. सोमप्पा नामक ब्राह्मण पितृगण - ब्रह्माण्ड के ऊपर मानस नामक लोक विद्यमान है, उनमें अविनाशी सोमप्पा नामक पितर निवास करते हैं। ये ब्राह्मण पितर हैं, इनकी मानसी कन्या नर्मदा नाम से प्रसिद्ध है। वे सभी पितर धर्म की सी मूर्ति धारण करने वाले तथा ब्रह्मा से भी परे बतलाए गए हैं, स्वधा से उनकी उत्पत्ति हुई है। ये सभी योगाभ्यासी पितर ब्रह्मतत्व को प्राप्त करके श्रष्ठी आदी समस्त कार्यों से निवृत्त हो इस अगम मानस लोकों में विद्यमान हैं। उनकी नर्मदा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नाम की मानसी कन्या भारत के दक्षिण पय में आकर जल प्रवाहित करने वाली नदी हुई जो समस्त प्राणियों को पवित्र कर रही हैं। इन्हीं पितरों की परम्परा से मनुगण सृष्टि के प्रारंभ में प्रजाओं का निर्माण करते हैं। इस रहस्य को जानकर लोग धर्म का अभाव हो जाने पर भी सर्वदा श्राद्ध करते रहते हैं, इन्हीं पितरों की कृपा से पुन: इन्हीं के द्वारा योग परम्परा को प्राप्त करने के लिए सृष्टि के प्रारम्भ में पितरों के लिए श्राद्ध का ही निर्माण किया गया था।

7. हविष्यान नामक क्षत्रिय पितृगण - सूर्य मण्डल में मरीचि गर्भ नाम से प्रसिद्ध अन्य लोक भी हैं, जहां अङ्गिरा के पुत्र हविष्यान नामक पितर के रूप में निवास करते हैं। ये राजाओं (क्षत्रियों) के पितर हैं, जो स्वर्ग और मोक्ष रूप फल के प्रदाता हैं। जो श्रेष्ठ क्षत्रिय तीर्थों में श्राद्ध प्रदान करते हैं वे इन लोकों में जाते हैं। इन पितरों की एक यशोदा नाम की लोक मानसी कन्या थी जो पञ्चजन की श्रेष्ठ पुत्र वधू, आशु मान की पत्नी तथा महाराज दिलीप की माता और भागीरथ की पितामही थी।

(मनुष्य अपने-अपने कर्मों के अनुसार इन लोकों में पहुंचते हैं एवं जो वासनाओं के कारण इस पृथ्वी लोक पर रह जाते हैं उनके लिए उनके वंशजों का दायित्व बनता है कि वे उन्हें मोक्ष गति प्रदान करें।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष के कारण

पितर दोष आखिर क्यों होता है अर्थात् पितर कुपित जिन कारणों से हो जाते हैं यहां उन कारणों का हम अध्ययन करेंगे। पितर प्रकोप के मुख्य कारण निम्न होते हैं-

- पितरों का विधिवत श्राद्ध या तर्पण न होना
- पितरों की विस्मृति
- पितरों का अपमान
- धर्म विरुद्ध आचरण
- नाग की हत्या करना या कराना
- गौ हत्या या गौ का अपमान
- नदी, जल, कूप जल में मल-मूत्र विसर्जन
- कुल देवता अथवा कुलदेवी अथवा लोक देवता की विस्मृति
- किसी देव स्थल या तीर्थ स्थान में अपकर्म करना
- अमावस्या तिथि को संभोग करना
- गुरु स्त्री या गुरु पुत्री से संभोग
- वेश्यागमन करना
- शूद्र वर्ग से विवाह संबंध स्थापित करना
- परिवार के स्त्रियों का भ्रष्ट चरित्र होना
- भ्रूण हत्या या गर्भपात करवाना

यदि कोई परिवार उपर्युक्त कारणों से बचा रहता है तो परिवार को पितरों का कोपभाजन नहीं बनना पड़ता है, इन कारणों से सुरक्षित रहते हुए किसी भी परिवार को दैविक, दैहिक और भौतिक सुख की कोई कमी नहीं रहती है और जितने कारण उस परिवार में मौजूद रहेंगे उतना ही पितर प्रकोप परिवार में बढ़ता चला जाएगा। आगे हम उपर्युक्त कारणों की संक्षिप्त विवेचना करेंगे।

पितरों का विधिवत श्राद्ध-तर्पण न होना - पितरों को प्रसन्न करने के लिए आहुति सहित (हविष्य युक्त) पिंड प्रदान आदि कर्म ही श्राद्ध कहलाता है। श्राद्ध करने से पितर प्रसन्न होते हैं और अपने वंशजों को दीर्घायु, प्रसिद्धि, बल, तेज, धन, स्त्री, पुत्र आदि प्रदान करते हैं तथा तिल मिश्रित जल को पितरतीर्थ से अंजुली भर देना तर्पण कहलाता है। श्राद्ध का अर्थ श्रद्धा से है परंतु जब जीवित माता पिता के लिए श्रद्धा नहीं रही तो उनके मरने के बाद कहां। केवल खाना पूर्ति ही शेष रह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

गई है, जिसमें तर्पण तो आजकल किया ही नहीं जाता है, बल्कि लोग तर्पण के नाम तक से परिचित नहीं हैं ऐसी स्थिति में पितरप्रकोप होना स्वभाविक ही है।

पितरों की विस्मृति - जिन पितरों को हमारे पूर्वज मानते आए हैं और उनके श्राद्ध आदि कर्म भी विधिपूर्वक करते आए हैं। यदि नवीन पीढ़ी उन पितरों को भुला दे अथवा विभिन्न मांगलिक कार्यों के अवसर पर उन पितरों को याद न किया जाए अथवा उनको उन अवसरों में उपस्थित होने का न्योता न दिया जाए तो पितरक्रोधित हो उठते हैं और मनुष्य पितरों के प्रकोप का शिकार होता है। अतः सदैव ही मांगलिक कार्यों के अवसर पर जिस प्रकार हम गणपति को न्योता देते हैं, उसी प्रकार हमारे पूर्वज पितरों को भी भाव से सम्मान आमंत्रित करना चाहिए और उनके निमित्त उचित भोज्य सामग्री प्रदान की जानी चाहिए।

पितरों का अपमान - यदि किसी भी प्रकार से पितरों का निरादर किया जाए तो पितरक्रोधित होकर अपने वंशजों को श्राप देते हैं। जिससे उनके वंशजों को विभिन्न प्रकार की पीड़ा और कष्ट भुगतने पड़ते हैं। यहां पितरों के अपमान से तात्पर्य है कि उनके वंशज यह मानकर कि पूर्वज अब मौजूद तो हैं नहीं, और उनके द्वारा किए गए कर्मों को आलोचना करे या अपने पूर्वजों को भर्त्सना करें अथवा अपने पूर्वजों द्वारा किए गए शुभ कर्मों की निन्दा करे। जबकि मरने के बाद पूर्वज पितर योनि में जाते हैं और छाया रूप में सदैव परिवार के साथ रहते हैं ऐसे में उनका निरादर किया जाए तो उनके कोप का भाजन मनुष्य बनता है।

धर्म विरुद्ध आचरण - अपने कुल के धर्म और मर्यादाओं का उल्लंघन भी पितरप्रकोप का कारण बनता है। यदि सात्विक कुल में कोई व्यक्ति शराब का सेवन करने लग जाए तो यह आचरण उसके कुल धर्म के विपरीत माना जाएगा। ऐसा आचरण करने से प्रत्यक्ष रूप से हम देखते हैं कि उस परिवार के लोग आचरण भ्रष्ट व्यक्ति से कुपित होते हैं। उसी प्रकार हमारे पितर भी ऐसे व्यक्ति से कुपित होकर उसे श्राप देते हैं और वह व्यक्ति अतः सम्भवतः ऐसे भ्रष्ट आचरण से बचना चाहिए।

नाग हत्या करना या कराना - पितरप्रकोप का यह बहुत ही महत्वपूर्ण कारण है ऐसे परिवारों की कमी नहीं, जिन्होंने कभी नाग हत्या की हो अथवा करवाई हो और उसके बाद वो पितरप्रकोप से पीड़ित हुए, आर्थिक रूप से बिलकुल बर्बाद हो गए, स्थान-स्थान पर भटकने के बाद भी उनका निदान सम्भव नहीं हुआ। नाग हत्या एक ऐसा दोष है जिसके कारण पितरअत्यन्त क्रोधित हो जाते हैं। कई बार ऐसा होता है कि हमारा पूर्वज जब कम आयु में किसी बीमारी या दुर्घटना के कारण मृत्यु को प्राप्त होता है तो परिवार से मोह के कारण उसका

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मोक्ष नहीं होता है और वह नाग योनि में चला जाता है और समय-समय पर वह परिवार के सदस्यों की नजर में आता रहता है अब यदि परिवार के लोग उसे साधारण नाग मानकर उसकी हत्या कर दें या करवा दें तो वह पितर अत्यन्त क्रोधित होकर परिवार का विनाश कर देता है, ऐसी स्थिति में **नागबली** और **नारायण बली** से ही उसे मोक्ष संभव हो पाता है।

गौहत्या या गौ का अपमान - गौ को वेदों में देवताओं द्वारा पूजित बताया गया है। गौ के शरीर में सभी देवताओं का निवास माना गया है, अत: गाय को सभी शास्त्रों में पूजनीय कहा गया है पितरों को भी गाय अत्यन्त प्रिय है। क्योंकि गौ का दिया गया श्राद्ध का भोजन पितरों को भी मिलता है। अब अगर किसी व्यक्ति के हाथ से गौ हत्या हो जाए अथवा कोई व्यक्ति गौ को किसी भी प्रकार से अपमान करे अर्थात् अकारण ही गाय को प्रताड़ित करे तो भी पितरप्रकोप का शिकार हो जाता है।

नदी जल या कूप जल में मल-मूत्र विसर्जन - जल की जीवन में महत्ता से कौन परिचित नहीं है। निर्मल बहती कोई भी नदी गंगा के समान ही पवित्र होती है। अब यदि कोई व्यक्ति नदी में मल-मूत्र का विसर्जन करता है तो जल दूषित होता है। समस्त देवी-देवताओं और पितरों को जल से ही तर्पण किया जाता है जिससे देव और पितरों को अक्षय तृप्ति होती है, अर्थात् पितरों और देवों को जल अति प्रिय है। ऐसे निर्मल और पवित्र जल को मल-मूत्र से दूषित करने पर पितर कुपित होकर मनुष्य को दण्डित करते हैं और व्यक्ति पितरप्रकोप के कारण विभिन्न व्याधियों से घिरकर कष्ट पाता है।

कुलदेवता अथवा कुल देवी या लोक देवता की विस्मृति - सामान्यतया सभी परिवारों में कुल परम्परा के अनुसार किसी कुल देवता या देवी की मान्यताएं होती हैं जिन्हें विशेष अवसरों पर याद किया जाता है या किसी मांगलिक कार्य के समय उनके स्थान पर जाकर माथा टेका जाता है या अन्य प्रकार से उनकी मनौती पूरी की जाती है जो कि अलग-अलग परिवारों में अलग-अलग होती है। इसी प्रकार से अनेक परिवारों में लोक देवताओं की मनौती होती है यहां लोक देवता से तात्पर्य हमारे पूर्वजों से पूजित चले आ रहे किसी स्थान विशेष को देवता से है, जब कोई नई पीढ़ी इन कुल देवता, देवी, लोक देवता को विस्मृत कर देती है तो पितरप्रकोप होता है। क्योंकि हमारे पूर्वज जब देखते हैं कि जिन देवी-देवताओं को हमने अपने जीवन में पूजा उनको हमारे वंशज नहीं मान रहे हैं तो वे कुपित हो जाते हैं और व्यक्ति पितरदोष से पीड़ित होता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

किसी देव स्थल या तीर्थ स्थान में अपकर्म करना - किसी देव स्थान या मन्दिर आदि पूजा अर्चना के स्थान होते हैं और अत्यन्त पवित्र माने जाते हैं। इसी प्रकार तीर्थ स्थान तो बने ही मनुष्यों के पापों को नष्ट करने के लिए। तीर्थाटन मनुष्य अपने द्वारा किए गए पापों का प्रायश्चित् करने के लिए करता है और मन्दिर में ईश्वर की पूजा अर्चना के लिए, दोनों ही स्थान अत्यन्त पवित्र और पाप मुक्ति के साधन माने गए हैं। ऐसे पवित्र स्थलों में यदि कोई मनुष्य कोई भी ऐसा कार्य करे जिसका इन पवित्र स्थानों में निषेध हो तो वह मनुष्य अपने पितरों का अपमान ही करता है। फलत: वह पितृदोष का कोप भाजन होकर कष्ट भुगतता है।

अमावस्या तिथि को संभोग करना - अमावस्या तिथि को समस्त शास्त्रों में पितरकार्य हेतु प्रशस्त माना गया है। इस दिन पितर अपने-अपने लोकों पृथ्वी लोक पर गमन करते हैं और पूरी अमावस्या तिथि तक अपने परिवार में मौजूद रहते हैं और यह आशा करते हैं कि उनके वंशज उन्हें श्राद्ध-तर्पण से संतुष्ट करेंगे। अर्थात् अमावस्या तिथि में पितरहमारे घर में मौजूद रहते हैं। हम उन्हें देख नहीं पाते हैं, परन्तु वे हमें देख सकते हैं। अब यदि उनकी उपस्थिति में संभोग कर्म किया जाए तो वे यह मानकर कि हमने उनके सामने बेशर्मी का प्रदर्शन किया है। रुष्ट होकर श्राप देकर चले जाते हैं और व्यक्ति पितरप्रकोप का शिकार होता है। अत: अमावस्या तिथि को संभोग कर्म का बहिष्कार रखना चाहिए।

गुरु स्त्री या गुरु पुत्री से संभोग करना - हमारे शास्त्रों में गुरु की बड़ी महिमा गाई है शास्त्रों ने गुरु को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के तुल्य माना है और गुरु स्त्री को माता के तुल्य एवं गुरु की पुत्री को बहन-बेटी के सदृश्य माना गया है। अब यदि कोई मनुष्य अपने गुरु की स्त्री या पुत्री के साथ संभोग करे तो वह देव दोष के साथ-साथ पितरप्रकोप का भागीदार भी बनता है। जिसके कारण मनुष्य धनहीन होकर भटकता है और अपने कुकृत्य का फल पाता है।

वेश्यागमन - वेश्यागमन एक ऐसा अपराध है जिसे देव और पितर कभी क्षमा नहीं करते हैं। जो व्यक्ति अपने पूर्वज और कुल की मर्यादाओं को नजर अंदाज कर वेश्यागमन करता है, उसके पुण्य उसी क्षण नष्ट हो जाते हैं और उसके पूर्वजों की कृपा दृष्टि उस पर से हट जाती है अपितु पितर कुपित होकर उस मनुष्य को श्राप देते हैं, जिसके कारण वह मनुष्य जीवन में अनेक दुख और कष्टों को भोगता है अत: मनुष्य को वेश्यागमन जैसे अक्षम्य अपराध से अपने कुल को कलंकित होने से बचाना चाहिए।

शूद्र वर्ग में विवाह सम्बन्ध करना - यदि कोई उच्चवर्गीय कुल या क्षत्रिय कुल का मनुष्य शूद्र वर्ग की स्त्री से विवाह संबंध स्थापित करता है तो वह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरप्रकोप का भागी होता है क्योंकि निम्न कुल में विवाह संबंध स्थापित करने से मनुष्य आदिकाल से चली आ रही अपनी वंश परम्परा को तोड़ता है और कुल को कलंकित करता है। हमारे कुल के पितर ऐसे व्यक्ति पर कुपित होते हैं और उसे दण्डित करते हैं।

परिवार की स्त्रियों का भ्रष्ट चरित्र होना - शास्त्रों में स्त्री को लक्ष्मी कहा गया है और स्त्री को कुल की मर्यादाओं में रहने को भी बताया गया है, शुभ लक्षणों वाली स्त्रियां जहां कुल की कीर्ति को आगे बढ़ाने वाली होती हैं वहीं दूसरी ओर अशुभ लक्षणों से युक्त स्त्रियां कुल की कीर्ति को कलंकित करने वाली होती हैं, फिर यदि परिवार की स्त्रियों का चरित्र ही भ्रष्ट हो जाए तो ऐसे परिवार की रक्षा तो ईश्वर भी नहीं कर सकता। ऐसे परिवार पितरके कोप के भाजन बनते हैं और पितरों के श्राप के कारण दुखी रहते हैं।

भ्रूण हत्या या गर्भपात - भ्रूणहत्या और गर्भपात कराने वाले मनुष्य के पाप का प्रायश्चित् बड़ा ही कठिन है, क्योंकि भ्रूण हत्या या गर्भपात अप्रत्यक्ष रूप से प्रकृति का उल्लंघन है। क्योंकि प्रकृति जिस जीव का जीवन निश्चित् कर देती है, मनुष्य उस जीव से उसके जन्म लेने की स्वतंत्रता को छीन लेता है और उस जीव को पुनः नए जन्म के लिए भटकना पड़ता है, यह सीधे-सीधे हत्या ही है, जिसका दण्ड मनुष्य को निश्चित् ही भुगतना होता है। भ्रूण हत्या करने वाले मनुष्य के पितर भी उस मनुष्य से अपनी कृपा दृष्टि को छीन लेते हैं और अपने कोप का शिकार बना देते हैं। बुद्धिमानी मनुष्य को चाहिए कि उपरोक्त सभी कारणों से बचा जाए ताकि पितरों की कृपा दृष्टि उस पर बनी रहे और जीवन तथा परिवार सदैव सुखी, सम्पन्न और खुशहाल बना रहे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरदोष एक नजर में

जन्म कुण्डली में निम्नांकित ग्रह स्थिति होने पर पितर दोष माना जाता है।

- लग्न में वृश्चिक राशि का उदय होना।
- राहु-सूर्य की युति 6-8-12 भाव में, या सूर्य-केतु की युति।
- चंद्र-राहु की युति या शनि-राहु की युति।
- सातवें भाव में राहु-शनि की युति से चंडाल योग।
- ग्यारहवें भाव में, राहु या केतु या 4-9वें स्थान में राहु या केतु-चंद्र की युति।
- राहु-गुरु की पंचम भाव में युति से चांडाल योग।
- चंद्र पर मंगल, राहु, केतु, शनि की पूर्ण दृष्टि।
- चंद्र, सूर्य, कालसर्प योग 4-10 स्थान में बैठा हो।
- पंचम नीच के सूर्य-शनि नवांश में हों या उनके दोनों तरफ पाप ग्रह हों।
- पंचम पुत्र स्थान का स्वामी सूर्य हो, 9-5 स्थान में क्रूर ग्रह हों।
- गुरु सिंह का हो और पुत्र स्थान का स्वामी सूर्य के साथ हो।
- लग्नेश दुर्बल होकर, पंचम भाव में हो और पंचमेश सूर्य के साथ हो।
- लग्न और पंचम में पाप से ग्रसित और पंचम का पति दसवें और दशम का पति पांचवें में हो।
- सूर्य, मंगल, शनि, लग्न, पांचवें घर हो, 8-11 में राहु या गुरु हो।
- बारहवें भाव का स्वामी लग्न में, आठवें स्थान का स्वामी पंचमेश की राशि में और दशम का स्वामी अष्टम भाव में।
- लग्न से 8 स्थान पर सूर्य-शनि पंचम भाव में, पंचम का मालिक राहु के साथ, लग्न में पाप ग्रह।
- 6-10 के मालिक पंचम भाव में तथा कारक राहु से युक्त हो।
- मेष राशि से कन्या राशि तक सूर्य-राहु की युति हो, तो कष्ट कम।
- तुला से मीन तक सूर्य-राहु की युति से, उग्र दोष के कारण, मनुष्य को कदम-कदम पर विपत्तियों का सामना करना पड़ता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योतिष शास्त्र में पितर दोष

ज्योतिषीय दृष्टिकोण से पितर दोषों को जानने के लिए जातक की जन्मपत्री का होना अनिवार्य है। सामान्यतया पितर दोषों से उत्पन्न कष्टों का प्रकार इस बात पर निर्भर करता है कि **पितर दोष** किन ग्रहों के योग से और किस भाव में स्थित होकर दोष उत्पन्न कर रहे हैं। यह एक कटु सत्य है कि जातक को जन्मपत्री में कितने ही अच्छे योग क्यों न उपस्थित हो परन्तु जातक की जन्मपत्री में यदि **पितर दोष** है तो जातक तब तक सुखी नहीं हो पाता जब तक कि पितर दोषों का निराकरण नहीं करा लिया जाए। अच्छा व्यापार होते हुए भी आर्थिक तंगी होना, शुभ और मांगलिक अवसर पर ग्रह क्लेश होना या व्यापार की मंदी गति होना, संतान का न होना ये सब पितर दोषों के लक्षण होते हैं।

वृहत् पाराशर होराशास्त्र में पितर दोषों का वर्णन संतान पक्ष के संदर्भ में हुआ है जिसका विस्तृत विवरण आगे करेंगे, यहां पितृदोष दर्शाने वाले सामान्य योगों का विवेचन करेंगे।

पितर दोष संख्या : 1 – सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र इनमें से किसी भी ग्रह की युति यदि राहू से हो तो पितर दोष होता है भले ही यह युति जन्मकुण्डली के किसी भी भाव में क्यों न हो। हां यह बात अलग है कि जातक को होने वाली परेशानी किस की होगी यह इस बात पर निर्भर करती है कि राहू के साथ युति किस ग्रह की है और किस भाव से संबंध रखती है।

राहू-सूर्य की युति :

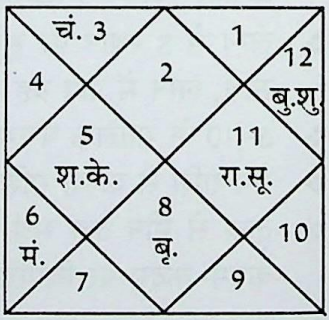

इस कुण्डली में राहू + सूर्य की युति दशम भाव में है, सूर्य चतुर्थेश होकर दशम में राहू से युत है, जातक को पितर दोष के कारण व्यापार में नुकसान उठाना पड़ता है और ग्रह सुख की भी कमी रहती है। जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि राहू के साथ अन्य ग्रह की युति जिस भाव में होगी, फल भी वैसा ही होगा अत: फलित करते समय सावधान रहना चाहिए क्योंकि कुण्डली में यदि रा+सू की युति यदि लग्न में रहे तो जातक भी स्वास्थ्य को हानि होगी और गृह क्लेश रहेगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राहू+शुक्र की युति :

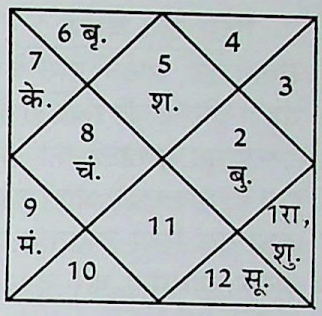

इस कुण्डली में राहू और शुक्र की युति नवम स्थान में है योग संख्या 1 के अनुसार जातक को पितरदोष होगा, चूंकि यह युति नवम भाव में है, ज्योतिष शास्त्र में नवम स्थान को भाग्य स्थान कहा है। शुक्र तृतीयेश और दशमेश है, अत: जातक को व्यापार में हानि, पुण्य का क्षय, पिता से परेशानी अथवा पिता से सहयोग नहीं मिले, भाईयों से असहयोग अथवा भाईयों का न होना जैसे दुष्परिणाम भोगने पड़ते हैं, इसी प्रकार से अलग-अलग लग्नों में अलग-अलग भावों में भाव स्थिति के अनुसार राहू और शुक्र की युति का फल मिलता है।

राहू + चंद्र की युति :

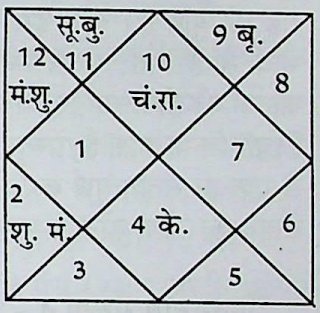

इस कुण्डली को देखिए कुण्डली में मकर लग्न है लग्न में ही राहू और चन्द्र की युति भी है अतएव पितरदोष होता है, कुण्डली में चन्द्रमा सप्तमेश होकर राहू से लग्न में युत है इसका फलित देखें।

◦ लग्न में युति के कारण शारीरिक परेशानी अर्थात् शरीर को हानि होती है, वास्तव में इस जातक के साथ राहू की दशा में एक एक्सीडेंट हुआ और एक पैर में फ्रेक्चर होने के कारण आज भी जातक की चाल स्वभाविक नहीं है।

◦ चंद्रमा सप्तमेश भी है और राहू, चन्द्र की युति से सप्तम भाव दृष्ट है अर्थात् जातक को स्त्री संबंधी परेशानी होनी चाहिए अथवा विवाह में विलंब होना चाहिए।

राहू+मंगल की युति :

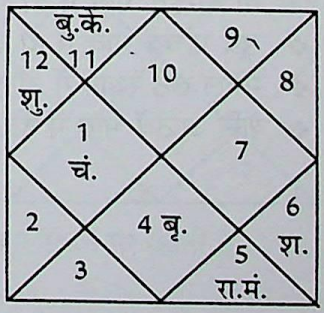

इस कुण्डली को देखिए इस जातक की मां बचपन में ही गुजर गई। पिता, स्वयं एवं छोटे भाईयों को अपने हाथ से बनाकर खाना खाना पड़ा। प्रस्तुत कुण्डली में राहू+मं. को युति अष्टम भाव में है, मंगल चतुर्थेश है और एकादशेश भी पितर दोष पाया जाता है आज भी इस जातक के परिवार में शांति की स्थिति निर्मित नहीं हो पाई है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष संख्या 2 – यदि दशम स्थान का स्वामी छठे, आठवें, बारहवें भाव में हो और इसका राहू से दृष्टि या युति संबंध हों तो पितरदोष होता है।

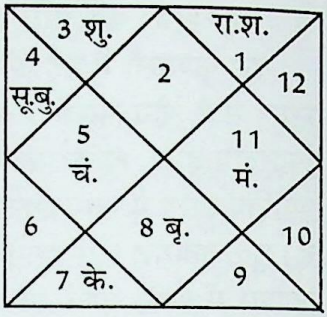

प्रस्तुत कुण्डली को देखिए, इसमें भी पितर दोष है, जातक की आधी उम्र बीत चुकी है, लेकिन अभी तक स्थिर व्यवसाय प्राप्त नहीं है अब तक अनेक व्यवसाय कर चुका है, लेकिन सफलता नहीं मिलती।

पितर दोष संख्या 3 – नीच राशि के सूर्य की राहू या शनि की साथ युति हो तो पितर दोष होता है।

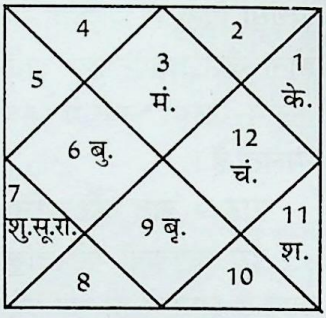

इस कुण्डली को देखिए मिथुन लग्न की कुण्डली में पंचम भाव में नीच के सूर्य के साथ राहू की युति है। चूंकि इस युति का संबंध पांचवें भाव से है अत: पंचम स्थान से संबंधित बाधा जातक को होनी चाहिए। पंचम स्थान से संतान का विचार किया जाता है, प्रस्तुत कुण्डली वाले जातक के तीन संताने हैं, लेकिन उनमें से एक ही संतान पूर्ण रूप से स्वस्थ है, बाकी दो संतानें मूक और बधिर हैं एक संतान का ठीक होना संभवतया पंचमेश का पंचम स्थान में विराजना है।

पितर दोष संख्या 4 – राहू, सूर्य, मंगल और शनि क्रमश: पहले, पांचवें, छठे तथा आठवें भाव में हो तथा लग्नेश त्रिक भवन में हो गए तो पितर दोष होता है।

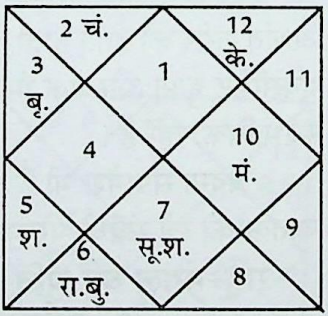

इस योग का विचार करने से निम्न स्थितियां बनती हैं।

- राहू पहले भाव में हो और लग्नेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो।
- सूर्य पांचवें भाव में हो और लग्नेश त्रिक भवन में हो।
- मंगल छठे स्थान में और लग्नेश त्रिक भवन में हो।
- शनि आठवें भाव में हो और लग्नेश त्रिक भवन में हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष से संतान कष्ट

पितर अपना सर्वाधिक प्रभाव संतति और व्यवसाय फिर परिवार पर डालते हैं। **'बृहत पाराशर होराशास्त्रम'** ग्रंथ के **पूर्वजन्म श्रापद्योकाध्याय** अध्याय में सर्पश्राप, पितर श्राप आदि को संतान संबंधी प्रकरण में दिया गया है। यहां पितर दोष को पितर श्राप के नाम से पुकारा गया है और संभवतया संतान के पक्ष में इसे इसलिए रखा गया है क्योंकि वंश को आगे चलाने के लिए संतान का होना आवश्यक है साथ में विभिन्न श्रापों के दोष निवारण भी इस ग्रंथ में दिए गए हैं।

पितर दोष अथवा श्राप का सबसे कष्टदायक पहलू है, संतान का ना होना, अथवा सिर्फ कन्या संतान का होना अथवा संतान हो तो सही लेकिन या तो वह मंद बुद्धि होती है अथवा जन्म से ही शारीरिक विकार साथ में लाती है।

अब हम पंचम संतान स्थान अथवा संतति निरोध से संबंधित पितर दोषों का अध्ययन विस्तार से करेंगे। ऋषि पाराशर जी ने आठ प्रकार के श्राप या दोषों का वर्णन ज्योतिषीय परिप्रेक्ष्य में किया है एवं इन दोषों के ज्योतिषीय योग भी दिए हैं और इन दोषों की निवृत्ति के उपाय भी आगे हम विस्तार से विवेचन करेंगे।

सर्प श्राप या सर्पदोष के कारण संतति पीड़ा के ज्योतिष योग

भारतीय ज्योतिष में राहू को सर्प माना गया है यदि पंचम स्थान जो कि संतान स्थान है के स्वामी ग्रह या पंचम भाव अथवा पंचम स्थान के कारक ग्रह बृहस्पति का राहू से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध हो तो सर्प दोष होता है ऋषि पाराशर ने इसी प्रकार के योगों का वर्णन सर्प श्राप अध्याय में किया है, आइए उन योगों को देखते हैं।

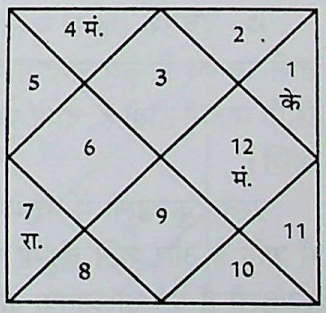

योग संख्या एक - यदि पंचम स्थान में राहू एवं उस पर मंगल की दृष्टि हो या मंगल की राशि वृश्चिक हो तो सर्पश्राप से संतान की हानि होती है, यहां दो प्रकार की स्थिति दर्शाई गई है।

❖ पंचम स्थान में राहू हो और मंगल की उस पर दृष्टि हो, मंगल की पूर्ण दृष्टि 1, 4, 7, 8वीं होती है अत: मंगल कुण्डली के 10वें, 11वें अथवा दूसरे स्थान में जब स्थित होगा तो उसकी दृष्टि पंचम स्थान पर आती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि किसी जातक की कुण्डली में प्रस्तुत कुण्डली के अनुसार ग्रह स्थित हो कुण्डली में राहू पंचम स्थान में दर्शाया गया है और मंगल दसवें, ग्यारहवें, दूसरे स्थान पर दर्शाया गया है क्योंकि मंगल को इन स्थितियों में हो, यह ग्रह पांचवें स्थान को देखता है।

❖ योग संख्या एक के अनुसार दूसरी स्थिति इस प्रकार बताई गई है कि पंचम स्थान में राहू हो और पंचम स्थान में वृश्चिक राशि हो अर्थात् यदि किसी कुण्डली में राहू पंचम स्थान में वृश्चिक राशि का होकर बैठ जाए जो कि मंगल की राशि है तो जातक को सर्प दोष के कारण संतान की हानि होती है।

प्रस्तुत कुण्डली में पंचम स्थान में वृश्चिक राशि है और राहू पंचम स्थान में विराजमान हैं, यदि ऐसी स्थिति किसी जातक की जन्म कुण्डली में बने तो उस जातक को सर्प दोष के कारण संतान की हानि होगी, यहां उदाहरण कुण्डली में अन्य ग्रहों की स्थिति को नहीं दर्शाया गया है, यह कुण्डली मात्र योग का एक उदाहरण है।

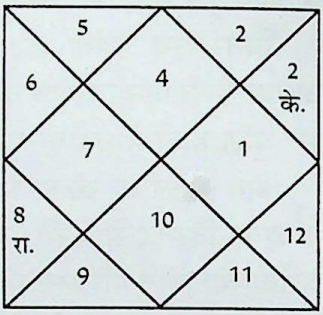

योग संख्या दो – पंचमेश राहू से युक्त, पंचम में शनि हो और चंद्रमा से युत या दृष्ट हो तो सर्प श्राप से संतान नष्ट होती है या संतान की हानि होती है। उपरोक्त योग में स्थिति निम्न प्रकार से बनती है जो दो प्रकार की होती है–

❖ पंचमेश राहू से युक्त हो शनि पंचमस्थ हो और चन्द्रमा से युत हो।

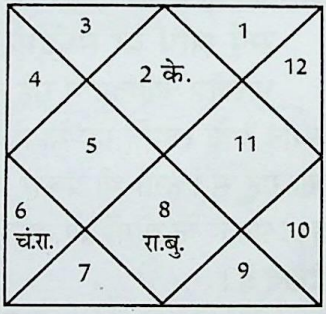

❖ पंचमेश राहू से युक्त हो शनि पंचमस्थ हो और चन्द्रमा से दृष्ट हो। जो तभी सम्भव है जब चन्द्रमा एकादश भाव में हो क्योंकि चन्द्रमा की पूर्ण दृष्टि सिर्फ सातवीं होती है, दोनों प्रकार की स्थितियों का उदाहरण कुण्डली से अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुत कुण्डली में पंचमेश जो कि बुध ग्रह है, राहू से युक्त है, पंचम स्थान में शनि है और शनि चंद्रमा से युक्त है अत: इस प्रकार की स्थिति यदि किसी कुण्डली में बने तो जातक को सर्पदोष के कारण संतान की हानि होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या तीन - संतान का कारक ग्रह गुरु राहू से युक्त हों पंचमेश बलहीन हो लग्नेश मंगल से युक्त हो तो सर्प श्राप से संतान कष्ट होता है।

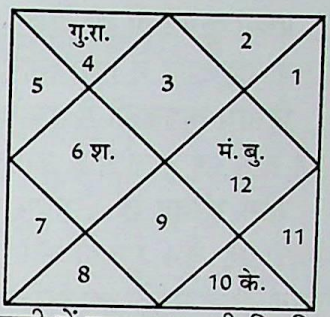

प्रस्तुत कुण्डली में ग्रहों की स्थिति देखिए, संतान का कारक गुरु, राहू से युक्त दूसरे स्थान में बैठा है। पंचमेश शुक्र चतुर्थ स्थान में नीच का होने से बलहीन है एवं लग्नेश बुध मंगल के साथ दशम स्थान में विराजमान है, यदि किसी जातक की कुण्डली में इस प्रकार की स्थिति पाई जाए तो उस जातक को सर्प श्राप से संतान की हानि होगी।

योग संख्या चार - संतान कारक ग्रह गुरु मंगल से युक्त हो और लग्न में राहू हो और पंचमेश छठे, आठवें या बारहवें भावों में से किसी भी भाव में हो तो संतान की हानि होगी। प्रस्तुत कुण्डली को देखें, गुरु जो कि पांचवें भाव का कारक ग्रह है, नवम स्थान में मंगल से युक्त है। राहू लग्न भाव में विराजमान होकर पंचम स्थान से दृष्टि संबंध बनाता है और पंचमेश जो कि बुध है बारहवें स्थान में गया है। कुण्डली में योग संख्या चार के अनुसार सर्पश्राप होता है।

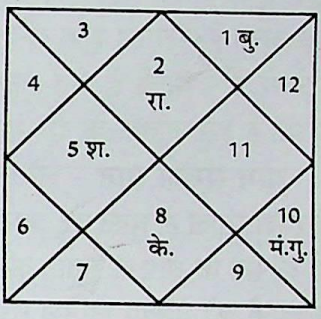

योग संख्या पांच - मंगल की राशि में मंगल से युक्त पंचमेश बुध हो और लग्न में राहू हो तो सर्प के श्राप से संतान की हानि होती है। इस योग के अनुसार बुध का पंचमेश होना आवश्यक है, ऐसी स्थिति में यह योग केवल वृष लग्न और कुम्भ लग्न की कुण्डलियों में ही घटित होगा, क्योंकि कुम्भ लग्न की कुण्डली में पंचम स्थान में मिथुन राशि आती है, जिसका स्वामी बुध है और वृष लग्न की कुण्डली में पंचम स्थान में कन्या राशि आती, जिसका स्वामी भी बुध ही है अन्य लग्नों में बुध पंचमेश नहीं बनता है।

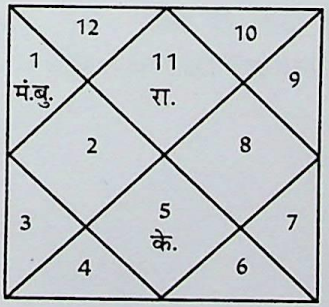

कुण्डली (1)

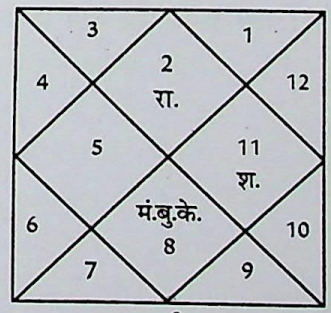

कुण्डली (2)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रथम कुण्डली को देखिए पंचमेश बुध मंगल की राशि मेष में मंगल से युक्त है तथा राहू लग्न में विराजमान है, अत: कुण्डली सर्प दोष से ग्रसित है।

द्वितीय कुण्डली में पंचमेश बुध मंगल से युक्त मंगल की ही राशि वृश्चिक में है तथा राहू लग्न में है फलत: यह स्थिति भी सर्प दोष को दर्शाती है।

योग संख्या छः - पंचम भाव में सूर्य, शनि, मंगल, राहू, बुध, गुरु हो और पंचमेश तथा लग्नेश निर्बल हो तो सर्प के श्राप से संतान की हानि होती है। यह कुण्डली मिथुन लग्न की है, पंचम स्थान में सूर्य, बुध, मंगल, राहू, गुरु, शनि स्थित है। लग्नेश बुध अस्त है पंचमेश शुक्र छठे भाव शत्रु राशि गत होने से होने वाली है अत: कुण्डली सर्प श्राप से ग्रसित है इस जातक के दो संतानें हैं दोनों ही संतानें गूंगी और बहरी हैं।

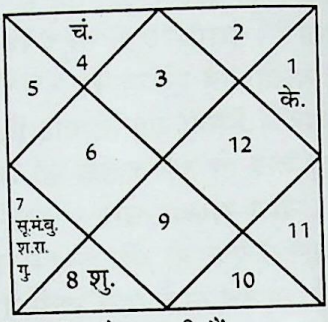

योग संख्या सात - लग्नेश राहू से युक्त हो, पंचमेश मंगल से युक्त हो, कारक गुरु राहू से युक्त हो तो सर्प के श्राप से संतान की हानि होती है। इस कुण्डली को देखिए लग्नेश बुध और पंचम स्थान का कारक गुरु दूसरे स्थान में राहू से युक्त होकर बैठे हैं तथा पंचमेश शुक्र मंगल से युक्त होकर सातवें स्थान में विराजमान है योग संख्या सात के अनुसार इस प्रकार की स्थिति किसी जातक की कुण्डली में बने तो जातक को सर्प श्राप के कारण संतान की हानि होती है।

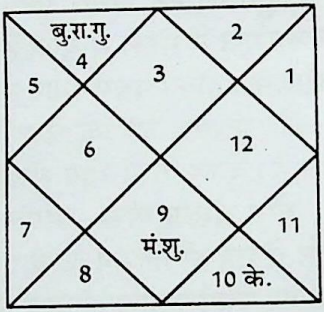

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर श्राप के कारण संतति निरोध

पितर श्राप के कारण बनने वाले ज्योतिषीय योगों में सूर्य ग्रह की प्रधानता रहती है क्योंकि भारतीय ज्योतिष में सूर्य को पिता कहा गया है। आईए संतति निरोधक पितर श्रापों को ज्योतिषीय योगों का विस्तृत अध्ययन करते हैं।

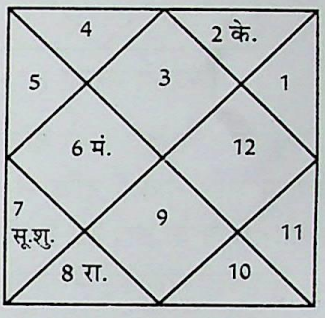

योग संख्या एक - पंचम स्थान में सूर्य अपनी नीच राशि में शनि के साथ हो और पंचम भाव के आगे एवं पीछे के भाव अर्थात् चतुर्थ एवं छठे भाव में पाप ग्रह हो तो पिता के श्राप से संतान की हानि होती है। इस योग में एक महत्वपूर्ण बात याद रखने की है, योग में सूर्य को पंचम स्थान में नीच का होना अनिवार्य माना गया है। सूर्य तुला राशि में नीच का होता है, अब पंचम स्थान में तुला राशि केवल मिथुन लग्न की कुण्डली में ही होती है, अत: उक्त योग केवल मिथुन लग्न की कुण्डली में ही संभव है। प्रस्तुत कुण्डली में पंचम स्थान में सूर्य अपनी नीच राशि में है और शनि से युक्त भी है एवं उसके पीछे के भाव चतुर्थ एवं आगे के भाव छठे भाव में पाप ग्रह मंगल और राहू है, अत: इस प्रकार के योग वाली कुण्डली किसी जातक की हो तो उसको पितरदोष के कारण संतान कष्ट होता है।

योग संख्या दो - पुत्र स्थान में सूर्य हो त्रिकोण में पाप ग्रह हो या पाप ग्रह से देखे जाते हैं तो पिता के श्राप से वंश की क्षति होती है। यहां इस योग में त्रिकोण में पाप ग्रह की स्थिति अथवा त्रिकोण को पाप ग्रहों से देखे जाना लिखा है, संभवत: पाराशर जी ने यहां त्रिकोण का उल्लेख पंचम भाव के संदर्भ में किया है क्योंकि दूसरा त्रिकोण नवम भाव में जहां बैठकर पापी ग्रहों में केवल राहू की ही दृष्टि पंचम स्थान पर आती है हां, अन्य पाप ग्रह अन्य स्थानों पर बैठकर अवश्य पंचम स्थान को देख सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

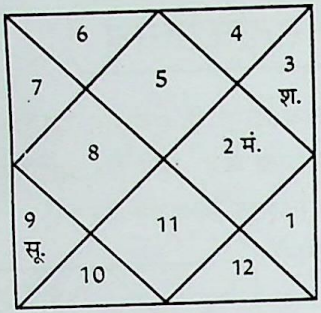

कुण्डली संख्या (1)

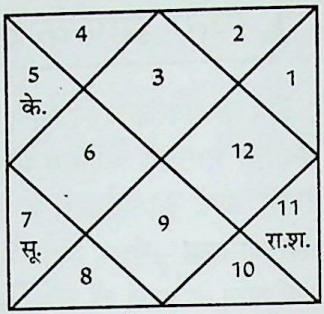

कुण्डली संख्या (2)

कुण्डली संख्या 1 को देखिए, सूर्य पंचम स्थान में है तथा मंगल आठवीं दृष्टि से तथा शनि सातवीं दृष्टि से त्रिकोण स्थान अर्थात् पंचम स्थान को देखते हैं, फलत: पिता के श्राप की स्थिति बनती है।

कुण्डली संख्या 2 में भी सूर्य पंचम स्थान में विराजमान है राहू एवं शनि नवम स्थान में है राहू नवम दृष्टि से पंचम त्रिकोण स्थान को देखता है राहू के माध्यम से शनि भी देखता है अत: कुण्डली में पितर श्राप है।

अन्य प्रकार से योग संख्या दो का विचार किया जाए तो इस योग में पंचम स्थान को पुत्र स्थान के नाम से पुकारा गया है तथा त्रिकोण में पाप ग्रह की स्थिति अथवा दृष्टि से योग होना माना गया है।

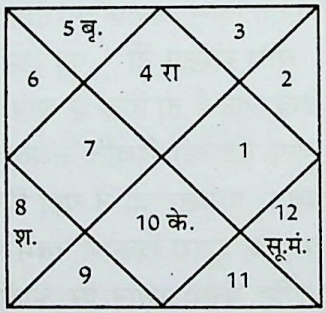

योग संख्या तीन - सूर्य की राशि में गुरु हो और पंचमेश सूर्य से युक्त हो तथा पंचम एवं लग्न में पाप ग्रह हो तो पिता के श्राप से संतान को हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए दूसरे भाव में सिंह राशि है, जिसका स्वामी सूर्य है, इस भाव में गुरु विराजमान है, पंचमेश मंगल, सूर्य से युक्त होकर नवम स्थान में है तथा लग्न में राहू एवं पंचम स्थान में शनि विराजमान है, योग संख्या तीन में वर्णित सभी स्थितियां कुण्डली में विद्यमान है, फलत: यह कुण्डली **पितर श्राप** नामक दोष को दर्शाती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

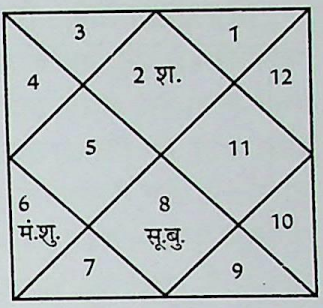

योग संख्या चार – लग्नेश दुर्बल होकर पंचम भाव में हो और पंचमेश सूर्य से युक्त हो तथा पंचम और लग्न में पाप ग्रह हो तो पिता के श्राप से संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में लग्नेश शुक्र नीच का होकर पंचम स्थान में है, पंचमेश बुध सूर्य से युक्त होकर सातवें स्थान में है तथा लग्न में पाप ग्रह शनि एवं पंचम स्थान में पाप ग्रह मंगल है योग संख्या चार से **पितर श्राप** होगा।

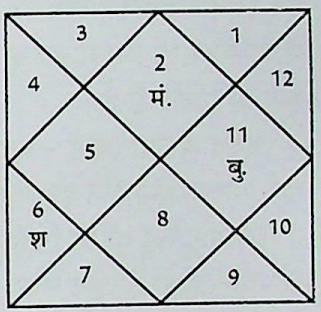

योग संख्या पांच – दशम स्थान का स्वामी पंचम स्थान में और पंचम स्थान का स्वामी दशम स्थान में हो और लग्न एवं पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो पितर के श्राप के कारण संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी शनि पंचम स्थान में और पंचम स्थान का स्वामी बुध दशम स्थान में है, लग्न में पाप ग्रह मंगल है और पंचम में पापी शनि विद्यमान है। इस प्रकार से योग संख्या पांच के अनुसार सभी स्थितियां इस कुण्डली में विद्यमान हैं।

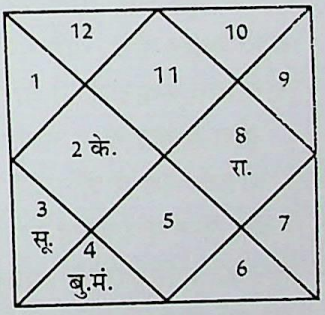

योग संख्या छः – पितर स्थान अर्थात् दशम स्थान का स्वामी मंगल हो और वह पंचमेश से युक्त हो तथा लग्न, पंचम, दशम स्थान में पाप ग्रह हो तो पितर श्राप के कारण संतान सुख की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में ग्रह स्थिति देखिए दशम भाव में वृश्चिक राशि है, जिसका स्वामी मंगल है, मंगल पंचमेश से युक्त होकर छठे स्थान में है, लग्न में शनि पापी ग्रह है, पंचम में सूर्य पापी ग्रह है तथा दशम में राहू पापी ग्रह है। इस प्रकार से योग संख्या छः के अनुसार सभी स्थितियां इस उदाहरण कुण्डली में विद्यमान हैं फलतः यह कुण्डली पिता के श्राप से पीड़ित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

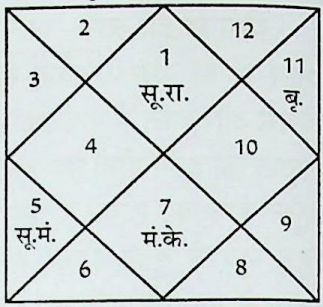

योग संख्या सात - पितर स्थान का अधिपति यानि दशमेश छठे, आठवें या बारहवें में से किसी स्थान में हो तथा कारक ग्रह बृहस्पति पाप ग्रह की राशि में हो और पंचमेश तथा लग्नेश पाप युक्त हो तो पिता के श्राप से संतान को हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में दशम स्थान का स्वामी त्रिक स्थान छठे भाव में है संतान का कारक बृहस्पति पापी ग्रह शनि की राशि कुम्भ में स्थित है तथा पंचमेश सूर्य लग्न में पापी राहू से युक्त है एवं लग्नेश मंगल सप्तम स्थान में पापी केतु से युत है इस प्रकार योग संख्या सात में वर्णित सभी नियम इस कुण्डली में विद्यमान हैं, फलत: यह कुण्डली पिता के श्राप से ग्रसित है।

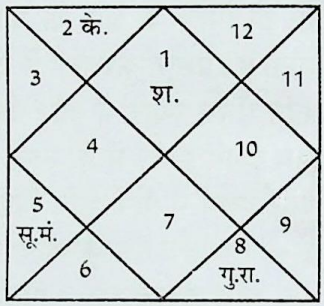

योग संख्या आठ - लग्न और पंचम भाव में सूर्य, मंगल और शनि हो और आठवें बारहवें स्थान में गुरु और राहू हो तो पितर श्राप के कारण संतान को हानि होती है तथा पंचम एवं लग्न में पाप ग्रह हो तो पितर श्राप से संतान को हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में लग्न में शनि विराजमान है, पंचम स्थान में सूर्य और मंगल स्थित है तथा राहू एवं गुरु आठवें स्थान में है, योग संख्या आठ के अनुसार पितर दोष होगा यहां यदि राहू, गुरु बारहवें स्थान में हो तो भी यह योग लागू रहेगा।

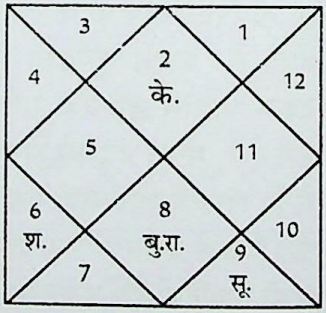

योग संख्या नौ - लग्न से आठवें भाव से सूर्य हो, पांचवें भाव में शनि हो, पंचमेश राहू से युक्त हो और लग्न में पाप ग्रह हो तो पितरदोष के कारण संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली पर नजर डालें वृष लग्न की कुण्डली है, सूर्य लग्न से अष्टम भाव में स्थित है, पांचवें भाव से शनि विराजमान है. पंचमेश बुध पाप ग्रह राहू के साथ सातवें भाव में स्थित है और लग्न में केतु बैठकर लग्न पर भी पाप प्रभाव दे रहा है। योग संख्या नौ के अनुसार सभी स्थितियां इस कुण्डली में विद्यमान है, अत: यह कुण्डली पिता के श्राप से ग्रसित है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

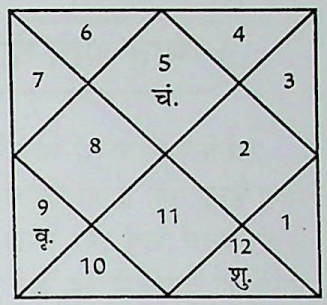

योग संख्या दस – बारहवें भाव का स्वामी लग्न में ही और अष्टमेश पांचवें भाव में हो तथा दशम स्थान का स्वामी आठवें स्थान में हो तो पितर श्राप के कारण संतति सुख में बाधा आती है। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए, बारहवें स्थान का स्वामी चन्द्रमा लग्न में है, अष्टमेष जो कि बृहस्पति है, पंचम स्थान में विराजमान है तथा दशमेश शुक्र आठवें भाव में स्थित है योग संख्या दस के नियम की संतुष्टी है, अत: यह कुण्डली **पितर श्राप** से पीड़ित है।

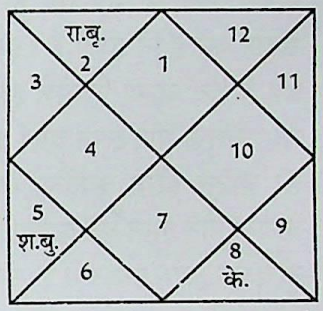

योग संख्या ग्यारह – यदि छठे भाव का स्वामी और दशम स्थान का स्वामी पंचम स्थान में विराजमान हो और कारक ग्रह राहू गुरु से युक्त होकर कुण्डली में कहीं भी हो तो पितर श्राप से सन्तान को हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में मेष लग्न दिखाया गया है, छठे भाव का स्वामी बुध एवं दशम का अधिपति शनि संयुक्त होकर पंचम स्थान में बैठे हैं तथा पंचम भाव का कारक गुरु, राहू के साथ दूसरे भाव में विराजमान हैं योग संख्या ग्यारह के अनुसार **पितर दोष** होगा।

इस प्रकार से इस अध्याय में हमने पिता के श्राप के कारण बनने वाले ग्रह योग का अध्ययन सरल रूप में किया उदाहरण कुण्डलियां इस अध्याय में दी गई हैं वे वास्तविक रूप में जातकों की ना होकर मात्र योग को समझाने की दृष्टि से दी गई हैं। फलित करते समय अपने विवेक और अनुभव को अवश्य काम में लेना चाहिए क्योंकि यदि किसी कुण्डली में **पितर श्राप** की स्थिति बनती है और हमने जातक को कह दिया आपके संतान नहीं होगी, जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता। फलित सदैव युक्ति युक्त तरीके से करें अर्थात् फलीभूत जातक से यह कहे कि आपको संतान सुख की कमी है। हमने योग संख्या दो के संदर्भ में एक जातक की कुण्डली में पितर दोष था लेकिन संतान उसके मौजूद है। हां संतान का सुख उसे नहीं है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातृ श्राप के कारण सन्तान सुख में कमी

ज्योतिष में चतुर्थ भाव से माता का विचार किया जाता है और चंद्रमा को माता माना गया है जो कि चतुर्थ भाव का कारक ग्रह भी है मातृ श्राप के निर्माण में भी चतुर्थ भाव और चन्द्रमा इन दोनों की ही अहम भूमिका रहती है, विभिन्न योगों को देखने से यह बात स्पष्ट हो जाएगी।

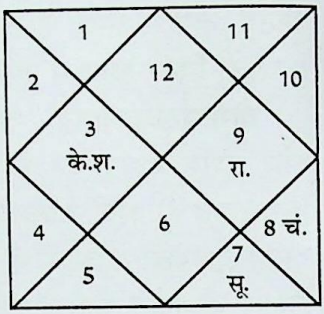

योग संख्या एक - पंचमेश चन्द्र अपनी नीच राशि में या पाप ग्रहों के मध्य में ही और चौथे, पांचवें भाव में पाप ग्रह हो तो माता के श्राप से संतान की हानि होती है। इस योग की खास बात यह है कि चंद्रमा पंचमेश होना चाहिए अर्थात् यह योग केवल मीन लग्न वाले जातकों की कुण्डली में ही घटित होगा क्योंकि चन्द्रमा की राशि कर्क केवल मीन लग्न की कुण्डली में ही पंचम भाव में पड़ती है। इस कुण्डली में चन्द्र नीच का नवम स्थान में है, पंचम स्थान तथा चतुर्थ स्थान में क्रमशः पाप ग्रह मंगल और शनि है, उपरोक्त योग घटित होता है।

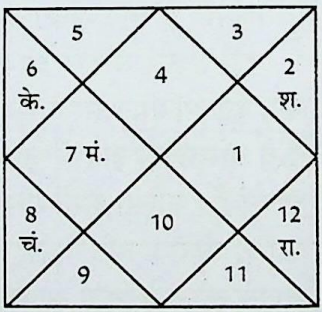

योग संख्या दो - एकादश स्थान में शनि हो और चौथे भाव में पाप ग्रह हो तथा अपनी नीच राशि में चंद्रमा पांचवें भाव में हो तो माता के श्राप से सन्तान की हानि होती है। इस योग में चंद्रमा को पंचम स्थान में नीच का होना कहा गया है, चन्द्रमा पंचम स्थान में नीच का केवल कर्क लग्न की कुण्डली में होता है, क्योंकि कर्क लग्न की कुण्डली में ही पंचम स्थान में वृश्चिक राशि आती है जो कि चंद्रमा की नीच राशि है। कुण्डली में दर्शाई गई ग्रह स्थितियों को देखिए, चन्द्रमा पंचम स्थान में नीच राशि का है, एकादश स्थान में शनि है और चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह मंगल है, योग संख्या दो के अनुसार यह कुण्डली माता के श्राप से ग्रसित होगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

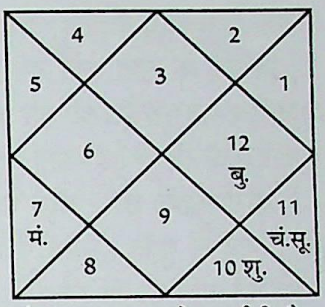

योग संख्या तीन - पंचमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो, लग्नेश अपनी नीच राशि में हो तथा चन्द्रमा पाप युक्त हो तो माता के श्राप से संतान सुख में कमी होती है। इस कुण्डली में ग्रह स्थिति देखें लग्नेश बुध अपनी नीच राशि मीन में स्थित है, पंचमेश कि शुक्र आठवें स्थान में गया है तथा चन्द्रमा, सूर्य के साथ स्थित होने से पापी हो गया है, इस प्रकार से यह ग्रह स्थिति इस कुण्डली में मातृ श्राप को दर्शाती है।

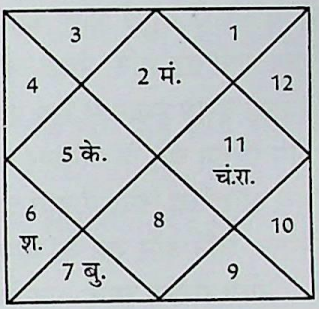

योग संख्या चार - पंचमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में चन्द्रमा पाप प्रभाव में हो और लग्न एवं पंचम में पाप ग्रह हो तो माता के श्राप से संतान सुख की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए पंचमेश बुध है जो कि छठे भाव में है, चन्द्रमा राहू के साथ स्थित होने के कारण पाप प्रभाव में है, लग्न में पाप ग्रह मंगल है एवं पंचम स्थान में पाप ग्रह शनि है योग संख्या चार में वर्णित ग्रह स्थिति इस कुण्डली में विद्यमान है, फलतः इस कुण्डली में माता का श्राप लागू होता है।

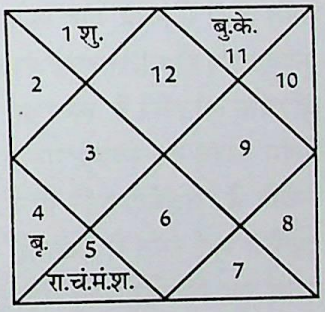

योग संख्या पांच - पंचमेश चन्द्रमा, पापी ग्रह शनि, मंगल और राहू से युक्त हो, कारक ग्रह गुरु भाग्य स्थान या पंचम स्थान में हो तो माता के श्राप के कारण संतान की हानि होती है। उल्लेखित योग केवल मीन लग्न की कुण्डली में घटित होता है क्योंकि मीन लग्न की कुण्डली में ही चन्द्रमा पंचमेश होता है, इस योग में एक महत्वपूर्ण बात है कारक गुरु का भाग्य या पंचम में बैठना जबकि गुरु लग्नेश है, जब गुरु पंचम स्थान में बैठता है तो उच्च का होता है और नवम स्थान में बैठता है तो पंचम पर उच्च दृष्टि रखता है, क्योंकि गुरु को 5, 7, 9वीं पूर्ण दृष्टि कही गई है, इसके बावजूद भी बृहस्पति संतान सुख देने में विफल रहता है, क्योंकि योग में चन्द्रमा जो कि पंचमेश है पापी ग्रह शनि, मंगल और राहू से पीड़ित होता है, देखिए उदाहरण कुण्डली-

ऊपर दर्शाई कुण्डली एक स्त्री जातक की है पंचमेश चंद्र पापी शनि, मंगल, राहू के साथ में है, पंचम स्थान का कारक गुरु पंचम स्थान में है, कुण्डली पर योग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संख्या पांच लागू होता है, इस जातक को संतान सुख में हानि का कारण मातृ श्राप है, विवाह के सात वर्षों तक इस स्त्री को संतान सुख नसीब नहीं हुआ। **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** की कृपा से मातृ-श्राप की शांति के बाद इसे दो संतानें हुई। मातृ दोष की शांति के साथ इसमें **कालसर्प शांति** भी हुई।

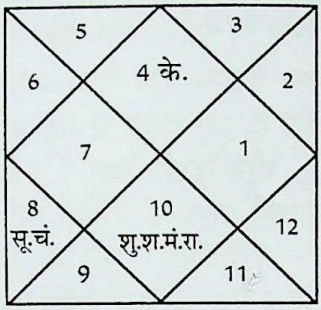

योग संख्या छः - चौथे भाव का स्वामी मंगल, शनि, राहू से युक्त हो एवं पंचम या लग्न में सूर्य, चन्द्र की युति हो तो माता के श्राप से संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए इस कुण्डली में चतुर्थ भाव का स्वामी शुक्र बना है, शुक्र पापी ग्रह शनि, मंगल और राहू के साथ स्थित है तथा पंचम स्थान में सूर्य एवं चंद्रमा की युति है, योग संख्या चार के अनुसार यह कुण्डली मातृ श्राप से पीड़ित है यदि कुण्डली में सूर्य और चंद्र लग्न में होते तब भी यही स्थिति होती, जबकि चतुर्थेश पाप ग्रहों मंगल, शनि और राहू के साथ कहीं भी स्थित होने पर भी यह दोष रहता है।

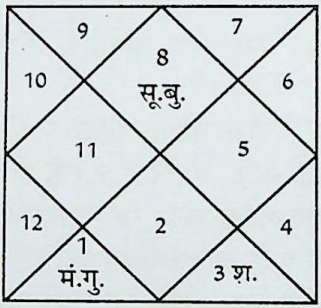

योग संख्या सात - लग्नेश, पंचमेश छठे भाव में, आठवें में चतुर्थेश और दशम तथा अष्टम भाव के स्वामी लग्न में हो तो माता के श्राप से संतान की हानि होती है। यह योग केवल वृश्चिक लग्न की कुण्डली में ही घटित होना संभव है। प्रस्तुत कुण्डली वृश्चिक लग्न की है, लग्न का स्वामी मंगल है और पंचम स्थान का स्वामी गुरु है, दोनों छठे भाव में स्थिति हैं, चतुर्थेश शनि है जो अष्टम भाव में स्थित है एवं अष्टमेश बुध और दशमेश सूर्य लग्न में स्थित है इस प्रकार से ये गृह स्थितियों योग संख्या सात में बताई ग्रह स्थितियों को संतुष्ट करती है, फलतः इस कुण्डली में माता का श्राप दृष्टिगोचर होता है!

योग संख्या आठ - छठे, आठवें भाव के स्वामी लग्न में, बारहवें भाव में सुखेश और चंद्रमा, गुरु पाप से युक्त होकर पांचवें भाव में हो तो माता के श्राप से संतान सुख में कमी करते हैं। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए षष्ठेश मंगल है और अष्टमेश शनि है दोनों युक्त होकर लग्न में बैठे हैं चतुर्थेश (सुखेश) बुध है जो कि बारहवें भाव में विराजमान है, चन्द्रमा और गुरु पंचम स्थान में है और राहू भी पंचम स्थान में ही बैठा है, राहू के साथ चन्द्र, गुरु बैठने से पाप प्रभाव में आ गए

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हैं, इस प्रकार से योग संख्या आठ में वर्णित ग्रह स्थितियां संकेत कुण्डली में उपलब्ध हैं, फलतः यह कुण्डली माता के श्राप से ग्रसित होकर संतान सुख में कमी करती है।

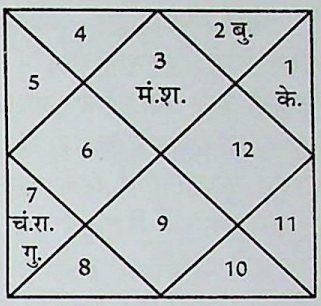

योग संख्या नौ – लग्न पाप ग्रहों के मध्य में ही क्षीण चंद्रमा सातवें भाव में हो, चौथे, पांचवें भाव में शनि, राहू हो तो मातृ श्राप के कारण संतान की हानि होती है। यहां पर यह योग दो प्रकार से घटित होता है।

- ❖ लग्न पाप ग्रहों के मध्य हो, क्षीण चन्द्र सातवें हो और शनि, राहू चौथे भाव में हो।
- ❖ लग्न पाप ग्रहों के मध्य हो, क्षीण चन्द्र सातवें हो और शनि, राहू, पांचवें भाव में हो।

इन दोनों में से कोई भी एक प्रकार की ग्रह स्थिति किसी कुण्डली में होने पर मातृ दोष होगा।

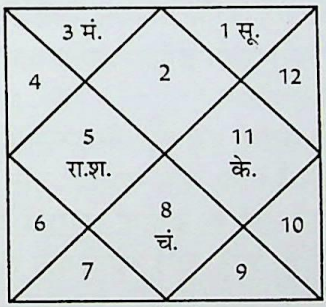

कुण्डली संख्या-1

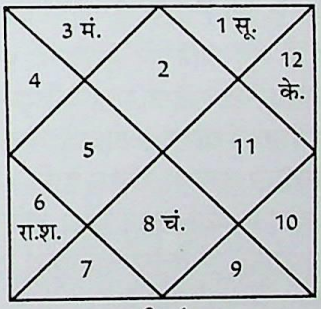

कुण्डली संख्या-2

उदाहरण कुण्डली संख्या 1 को देखें, लग्न के दोनों ओर पाप ग्रह सूर्य एवं मंगल है, चन्द्रमा नीच का होकर सप्तम स्थान में है, चन्द्रमा नीच का होने से हीन बली है, एवं राहू, शनि चतुर्थ भाव में विद्यमान हैं।

कुण्डली संख्या 2 में भी लग्न पाप प्रभाव में है, क्षीण चन्द्रमा सातवें भाव में है और राहू, शनि पंचम स्थान में है।

दोनों ही कुण्डलियां योग संख्या नौ में दर्शाए ग्रह योगों का समर्थन करती हैं, फलतः दोनों में मातृ श्राप की स्थिति बनती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

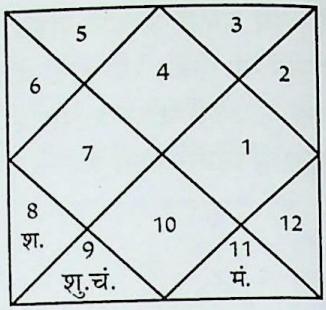

योग संख्या दस - अष्टमेश पांचवें भाव में हो तथा पंचमेश आठवें भाव में हो और चतुर्थेश एवं चन्द्रमा छठे, आठवें या बारहवें में किसी भाव में गए हो तो माता के श्राप से संतान को हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में कर्क लग्न है, पंचमेश मंगल अष्टम स्थान में स्थित है तथा अष्टमेश शनि पंचम स्थान में अर्थात् अष्टमेश और पंचमेश का राशि परिवर्तन हुआ है। चतुर्थेश शुक्र चन्द्रमा के साथ छठे स्थान में गया है। योग संख्या दशम में दर्शायी ग्रह स्थितियां इस कुण्डली में विद्यमान हैं, फलतः यह कुण्डली माता के श्राप से ग्रसित है।

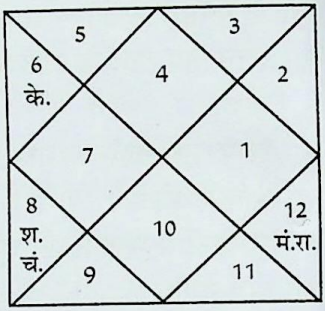

योग संख्या ग्यारह - यदि लग्न कर्क हो तथा मंगल राहू से युक्त हो, चंद्र शनि पांचवें भाव में हो तो माता के श्राप से संतान की हानि होती है। इस योग में एक बात ध्यान देने की है कि कर्क लग्न में मंगल पंचमेश और दशमेश होकर प्रबल कारक होता है, यहां मंगल राहू से युक्त होगा तो संतान पर निश्चित् रूप से प्रभाव डालेगा। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए मंगल, राहू से युत है और पंचम स्थान में शनि चन्द्र है लग्न कर्क है योग संख्या ग्यारह के अनुसार ऐसी स्थिति किसी कुण्डली में पाए जाने पर कुण्डली पर मातृ-श्राप होगा जिसके कारण कुण्डली धारक जातक को संतान सुख की कमी होगी।

योग संख्या बारह - आठवें भाव में मंगल, राहू हो और पंचम में चन्द्र, शनि हो तो माता के श्राप से संतान हानि होती है। यह योग ग्यारहवें योग जैसा ही है बस इस योग में कर्क लग्न होना अनिवार्य नहीं है, जबकि ग्यारहवें योग में राहू, मंगल का आठवें में बैठना अनिवार्य नहीं है, शनि, चन्द्र की स्थिति दोनों योगों में पंचम स्थान में कही गई है।

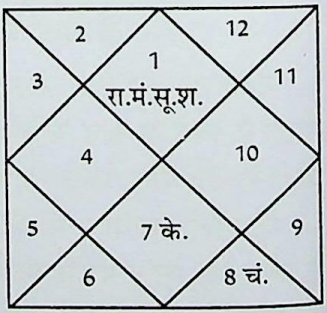

योग संख्या तेरह - पहले, पांचवें, आठवें, बारहवें भाव में मंगल, राहू, सूर्य और शनि हो तथा चतुर्थेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो माता के श्राप से संतान की हानि होती है। प्रस्तुत संकेत कुण्डली में पहले भाव में राहू, मंगल, सूर्य एवं शनि स्थित है तथा चतुर्थेश चन्द्र अष्टम भाव में है अतः कुण्डली माता के श्राप से ग्रसित है, इसी प्रकार प्रथम भाव में स्थित ग्रह यदि पांचवें, आठवें एवं बारहवें भाव में हो तो भी मातृ दोष होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भ्रातृ श्राप के कारण सन्तान सुख में कमी

ज्योतिष में तीसरे स्थान को भ्रातृ स्थान एवं मंगल ग्रह को भ्रातृ कारक ग्रह माना गया है, हम देखेंगे कि भ्रातृ दोष के कारण बनने वाले ज्योतिषीय योगों में तृतीय भाव एवं मंगल ग्रह ही प्रधान होते हैं।

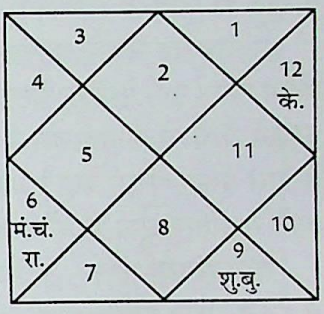

योग संख्या एक - भ्रातृ स्थान अर्थात् तृतीय स्थान के स्वामी मंगल-राहू से युत होकर पंचम भाव में हो और पंचमेश एवं लग्नेश आठवें भाव में हो तो भाई के श्राप से संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली को देखिए भ्रातृ स्थान का स्वामी चंद्रमा है। चंद्रमा मंगल-राहू से युत होकर पंचम स्थान में है तथा लग्नेश शुक्र एवं पंचमेश बुध आठवें स्थान में स्थित है, योग संख्या एक के अनुसार कुण्डली में भ्रातृ श्राप की स्थिति बनती है, यदि ऐसी स्थिति किसी जातक की कुण्डली में पाई जाए तो भ्रातृ श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

योग संख्या दो - लग्न अथवा पंचम स्थान में मंगल-शनि हो, तृतीयेश भाग्य स्थान में स्थित हो तथा कारक ग्रह (बृहस्पति) आठवें स्थान में हो तो भ्रातृदोष के कारण संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली संख्या-1 वृष लग्न की है, लग्न में मंगल-शनि की युति है तथा तृतीय स्थान का स्वामी चन्द्रमा भाग्य स्थान में है तथा पंचम स्थान का कारक बृहस्पति अष्टम स्थान में है, इसी प्रकार द्वितीय कुण्डली में मंगल-शनि की युति पंचम स्थान में है, बाकी ग्रह स्थिति 1 के अनुसार हैं, दोनों कुण्डलियां योग संख्या दो के अनुसार भ्रातृ श्राप को दर्शाती हैं, वहां पर यह योग संतति सुख में बाधा कैसे पहुंचाती है, हम इसका अध्ययन करते हैं।

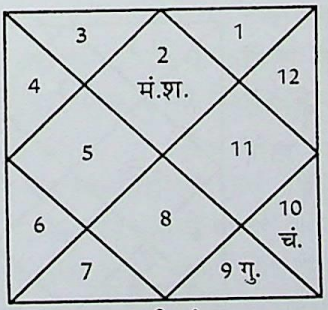

कुण्डली संख्या-1

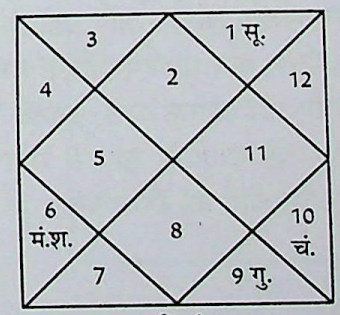

कुण्डली संख्या-2

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

1. जब ग्रह स्थिति कुण्डली संख्या 1 के अनुसार हो, तब हम देखते हैं कि इस कुण्डली में पंचम स्थान का कारक गुरु ग्रह है जो कि अष्टम स्थान में बैठकर हीन बली है, ऊपर से मंगल शनि के साथ लग्न में बैठकर बृहस्पति को अष्टम दृष्टि से देख रहा है मंगल स्वयं ही पापी ग्रह है, मंगल के माध्यम से शनि भी अष्टम में बैठे बृहस्पति को देखता है, इस प्रकार से कारक बृहस्पति अत्यधिक पीड़ित हो जाता है, इस कारण संतान सुख में कमी रहती है।

2. जब ग्रह स्थिति कुण्डली संख्या दो के अनुसार हो तो यहां हम देखते हैं कि पंचम स्थान पाप ग्रहों के बैठने के कारण पीड़ित हो गया है। पंचम का कारक गुरु अष्टम में बैठने से कमजोर है तथा मंगल, शनि भी गुरु को चतुर्थ दृष्टि से देखते है, इस प्रकार पंचम स्थान और पंचम स्थान का कारक गुरु दोनों पाप प्रभाव में आने से संतान सुख में कमी होती है।

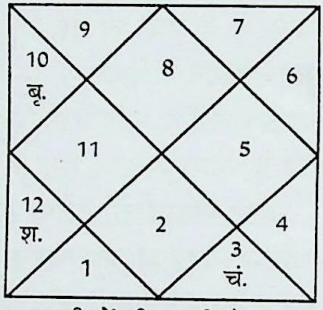

योग संख्या तीन - तृतीय स्थान में नीच राशि में गुरु है। शनि पांचवें भाव में हो और आठवें भाव में चन्द्र हो तो भाई के श्राप से संतान की हानि होती है। प्रस्तुत संकेत कुण्डली को देखें, उपरोक्त योग केवल वृश्चिक लग्न की कुण्डली में ही घटित होता है, क्योंकि योग में गुरु को तीसरे भाव में नीच का होना लिखा है, गुरु मकर राशि में नीच का होता है, तीसरे भाव में मकर राशि केवल वृश्चिक लग्न की कुण्डली में ही आती है, अन्य में नहीं। कुण्डली में ग्रह स्थिति देखें, गुरु तीसरे स्थान में नीच राशि का होकर पड़ा है। पंचम स्थान में शनि है तथा अष्टम स्थान में चन्द्रमा है, योग संख्या तीन में वर्णित ग्रह योग इस कुण्डली में पड़े हैं अत: कुण्डली भ्रातृ दोष से पीड़ित है।

योग संख्या चार - यदि लग्नेश बारहवें स्थान में हो, मंगल स्थान में हो तथा पंचमेश अष्टम स्थान में जाए तो भ्रातृ दोष के कारण संतान की हानि होती है।

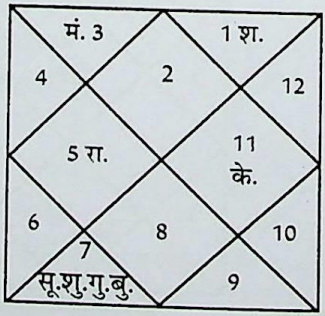

योग संख्या पांच - पाप ग्रहों के मध्य लग्न हो और पंचम भाव भी पाप ग्रहों के मध्य हो, दोनों के स्वामी और कारक छठे, आठवें या बारहवें भाव में हो तो भ्राता के श्राप से संतान की हानि होती है। इस योग को निम्न प्रकार से समझें -

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❖ लग्न के दोनों ओर अर्थात् दूसरे एवं बारहवें भाव में पाप ग्रह हो।

❖ पंचम भाव के दोनों ओर अर्थात् चौथे एवं छठे भाव में पाप ग्रह हो।

❖ लग्न एवं पंचम के स्वामी (जो कि अलग-अलग लग्नों में अलग-अलग होंगे) तथा कारक अर्थात् लग्न का कारक सूर्य तथा पंचम स्थान का कारक गुरु छठे, आठवें या बारहवें भाव में जाए।

❖ लग्न का स्वामी शुक्र, पंचम का स्वामी बुध एवं लग्न का कारक सूर्य तथा पंचम का कारक गुरु चारों छठे स्थान में है। इस प्रकार से योग संख्या पांच में वर्णित ग्रह स्थितियां प्रस्तुत कुण्डली में भ्रातृ श्राप से पीड़ित है।

योग संख्या छः - कर्मेश पाप ग्रह से युत होकर भ्रातृ स्थान में हो और पांचवें भाव में मंगल हो तो भाई के श्राप से संतान की हानि होती है।

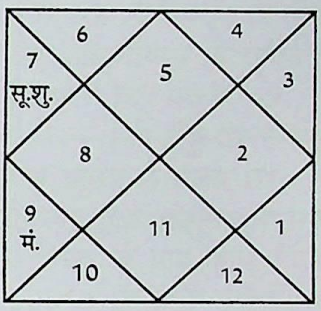

उपरोक्त योग में दो ग्रह स्थितियां वर्णित हैं-

❖ दशम भाव का स्वामी किसी पापी ग्रह के साथ तीसरे स्थान में बैठे।

❖ पांचवें स्थान में मंगल हो।

योग संख्या सात - पंचम स्थान में बुध की राशि हो और उसमें राहू-शनि बैठे हों तथा बारहवें भाव में बुध-मंगल हों तो भाई के श्राप से सन्तान को हानि होती है, इस योग में दो प्रकार की स्थिति है।

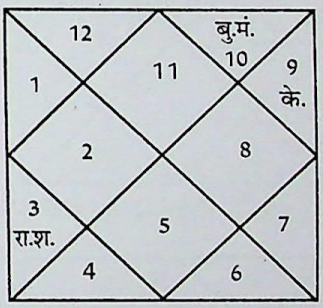

❖ पंचम स्थान में मिथुन या कन्या राशि हो और राहू एवं शनि बैठे हों।

❖ बारहवें भाव में मंगल बुध की युति हो।

योग संख्या आठ - लग्नेश तीसरे भाव में तृतीयेश पांचवें भाव में तथा लग्न, तृतीय एवं पंचम स्थान में पाप ग्रह हो तो भाई के श्राप से संतान की हानि होती है। इस योग में ग्रह स्थिति निम्न प्रकार से बताई गई है।

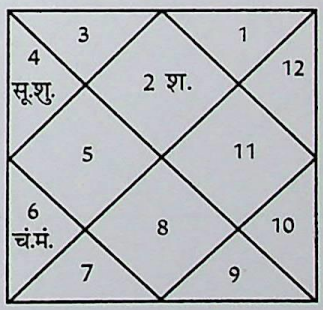

❖ लग्न का स्वामी तीसरे भाव में हो।

❖ तीसरे भाव का स्वामी पांचवें भाव में हो।

❖ पहले, तीसरे, पांचवें भाव में पाप ग्रह हो।

यदि किसी कुण्डली में उपरोक्त तीन स्थितियां हो तो योग संख्या आठ घटित होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

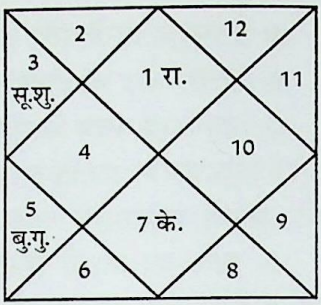

योग संख्या नौ - तृतीय भाव का स्वामी पांचवें भाव में कारक राहू से युत या दृष्ट हो तो भाई के श्राप से संतान को कष्ट होते हैं। योग का स्पष्टीकरण देखें।

❖ तीसरे भाव का स्वामी पांचवें भाव में हो।

❖ पांचवें भाव में कारक (गुरु) राहू से युत या दृष्ट हो अर्थात् राहू पांचवें, नौवें, ग्यारहवें भाव अथवा लग्न में स्थित हो।

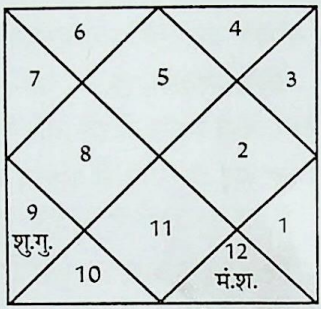

योग संख्या दस - अष्टमेश पांचवें भाव में तृतीयेश से युक्त हो और आठवें भाव में मंगल-शनि हो तो भाई के श्राप से संतान को कष्ट होता है। योग का स्पष्टीकरण देखें।

❖ पांचवें भाव में आठवें और तीसरे भाव के स्वामी की युति हो।

इस प्रकार से प्रस्तुत कुण्डली में योग संख्या दस के अनुसार भ्रातृ दोष होगा, इस अध्याय में हमने भातृ श्राप के कारण संतान की हानि अथवा संतान कष्ट से संबंधित ज्योतिषीय योगों का अध्ययन किया आगे हम मातुल श्राप के कारण संतान कष्ट का अध्ययन करेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मातुल श्राप के कारण संतान सुख में कमी

यहां हम जन्मकुण्डली में ग्रहों की स्थिति के आधार पर उत्पन्न होने वाले मातुल श्राप के योग तथा कारणों को समझने का प्रयास करेंगे :

योग संख्या एक - यदि पांचवें भाव में बुध, गुरु, चंद्र और राहू हो और लग्न में शनि हो तो मामा के श्राप से संतान की हानि होती है।

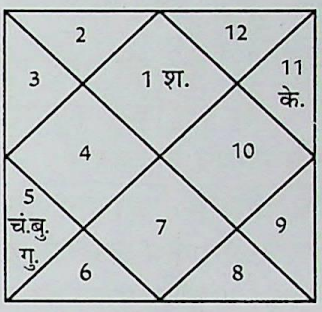

इस योग के स्पष्टीकरण देखें

❖ पांचवें भाव में बुध, गुरु, चन्द्र तथा राहू की युति हो।

❖ लग्न में शनि हो।

योग संख्या दो - लग्नेश और पंचमेश शनि, मंगल, बुध के साथ एकत्र हो तो मामा के श्राप के संतान की हानि होती है।

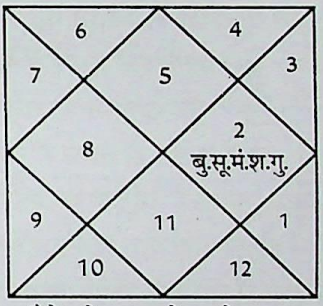

यहां पांच ग्रहों का एक साथ बैठना कहा गया है अर्थात् लग्नेश और पंचमेश का शनि, मंगल, बुध के साथ बैठना कहा गया है। इस योग में बैठने की कोई शर्त नहीं है, अर्थात् लग्नेश, पंचमेश, बुध, शनि, मंगल कुण्डली में कहीं भी एकत्र होकर बैठे तो यह दोष होगा।

योग संख्या तीन - पंचमेश अस्त होकर लग्न में हो सातवें भाव में शनि हो तथा लग्नेश बुध के साथ हो तो मामा के श्राप से संतान की हानि होती है।

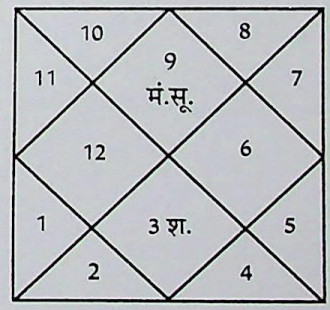

योग का स्पष्टीकरण देखें।

❖ पंचमेश अस्त होकर लग्न में हो अर्थात् सूर्य के साथ हो।

❖ सातवें भाव में शनि हो।

❖ लग्नेश एवं बुध की युति किसी भाव में है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

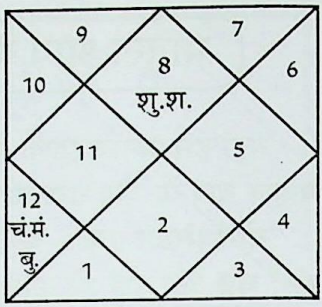

योग संख्या चार - व्ययेश से युक्त होकर सुखेश लग्न में हो और चन्द्रमा, बुध, मंगल संतान स्थान में हो तो मामा के श्राप से संतान की हानि होती है। योग का सरलीकरण देखें।

- ❖ बारहवें स्थान और चौथे स्थान के स्वामी लग्न में हो।
- ❖ चंद्र, बुध और मंगल पंचम स्थान में हो।

यह योग किसी कुण्डली में किस प्रकार आ सकता है, एक उदाहरण कुण्डली के माध्यम से देखते हैं।

विशेष - इस योग की एक विशेष बात यह है कि यह योग केवल वृश्चिक लग्न और कुंभ लग्न की कुण्डलियों में ही घटित होगा, क्योंकि अन्य लग्नों में चतुर्थ या द्वादश स्थान का अधिपति मंगल, बुध या चंद्र में से कोई ग्रह बनता है, जबकि चंद्र, मंगल, बुध का पंचम में होना योग में बताया गया है और चतुर्थेश एवं द्वादशेश के स्वामी का लग्न में होना अब एक ही ग्रह दो भावों में कैसे बैठेगा।

- ❖ वृश्चिक लग्न में चतुर्थेश शनि और द्वादशेश शुक्र बनता है।
- ❖ कुम्भ लग्न में चतुर्थेश शुक्र और द्वादशेश शनि बनता है।

इस प्रकार से लग्न में युति शुक्र और शनि की ही बनेगी, अत: वृश्चिक और कुम्भ लग्न में यदि शुक्र-शनि लग्न में हो तथा मंगल, बुध और चंद्रमा पंचम स्थान में हो तो यह योग घटित होगा। इस अध्याय में हमने मातुल श्राप के कारण संतान सुख में कमी के ज्योतिषीय योग देखें, आगे के अध्याय में हम ब्रह्म श्राप के कारण संतान सुख में कमी के ज्योतिषीय योगों का अध्ययन करेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ब्रह्म श्राप के कारण संतान सुख में कमी

ब्रह्म श्राप के निर्माण में बृहस्पति ग्रह, इसकी राशियां तथा नवम भाव की भूमिका ही प्रधान रहती हैं। यहां ब्रह्म श्राप का अर्थ केवल ब्राह्मण के श्राप के संदर्भ में ही नहीं है, अपितु कुल देवता का श्राप अथवा ऐसे पितर जिन्हें हमारे पूर्वज पूजते अथवा मानते रहे हैं उनका श्राप भी है अर्थात् किसी की कुण्डली में यदि ब्राह्म श्राप दोष हो तो कुल देवता के श्राप से अथवा पिता की पीढ़ी के पहले के पूर्वजों के श्राप से अथवा ब्रह्म श्राप से संतान सुख की कमी होती है।

योग संख्या एक - यह योग जन्मपत्री में निम्न ग्रह स्थितियां पाए जाने पर होता है।

- गुरु की राशि (धनु या मीन) में राहू हो।
- पांचवें भाव में गुरु, मंगल एवं शनि हो।
- नवम भाव का स्वामी आठवें भाव में हो।

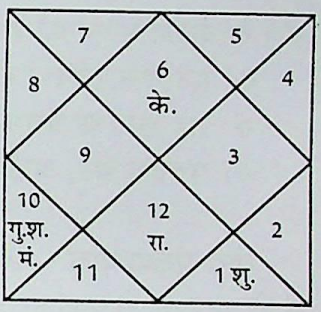

यदि उपरोक्त ग्रह स्थितियां किसी जन्मकुण्डली में विद्यमान हो तो ऐसे जातक को ब्रह्म श्राप से संतान की हानि होती है।

योग संख्या दो - भाग्येश पांचवें भाव में हो तथा पंचमेश धर्म भाव में हो तथा गुरु मंगल, राहू, आठवें भाव में हो तो ब्रह्म श्राप से संतान को हानि होती है।

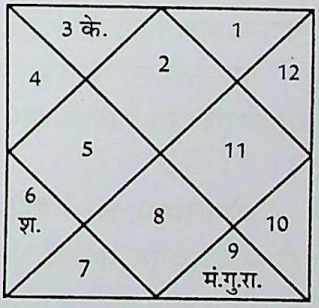

- ❖ भाग्येश और पंचमेश का राशि परिवर्तन हो।
- ❖ गुरु, मंगल और राहू आठवें भाव में गए हो।
- ❖ यदि उपरोक्त ग्रह स्थिति किसी कुण्डली में हो तो ब्रह्म श्राप होगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

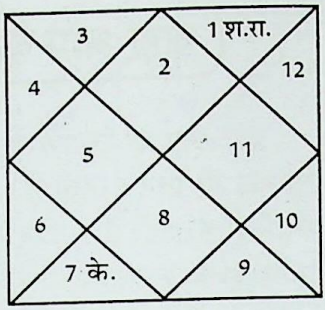

योग संख्या तीन - यह योग किसी कुण्डली में निम्न ग्रह स्थितियां पाए जाने पर होता है-

❖ भाग्य स्थान का स्वामी नीच राशि में गया हो।

❖ भाग्येश राहू से दृष्ट या युत हो।

❖ बारहवें स्थान का स्वामी पंचम में हो।

यदि ऊपर दर्शाई ग्रह स्थितियां किसी कुण्डली में हो तो ब्रह्म श्राप से संतान हानि होती है।

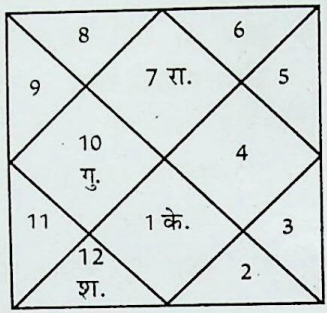

योग संख्या चार - यदि किसी कुण्डली में निम्नलिखित ग्रह स्थितियां पाई जाए तो उसे ब्रह्म श्राप के कारण संतान की हानि होती है।

❖ गुरु नीच राशि में हो।

❖ राहू लग्न या पंचम स्थान में हो।

❖ पंचमेश छठे, आठवें, बारहवें में हो।

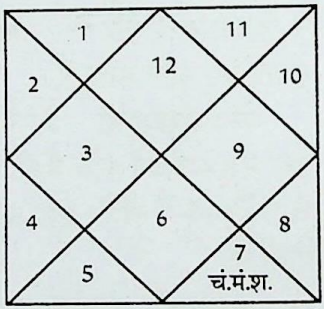

योग संख्या पांच - पंचमेश गुरु आठवें भाव में हो, पाप ग्रह से युक्त हो अथवा पंचमेश सूर्य या चंद्र होकर आठवें भाव में पाप युक्त हो तो ब्रह्म श्राप से संतान की हानि होती है।

इस कुण्डली में चन्द्र पंचमेश है जो कि पाप ग्रह मंगल और शनि के साथ आठवें स्थान में गया है।

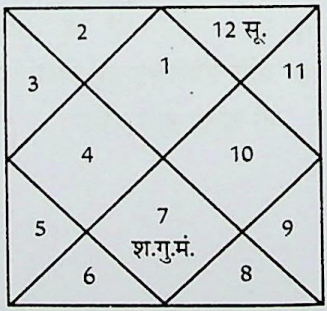

योग संख्या छः - शनि के साथ मंगल और गुरु हो और पंचमेश बारहवें भाव में हो तो ब्रह्म श्राप से संतान हानि होती है। इस योग की दो शर्ते हैं

❖ शनि, मंगल और गुरु की युति किसी भाव में हो।

❖ पंचमेश बारहवें स्थान में।

दर्शायी कुण्डली में शनि, मंगल, गुरु, युत होकर एक ही स्थान में हो तथा पंचमेश जो कि सूर्य के बारहवें स्थान में हो। योग संख्या छः इस कुण्डली में विद्यमान है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

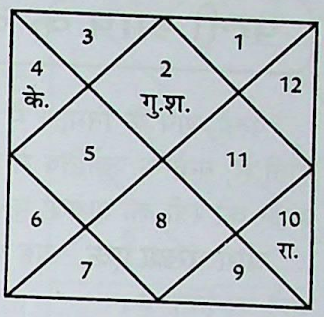

योग संख्या सात – लग्न में गुरु शनि हो, नवम स्थान में राहू हो अथवा गुरु बारहवें भाव में गया हो तो ब्रह्म श्राप से संतान की हानि होती है। प्रस्तुत कुण्डली में लग्न में गुरु एवं शनि है तथा नवम स्थान में राहू हो अत: योग सात कुण्डली में विद्यमान होने के कारण ब्रह्म श्राप है।

इस प्रकार से यहां तक हमने ब्रह्म श्राप के कारण संतान सुख में कमी के ज्योतिषीय योग देखें। आगे अध्याय में पत्नी श्राप के कारण संतान सुख में कमी के ज्योतिषीय योग देखेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पत्नी श्राप के कारण संतान सुख में कमी

पत्नी श्राप के निर्माण में शुक्र ग्रह और सप्तम भाव की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि ज्योतिष में शुक्र से स्त्री का विचार किया जाता है एवं सप्तम स्थान को स्त्री का अथवा पत्नी का स्थान कहा जाता है।

योग संख्या एक - यह योग किसी जन्म कुण्डली में निम्न ग्रह स्थितियां पाए जाने पर होता है।

- सप्तमेश पंचम भाव में हो।
- सप्तमेश के नवांश का स्वामी शनि हो।
- पंचमेश आठवें भाव में हो।

यदि ऊपर दर्शायी ग्रह स्थिति किसी कुण्डली में पाई जाए तो स्त्री श्राप के कारण संतान संख्या में कमी रहती है।

योग संख्या दो - यह योग किसी जन्मकुण्डली में निम्न ग्रह स्थिति पाए जाने पर होता है।

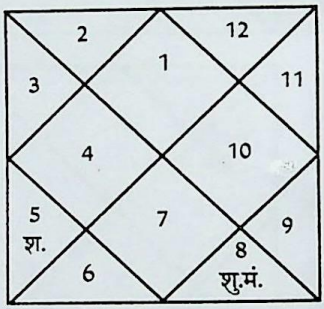

- सप्तमेश आठवें भाव में हो।
- कर्मेश (दशम भाव का स्वामी) पांचवें भाव में हो
- कारक ग्रह (शुक्र) पाप युक्त हो।

उपरोक्त ग्रह स्थिति किसी जन्मकुण्डली में पाए जाने पर स्त्री श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

योग संख्या तीन - यदि निम्नलिखित ग्रह योग किसी कुण्डली में विद्यमान हो तो स्त्री श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

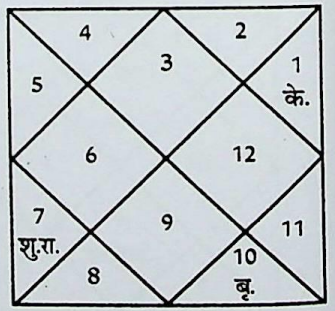

- पंचम स्थान में शुक्र हो।
- सप्तमेश आठवें भाव में हो।
- कारक ग्रह शुक्र पाप युक्त हो।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या चार – यह योग किसी कुण्डली में निम्न ग्रह योग होने पर होता है।

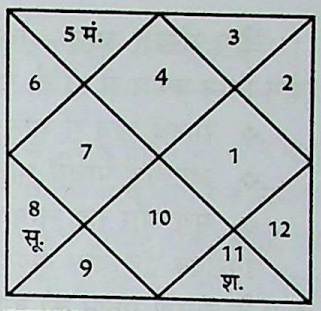

- ❖ दूसरे अथवा पांचवें भाव में पाप ग्रह हो
- ❖ सप्तमेश आठवें भाव में हो
- ❖ पांचवें भाव में पाप ग्रह हो

यदि उपरोक्त योग कुण्डली में हो तो स्त्री श्राप से संतान सुख की हानि होती है।

योग संख्या पांच – यदि कुण्डली में निम्न ग्रह योग हो तो स्त्री श्राप से संतान सुख की हानि होती है।

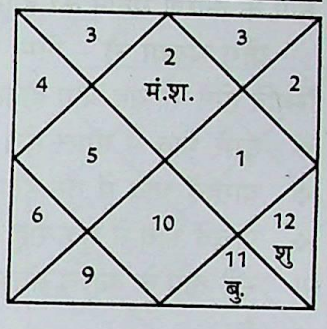

- ❖ शुक्र नवम भाव में हो।
- ❖ पंचमेश अष्टम भाव में हो।
- ❖ लग्न स्थान में पाप ग्रह बैठे हो।

योग संख्या छः – यह योग किसी कुण्डली में निम्न ग्रह स्थिति होने पर होता है।

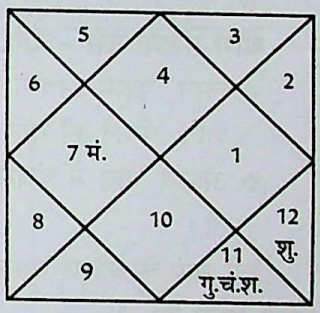

- ❖ नवम स्थान में शुक्र हो
- ❖ पंचमेश शत्रु के घर में हो
- ❖ गुरु, लग्नेश एवं सप्तमेश, छठे, आठवें या बारहवें घर में हो।

यदि उपरोक्त ग्रह स्थिति किसी कुण्डली में हो तो स्त्री के श्राप से संतान सुख की कमी करते हैं।

योग संख्या सात – यदि किसी कुण्डली में निम्न ग्रह योग हो तो स्त्री श्राप से संतान को हानि होती है।

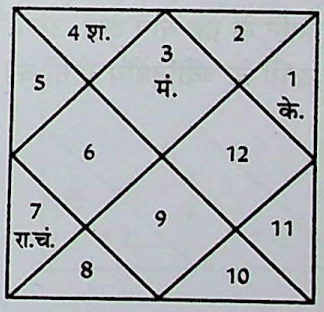

- ❖ पंचम भाव में शुक्र की राशि (वृष या तुला) राहू चन्द्र से युक्त हो।
- ❖ पहले, दूसरे, बारहवें भाव में पाप ग्रह हो।

उपर्युक्त योग केवल मिथुन एवं मकर लग्न की कुण्डलियों में ही घटित होता है, क्योंकि मकर लग्न में पंचम स्थान में वृष राशि आती है और मिथुन लग्न में पंचम स्थान में तुला राशि आती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या आठ - किसी कुण्डली में ग्रह योग निम्न प्रकार से हो तो यह योग होता है।

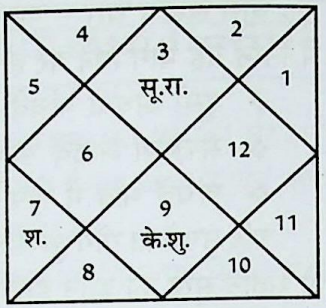

- ❖ सातवें भाव में शनि या शुक्र हो।
- ❖ अष्टमेश पांचवें भाव में हो।
- ❖ सूर्य और राहू लग्न में हो।

उपरोक्त ग्रह योग कुण्डली में होने पर स्त्री श्राप के कारण संतान की हानि होती है।

योग संख्या नौ - निम्न तीन प्रकार की ग्रह स्थिति होने पर यह योग होता है-

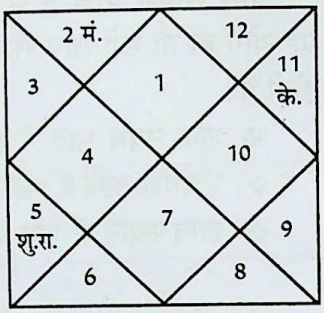

- ❖ दूसरे भाव में मंगल हो।
- ❖ बारहवें भाव में गुरु हो।
- ❖ पांचवें भाव में शुक्र राहू से युत या दृष्ट हो तो स्त्री श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

योग संख्या दस - यदि किसी कुण्डली के

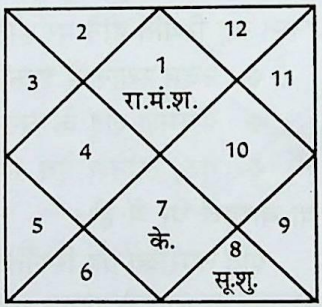

- ❖ लग्न, पंचम अथवा नवम स्थान में राहू, शनि, मंगल की युति हो।
- ❖ आठवें भाव में पंचमेश और सप्तमेश हो तो।

स्त्री श्राप के कारण जातक को संतान सुख में कमी रहती है।

यहां तक हमने स्त्री के कारण संतान सुख हानि के ग्रह योग देखें, आगे के अध्याय में हम प्रेत श्राप के कारण संतान सुख में कमी के ज्योतिषीय योगों का अध्ययन करेंगे।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रेत श्राप के कारण संतान सुख में कमी

प्रेत श्राप में शनि एवं राहू विशेष योगदान रहता है, लग्न पंचम पर शनि राहू का प्रभाव एवं राहू, शनि की युति या दृष्टि संबंधों से प्रेत श्राप योग का निर्माण होता है। पाराशर जी ने लिखा है कि जब पितरों को कर्म अर्थात् श्राद्ध आदि का लोप होता है अर्थात् पितरों के श्राद्ध ठीक से नहीं होते हैं तो वे पिशाच (प्रेत) योनि में चले जाते हैं तथा वंश वृद्धि को रोकते हैं, देखिए योग-

योग संख्या एक - जब किसी कुण्डली के

- पांचवें भाव में शनि सूर्य हो
- सातवें भाव में क्षीण चन्द्रमा हो
- कारक गुरु आठवें भाव में हो तो प्रेत श्राप के कारण वंश का क्षय होता है।

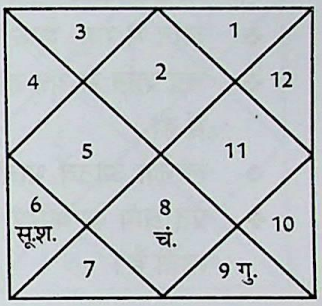

योग संख्या दो - यदि किसी कुण्डली में

- पंचमेश शनि आठवें भाव में हो
- लग्न में मंगल हो
- कारक गुरु अष्टम में हो तो प्रेत श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

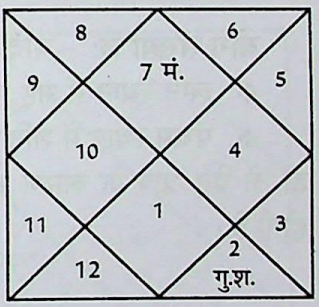

योग संख्या तीन - यदि किसी कुण्डली में

- लग्न में राहू स्थित हो।
- छठवें भाव में सूर्य हो।
- पांचवें भाव में मंगल, शनि, बुध हो।
- पंचमेश आठवें भाव में हो तो प्रेत श्राप के कारण वंश का क्षय होता है।

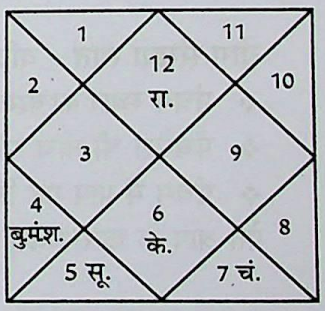

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या चार – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ लग्न में राहू स्थित हो
- ❖ पांचवें भाव में शनि हो
- ❖ कारक गुरु आठवें भाव में हो तो प्रेत श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

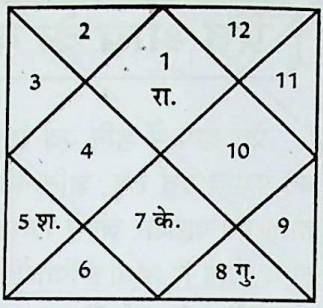

योग संख्या पांच – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ लग्न में राहू, शुक्र एवं गुरु स्थित हो
- ❖ चंद्र शनि से युत होकर किसी भी स्थान में हो
- ❖ लग्नेश आठवें भाव में आया हो तो
- ❖ प्रेत श्राप के कारण संतान सुख में कमी रहती है।

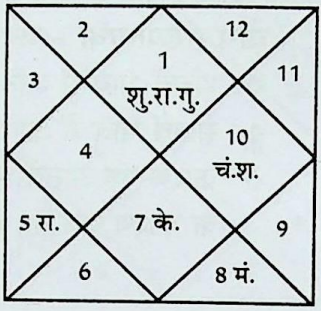

योग संख्या छः – यदि किसी कुण्डली के

- ❖ लग्न स्थान में राहू हो
- ❖ पंचम स्थान में शनि मंगल से युत या दृष्ट

हो तो प्रेत श्राप के कारण संतान सुख की क्षति होती है।

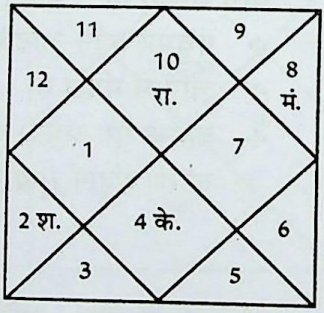

योग संख्या सात – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ पंचम स्थान का कारक गुरु नीच राशि में हो
- ❖ पंचमेश भी नीच राशि का हो
- ❖ पंचम में पाप ग्रह स्थित हो तो

प्रेत श्राप के कारण वंश की क्षति होती है।

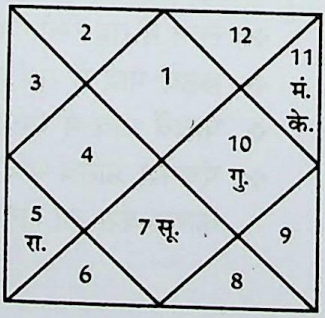

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या आठ – यदि किसी कुण्डली के

- लग्न में शनि स्थित हो
- आठवें भाव में राहू और सूर्य की युति हो
- बारहवें भाव में मंगल हो तो

प्रेत श्राप के कारण संतान सुख की कमी रहती है।

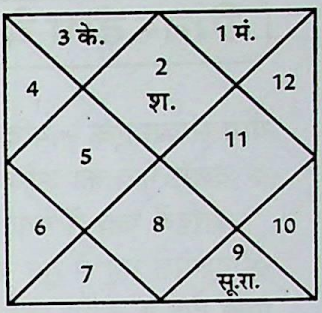

योग संख्या नौ – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित हो
- पांचवें भाव में चन्द्रमा हो
- लग्न में शनि हो तो

प्रेत श्राप के कारण संतान सुख की हानि होती है।

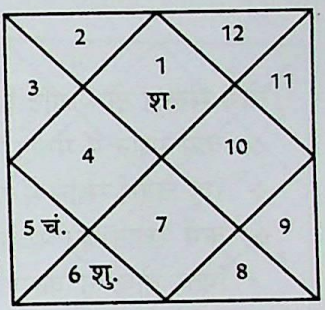

योग संख्या दस – यदि किसी कुण्डली में

- अष्टमेश शनि शुक्र से युत होकर पांचवें स्थान में हो।
- कारक गुरु आठवें स्थान में हो तो प्रेत श्राप के कारण संतान सुख की क्षति होती है।

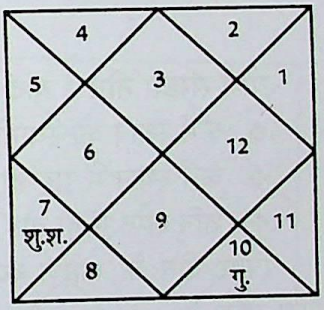

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष के कारण व्यापार में हानि

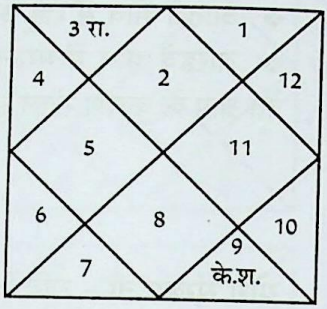

योग संख्या एक - यदि किसी कुण्डली में

❖ दशम भाव का अधिपति छठे, आठवें या बारहवें भाव में गया हो

❖ दशमेश राहू से युत या दृष्ट हो तो

पितर दोष के कारण व्यवसाय में स्थिरता नहीं रहती।

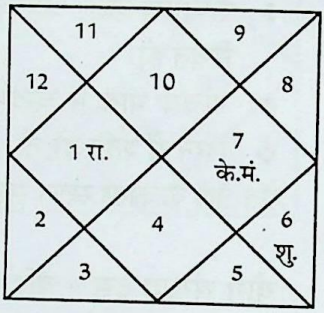

योग संख्या दो - यदि किसी कुण्डली में

❖ कर्म स्थान में मंगल स्थित हो

❖ राहू चतुर्थ स्थान में हो

❖ कर्म स्थान का स्वामी नीच का हो तो पितर दोष के कारण व्यवसाय में हानि बनी रहती है।

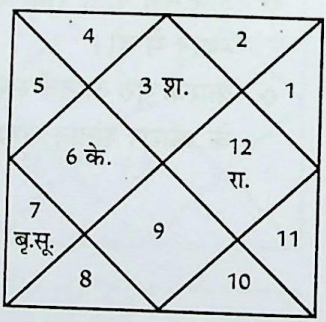

योग संख्या तीन - यदि किसी कुण्डली में

❖ कर्म स्थान का स्वामी पाप युत हो।

❖ कर्म स्थान में राहू हो।

❖ शनि लग्न में हो तो।

पितर दोष के कारण व्यवसाय में अवरोध बना रहता है।

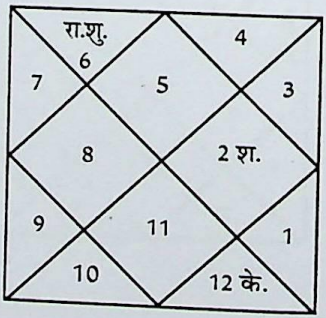

योग संख्या चार - यदि किसी कुण्डली में

❖ कर्म स्थान का स्वामी राहू से युत हो।

❖ दशम स्थान में शनि छठे, आठवें, बारहवें स्थान का स्वामी होकर बैठा हो तो पितर दोष के कारण नौकरी, व्यवसाय में अवरोध देते है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या पांच – यदि किसी कुण्डली में

❖ अष्टमेश सूर्य दशम में नीच का हो।

❖ दूसरे स्थान में राहू हो।

❖ कर्म स्थान का स्वामी अष्टम में हो।

पितर श्राप के कारण व्यवसाय, नौकरी में स्थिरता नहीं रहती।

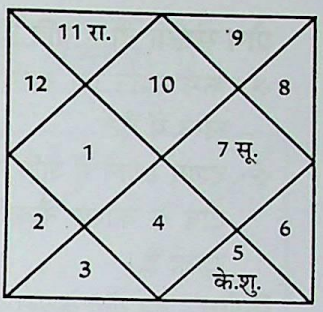

योग संख्या छः – यदि किसी कुण्डली में

❖ कर्म स्थान का स्वामी बुध नीच राशि में सूर्य से युत है अतः पाप प्रभाव में है।

❖ कर्म स्थान में शनि स्थित है।

❖ तीसरे भाव में मंगल हो तो

पितर दोष के कारण नौकरी, व्यवसाय में अवरोध आते हैं।

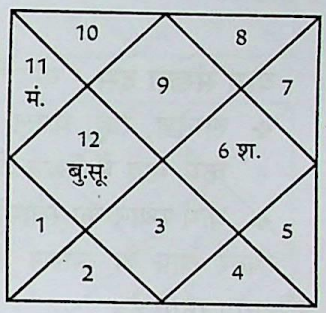

योग संख्या सात – किसी कुण्डली में यदि

❖ कर्म स्थान का स्वामी शुभ ग्रह होकर राहू, मंगल, शनि के साथ 6, 8, 12 स्थान में बैठे तो पितर श्राप के कारण व्यवसाय में अवरोध होते हैं।

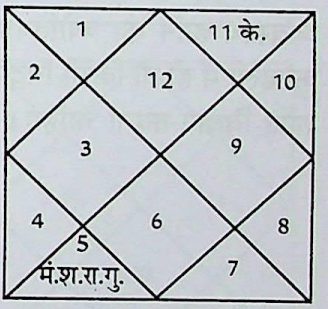

योग संख्या आठ – यदि किसी कुण्डली में

❖ कर्म स्थान का स्वामी नीच राशि में गया हो

❖ राहू मंगल शनि दशम स्थान में हो तो पितर श्राप के कारण नौकरी, व्यापार में हानि होती है।

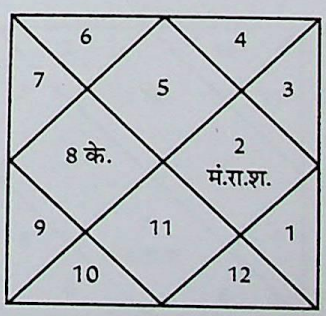

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

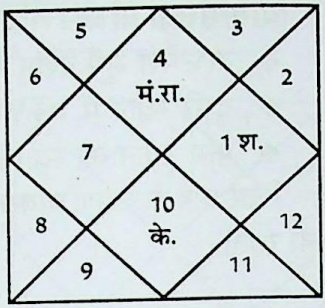

योग संख्या नौ – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ कर्म स्थान का स्वामी राहू से युत होकर लग्न में बैठे
- ❖ दशम स्थान में शनि नीच का हो तो पितर दोष के कारण नौकरी, व्यवसाय में हानि रहती है।

विशेष – यह योग केवल कर्क लग्न की कुण्डली में ही घटित होगा।

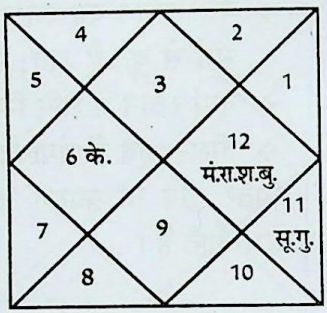

योग संख्या दस – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ लग्नेश, राहू, मंगल, शनि से युत होकर कर्म भाव में स्थित हो
- ❖ कर्म स्थान का स्वामी अस्त हो तो

पितर श्राप के कारण नौकरी, व्यवसाय में अस्थिरता रहती है।

इस अध्याय में हमने पितर दोष के कारण व्यवसाय हानि का ज्योतिषय योगों का अध्ययन किया। उपरोक्त योग किसी कुण्डली में हो तो किसी विद्वान ज्योतिषी में पितर दोष की जानकारी करके उचित शांति विधान करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष के कारण गृह क्लेश

योग संख्या एक – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ चतुर्थेश नीच राशि में स्थित हो
- ❖ चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हो
- ❖ चंद्रमा पाप युत हो तो

पितर श्राप के कारण घर परिवार में अशांति बनी रहती है।

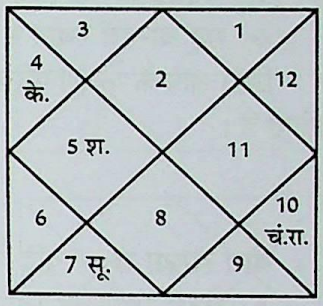

योग संख्या दो – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ चतुर्थेश पाप मध्य हो अर्थात् चतुर्थेश के आगे पीछे पाप ग्रह हो।
- ❖ चतुर्थ भाव में राहू चंद्र की युति हो तो पितर श्राप के कारण परिवार में अशांति रहती है।

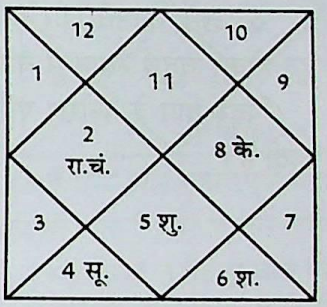

योग संख्या तीन – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ चंद्रमा नीच राशि में स्थित हो।
- ❖ चतुर्थ स्थान में पाप ग्रह हो।
- ❖ चतुर्थेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में गया हो तो पितर दोष के कारण परिवार में अशांति रहती है।

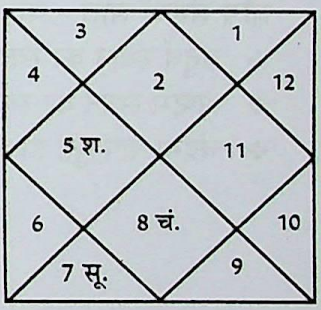

योग संख्या चार – यदि किसी कुण्डली में

❖ चंद्रमा चतुर्थ भाव का स्वामी होकर राहू, शनि, मंगल से युत होकर कुण्डली में कहीं भी बैठे तो पितर दोष के कारण परिवार में कलह और अशांति रहती है।

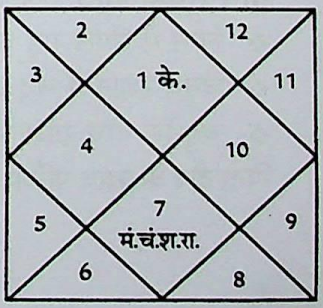

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या पांच – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ लग्न में मंगल है।
- ❖ चतुर्थेश शनि से युत होकर अष्टम में स्थित हो
- ❖ राहू बारहवें स्थान में हो तो

पितर श्राप के कारण परिवार में कलह, अशांति रहती है।

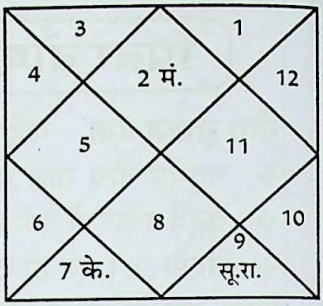

योग संख्या छः – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ चतुर्थ स्थान का स्वामी अष्टम में हो
- ❖ छठे, आठवें और बारहवें स्थान के स्वामी युत होकर चतुर्थ स्थान में बैठे तो

पितर श्राप के कारण परिवार में अशांति बनी रहती है।

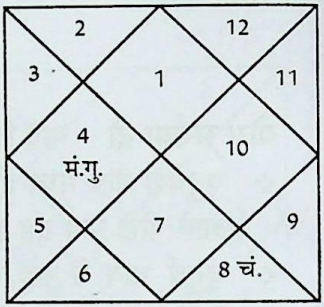

योग संख्या सात – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ चतुर्थ स्थान का स्वामी अष्टम स्थान में
- ❖ अष्टम स्थान का स्वामी चतुर्थ भाव में हो
- ❖ चंद्रमा पाप युत हो तो पितर दोष

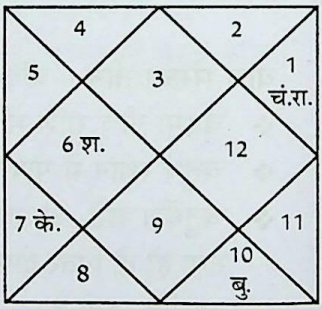

योग संख्या आठ – यदि किसी कुण्डली में

- ❖ लग्न में मंगल राहू की युति हो।
- ❖ चतुर्थ स्थान में चंद्र शनि की युति हो।
- ❖ चतुर्थेश नीच राशि में स्थित हो

पितर दोष के कारण परिवार में कलह बना रहता है।

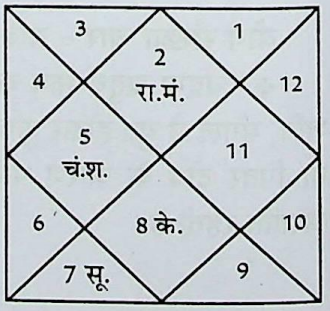

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या नौ – यदि किसी कुण्डली में

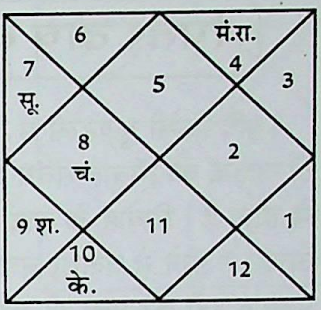

- ❖ चतुर्थ स्थान में नीच का चंद्रमा हो।
- ❖ चतुर्थ भाव पाप ग्रहों के मध्य हो
- ❖ चतुर्थेश राहू से युत होकर व्यय भाव में स्थित हो तो पितर श्राप के कारण परिवार में अशांति रहती है।

योग संख्या दस – यदि किसी कुण्डली में

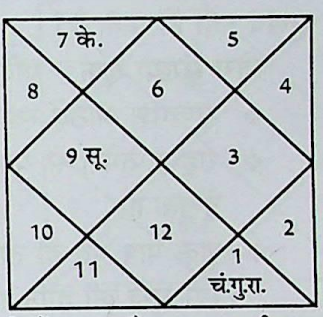

- ❖ चतुर्थ स्थान का स्वामी, चंद्रमा राहू से युत होकर अष्टम या व्यय स्थान में हो।
- ❖ चतुर्थ स्थान में सूर्य हो तो पितर श्राप के कारण परिवार में अशांति रहती है।

यदि किसी कुण्डली में उपरोक्त योग विद्यमान हो तो **पितर दोष के कारण परिवार में सदैव अशांति की स्थिति रहती है,** लड़ाई-झगड़े बने रहते हैं एक और महत्वपूर्ण बात ये है कि कोई भी मांगलिक कार्य शांति से संपन्न नहीं हो पाता है, घर में चार लोग एक जगह बैठकर प्रेम से बातचीत नहीं कर पाते हैं, उनमें किसी न किसी बात पर लड़ाई-झगड़े होते हैं, यदि ऐसी स्थिति किसी परिवार में हो तो **पितर दोष की शांति के उपाय करने से ही शांति होती है।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष के कारण स्त्री सुख हानि

यदि किसी कुण्डली में पितर दोष के कारण स्त्री सुख हानि के योग बनते हैं तो जातक का विवाह संबंध स्थापित होने में कठिनाई होती है अथवा विवाह देरी से होता है। विवाह के बाद भी या तो तलाक हो जाता है या स्त्री का स्वभाव अच्छा न होने से तकरार बना रहता है अथवा स्त्री बीमार रहती है या विवाह के पश्चात् स्त्री की मृत्यु भी संभव है, कुल मिलाकर वैवाहिक जीवन सफल और सुखद नहीं हो पाता है।

योग संख्या एक – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश आठवें स्थान में
- राहू सप्तमेश से युत हो या सप्तमेश को देखता हो
- शुक्र पाप युत हो तो पितरदोष के कारण स्त्री सुख की हानि रहती है।

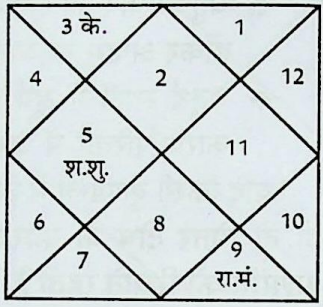

योग संख्या दो – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश छठे, आठवें, बारहवें भाव में गया हो
- पंचम स्थान में शनि हो
- राहू एकादश स्थान में हो
- कारक शुक्र नीच का या अस्त हो तो

पितर दोष के कारण स्त्री सुख की हानि होती है या वैवाहिक जीवन सफल नहीं रहता है।

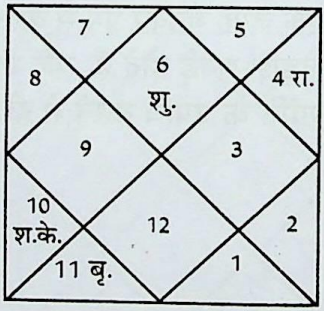

योग संख्या तीन – यदि किसी कुण्डली में

- लग्न में शनि हो
- सातवें स्थान में राहू स्थित हो
- सप्तमेश आठवें स्थान में हो तो

पितर दोष के कारण विवाह में देरी या वैवाहिक जीवन में बाधाएं आती हैं।

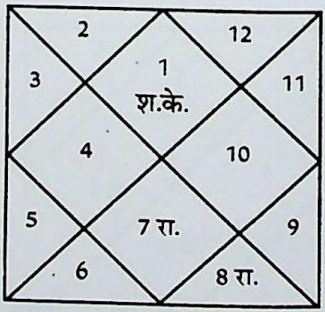

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या चार – यदि किसी कुण्डली में

- राहू तीसरे स्थान में स्थित हो
- शनि दसवें स्थान में स्थित हो
- मंगल लग्न में स्थित हो
- सप्तमेश अस्त हो तो पितर दोष के कारण दांपत्य जीवन सुखद नहीं रहता है।

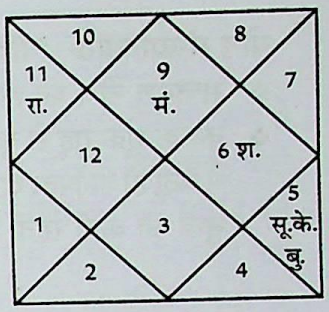

योग संख्या पांच – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश पाप युत होकर किसी स्थान में हो।
- राहू अष्टमेश से युत होकर सप्तम स्थान में बैठे तो पितर दोष के कारण दांपत्य जीवन में कलह बना रहता है।

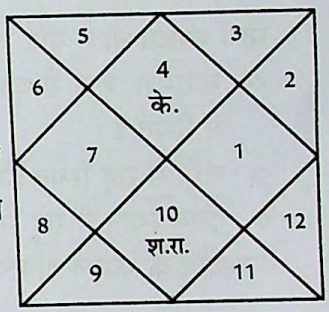

योग संख्या छः – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश अष्टम स्थान में राहू, मंगल, शनि से युत होकर स्थित हो।
- शुक्र नीच राशि में हो तो पितर दोष के कारण वैवाहिक जीवन तनाव पूर्ण रहता है।

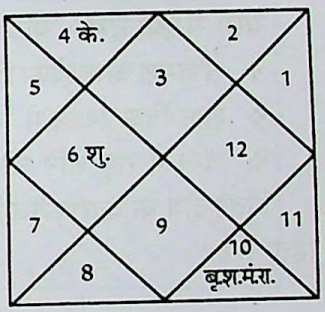

योग संख्या सात – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश अष्टम में स्थित हो
- शुक्र शनि से युत होकर सप्तम स्थान में हो
- मंगल बारहवें स्थान में हो तो पितर श्राप के कारण वैवाहिक जीवन तनाव पूर्ण रहता है।

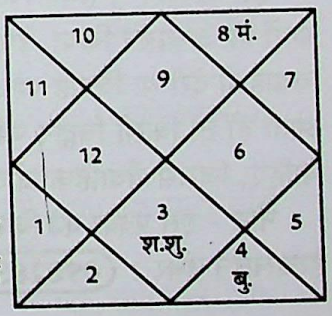

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

योग संख्या आठ – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश नीच का होकर पाप युत हो
- कारक शुक्र राहू से युत होकर किसी स्थान में बैठा हो तो पितर दोष के कारण वैवाहिक सुख की कमी रहती है।

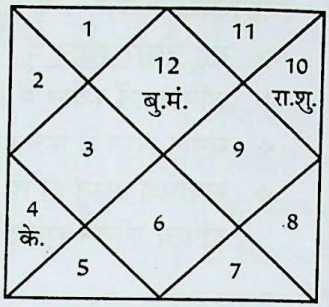

योग संख्या नौ – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश, शुक्र से युत होकर अष्टम स्थान में स्थित है।
- लग्न में राहू स्थित हो।
- दशम स्थान में राहू स्थित हो तो।

पितरदोष के कारण दांपत्य अस्थिर रहता है।

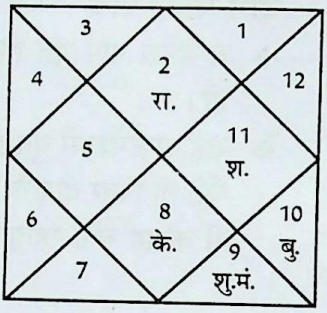

योग संख्या दस – यदि किसी कुण्डली में

- सप्तमेश अस्त होकर किसी स्थान में स्थित हो।
- शुक्र त्रिक स्थान में स्थित हो।
- लग्न में राहू शनि की युति हो तो।

पितर दोष के कारण वैवाहिक जीवन असफल रहता है।

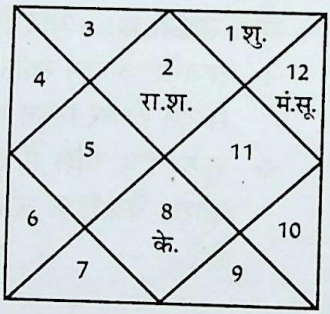

इस अध्याय में हमने पितर दोष के कारण स्त्री सुख में कमी के ज्योतिषीय योगों का अध्ययन किया, उपरोक्त योग यदि किसी कुण्डली में विद्यमान है और विवाह में देरी या विवाह पश्चात् भी दाम्पत्य में कलह रहता हो या अन्य बाधाएं आती हों तो किसी विद्वान ज्योतिषी से सलाह लेकर पितर दोष शांति करा लेनी चाहिए, जिससे वैवाहिक जीवन सुख हो सके।

नोट – इस प्रकार की किसी भी तरह की समस्या के समाधान के लिए हमारी हैल्पलाईन नंबर : **09828535525** पर सम्पर्क कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालसर्प योग और पितर दोष

यदि किसी कुण्डली में कालसर्प योग हो तो उस जातक को निश्चित रूप से पितर दोष होता है भले ही उस जातक की कुण्डली में अन्य पितर दोष दर्शाने वाले ग्रह योग ना हो। **कालसर्प योग के कारण होने वाले पितर दोष में मनुष्य को एकाधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है,** जैसे जातक का विवाह नहीं होता, विवाह पश्चात् संतान नहीं होती, हो भी जाती है तो वह जीवित नहीं रह पाती या कन्या संतान ही होती है, पुत्र नहीं होता है और होता है तो अपंग या मंद बुद्धि रहता है। शरीर के रोग डॉक्टर की पकड़ में नहीं आते हैं, आधुनिक साधनों की सहायता से भी रोग निदान करने में डॉक्टर असफल रहते हैं। अथक परिश्रम के बाद भी कमाए धन का संचय नहीं हो पाता, धन में बरकत नहीं होती, व्यापार-व्यवसाय में लाभ नहीं रहता, घर में हमेशा अशांति छाई रहती है, वास्तुदोष रहता है, कर्ज देनदारी बढ़ती जाती है आदि कई सारी समस्याएं काल सर्प योग से पीड़ित जातक के सामने आती है।

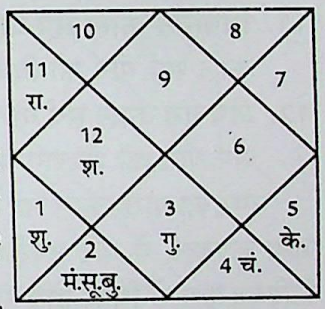

काल सर्पयोग - जब किसी जन्म कुण्डली में सभी ग्रह राहू और केतु के एक ही तरफ स्थित हो तो ऐसी ग्रह स्थिति काल सर्प योग कहलाती है।

दर्शायी गई कुण्डली पर नजर डालें राहू तीसरे स्थान में स्थित है और केतु नवम स्थान में स्थित है बाकी सभी ग्रह चतुर्थ से अष्टम स्थान में स्थित हैं तथा दशम से द्वितीय स्थान में कोई भी ग्रह नहीं है, अत: समस्त ग्रह राहू-केतु के एक ओर ही स्थित हैं, इसलिए यह स्थिति काल सर्पयोग को दर्शाती है, वैसे कालसर्प योग कुल 288 प्रकार के होते हैं। लेकिन मुख्य कालसर्प योग बारह प्रकार के होते हैं, जिनके नाम निम्न हैं।

1. **अनन्त काल सर्प योग** - लग्न से सप्तम स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को अनन्त काल सर्प योग कहते हैं।
2. **कुलिक काल सर्प योग** - द्वितीय स्थान से अष्टम स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को कुलिक काल सर्प योग कहते हैं।
3. **वासुकि काल सर्प योग** - तीसरे स्थान से नवम स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को वासुकि काल सर्प योग कहते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

4. **शंखपाल काल सर्प योग** - चौथे स्थान से दशम स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को शंखपाल काल सर्प योग कहते हैं।
5. **पदम काल सर्प योग** - पांचवें स्थान से ग्यारहवें स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को पदम काल सर्प योग कहते हैं।
6. **महा पदम काल सर्प योग** - छठे स्थान से बारहवें स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को महापदम काल सर्प योग कहते हैं।
7. **तक्षक काल सर्प योग** - सातवें स्थान से लग्न स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को तक्षक काल सर्प योग कहते हैं।
8. **कर्कोटक काल सर्प योग** - अष्टम स्थान से दूसरे स्थान के मध्य बनने वाले काल सर्प योग को कर्कोटक काल सर्प योग कहते हैं।
9. **शंखनाद काल सर्प योग** - नवम स्थान से तृतीय स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को शंखनाद कालसर्प योग कहते हैं।
10. **पातक काल सर्प योग** - दशम स्थान से चतुर्थ स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को पातक काल सर्प योग कहते हैं।
11. **विषाक्त काल सर्प योग** - एकादश स्थान से पंचम स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को विषाक्त काल सर्प योग कहते हैं।
12. **शेषनाग काल सर्प योग** - बारहवें स्थान से छठे स्थान तक बनने वाले काल सर्प योग को शेषनाग काल सर्प योग कहते हैं।

उपरोक्त बारह काल सर्प योगों की यहां संक्षिप्त व्याख्या की गई है, किसी भी जन्म कुण्डली में यदि उपरोक्त काल सर्प योगों में से कोई योग हो तो जातक निश्चित् रूप से **पितर दोष** से पीड़ित होता है।

एक विशेष बात काल सर्प योग के संदर्भ में देखने में आती है कि **यदि किसी जातक की कुण्डली में कालसर्प योग हो तो उस परिवार के अन्य सदस्यों की कुण्डली में भी काल सर्प योग विद्यमान होता है।** हालांकि यह आवश्यक नहीं है कि परिवार के सभी लोगों की कुण्डली में यह योग पाया जाए। यह अवश्य होता है कि आने वाली संतति भी काल सर्प योग से पीड़ित हो, ऐसा अनुभव गम्य है, यहां हम एक ही परिवार के सदस्यों की कुण्डलियां दे रहे हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

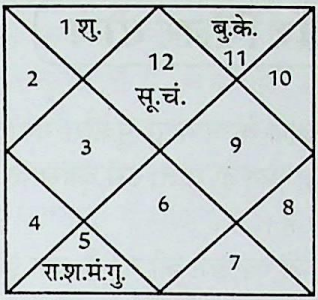

कुण्डली संख्या-1

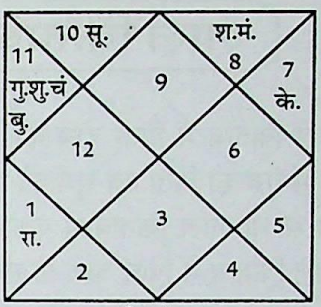

कुण्डली संख्या-2

उपरोक्त दोनों कुण्डलियां एक ही परिवार में जन्मे भाई और बहन की हैं, यह परिवार लम्बे समय तक पितर दोष से पीड़ित रहा और **पितर दोष की शांति** के बाद ही **परम पूजनीय सद्गुरूदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** की कृपा से यह परिवार सुखी हुआ।

इसी प्रकार एक अन्य परिवार के दो सदस्यों की कुण्डलियां देखें।

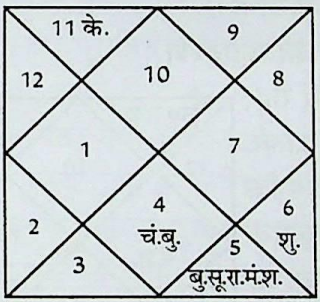

कुण्डली संख्या-1

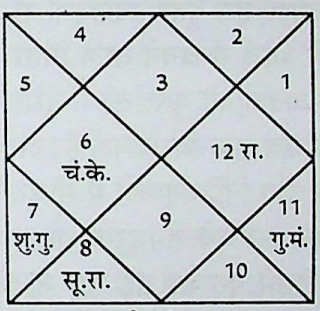

कुण्डली संख्या-2

उपरोक्त दोनों कुण्डलियां भी एक ही परिवार में जन्मे दो सदस्यों की हैं। यह परिवार भी लंबे समय तक पितर दोष से पीड़ित हुआ और **नाग-नारायण बली अनुष्ठान** कराने के पश्चात् ही इस परिवार का वातावरण सुखद हुआ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाल किताब और पितर दोष

लाल किताब में पितर दोष को पितर ऋण के नाम से पुकारा गया है लाल किताब में गुरु को पिता एवं सूर्य को पुत्र कहा गया है, अत: इसे बृहस्पति के ऋण के नाम से भी लाल किताब में पुकारा गया है।

लाल किताब में पितर ऋण के संदर्भ में जो व्याख्या की गई है, वह इस प्रकार है, ''जब जन्म कुण्डली के दूसरे, पांचवें, नौवें एवं बारहवें भाव में शुक्र, बुध व राहू हो तो पिता का ऋण होता है।''

पितर ऋण की इस व्याख्या पर अगर विचार किया जाए तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि दूसरा, पांचवां, नौवां एवं बारहवां भाव गुरु के कारक भाव है अब अगर गुरु के भावों (कारक) में गुरु के शत्रु हो तो वह दूषित हो जाएगा, फलत: पितर दोष उत्पन्न होगा। राहू, बुध एवं शुक्र गुरु के शत्रु है, राहू छाया ग्रह है अब अगर राहू बुध या शुक्र के साथ गुरु के कारक भावों में बैठेगा तो पितर दोष ही पैदा करेगा, आईए इसे कुछ उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं।

दूसरे भाव से बनने वाले पितर ऋण का उदाहरण

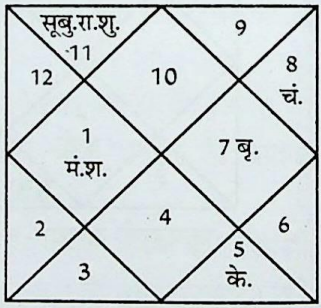

इस जातक की कुण्डली में दूसरे भाव में राहू, बुध, सूर्य एवं शुक्र विराजमान हैं, अत: इस जातक को पितर दोष निश्चित् रूप से मौजूद है। जैसा कि ऊपर स्पष्ट कर चुके हैं। दूसरा भाव गुरु का कारक भाव है, इसमें गुरु शत्रु ग्रह राहू जो कि छाया ग्रह है एवं बुध व शुक्र विराजमान है, इसलिए दूसरा भाव दूषित हो जाता है, फलत: जातक को पितर ऋण (दोष) रहता है।

पांचवें भाव से बनने वाला पितर ऋण

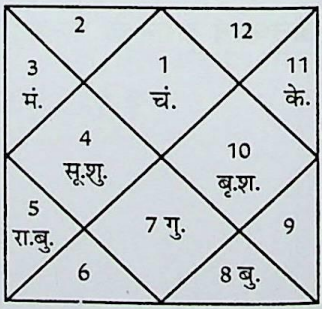

उपरोक्त कुण्डली में पांचवें भाव में राहू के साथ बुध स्थित है, पांचवां भाव गुरु का कारक भाव है, यहां भी लाल किताब के अनुसार पितर ऋण मौजूद है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवम भाव से बनने वाला पितर ऋण

प्रस्तुत कुण्डली में नवम भाव जो कि गुरु का कारक भाव है में गुरु के शत्रु ग्रह राहू और शुक्र स्थित है इसलिए लाल किताब के अनुसार पितर ऋण इस कुण्डली में मौजूद है।

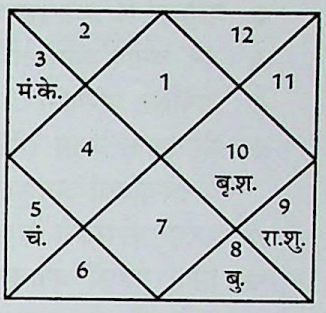

बारहवें भाव से बनने वाला पितर ऋण

यदि कुण्डली के बारहवें घर में राहू, बुध के साथ स्थित है तो भी पितर ऋण होता है क्योंकि कुण्डली का बारहवां भाव गुरु का कारक भाव है, जिसमें गुरु के शत्रु ग्रह स्थित है, अत: कुण्डली में बारहवें भाव से बनने वाला पितर ऋण पाया जाता है।

लाल किताब में पितर ऋण के कारण - लाल किताब के अनुसार पितर ऋण के निम्न कारण बताए गए हैं।

कुल का पुरोहित परिवर्तित करना - लाल किताब कहती है कि यदि कुल पुरोहित को अपने निजी कारणों से यदि परिवर्तित कर दिया जाए तो उसके श्राप के कारण **पितर दोष** हो जाता है। कुल पुरोहित को यदि निस्संतानता के कारण परिवर्तित किया जाए तो निश्चित् रूप से पितर दोष हो जाता है।

पीपल के पेड़ को नुकसान पहुंचाना - यदि कोई व्यक्ति अकारण ही किसी पीपल के वृक्ष को किसी भी प्रकार का नुकसान पहुंचाता है तो वह व्यक्ति पितर दोष का भागी होता है। यदि व्यक्ति घर में लगे हुए अथवा पड़ोस के या किसी धर्म स्थान के वृक्ष के नीचे शौच कर्म करता है अथवा पीपल के वृक्ष के नीचे घर की गन्दगी को डालता है तो उस व्यक्ति को अवश्य ही पितर दोष हो जाता है। ऐसा अनुभव में भी आया है, कई परिवारों को पीपल वृक्ष के बर्बाद करने के बाद पूर्ण रूप से बर्बाद होते लेखक ने स्वयं अपनी आँखों से देखा है। पीपल वृक्ष के नीचे शौच कर्म करने वालों को भी विभिन्न व्याधियों से ग्रसित होते भी लेखक ने देखा है।

लाल किताब में पितर दोष के लक्षण - लाल किताब पितर ऋण के लक्षण भी बताती है, यदि किसी व्यक्ति के पास अपनी जन्मकुण्डली ना हो तो इन लक्षणों से भी पितर ऋण की पहचान की जा सकती, लाल किताब के अनुसार पितर ऋण के लक्षण निम्न प्रकार से हैं -

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

- परिवार में अनावश्यक तनाव रहता है।
- बने-बनाए काम आखिरी समय पर बिगड़ जाते हैं।
- अपेक्षित परिणाम अनावश्यक विलंब से मिलते हैं।
- मांगलिक कार्य (विवाह योग्य संतानों के विवाह आदि) में, सभी परिस्थितियां अनुकूल होने पर भी विलंब होता है।
- भरपूर आमदनी के होते हुए भी बचत पक्ष कमजोर होता है।
- पिता-पुत्र में अनावश्यक वैचारिक मतभेद होते हैं।
- शरीर में अनावश्यक दर्द और भारीपन रहता है।
- यदि पितर बंधन में हो, तो जातक के सिर में सायनस और माईग्रेन के समान दर्द रहता है।

वृद्धावस्था में दुख - लाल किताब के अनुसार यदि व्यक्ति को पितर दोष हो तो जब तक उसके जवानी के दिन रहते हैं तब तक तो वह संपन्न रहता है, जैसे ही उसके बाल सफेद आने लगते हैं, वह विभिन्न समस्याओं से घिर जाता है।

समस्त कार्यों में बाधा - यदि किसी व्यक्ति के प्रत्येक कार्यों में अवरोध आने लग जाए। होते हुए कार्यों में भी अचानक व्यवधान आ जाए, परिवार में कलह रहने लग जाए अथवा परिवार के किसी सदस्य को ऐसा रोग हो जाए जो डॉक्टरों के उपचार के बाद भी ठीक न हो पा रहा हो तो व्यक्ति को पितर दोष होने की संभावनाएं प्रबल हो जाती हैं।

व्यापार व्यवसाय में नुकसान - यदि व्यापार में लगातार गिरावट आ रही है। पूरे प्रयास करने के बाद भी व्यापार में स्थिरता न आ रही हो, माल घाटे से बेचना पड़े, ग्राहक दुकान पर रुकता न हो या ग्राहक दुकान पर आता ही न हो अपने आसपास की दुकानें ठीक चलती हों, बाजार में भीड़ हो लेकिन आपकी दुकान पर ग्राहक न आता हो, ये सब लक्षण भी **पितर दोष** की संभावना को प्रबल बनाते हैं, लाल किताब कहती है कि जब पीतल जंग लगा लोहा और सोना पीतल हो जाए अर्थात् आर्थिक रूप से व्यक्ति तबाह हो जाए तो समझ जाना चाहिए कि उस व्यक्ति को पितर ऋण का दोष है।

लाल किताब में पितर ऋण का निदान - लाल किताब में पितर ऋण का निदान इस प्रकार से बताया गया है कि जब यह निश्चित् हो जाए कि व्यक्ति को पितर ऋण है तो उस व्यक्ति को चाहिए कि व्यक्ति किसी धर्म स्थान में एक पीपल के पेड़ को स्थापित करे एवं जब तक वह बड़ा न हो जाए तब तक उसकी देखभाल करे ऐसा करने से वह व्यक्ति पितर ऋण से मुक्त हो जाता है, उसका रोजगार खुल जाता है, धन के आगम के रास्ते खुलने लगते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

लाल किताब के अन्य ऋण

लाल किताब में पितर ऋण के अलावा अन्य ऋणों का उल्लेख भी मिलता है, जिनकी संक्षिप्त में चर्चा करेंगे।

1. **सूर्य से स्व ऋण** - जब पांचवें भाव सूर्य शुक्र अथवा पापी ग्रह हो तो स्व ऋण होता है। जन्म कुण्डली में पांचवां भाव संतान का होता है, लाल किताब में पांचवें भाव का स्थायी स्वामी सूर्य माना गया है, क्योंकि पांचवें नंबर की राशि सिंह होती है, जिसका स्वामी सूर्य होता है, अब अगर सूर्य के स्थायी भाव में सूर्य के शत्रु ग्रह शुक्र, शनि, राहू आदि आ जाए तो स्व ऋण होगा।

स्व ऋण का कारण - पूर्व जन्म में जातक नास्तिक होता है एवं प्राचीन परंपराओं पर मूत्र का विसर्जन करता है अर्थात् व्यक्ति ने अपने पूर्व जन्म में धर्म विरोधी कार्य किए होंगे, अपने कुल की मर्यादाओं का उल्लंघन किया होगा।

स्व ऋण के लक्षण - लाल किताब में स्व ऋण के जो लक्षण बताए गए हैं, वे निम्नानुसार हैं, यदि जातक के पास जन्मपत्री न हो और अग्रलिखित लक्षण मौजूद हों तो भी वह स्व ऋण से ग्रसित होता है।

- घर में भूमिगत अग्निकुंड होगा।
- छत में से प्रकाश के अनेक मार्ग होंगे।
- निर्दोष होते हुए भी राजदण्ड हो जाएगा।
- हृदय रोग हो, स्वास्थ्य कमजोर होगा।
- जीवन संघर्षपूर्ण हो जाएगा।

उपरोक्त पांच लक्षणों में से यदि दो लक्षण भी मौजूद हों तो व्यक्ति स्व ऋण से निश्चित रूप से ग्रसित होता है।

स्व ऋण का उपाय - कुटुम्ब में जहां तक रक्त के संबंधी हो, वहां तक सभी से धन लेकर यज्ञ करे अर्थात् सभी से कुछ भाग अवश्य ले, फिर उन पैसों को इकट्ठा करके किसी विद्वान द्वारा अनुष्ठान का आयोजन करवाए एवं शांति यज्ञ करे, ऐसा करने से जातक स्व ऋण भार से मुक्त होता है एवं उसका जीवन सुखद एवं शांतिपूर्ण हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

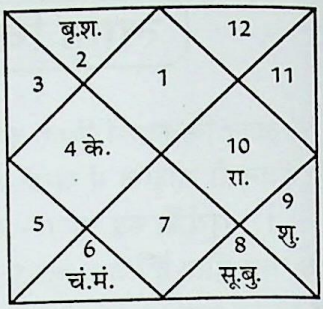

2. चंद्र से मातृ-ऋण - जब चौथे भाव में केतु स्थित हो तो मातृ ऋण होता है। लाल किताब में चौथे भाव का स्थायी स्वामी चंद्रमा को माना गया है, क्योंकि चौथे भाव में चार नंबर की राशि आती है, जिसे ज्योतिष शास्त्र में कर्क राशि के नाम से पुकारा जाता है। कर्क राशि का स्वामी चंद्रमा है, इसलिए चौथे भाव का स्थायी स्वामी चंद्रमा को माना गया है। अब यदि चंद्रमा के घर में केतु जैसा ग्रह आए तो चौथा भाव दूषित हो जाता है, अत: व्यक्ति को मातृ ऋण होगा।

मातृ ऋण के कारण - लाल किताब में मातृ-ऋण के निम्न कारण बताए गए हैं।

- माता के प्रति लापरवाह रहना अर्थात् उसके सुख-दुख का ध्यान न रखना।
- माता को अपनी संतान के जन्म के बाद बेघर कर देना।
- घर के पास के कुएं, तालाब आदि को पूजने की अपेक्षा घर के कूड़े-करकट को उसमें डालना।

मातृ ऋण के लक्षण - मातृ-ऋण के जो लक्षण लाल किताब में बताए गए हैं, वे इस प्रकार से हैं।

- कहीं से भी किसी प्रकार की सहायता न मिलना।
- जमा धन व्यर्थ में खर्च हो जावे।
- कर्जा हो जाए और चुके नहीं।
- घर की शांति खत्म हो जाए अर्थात् घर में व्यक्ति सुख से भोजन न कर पाए जैसे ही भोजन करने बैठे कोई न कोई क्लेश घर में हो जावे अथवा जब व्यक्ति भोजन पर बैठे स्त्री खरी-खोटी करने लग जावे।

यदि उपरोक्त लक्षण विद्यमान हो तो बगैर जन्मपत्री के हो व्यक्ति को जान जाना चाहिए कि उस पर मातृ ऋण का प्रभाव है।

मातृ-ऋण का उपाय - कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य से बराबर भाग चांदी लेकर बहते पानी में एक ही दिन बहाने से मातृ-ऋण से मुक्ति मिलती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

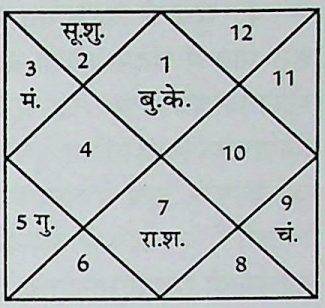

3. मंगल से संबंधी का ऋण – जन्म कुण्डली के पहले या आठवें भाव में बुध व केतु ग्रह स्थित हो तो संबंधी का ऋण होता है। लाल किताब ने कुण्डली में मंगल ग्रह को पहले एवं आठवें भाव का स्थायी स्वामी माना है क्योंकि कुण्डली के पहले भाव में मेष राशि है एवं कुण्डली के आठवें भाव में वृश्चिक राशि होती है। मेष एवं वृश्चिक दोनों राशियों का स्वामी मंगल होता है। इसलिए मंगल ग्रह को यहां पहले एवं आठवें भाव का स्थायी स्वामी माना गया है। अब अगर मंगल के स्थायी भावों में बुध एवं केतु स्थित हो जाए तो ऐसी कुण्डली में संबंधी का ऋण होता है।

संबंधी ऋण के कारण – अपने भाई बन्धुओं से धोखा किया भाई की संपत्ति को हड़पा हो अथवा भाई की हत्या करवाई हो, अपने भाई को दुख दिया हो। ये सब कारण मंगल के ऋण को दर्शाते हैं।

संबंधी ऋण के कारण – लाल किताब में संबंधी ऋण के जो लक्षण बताए गए हैं वे इस प्रकार से हैं।

- प्रत्येक प्रकार की सफलता, उन्नति, सुख-साधन मिलने के बाद अचानक सब कुछ तबाह हो जाए।
- अचानक दुखों का पहाड़ टूट जाए। तब इतने दुख मिले कि उनकी कल्पना करने से भी रूह कांप जाए।
- अकारण ही मित्र भी शत्रु हो जाए।
- कहीं से भी कोई सहायता न मिले।
- उम्र के 28वें वर्ष से 36वें वर्ष के मध्य ये सब भोगना पड़े अर्थात् 28वें वर्ष आते ही सारे सुख समाप्त हो जाएं।

यदि उपरोक्त घटना क्रम किसी व्यक्ति के जीवन में घटने लग जाएं तो समझ जाना चाहिए कि मंगल के संबंधी ऋण का प्रभाव है यदि किसी के पास जन्मपत्री न हो और उपरोक्त घटनाएं घटने लगें तो लक्षणों को पहचान करके इस ऋण का तुरंत ही उपाय करना चाहिए।

उपाय – कुटुम्ब में प्रत्येक सदस्य से समान मात्रा में धन एकत्र करके किसी चिकित्सालय में मुफ्त औषधियां दान में दे, ऐसा करने से मंगल के संबंधी ऋण से मुक्ति मिलेगी।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

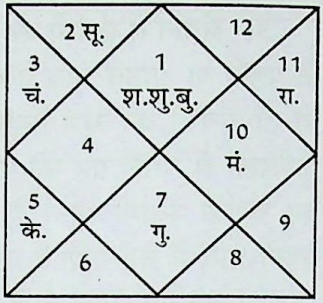

4. बुध से बहन का ऋण – तीसरे अथवा छठे भाव में चंद्रमा हो तो बहन का ऋण होता है। लाल किताब में बुध ग्रह से बहन-बेटी का विचार किया गया है। इसलिए बुध ग्रह से होने वाले ऋण को बहन के ऋण से संबोधित किया गया है। लाल किताब में कुण्डली में बुध को तीसरे एवं छठे भाव का स्थायी स्वामी माना गया है, क्योंकि तीसरे भाव में मिथुन राशि एवं छठे भाव में कन्या राशि आती है। अब यदि बुध के स्वामी भावों में चंद्रमा आ जावे तो बहन का ऋण होगा।

बुध के बहन ऋण के उदाहरण –

तीसरे भाव से बनने वाले बहन का ऋण

प्रस्तुत कुण्डली के छठे भाव में चंद्रमा स्थित है, अत: यह कुण्डली बहन के ऋण से पीड़ित है, अत: बहन के ऋण का निदान आवश्यक है।

बुध से बनने वाले बहन के ऋण के कारण – इस ऋण के कारण जो कि लाल किताब में बताए गए हैं वे निम्न प्रकार से है–

- लड़की या बहन की हत्या की हो या उन पर अत्याचार किया हो।
- खोए हुए मासूम बच्चों को उठाकर बेचा हो या लालच वश उनको बदला हो।
- बहन या बेटी की संपत्ति को हड़पा हो या रुपया लेकर वापस न दिया हो।
- संपन्न होते हुए भी अपनी बहन बेटी को ऐसे घर में दिया हो जहां उसका सम्पूर्ण जीवन गरीबी में नष्ट हुआ हो।
- समर्थ होते हुए भी अपने जीवन काल में अपनी बहन-बेटी की मदद न की हो।

बहन बेटी के ऋण के लक्षण –

- लड़की पैदा हो या लड़का वो सदैव परेशान रहे।
- आर्थिक रूप से बर्बाद हो जाए।
- उम्र के 48 साल तक जीवन में संकट बना रहे।
- जीवन में संघर्ष इतना बढ़ जाए कि जीने की इच्छा बिलकुल समाप्त हो जाए।
- ससुराल एवं ननिहाल से कोई सहयोग न मिले।
- सहायता करने वाले ऐसे गायब हो जाएँ जैसे गधे के सिर से सींग।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यदि ऊपर बताए गए घटना क्रम किसी व्यक्ति के जीवन में घटित होने लगे तो समझ जाना चाहिए उसको बुध के बहन-ऋण का दोष है।

बहन के ऋण से मुक्ति का उपाय - सम्पूर्ण कुटुम्ब के व्यक्ति पीले रंग की कौड़ियां एक स्थान पर एकत्रित करके जला लें। जलाने के बाद उनकी राख को एकत्रित करके बहते पानी में बहाएं। यहां महत्वपूर्ण ध्यान देने वाली बात है कि राख को बहते हुए पानी में ही बहाना है, कुएं, तालाब में नहीं डालना है।

5. शुक्र से स्त्री का ऋण - दूसरे अथवा सातवें भाव में सूर्य राहू व चन्द्रमा स्थित हो तो स्त्री का ऋण होता है। लाल किताब ने कुण्डली के दूसरे एवं सातवें भाव को शुक्र का स्थायी भाव माना है। कुण्डली के दूसरे भाव में वृष राशि एवं सातवें भाव में तुला राशि होती है। इन दोनों राशियों का स्वामी शुक्र है, अब शुक्र के भावों में सूर्य, राहू व चन्द्रमा आ जाते हैं, तो स्त्री का ऋण होता है।

शुक्र के स्त्री ऋण के कारण - लाल किताब में स्त्री ऋण का मुख्य कारक किसी कारण से अपनी स्त्री को प्रताड़ित करना बताया है। स्त्री के ऋण से तात्पर्य अपनी स्वयं की पत्नी को प्रताड़ित करना है क्योंकि आज के इस भौतिकवादी युग में हमारे भारत देश में दहेज का दानव जिस प्रकार से नवविवाहिताओं को लील रहा है, उसकी खबरें रोज अखबार में पढ़ने को मिलती हैं, मैं समझता हूं, उन्हें उस स्त्री ऋण को भोगने के लिए अगले जन्म में नहीं इसी जन्म में तैयार रहना चाहिए।

लालचवश गर्भवती स्त्री की हत्या कर देना - आज के समाज में दहेज लोभियों की कहीं भी कमी नहीं है और अधिक दहेज के लालच में या दूसरे विवाह के जरिए अधिक धन की कामना के वशीभूत प्रथम स्त्री की हत्या करने से भी नहीं चूकते। लेखक एक ऐसे प्रतिष्ठित व्यक्ति को जानता है जिसका विवाह अपनी पढ़ाई के दौरान ही एक साधारण लड़की से हो गया, समय चक्र से वह व्यक्ति प्रतिष्ठित नौकरी पर गया। अब उसे अपनी स्त्री खटकने लगी अब उसकी स्त्री गर्भवती थी तो गर्भ के आठवें मास में उस स्त्री की रहस्यमयी मृत्यु हो गई ? आगे जाकर उस व्यक्ति ने एक अच्छे पद पर कार्यरत लड़की से विवाह रचाया। कालान्तर में उस लड़की को ऐसा रोग हुआ, जिससे उसका पूरा शरीर सफेद दागों से भर गया। उस व्यक्ति ने उसका बहुत पैसा खर्च कर इलाज करवाया लेकिन वह ठीक नहीं हुई। आज यह स्थिति है कि उस स्त्री के पास किसी व्यक्ति का बैठना मुश्किल है जिसमें पतिदेव को तो उसके साथ रहना पड़ रहा है अर्थात् उसे स्त्री को प्रताड़ित करने का जो ऋण है उसे इसी जन्म में चुकाना पड़ रहा है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्त्री के साथ मारपीट या उसे घर से निकाल देना - यह भी स्त्री ऋण का कारण है यदि कोई व्यक्ति अपनी स्त्री से अकारण ही मारपीट करे। वैसे भी हमारे भारतीय समाज में पुरुष दंभी होता है, स्त्री को मात्र विषय भोग की वस्तु और अपनी दासी से ज्यादा नहीं समझता ऐसे में अगर वह स्त्री से मारपीट करे या अभिमानवश उसे अपमानित करके अपने घर से निकाल दे तो क्या आश्चर्य ? लेकिन ऐसा करने वालों को लाल किताब के स्त्री-ऋण को पढ़कर सावधान हो जाना चाहिए और जो नहीं माने उसे फल भुगतने के लिए तैयार रहना चाहिए, क्योंकि ईश्वर के यहां तो बनिए वाला खाता चलता है, जिसमें मनुष्य के प्रत्येक कार्य का लेखा-जोखा है, अब खाते का तो सिद्धांत ही है कि जमा और नाम और जो कुछ भी पुण्य-पाप उस खाते में जमा है वह तो व्यक्ति को ब्याज समेत वापस मिलेगा ही।

शुक्र के स्त्री ऋण के संकेत - लाल किताब ने स्त्री-ऋण के जो लक्षण बताए हैं यदि किसी परिवार के साथ वैसा ही घटित हो रहा हो तो उसे स्त्री ऋण से मुक्ति के उपाय करने चाहिए।

❖ जब भी घर में कोई मांगलिक कार्य अथवा विवाह हो रहा हो अथवा विवाह होना निश्चित हो गया हो इसी मध्य किसी निकटतम रिश्तेदार के यहां मृत्यु हो जाए अर्थात् मांगलिक कार्यों को सूतक लगने के कारण आगे खिसकाना पड़े।

❖ किसी भी सुखद अवसर पर अचानक दुख का कोई कारण पैदा हो जाए जैसे बच्चे जन्मदिन हो और परिवार का कोई व्यक्ति चोटग्रस्त हो जाए।

❖ प्रत्येक मांगलिक कार्य को संपन्न करने के बाद भी सुखद अनुभूति ना हो अर्थात् पुत्र के विवाह के बाद पता चले कि जिस लड़की को हम ब्याह के लाए हैं वह हमारे परिवार के लायक है ही नहीं।

❖ अनेक विवाह करने पर भी स्त्री का सुख हासिल ना हो, अर्थात् जब स्त्री ब्याह के लाए तब तक तो ठीक रहती है, लेकिन जब वह ससुराल में अपना जीवन व्यतीत करती है तो उसे कोई असाध्य बीमारी हो जाती है, जिसके फलस्वरूप पति का जीवन बर्बाद हो जाता है। ऐसी घटनाएं लेखक ने अनेक परिवारों में अनुभव की हैं। कारण वही उस परिवार से कोई स्त्री पहले अतृप्त जीवन जीते हुए मर गई और उसके कुछ वर्षों बाद उन परिवारों पर विपत्तियों का पहाड़ टूट पड़ा। इस सबके पीछे स्त्री का श्राप ही कारण दिखाई देता है, क्योंकि मरने के बाद वे स्त्रियां पितर योनि को प्राप्त होती हैं एवं अपना प्रतिशोध लेती हैं। परिवार के सदस्यों को

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्वप्न में दिखना एवं अपना प्रतिशोध की भावना जताना यह भी कई परिवारों को अनुभव होता है और तब लोग प्रायश्चित् करते हैं और इससे बचने के लिए इधर-उधर विभिन्न देवी-देवताओं के दरबारों में शरण के लिए पहुंचते हैं। यद्यपि ऐसे अपराध क्षमा करने योग्य नहीं है, लेकिन शास्त्रों का तो नियम है निकृष्ट व्यक्ति को भी तारने का उपाय बताना। लाल किताब में भी स्त्री-ऋण से मुक्ति का उपाय बताया है।

स्त्री ऋण का निदान - जैसा पाप वैसा निदान। ऊपर आप देख आए हैं कि लाल किताब ने सर्प आदि ग्रहों से बनने वाले ऋणों के निदान में मनुष्य पर अधिक भार नहीं डाला गया है। लेकिन स्त्री जो कि इस जगत को बनाए रखने में पुरुष को बराबर की भागीदार होती है जो कि एक महान् कार्य है अत: स्त्री ऋण का निदान थोड़ा खर्चे वाला बताया है जो इस प्रकार है, ''कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य से आवश्यक खर्चे के लिए धन एकत्र करके एक सौ आठ गायों को भोजन से तृप्त करे तो ही स्त्री के ऋण से मुक्ति मिलती है।''

विशेष - लाल किताब के अनुसार शुक्र का कारक जानवर गाय है, अत: स्त्री ऋण से पीड़ित व्यक्ति को ऊपर बताए उपाय को तो निश्चित् रूप से करना ही चाहिए इसके साथ ही उन्हें चाहिए कि वे नित्य ही गाय को चारा डालने का नियम बना ले या स्थान हो तो गाय घर में पाले क्योंकि लाल किताब में कहा गया है कि जब ग्रह अधिक नीच फल देने लगे तो उसका निराकरण ग्रह के जानवर को पालने एवं उसकी सेवा करने से ही होगा अत: यथा संभव गौ सेवा की और ध्यान दे, जिससे शुक्र के स्त्री ऋण से मुक्ति पाई जा सके।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

शनि से निर्दयता का ऋण

यदि कुण्डली के दसवें एवं ग्यारहवें भाव में सूर्य, चंद्र एवं मंगल स्थित हो तो निर्दयता का ऋण होता है। यदि कुण्डली के लाल किताब ने कुण्डली दसवें एवं ग्यारहवें भाव को शनि का स्थायी भाव माना है, क्योंकि प्रथम भाव में मेष राशि की स्थिति को स्थायी मान लेने से दसवें भाव में मकर राशि एवं ग्यारहवें भाव में कुम्भ राशि आती है, इन दोनों राशियों का अधिपति शनि ग्रह है अत: कुण्डली दसवें एवं ग्याहरवें भाव शनि के स्थायी भाव हुए। अब अगर शनि के भावों में उसके प्रबल शत्रु सूर्य, मंगल एवं चंद्र ग्रह स्थित हो जाएं तो यह शनि का निर्दयी ऋण कहलाता है।

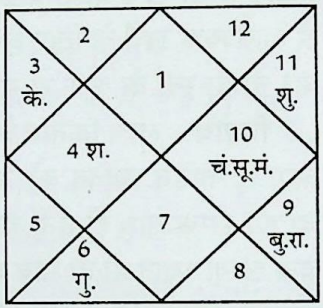

शनि के निर्दयी ऋण के कारण - लाल किताब में शनि के निर्दयी ऋण के निम्न कारण वर्णित है।

- धोखे से किसी की हत्या की हो अथवा करवाई हो।
- किसी का मकान, दुकान अथवा कुएं की छत पर घर बनाया हो।
- कार्य स्थल पर आग लग जाए एवं उसे बुझाने का प्रबंध न हो।
- आग में जलने वालों को अस्पताल पहुंचाने का साधन न मिले।
- मकान बनते समय वर्षा आ जाए और रुके नहीं।
- ससुराल एवं स्वयं को अकारण पुलिस तंग करे।
- योग्य संतान भी नकारा हो जाए।
- घर के लोग आराम से न सो पाए अर्थात् परिवार में अनिद्रा का रोग हो।
- कुटुम्ब के सदस्य धीरे-धीरे कम हो रहे हों एवं परिवार विपत्तियों से घिर जाए कोई भी स्पष्ट कारण नजर न आए कि ऐसा क्यों हो रहा है तो इसका विचार चुकाए या जबरदस्ती से छीना तो नहीं गया है, यदि शनि के ऋण का प्रभाव दिखाई दे तो शनि के निर्दयी ऋण का उपाय करें।

उपाय - कुटुम्ब के सभी सदस्य धन एकत्र करके सौ गरीब लोगों अथवा मजदूरों को एक ही दिन एक ही स्थान पर भोजन करवाए तो शनि के निर्दयी ऋण से मुक्ति मिलती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

राहू से अजन्मे का ऋण - बारहवें भाव में यदि सूर्य-शुक्र मंगल हो तो अजन्मे का ऋण होता है। लाल किताब में कुण्डली के बारहवें घर को आकाश एवं छठे घर को पाताल माना है, बारहवें भाव का स्थायी स्वामी राहू को, छठे घर स्थायी स्वामी केतु को माना गया है, अब अगर राहू के घर में सूर्य, शुक्र एवं मंगल ग्रह आ जाए तो अन्जमे का ऋण होता है।

अजन्मे का अर्थ - यहां ऐसा लगता है कि लाल किताब के लेखक ने अजन्मे शब्द का प्रयोग जीवात्माओं के संदर्भ में किया है, जिन्होंने शरीर रूप में तो इस धरती पर जन्म नहीं लिया है लेकिन छाया रूप में इस ब्राह्मण्ड में विद्यमान है क्योंकि राहू छाया ग्रह है जो अस्तित्व में तो है लेकिन दिखाई नहीं देता। अत: एक प्रकार से अजन्मे का ऋण प्रेतात्माओं का प्रतिशोध है।

अजन्मे ऋण का उदाहरण :

प्रस्तुत कुण्डली के बारहवें भाव में जो कि राहू का स्थायी भाव है सूर्य मंगल व शुक्र स्थित है अत: कुण्डली में राहू का अजन्मा ऋण है।

अजन्मे ऋण के कारण - ससुराल अथवा निकट संबंधियों के साथ विश्वासघात की घटनाएं इस प्रकार से की गई होंगी कि उनका पूरा कुटुम्ब तबाह हो जाए। अर्थात् अपने ससुराल वालों या किसी संबंधी अथवा मित्रादि के साथ कोई ऐसी कपट चाल चली होगी, जिसके कारण वे आर्थिक या पारिवारिक रूप से बर्बाद हो गए होंगे। उनमें से ही कोई व्यक्ति मरने के बाद यदि प्रेत योनि को प्राप्त हो जाए तो वह प्रतिशोध की भावना के कारण अजन्मे ऋण से ग्रसित कुण्डली में जातक को परेशान करता है।

अजन्मे ऋण के संकेत अथवा लक्षण :

- घर के मुख्य द्वार की दहलीज के नीचे से गंदे पानी का निकास होगा।
- घर की दक्षिण दीवार की तरफ उजड़ा हुआ कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्टी होगी।
- अचानक आग लग जाए या धोखे से धन हानि हो।
- संबंधियों में युवा उम्र का कोई व्यक्ति सिर में चोट की वजह से कोमा में चले जाए।
- खूब सोच-विचार कर कार्य करने पर भी हानि हो।
- जहां तक रक्त का संबंध हो वे संबंधी भी किसी न किसी प्रकार से परेशान रहें।
- मुकदमा सदैव ही हारे।
- निर्दोष होते हुए भी जेल या जुर्माना हो जाए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपरोक्त लक्षण यदि किसी परिवार में देखने को मिले तो वह परिवार राहू के अजन्मे ऋण से प्रभावित होता है अर्थात् प्रेतात्माएं ही उस परिवार को नुकसान पहुंचा रही हैं। यदि किसी व्यक्ति के पास अपनी जन्मपत्री न हो तो भी उपरोक्त लक्षण होने पर उसे अजन्मे ऋण का उपचार अवश्य ही करना चाहिए।

अजन्मे ऋण का निदान - कुटुंब के प्रत्येक सदस्य से एक-एक साबुत नारियल लेकर एक ही दिन में बहते पानी में बहा देने से इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

विशेष - मेरे विचार से इस प्रयोग को शनिवार अथवा बुधवार को करना चाहिए क्योंकि शनि राहू का मित्र है एवं बुध की राशि कन्या में राहू उच्च का होता है (लाल किताब के मतानुसार) एवं इस प्रयोग को ग्यारह बुधवार तक लगातार करना ज्यादा लाभप्रद होता है और व्यक्ति राहू के अजन्मा ऋण से मुक्त हो जाता है।

केतु से ईश्वरीय ऋण - छठे भाव में चंद्र, मंगल हो तो ईश्वरीय ऋण होता है। जैसे कि अजन्मे ऋण के विवेचन में बता चुके हैं कि लाल किताब के लेखक ने छठे भाव को पाताल माना है इससे केतु नीच का होता है और छठे भाव का कारक ग्रह भी केतु को ही माना गया है अब अगर केतु के घर में मंगल, चंद्र की युति हो तो यह केतु का ईश्वरीय ऋण होता है।

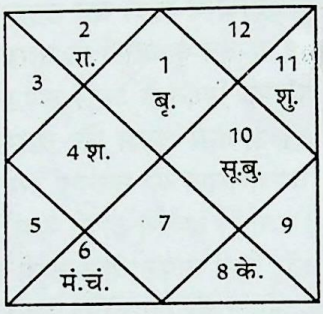

केतु के ईश्वरीय ऋण के कारण

- किसी की नर संतान का अपहरण करवाना।
- किसी की नर संतान को मरवाना।
- कुत्तों को मरवाना।
- लालचवश दूसरे के कुटुम्ब को नष्ट करना या करवा देना।

केतु के ईश्वरीय ऋण के संकेत अथवा लक्षण

- लड़के का जन्म न हो अर्थात् लड़कियां ही पैदा होती हैं।
- लड़के पैदा हो जाएं तो सदैव बीमार रहें।
- आर्थिक रूप से बर्बाद हो जाए।

उपाय - कुटुम्ब के प्रत्येक सदस्य से धन एकत्र करके एक ही दिन में सौ कुत्तों को भोजन करवाए। इसके अतिरिक्त एक अन्य उपाय यह भी है कि गृह प्रवेश करते समय दायीं ओर के घर में कोई विधवा हो तो उससे आशीर्वाद लेने पर भी इस ऋण से मुक्ति मिलती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरदोष शांति के सामान्य उपाय

- पिता का आदर करें और उनसे नित्य आशीर्वाद लें।
- तांबे के लोटे के जल में, श्वेत आर्क के पुष्प मिलाकर, नित्य उगते सूर्य को अर्घ्य दें और इस समय कम से कम 21 बार सूर्य के बीज मंत्रों का जाप करें।
- पितरों के निर्मित घर में दीपक, अगरबत्ती करें और रोज प्रातः पूजा के समय '**ॐ पितृाय नमः**' के कम से कम 21 जाप करें।
- जहां पितरों का दीपक करें, वहां एक कलश में शुद्ध जल, ढक्कन से ढ़ककर रखें और इस जल को रोज सुबह बदलें और पुराने जल को तुलसी या मनीप्लांट के पौधों में डाल दें।
- **नारायण बली** योग्य विद्वान से विधिपूर्वक संपन्न कराएं।
- पितरों का तर्पण योग्य विद्वान से कराएं।
- भोजन करने से पहले अपने हिस्से की पहली रोटी में से एक चौथाई रोटी अलग निकालें और इसे चिड़िया गाय को खिलाएं।
- अमावस्या को पितरों के नाम की धूप करें और गरीब व्यक्ति को यथायोग्य खाना खिलाएं।
- सवा मीटर सफेद कपड़ा लें। इसके एक कोने में सवा रुपया और एक चुटकी चावल बांधें और इस कोने में गांठ लगा दें। अब इस कपड़े में एक साबुत पानी का नारियल रखें और नारियल को इस कपड़े में बांध लें। इस कपड़े सहित नारियल को घर में सुरक्षित पवित्र स्थान में रखें।
- माघ, बैसाख, भाद्रपद माह की अमावस्या को पितरों के निमित्त यथायोग्य दान (कपड़े, बर्तन) करें।

इन उपायों से जातक की भावी पीढ़ियां पितर दोष से मुक्त रहती हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरदोष शांति हेतु प्रयोग

सामग्री - जलपात्र, घृत का दीपक, तंत्रोक्त नारियल, अगरबत्ती तथा दूध की बनी मिठाई का भोग।

माला - मूंगे की माला (मंत्र सिद्ध चैतन्य)

समय - दिन का कोई भी समय।

दिन - शनिवार।

आसन - लाल रंग का आसन।

दिशा - पश्चिम दिशा।

जप संख्या - ग्यारह दिन (11 दिन)

मंत्र - ॐ श्रीं सर्व पित्तृ दोष निवारणाय क्लेश हन हन सुख-शांति देहि देहि फट् स्वाहा॥

प्रयोग - किसी भी शनिवार के दिन में किसी भी समय स्नान कर सफेद धोती पहनकर अपने सामने मिट्टी के एक पात्र में रेत डालकर उसमें गेहूं या किसी भी प्रकार का धान बो दें तथा नित्य इसमें थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें, जिससे कि धान उग जाए। सामने सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर चने की दाल की ढेरी बनाकर उस पर तंत्रोक्त नारियल स्थापित कर दें। यह **तंत्रोक्त नारियल** लगभग एक इंच लंबा होता है और तंत्र सामग्री बेचने वालों के यहां पर मिल जाता है। (बाजार में जो आम नारियल मिलते हैं, वे नारियल प्रयोग में नहीं लावे) इसके बाद दीपक व अगरबत्ती लगाकर उपरोक्त मंत्र का जप करें, नित्य दूध का बना प्रसाद भोग लगावें और नित्य मंत्र जप के बाद पश्चिम दिशा की तरफ वह भोग फेंक दे। इस प्रकार ग्यारह दिन प्रयोग करें और जिस पात्र में धान बोया था, उस पात्र में थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें, इस प्रकार जब प्रयोग समाप्त हो जाए तब बारहवें दिन उस मिट्टी के पात्र को किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें और वह तंत्रोक्त नारियल अपने घर के पूजा स्थान में रख दें।

इस प्रकार करने से किसी भी प्रकार का **पितर दोष समाप्त हो जाता है,** और घर में सुख-शांति स्थापित हो जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अदृश्य देव साधना

यदि पितरों के कारण आपको परेशानियों तथा बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो, तो ऐसी दु:खदायी परिस्थिति से शीघ्र छुटकारा पाने के लिए **अमोघ शक्तिशाली प्रयोग** के माध्यम से अदृश्य देवता को प्रसन्न करके अपने समस्त विघ्नों का विनाश किया जा सकता है।

सामग्री - अभिमंत्रित प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त **पारद शिवलिंग,** सूजी का हलवा, तेल का दीपक, लोबान, धूप, पंचामृत, अष्टगंध, चांदी की तश्तरी, लकड़ी का बाजोट, सफेद रंग का वस्त्र, सवा किलो साबुत बासमती चावल, गंगाजल का पात्र।

माला - मंत्र सिद्ध चैतन्य **रूद्राक्ष माला**।

आसन - सफेद सूती आसन।

धारणीय वस्त्र - सफेद रंग की धोती।

दिन - पुष्य योग।

दिशा - दक्षिण दिशा।

समय - रात्रि दस बजे पश्चात्।

जप संख्या - 16000 (सोलह हजार) दफा।

अवधि - आठ दिन (8 दिन)

पारद शिवलिंग

मंत्र - ॐ अदृश्य देवाय विघ्न विनाशय फट् स्वाहा॥

प्रयोग विधि - यह विचित्र किंतु शक्तिशाली साधना है। अत्यंत विषम परिस्थितियों में ही तथा साधना के समस्त नियमों का कठोरता से पालन करते हुए ही इसे सम्पन्न करना चाहिए। (हमारी राय में तो किसी अनुभवी तांत्रिक से ही अपने नाम से यह साधना सम्पन्न करा लेना ही श्रेष्ठ रहता है) इस **अद्भुत साधना** के अचूक परिणाम त्वरित फलदायी साबित हुए हैं।

किसी भी माह के पुष्य योग में ही इस प्रयोग को सम्पन्न किया जाता है। रात्रि दस बजे पश्चात् साधना आरंभ की जाती है। पूर्व प्रयोगों में वर्णित साधना की अन्य विधियों को सम्पन्न करके अभिमंत्रित प्राण-प्रतिष्ठित रससिद्ध **'पारद शिवलिंग'** को स्थापित करके, पंचामृत का अभिषेक करके, सूजी के ताजे हलवे का भोग लगावें। तत्पश्चात् रूद्र शक्ति से अभिमंत्रित मंत्रसिद्ध चैतन्य **'रूद्राक्ष माला'** से उपरोक्त मंत्र का निर्भय पूर्वक आठ दिनों में सोलह हजार जाप पूर्ण करें। प्रयोग समाप्ति के पश्चात् **रूद्राक्ष माला** गले में धारण कर लें तथा **पारद शिवलिंग** को घर के पूजा-स्थल में स्थापित करके नित्य प्रति-दर्शन-पूजनादि किया करें। साधना काल के दौरान सात्विक आहार-विहार तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्वेतार्क गणपति प्रयोग

यह प्रयोग जीवन में कल्याण की कामना के लिए किया जाता है, घर में विवाह कार्य सफलता पूर्वक सम्पन्न हो जाये, घर में सुख शान्ति रहे या किसी कार्य में विघ्न न आवे, इसके लिए यह प्रयोग किया जाता है।

सामग्री - जलपात्र, लाल पुष्प, (**श्वेतार्क गणपति**), अगरबत्ती, शुद्ध घी का दीपक।

माला - मूंगे की माला (मंत्र सिद्ध चैतन्य)

समय - दिन का कोई भी समय।

दिन - बुधवार।

धारणीय वस्त्र - लाल रंग की धोती।

आसन - लाल रंग का ऊनी आसन।

दिशा - (साधक पूर्व की तरफ मुँह करके बैठे)

जप संख्या - इक्यावन हजार (51,000) दफा

अवधि - इक्यावन दिन (51 दिन)।

मंत्र - **॥ ॐ गं गणपतये नमो नमः ॥**

प्रयोग - किसी भी बुधवार से यह प्रयोग किया जा सकता है। सर्वप्रथम बुधवार के दिन प्रातः स्नान कर, सामने **श्वेतार्क गणपति** की मूर्ति को स्थापित कर, उसका षोड़शोपचार पूजन करें और इसके बाद उपरोक्त मंत्र का जाप प्रारम्भ कर दे। इक्यावन दिनों तक प्रतिदिन 1000 दफा उक्त मंत्र का जप करने पर यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। साधना समाप्त होने पर सात कुँआरी कन्याओं को भोजन कराकर उसे दक्षिणा, वस्त्र आदि भेंट स्वरूप प्रदान करे, और **श्वेतार्क गणपति** को पूजा स्थान में स्थापित कर दे। ऐसा करने पर भविष्य में होने वाले कार्य बिना किसी बाधा के सम्पन्न होते हैं सर्वसुख की प्राप्ति के आसार बनने लग जाते हैं।

यदि पाठकगण किसी भी कारणवश इस प्रयोग अथवा पुस्तक में वर्णित अन्य किसी भी प्रयोग अथवा साधना को स्वयं कर पाने में असमर्थता का अनुभव करें तो शीघ्र ही हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित करें। आपके अनुरोध पर केन्द्र के विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा आपके नाम से वह प्रयोग सम्पन्न करा दिया जाएगा और साधना सामग्री पैकेट आपको घर बैठे ही भिजवा दिया जायेगा। यदि पितर दोष की वजह से आपको अपने जीवन में अशांति, अमंगल और बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो तो इस प्रयोग को शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न करके लाभ उठावें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष निवारक महायाक्षिणी प्रयोग

यह एक अद्भुत चमत्कारी गोपनीय तांत्रिक प्रयोग है। इस प्रयोग के माध्यम से महायक्षिणी को प्रसन्न करके आश्चर्यजनक रुप से समस्त प्रकारेण पितर दोषों से मुक्ति प्राप्त की जा सकती हैं। कार्यसिद्धि हेतु एकदफा इस प्रयोग को अवश्य संपन्न करके लाभ उठाया जाना चाहिए।

सामग्री - मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त **'दुर्लभ हत्था जोड़ी'**, तेल का दीपक, दूध की मिठाई, लोबान, धूप, साबुत लौंग का जोड़ा, लाल कनेर के पुष्प इत्यादि।

माला - मंत्रसिद्ध चैतन्य 'काली हकीक माला'।
आसन - काले रंग का ऊनी कम्बल का आसन।
धारणीय वस्त्र - काले रंग की धोती।
दिशा - उत्तर दिशा।
दिन - शनिवार (पुष्य नक्षत्र)
समय - रात्रि काल ग्यारह बजे पश्चात्।
स्थान - बिल्व पत्र के वृक्ष के नीचे।
जप संख्या - 51000 दफा (इक्यावन हजार)।
अवधि - 25 दिन (पच्चीस दिन)।
मंत्र - ॐ श्रीं क्लीं ह्रीं ऐं आं श्रीं महायक्षिणी सर्वैश्वर्य प्रदण्डै नमः॥

प्रयोग विधि - कलियुग में यक्षिणी साधनाओं को तुरंत प्रभावी और अचूक फलदायी माना गया है। इनमें भी **'महायक्षिणी साधना'** को तो विद्वान तांत्रिकों व अघोरियों ने रामबाण दवा मानी है। इस शक्तिशाली साधना के माध्यम से समस्त प्रकार के पितर दोषों से मुक्ति सहज में ही प्राप्त की जा सकती है। हमने अनेकानेक जातकों को उनकी विभिन्न पृथक-पृथक समस्याओं के एकमात्र निदान के रुप में इस अद्भुत साधना को सम्पन्न कराया और सभी जातकों ने आश्चर्यजनक रुप से मनोवांछित सफलताएँ भी प्राप्त की। आप भी इस साधना को जीवन में एक दफा आजमाकर लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

किसी भी **'शनिपुष्य योग'** में रात्रि ग्यारह बजे पश्चात् बिल्व पत्र के वृक्ष के नीचे बैठकर लकड़ी के बाजोट पर चांदी की तश्तरी में असली सिंदूर के ऊपर मंत्रसिद्ध **'दुर्लभ हत्था जोड़ी'** को स्थापित करके लोबान, धूप और तेल का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दीपक जलावें। कपूर, साबुत लौंग का जोड़ा, लाल कनेर के पुष्प, चांदी का सिक्का और दूध की मिठाई का भोग लगावें। तत्पश्चात् काले रंग के ऊनी कम्बल पर उत्तराभिमुख बैठकर मंत्रसिद्ध चैतन्य '**काली हकीक माला**' से पच्चीस दिनों में उपरोक्त मंत्र का इक्यावन हजार जाप पूर्ण करें।

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् '**दुर्लभ हत्थाजोड़ी**' को एक डिब्बी में रखकर सदैव अपने पास जेब में रखें तथा शेष पूजन सामग्री को लाल वस्त्र की पोटली में बांधकर किसी शमशान में फेंक देवें और बिना पीछे मुड़कर देखे वापिस आ जावें। (साधक यदि चाहें तो इस साधना को किसी विद्वान तांत्रिक से भी सम्पन्न करा सकते हैं।) यदि आपको किसी प्रकार की कठिनाई महसूस होवे तो आपके अनुरोध पर नियमानुसार कार्यवाही करके आपके नाम से हमारे केन्द्र विद्वान तांत्रिकों द्वारा यह अद्‌भुत प्रयोग सिर्फ आपके लिए ही सम्पन्न कराया जा सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विजय गणपति प्रयोग

यदि आप समस्त प्रकार के पितर दोषों से छुटकारा प्राप्त करने के साथ ही अपने जीवन में शीघ्रातिशीघ्र तथा सर्वत्र विजय एवं सफलता प्राप्त करने के इच्छुक हों तो निम्नांकित **विजय गणपति प्रयोग** अवश्य ही सम्पन्न करके लाभ उठावें।

सामग्री - लाल कनेर के पुष्प, हरी दूब, बेसन के लड्डू, **विजय गणपति प्रतिमा,** देशी घी का दीपक, केसर, धूप-अगरबत्ती, लकड़ी का पट्टा, पीले रंग का वस्त्र, थाली और जलपात्र।

माला - मंत्रसिद्ध चैतन्य **मूंगे की माला।**

धारणीय वस्त्र - पीले रंग की धोती।

आसन - पीले रंग का आसन।

दिशा - पूर्व दिशा।

दिन - बुधवार।

समय - प्रातः ब्रह्ममुर्हूत में।

अवधि - पच्चीस दिन (25 दिन)

जपसंख्या - 25000 (पच्चीस हजार)

मंत्र - ॐ वर वरदाये गं विजय गणपतये नमो नमः॥

प्रयोग विधि - यह चमत्कारी साधना किसी भी बुधवार से प्रारम्भ की जा सकती है। सर्वप्रथम एक लकड़ी के बाजोट (पट्टे) पर पीला वस्त्र बिछाकर उस पर थाली रखें। थाली में केसर से स्वास्तिक चिन्ह बनाकर मंत्रसिद्ध चैतन्य **'विजय गणपति प्रतिमा'** को स्थापित करके पंचोपचार पूजन करें। तत्पश्चात् केसर का तिलक लगावें, हरी दूब (घास) चढ़ाएँ, बेसन के लड्डू का भोग लगावें, लाल कनेर के पुष्प चढ़ावें और धूप-दीपक जलावें। फिर मंत्रसिद्ध चैतन्य **'मूंगे की माला'** से उक्त मंत्र का जाप प्रारंभ करें। ध्यान रखें कि साधनाकाल के दौरान सात्विक आहार-विहार और पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का पालन तथा **पीले रंग की धोती** धारण करना परम आवश्यक है। पच्चीस दिनों में पच्चीस हजार मंत्र जप पूर्ण करके प्रयोग समाप्ति के पश्चात् **'विजय गणपति प्रतिमा'** को घर के पूजा-स्थल में स्थापित कर देवें।

(जो व्यक्ति इस प्रयोग को स्वयं कर पाने में असमर्थ हों वे हमारे केन्द्र से सम्पर्क करें। यदि वे चाहेंगे तो उनके अनुरोध पर यह **महाशक्तिशाली साधना** सम्पन्न करवाकर साधना सामग्री का पैकेट उन्हें घर बैठे ही भेज दिया जाएगा)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष शांति हेतु सुलेमानी प्रयोग

यदि आपको जीवन में पितर दोष के कारण अनेकानेक बाधाओं का सामना करना पड़ रहा हो तो निम्नांकित **अद्‌भुत चमत्कारी प्रयोग** को शीघ्रतापूर्वक आजमाकर लाभ प्राप्त करें।

सामग्री -मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित **तंत्रोक्त नारियल,** लोबान, तेल का दीपक, थाली, लकड़ी का बाजोट (पट्टा), लाल रंग का वस्त्र, साबुत काले उड़द।

माला - मंत्रसिद्ध चैतन्य 'काली हकीक माला'

आसन - काले रंग का ऊनी कम्बल का आसन।

धारणीय वस्त्र - काले रंग की धोती।

दिशा - शनिवार (कृष्ण पक्ष)

समय - रात्रि के समय।

जप संख्या - 10000 दफा प्रतिदिन (दस माला)

अवधि - 30 दिन (एक महीना)

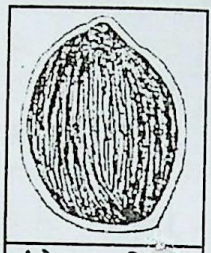

तंत्रोक्त नारियल

मंत्र -

ॐ नमो सात समुद्र के बीच शिला। जिस पर सुलेमान पैगम्बर बैठा। सुलेमान पैगम्बर के चार मुवक्किल। पूर्व को धाया देव दानवों को बांधि लाया। दूसरा मुवक्किल पश्चिम को धाया। भूत-प्रेत कू बांधि लाया। तीसरा मुवक्किल उत्तर को धाया। अयुत पितृ को बांधि लाया। चौथा मुवक्किल दक्षिण को धाया। डाकिनी-शाकिनी को पकड़ि लाया। चार मुवक्किल चहुं दिशि धावें। छलछिद्र कोऊ रहन न पावें। रोग दोष को दूर भगावें। शब्द सांचा। पिण्ड कांचा। फुरो मन्त्र ईश्वरो वाचा।

प्रयोग विधि - यह प्रयोग कृष्ण पक्षीय किसी भी शनिवार से प्रारंभ किया जा सकता है। रात्रि में अपने समक्ष लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर थाली में सवा पाव साबुत काले उड़द के ऊपर **'तांत्रोक्त नारियल'** को स्थापित करें और नारियल का पंचोपचार पूजन करें ÷ लोबान लगावें तथा तिल के तेल का दीपक जलावें। फिर काले रंग के ऊनी कम्बल के आसन पर बैठकर मंत्रसिद्ध चैतन्य **'काली हकीक माला'** से उपरोक्त मंत्र का एक महीने तक प्रतिदिन दस माला (10000 दफा) श्रद्धापूर्वक जाप करें।

एक महीने पश्चात् **'काली हकीक माला'** को अपने गले में धारण कर लें तथा शेष पूजन सामग्री को लाल वस्त्र की पोटली में बांधकर किसी निर्जन एकांत स्थान में जमीन में गाढ़ कर बिना पीछे मुड़कर देखे घर वापिस आ जावें। इस प्रकार से यह **महाशक्तिशाली प्रयोग** सम्पन्न हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वसिद्धि प्रयोग

प्राय: देखने में आता है कि योग्यता, बुद्धिमता, कठोर परिश्रम करने के बावजूद भी पितर दोषों के कारण किसी कार्य में सफलता नहीं मिल पाती है। यदि आपके साथ भी ऐसा ही कुछ हो रहा हो अथवा निरंतर असफलता प्राप्त करके आप अत्यधिक परेशान हो चुके हों तो इस प्रयोग को विधि-विधान से श्रद्धापूर्वक सम्पन्न करके लाभ अवश्य उठावें।

मोती शंख

सामग्री - **मोती शंख,** भोज पत्र, कुंकुम जल पात्र, घृत का दीपक।

माला - (मंत्र सिद्ध चैतन्य) रुद्राक्ष माला

समय - दिन / रात का कोई भी समय।

दिन - सोमवार।

धारणीय वस्त्र - सफेद रंग की धोती।

आसन - सफेद रंग का आसन।

दिशा - उत्तर दिशा।

जप संख्या - इक्कीस हजार (21,000) दफा।

अवधि - इक्कीस दिन (21 दिन)।

मंत्र - **॥ ॐ श्रीं ह्रीं सर्व सिद्धिं देहि देहि ह्रीं श्रीं नमः ॥**

यंत्र

2	7	6
1	5	9
4	3	8

प्रयोग - यह प्रयोग किसी भी सोमवार से प्रारम्भ किया जा सकता है। सर्वप्रथम अपने सामने लकड़ी के एक पट्टे पर भोजपत्र बिछाकर उस पर कुंकुंम से उपरोक्त सिद्धिदायक यंत्र अंकित करे, और उस यंत्र पर **मोतीशंख** स्थापित कर दे। इसके बाद पूजन करें, पुष्प चढ़ावें और मोती शंख के सामने अगरबत्ती व दीपक लगावें। इसके बाद **मंत्र सिद्ध चैतन्य रूद्राक्षमाला** से उपरोक्त मंत्र का सस्वर जाप प्रारम्भ करें। जब मंत्र जप पूरा हो जाये तो उस **मोती शंख** को पूजा स्थल में रख दें तथा उस भोज पत्र पर अंकित यंत्र को चांदी के ताबीज में भरकर अपने गले में धारण कर लें। इस **चमत्कारी ताबीज** को गले में धारण कर लेने से प्रत्येक कार्य में मनोवांछित सफलता मिलती है।

यदि आप इस **चमत्कारी ताबीज** को घर बैठे ही प्राप्त करना चाहें तो हमारे केंद्र की हैल्पलाइन पर सम्पर्क कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

भाग्योदयकारक पारद गणपति प्रयोग

यदि जन्मपत्री में पितर दोष के कारण आपके भाग्य की वृद्धि नहीं हो पा रही है अथवा अधिक अनेकानेक कोशिशों के बावजूद भी भाग्योन्नति में रुकावटों का सामना करना पड़ रहा हो, तो इस **अद्भुत शक्तिशाली प्रयोग** को संपन्न करके मनोवांछित लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

सामग्री - मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त '**पारद गणपति**' लकड़ी का बाजोट, जलपात्र, जनेऊ, दूर्वा, लाल रंग का वस्त्र, साबुत चावल, धूप-अगरबत्ती, बेसन के लड्डू, पंचमेवा, कनेर के लाल पुष्प, इत्र, लौंग, इलायची, मिश्री, सिंदूर, अटा वाला नारियल, एक थाली, फल इत्यादि।

माला - मूंगे की माला (मंत्रसिद्ध चैतन्य)

धारणीय वस्त्र - पीले रंग की धोती।

आसन - पीला आसन।

दिशा - पूर्व दिशा।

दिन - बुधवार। (शुक्ल पक्ष) (चतुर्थी तिथी)

समय - प्रात:काल सात बजे।

जप संख्या - 108 दफा प्रतिदिन।

अवधि - इक्यावन दिन (51 दिन)

मंत्र - ॐ वक्र तुंडैक दंष्ट्राय क्लीं ह्रीं श्रीं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं में वशमानय स्वाहा॥

प्रयोग द्वारा - किसी भी माह के शुक्ल पक्षीय बुधवार की चतुर्थी तिथी को यह प्रयोग आरंभ किया जा सकता है। प्रात: स्नानादि से निवृत्त होकर पीली धोती पहनकर आसन पर बैठ जावें और लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर साबुत बासमती चावल की ढेरी के ऊपर थाली रखकर मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त '**पारद गणपति**' स्थापित करके पंचोपचार पूजनादि करें + दूर्वा (घास), जनेऊ, इत्र, पंचमेवा, फल, कनेर के लाल पुष्प, लौंग, इलायची, मिश्री व सिंदूर चढ़ावें और बेसन के लड्डू का भोग लगावें। फिर मंत्र सिद्ध चैतन्य '**मूंगे की माला**' से इक्यावन दिनों तक प्रतिदिन (1008 दफा) उपरोक्तमंत्र का जाप करें।

प्रयोग समाप्ति के पश्चात् '**पारद गणपति**' को पूजास्थल में स्थापित कर देवें + मंत्रसिद्ध चैतन्य '**मूंगे की माला**' को अपने गले में धारण कर लें और शेष पूजन सामग्री को किसी गाय को खिला देवें। साधना काल के दौरान सात्विक आहार-विहार का पालन करना अनिवार्य है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सर्वबाधा नाशक दिव्य प्रयोग

पितर दोष के कारण आपके दैनिक जीवन में आ रही बाधाओं को दूर करने तथा भौतिक उन्नति हेतु इस प्रयोग को विधिपूर्वक सम्पन्न करके मनोवांछित लाभ प्राप्त करना चाहिए।

सामग्री - दिव्य आभायुक्त **शालिग्राम,** भोज पत्र, जल पात्र, केसर, कस्तूरी, लाल चन्दन तथा कुंकुंम।

माला - दिव्य माला (मंत्र सिद्ध चैतन्य)

समय - दिन या रात का कोई भी समय।

दिन - गुरुवार।

धारणी वस्त्र - सफेद रंग की धोती।

आसन - सफेद रंग का सूती आसन।

दिशा - पूर्व दिशा।

जप संख्या - ग्यारह हजार (11,000) दफा।

अवधि - ग्यारह दिन (11 दिन)।

मंत्र - **॥ ॐ ह्रां ह्रीं नमः ॥**

अ	इ	उ	ऐं
ओ	आ	ए	अ
अः	औ	ई	ह्रीं
हुं	क्लीं	श्रीं	ऊ

प्रयोग - सबसे पहले भोज पत्र पर उपरोक्त चारों पदार्थों (केसर + कस्तूरी + कुंकुम + लाल चंदन) को मिलाकर उसकी स्याही बनाकर **सर्वतोभद्र यंत्र** अंकित करें और फिर उस पर आभायुक्त **दिव्य शालिग्राम** स्थापित करें और पंचोपचार पूजा करके दिव्य माला से मंत्र जाप प्रारंभ करें।

मंत्र जप पूरा होने पर भोज पत्र को कांच की फ्रेम में मंढवा कर घर में या दुकान में ऐसे स्थान पर टांग देवें जहां पर अधिकतर लोगों की दृष्टि पड़ती हो और आभा युक्त **दिव्य शालिग्राम** को अपने पूजा स्थान में स्थापित कर दें तथा प्रतिदिन उस फ्रेम किए हुए यंत्र तथा शालिग्राम को धूप-दीपक दिखाया करें। इस प्रकार पूर्णतः विधिपूर्वक ऐसा करने से यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

स्फटिक गणेश प्रयोग

यदि आप पितर दोष की पीड़ा से छुटकारा चाहते है और साथ ही साथ समस्त प्रकार के सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य और वैभव की कामना रखते हैं तो निम्नांकित प्रयोग को पूर्ण श्रद्धा के साथ विधिपूर्वक संपन्न करके आश्चर्यजनक रुप से अपने जीवन में **चमत्कारी लाभ** प्राप्त कर सकते हैं।

सामग्री - मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादि **स्फटिक गणेश प्रतिमा,** धूप, दीपक, बेसन के लड्डू, अष्टगंध, हरी दूब, चांदी की तश्तरी, लकड़ी का बाजोट, लाल वस्त्र, चांदी का सिक्का, जलपात्र, थाली इत्यादि।

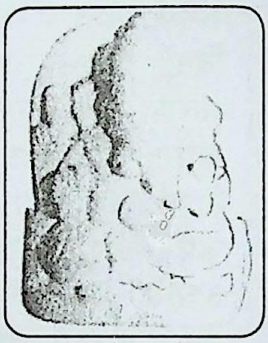

माला - मंत्र सिद्ध चैतन्य मूंगे की माला।

आसन - लाल आसन।

धारणीय वस्त्र - लाल रंग की धोती।

दिन - बुधवार (शुक्ल पक्ष)

दिशा - पूर्व दिशा।

समय - प्रात: काल।

जप संख्या - 21000 (इक्कीस हजार) दफा।

अवधि - इक्कीस दिन (21 दिन)

मंत्र - ॐ ग्लौं गं गणपतये भालचंद्राय एकदंताय लम्बोदराय विघ्न विनाशाय गौरीसुताय सिद्धि विनायक नमो नम:॥

प्रयोग विधि - यह प्रयोग शुक्ल पक्ष के किसी भी बुधवार से प्रारंभ किया जा सकता है। सर्वप्रथम लकड़ी के बाजोट (पट्टे) पर लाल वस्त्र बिछाकर चांदी तश्तरी में अष्टगंध की स्याही से स्वास्तिक चिन्ह अंकित करके मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादि युक्त **'स्फटिक गणेश प्रतिमा'** स्थापित करें। फिर प्रतिमा का पंचोपचार पूजनादि करके चांदी का सिक्का + हरी दूब अर्पित करें और बेसन के लड्डू का भोग लगावें। धूप-दीपक जलावें और मंत्र सिद्ध चैतन्य **'मूंगे की माला'** से उपरोक्त मंत्र का इक्कीस दिनों में इक्कीस हजार जाप पूर्ण करें। फिर **स्फटिक गणेश प्रतिमा** को घर के पूजा-स्थल में स्थापित कर दें और शेष पूजन सामग्री को किसी शिव मंदिर (शिवालय) में अर्पित कर देवें। (साधनाकाल के दौरान सात्विक आहार-विहार का पालन करें तथा पूर्ण ब्रह्मचर्य व्रत का कठोरता के साथ पालना करें तभी जाकर यह साधना फलदायी साबित होगी।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नरसिंह कवच प्रयोग

किसी भी प्रकार के पितर दोष के कारण हो रही आपके जीवन में सर्वबाधाओं के विनाश एवं सुख प्राप्ति हेतु निम्नांकित दुर्लभ गोपनीय प्रयोग को विधिपूर्वक सम्पन्न करके चमत्कारी लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सामग्री - मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त '**नरसिंह कवच**' अष्टगंध, इत्र, पुष्प, फल, धूप-अगरबत्ती, देशी घी का दीपक, चांदी की तश्तरी, जलपात्र, पीला वस्त्र, लकड़ी का बाजोट इत्यादि।

धारणीय वस्त्र - लाल रंग की धोती।
माला - मूंगे की माला (मंत्रसिद्ध चैतन्य)
आसन - लाल रंग का ऊनी कम्बल।
दिशा - दक्षिण दिशा।
दिन - मंगलवार।
समय - संध्याकाल (गोधूलि बेला)
जप संख्या - ग्यारह हजार (11000)
अवधि - ग्यारह दिन (11 दिन)

मंत्र - ॐ उग्रवीरं महाविष्णुं ज्वलंतं सर्वतोमुखम् नरसिँह भीषणम् भद्रं मृत्यु-मृत्युं नमाम्यहम्।

प्रयोग विधि - किसी भी मंगलवार को संध्याकाल गोधूलि बेला में यह प्रयोग आरंभ किया जा सकता। सर्वप्रथम स्नानादि से निवृत्त होकर लाल रंग की धोती पहनकर लाल कंबल के आसन पर दक्षिणाभिमुखी होकर बैठ जावें। अपने समक्ष लकड़ी के बाजोट पर पीला वस्त्र बिछाकर चांदी की तश्तरी में अष्टगंध की स्याही से स्वास्तिक चिन्ह अंकित करके मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त '**नरसिंह कवच**' को स्थापित करें। तत्पश्चात् धूप-अगरबत्ती व देशी घी का दीपक जलावें और कवच का विधिपूर्वक पंचोपचार पूजनादि करके मंत्रसिद्ध चैतन्य '**मूंगे की माला**' से उपरोक्त मंत्र का सावधानीपूर्वक एवं निर्भयता के साथ जाप करें। लगातार ग्यारह दिनों तक यही क्रिया पूर्ववत् सम्पन्न करें। अंतिम दिन मंत्र जाप पूर्ण होने के पश्चात् '**नरसिंह कवच**' को चांदी अथवा सोने की चेन में डालकर अपने गले में धारण कर लेवें तथा शेष पूजन सामग्री को पीले वस्त्र की पोटली में बांधकर नदी-तालाब इत्यादि के बहते पानी में विसर्जित कर देवें।

साधनाकाल के दौरान साधना के समस्त नियमों का कड़ाई से पालन करना परम आवश्यक है। कवच धारण करके अनेकों जातकों ने मनोवांछित लाभ प्राप्ति के संस्मरणों से हमें अवगत कराया है। आप भी इसे आजमा सकते हैं। विश्वास करें कि इस अद्भुत चमत्कारी **नरसिंह कवच** को धारण करने मात्र से ही आपके जीवन मे पितरों के कारण चल रही परेशानियों से छुटकारा मिलना आरंभ हो जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दरिद्रतानाशक मुद्रिका प्रयोग

यदि किसी व्यक्ति की जन्मकुण्डली में स्थित पितर दोष के कारण उसे जीवन में दरिद्रता और आर्थिक कठिनाईयों का सामना करना पड़ रहा हो तो उसे किसी भी तरह से प्रयास करके इस **''दरिद्रतानाशक मुद्रिका प्रयोग''** को अवश्य ही सम्पन्न करके आजीवन लाभ प्रसिद्ध तांत्रिक ग्रन्थ ''शारदा तिलक'' में इस **पवित्री मुद्रिका** के विषय और प्रभाव के बारे में विशद् उल्लेख किया गया है। त्रिधातु (सोना - चांदी और तांबा) से शास्त्रोक्त पद्धतिं के अनुसार निर्मित इस **चमत्कारी मुद्रिका** को धारण करने से दरिद्रता का समूल नाश हो जाता है।

दरिद्रता नाशक पवित्री मुद्रिका

सामग्री - जल पात्र, घृत का दीपक, अगरबत्ती, भोजपत्र, **मंत्र सिद्धि पवित्री मुद्रिका।**

माला - मंत्र सिद्ध चैतन्य पवित्री माला

समय - दिन या रात में कोई भी समय।

दिन - शुक्रवार।

धारणीय वस्त्र - पीले रंग की धोती।

आसन - पीले रंग का आसन।

दिशा - पूर्व दिशा।

जप संख्या - ग्यारह सौ (1100)

अवधि - ग्यारह दिन

॥ ॐ क्लीं नमः ॥

मंत्र - कनकधारा स्तोत्र

प्रयोग - सर्वप्रथम भोजपत्र पर केसर से उपरोक्त यन्त्र को अंकित कर दे और उसके ऊपर **पवित्री मुद्रिका** रख दें, (जो कि मन्त्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठा युक्त हो) इसके बाद सामने अगरबत्ती व दीपक लगा दें तथा कनकधारा स्तोत्र का जप प्रारम्भ कर दें। जप पूरा होने पर भोजपत्र को चांदी के ताबीज में बन्द कर गले में धारण कर लें और मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त **पवित्री मुद्रिका** दाहिने हाथ की किसी भी उंगली में धारण कर लें। इस अंगूठी के प्रभाव से पितर दोष से सम्बन्धित सभी बाधाएं दूर हो जाती हैं और उसे धन लाभ के साथ-साथ मान सम्मान प्राप्त होता है। साथ ही यह **पवित्री मुद्रिका** धारणकर्त्ता की दरिद्रता का विनाश करके उसके लिए लक्ष्मी प्राप्ति में परम सहायक होती है।

हमारे अनुभवानुसार पितर दोष के कारण जीवन में चल रही आर्थिक परेशानियों से शीघ्र छुटकारा प्राप्त करने तथा धन प्राप्ति हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी पवित्री मुद्रिका** को आजीवन के लिए अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध पीतांबरा कवच प्रयोग

यदि आपकी जन्मपत्री में मौजूद विनाशकारी पितर दोषों की वजह से आपके जीवन में मुकद्मों, कोर्ट-कचहरी, वाद-विवाद, भूमि-विवाद अथवा शत्रुओं की वजह से आपको बहुत ज्यादा परेशानियों और दु:खों का सामना करना पड़ रहा हो तो तुरंत ही इस चमत्कारी **पीतांबरा कवच** प्रयोग को सम्पन्न करके समस्त कठिनाईयों से मुक्ति प्राप्त कर शांति और सुख का जीवन व्यतीत कीजिये।

सामग्री - लकड़ी का बाजोट (पट्टा), पीले रंग का स्वस्छ वस्त्र, तेल का दीपक, पीले पुष्प, पीले चावल, मंत्र सिद्ध चैतन्य पीतांबरा यंत्र, जलपात्र, महाशक्तिशाली सिद्ध पितांबरा कवच, बेसन की बनी हुई मिठाई, धूप-अगरबत्ती इत्यादि।

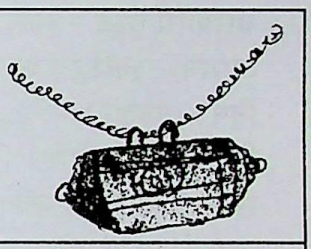

सिद्ध पीतांबरा कवच

माला - मंत्र सिद्ध चैतन्य पीतांबरा माला।
आसन - पीले रंग का आसन।
धारणीय वस्त्र - पीले रंग की धोती।
दिन - गुरुवार।
दिशा - पश्चिम दिशा।
समय - रात्रि के समय।
जप संख्या - सवा लाख (125000) दफा।
अवधि - 25 दिन (पच्चीस दिन)।

मंत्र - ॐ ह्लीं बगलामुखीं सर्व दुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिव्हां कीलय बुद्धिं विनाशाय ह्लीं ॐ स्वाहा॥

प्रयोग विधि - किसी भी गुरुवार को शुभमुर्हूत में रात्रि के समय (लगभग दस बजे पश्चात्) यह प्रयोग प्रारंभ किया जा सकता है। सर्वप्रथम स्नानादि के उपरांत पीले रंग की धोती धारण करें और हल्दी का तिलक लगावें तथा पीले रंग के आसन पर पश्चिमाभिमुखी होकर बैठ जावें। तत्पश्चात् अपने समक्ष लकड़ी के बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछाकर एक थाली में यंत्र मंत्रसिद्ध चैतन्य '**पीताम्बरा यंत्र**' स्थापित करके हल्दी का तिलक लगावें। यंत्र के ऊपर शुद्ध सोने में निर्मित महाशक्तिशाली चैतन्यवान '**सिद्ध पीताम्बर कवच**' को स्थापित करके धूप-अगरबत्ती व तेल का दीपक जलावें + पीले पुष्प व पीले चावल चढ़ावें + बेसन की मिठाई का भोग लगावें और मंत्रसिद्ध चैतन्य '**पीतांबरा माला**' से उपरोक्त मंत्र का जाप प्रारंभ करें। ध्यान रखें कि पच्चीस दिनों में उक्त मंत्र के सवा लाख जप पूर्ण होना अत्यंत आवश्यक है।

साधना काल में सात्विक आहार-विहार एवम् पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना परम आवश्यक है। साधना समाप्ति के पश्चात् सात कुमारी बालिकाओं को भोजन कराकर पीले वस्त्र व दक्षिणा देकर विदा करें और **सिद्ध पीतांबरा कवच** को अपने गले में धारण कर लेवें।

यदि आपके जीवन को चहुं ओर से कष्टों ने घेर रखा हो तथा आपके प्रत्येक कार्य में पितर दोषों की वजह से बाधाएं उत्पन्न हो जाती हों तो ऐसी दुष्कर परिस्थिति में उपरोक्तांकित **प्रचण्ड शक्तिशाली प्रयोग** को श्रद्धापूर्वक संपन्न करके वांछित लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इच्छापूरक वित्तेश्वराय प्रयोग

जन्मपत्री में पितर दोष के कारण चल रही व्यापारिक परेशानियों को दूर करने हेतु यह प्रयोग अत्यंत शक्तिशाली होने के साथ-साथ ही शीघ्र प्रभावी है। इस प्रयोग के माध्यम से सहज में ही पितर दोष शांति के साथ-साथ व्यवसायिक सफलता प्राप्त की जा सकती है।

सामग्री -मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित असली **चौदहमुखी रूद्राक्ष** (स्वर्ण जड़ित), चांदी की तश्तरी, जलपात्र, पुष्प, धूप, घी का दीपक, दूध की मिठाई इत्यादि।

माला - मंत्रसिद्ध चैतन्य रूद्राक्ष माला।

धारणीय वस्त्र - लाल रंग की धोती।

आसन - लाल रंग का ऊनी कम्बल।

दिन - गुरुवार।

दिशा - उत्तर दिशा।

समय - रात्रि दस बजे पश्चात्।

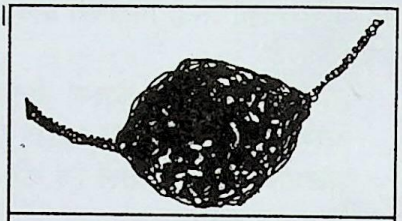

चादहमुखा रूद्राक्ष

जप संख्या - सवा लाख (125000 जप)

अवधि - पच्चीस दिन (25 दिन)

मंत्र - ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं श्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमो नमः ॥

प्रयोग विधि - सर्वप्रथम लकड़ी के बाजोट पर लाल वस्त्र बिछाकर चांदी की तश्तरी में मंत्रसिद्ध चैतन्य प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त स्वर्णजड़ित '**चौदह मुखी रूद्राक्ष**' को स्थापित करके इत्र, पुष्प, धूप-अगरबत्ती, शुद्ध देशी घी का दीपक और दूध की बनी मिठाई का भोग लगाकर रूद्राक्ष का पंचोपचार पूजनादि करें। लाल धोती पहनकर तथा लाल रंग के ऊनी कम्बल पर बैठकर मंत्रसिद्ध चैतन्य '**रूद्राक्ष माला**' से उपरोक्त मंत्र का पच्चीस दिनों में सवा लाख जाप पूर्ण करें। छब्बीसवें दिन प्रयोग समाप्ति के पश्चात् '**चौदहमुखी रूद्राक्ष**' को सोने की चेन में पिरोकर अपने गले में धारण कर लेवें और शेष पूजन सामग्री को प्रातः ब्रह्ममुर्हूत में बहते पानी में प्रवाहित कर देवें। साधना काल के दौरान सात्विक आहार-विहार और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन आवश्यक रूप से करें अन्यथा साधना की सफलता संदिग्ध ही रहेगी। उपरोक्त वर्णित मंत्रसिद्ध चैतन्यवान एवं प्राण प्रतिष्ठादियुक्त **चौदहमुखी रूद्राक्ष** को घर बैठे ही प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सर्म्पक कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर शांति हेतु दशमहाविद्या कवच प्रयोग

यह एक अत्यंत गोपनीय किंतु महाशक्तिशाली प्रयोग है। इस अद्‌भुत कवच को धारण करने मात्र से समस्त प्रकारेण पितर दोष की शांति और सर्वमनोकामनाएं सहज में ही पूरी की जा सकती हैं।

सामग्री - मंत्रसिद्ध प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त शुद्ध स्वर्ण में निर्मित '**दशमहाविद्या कवच**' जलपात्र, देशीपान का बीड़ा, लाल पुष्प, इत्र, धूप-अगरबत्ती, देशी घी का चौमुखी दीपक, लकड़ी का बाजोट, चांदी की तश्तरी, सवा किलो बासमती चावल, लाल रंग का वस्त्र, जटा वाला नारियल कुंकुम, सूजी का हलवा इत्यादि।

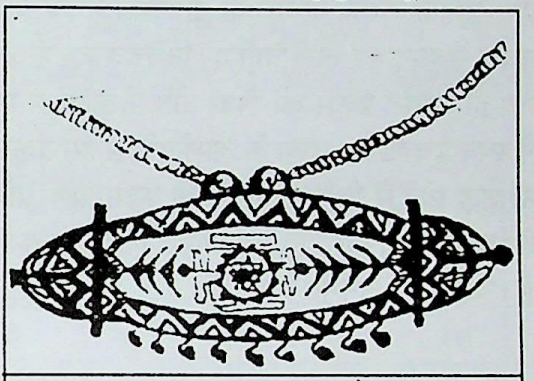

दशमहाविद्या कवच

धारणीय वस्त्र - लाल रंग की धोती।

माला - महाविद्या माला (मंत्रसिद्ध चैतन्य)

आसन - काला ऊनी कम्बल।

दिशा - पश्चिम दिशा।

दिन - शनिपुष्य योग।

समय - रात्रि दस बजे पश्चात्।

जप संख्या - 125000 दफा (एक लाख जप)

अवधि - पांच दिन (5 दिन)

मंत्र - **ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं क्रीं त्रीं धूं ह्लीं ॐ काली तारा तथा छिन्ना सुंदरी बगलामुखी। मातंगी श्यामला लक्ष्मी सिद्ध विद्या च भैरवी। धूमावती क्रमेणैव महाविद्या दशैवतु। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं क्रीं त्रीं क्लीं ह्लीं धूं ॐ दशमहाविद्यायै नमो स्वाहा ॥**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रयोग – यह एक अत्यंत गोपनीय एवं तीव्र शक्तिवान प्रचण्ड साधना है। इस दुर्लभ गोपनीय प्रयोग एवम् मंत्र को मुझे एक वृद्ध अघोरी प्रचण्डनाथ बाबा ने स्नेहपूर्वक देते हुए इसकी विलक्षण शक्तियों से युक्त '**दशमहाविद्या कवच**' के निर्माण एवम् इसे मंत्रसिद्धयुक्त चैतन्यवान करने की गोपनीय विधि प्रदान की थी। **अघोरी प्रचण्डनाथ बाबा** के अनुसार किसी भी सामान्य मनुष्य को अल्पज्ञान के आधार पर यह साधना सम्पन्न नहीं करनी चाहिए अन्यथा जरा-सी चूक होने पर ही जान से हाथ धोना पड़ सकता है। उनके कथनानुसार जब किसी मनुष्य के जीवन में कोई अत्यंत संकट का समय हो अथवा किसी ऐसी विशिष्ट **मनोकामना सिद्धि** करने की तीव्र इच्छा हो, जिसका पूर्ण होना लगभग असंभव ही हो, तो किसी विद्वान तांत्रिक अथवा अघोरी के मार्गदर्शन में इस प्रचण्ड महासाधनाा को सावधानीपूर्वक सम्पन्न कर लेनी चाहिए। निश्चित रूप से **चमत्कारी लाभ** प्राप्त होता है साथ ही समस्त प्रकार की पितर दोष पीड़ाओं से मुक्ति प्राप्त होती है।

(हमने स्वयं प्रचण्डनाथ बाबा के आशीर्वाद से इस प्रकार का '**दशमहाविद्या कवच**' को शुद्ध सोने में विधिपूर्वक निर्मित एवम् प्राण-प्रतिष्ठित करके इच्छुक जातकों को धारण करवा कर उन्हें मनोवांछित लाभ चमत्कारिक रुप से प्राप्त होते हुए देखा है। यह सिद्ध अनुभूत प्रयोग हैं।)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरदोष अशुभता निवारक प्रयोग

यह एक अत्यंत विचित्र यंत्र है। इस यंत्र के माध्यम से ग्रहों का उपद्रव तथा पितृदोषों का निवारण किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार की विपत्ति को नष्ट करने अथवा सरकारी नौकरी तथा उच्च पद प्राप्ति हेतु भी यंत्र की साधना करना अत्यंत लाभदायक रहता है।

मंत्र :

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते।
तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति॥
सदापूर्वः सर्वं तदिदमनुगृह्यति च शिव-
स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षण-चलितयोर्भ्रू-लतिकयोः॥

यंत्र :

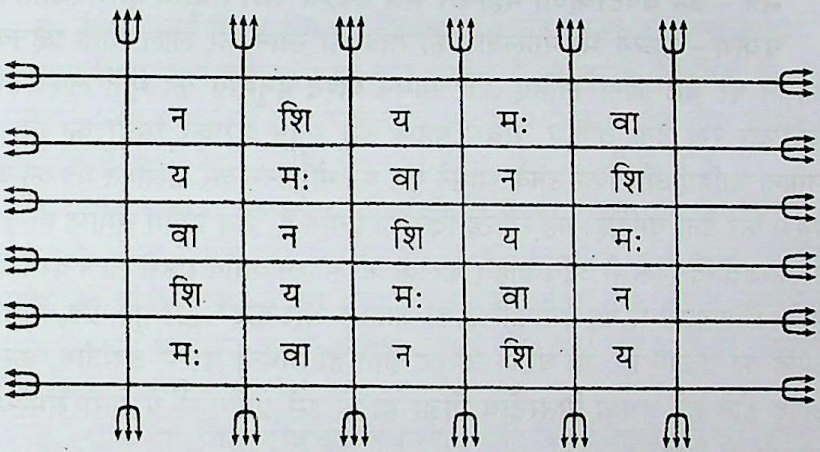

प्रयोग विधि - इस यंत्र को स्वर्ण पत्र पर खुदवाकर पूजनादि करके प्राण-प्रतिष्ठत करें। यंत्र के समक्ष बैठकर ध्यान केन्द्रित करते हुए 30 दिन तक प्रतिदिन श्रद्धापूर्वक उक्त मंत्र का 1000 जाप करें। प्रतिदिन मंत्र का पंचोपचार पूजन करके नैवेद्य चढ़ाएं। साधना समाप्ति के पश्चात् यंत्र को धारण कर लें अथवा पूजा-स्थल पर रख दें। पितृदोष से पीड़ित जातक उक्त विधि से निर्मित यंत्र को सोने अथवा चांदी के ताबीज में भरकर गले में धारण करके पितरदोष के कुप्रभावों से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार के हमने अनेकानेक जातकों पर सफल प्रयोग किए हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरदोष पीड़ानिवारक हनुमान साधना

सामग्री - जलपात्र, तेल का दीपक, **पारद हनुमान** मूर्ति, किसी भी प्रकार की धूप और गुड़ आदि।

माला - मूंगे की माला (मंत्र सिद्ध चैतन्य)

समय - रात्रि का कोई भी समय।

दिन - मंगलवार।

आसन - लाल रंग का कोई भी आसन।

दिशा - पश्चिम दिशा।

जप संख्या - नित्य इक्कीस सौ मंत्र (2100)

अवधि - ग्यारह दिन (11)

मंत्र - ॐ घण्टाकर्णो महावीर सर्व उपद्रव नाशन कुरू कुरू स्वाहा॥

प्रयोग - किसी भी मंगलवार की रात्रि को स्नान कर लाल धोती पहनकर आसन पर बैठ जाना चाहिए और सामने **पारद हनुमान** की मूर्ति लाल वस्त्र बिछाकर रख देना चाहिए, सबसे पहले उसे स्नान कराकर सिंदूर का तिलक लगाना चाहिए और फिर उनके सामने गुड़ का भोग लगाकर उपरोक्त मंत्र का जप प्रारंभ कर देना चाहिए। यह ग्यारह दिन का प्रयोग है, जब प्रयोग समाप्त हो जाए तो बारहवें दिन किसी अविवाहित बालक को भोजन कराकर उसे लाल वस्त्र दान में दे। ऐसा करने से यह प्रयोग सिद्ध हो जाता है और यदि घर में भूत-प्रेत, पिशाच आदि का प्रकोप हो, या घर में उपद्रव होते हों अथवा घर में असंतोष, कलह आदि होते हों अथवा **पितरदोष पीड़ा** हो तो इस प्रयोग से ये सारी समस्याएं समाप्त हो जाती है।

प्रयोग समाप्त होते ही हनुमान जी की मूर्ति को पूजा स्थान में या घर में किसी शुभ स्थान में रख देनी चाहिए। हनुमान जी को जो नित्य भोग लगाया जाता है, वह दूसरे दिन छोटे-छोटे बालकों में वितरित कर देना चाहिए।

यह प्रयोग सिद्ध एवं सफल प्रयोग है और इससे घर के कलह मिटकर सुख-शांति स्थापित होती है तथा समस्त प्रकार पितरदोषों से भी मुक्ति जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितरदोषों के निवारणार्थ विशिष्ट उपाय

जब किसी जातक की जन्मपत्री में पितर दोष हो तो उसका निदान करना परम आवश्यक हो जाता है। यहां हम पितर दोषों के निवारण के लिए विभिन्न उपायों पर चर्चा करेंगे।

❖ **सर्प श्राप नामक पितरदोष का निवारण** - सर्प श्राप से बनने वाले पितरदोष के लिए नागबली का विधान किसी विद्वान ब्राह्मण की आज्ञा से करे। नागबली विधान आगे के पृष्ठों में दिया गया है, उस विधान को पूर्ण कर गाय, जमीन अर्थात् भूमि, तिल, सोना आदि का दान अपनी सामर्थ्य के अनुसार ब्राह्मण को करें। ऐसा करने से नाग दोष नामक पितर श्राप का निवारण होता है और नाग देवता प्रसन्न होकर परिवार की वृद्धि करते हैं, जन्म कुण्डली में सर्प श्राप जिन ग्रह योगों से बनता है, उनका विवेचन हम पिछले अध्यायों में कर आए हैं।

❖ **पितर श्राप पितर दोष का निवारण** - यदि किसी की जन्मकुण्डली में ग्रह योग पितर श्राप नामक पितर दोष दर्शाते हैं तो उसके निवारण के लिए नारायण बली-नाग बली तथा गया तीर्थ या अन्य किसी पुण्य तीर्थ स्थल पर जाकर श्राद्ध करना चाहिए ऐसा करने से पितर श्राप का शमन होता है।

3. **मातृ श्राप नामक पितर दोष का निवारण** - इस दोष की निवृत्ति के लिए सवा लाख गायत्री जप विधिपूर्वक करवा कर सेतु स्नान करना चाहिए। ब्राह्मण को चांदी के पात्र में दूध भरकर दान देना चाहिए तथा पीपल के वृक्ष की अट्ठाईस हजार परिक्रमा करनी चाहिए, इससे मातृ श्राप नामक पितर दोष शांत होता है।

4. **भ्रातृ श्राप पितर दोष का निवारण** - यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में भ्रातृ श्राप नामक पितर दोष पाया जाए तो इसके निवारण के लिए घर में अखण्ड विष्णु कीर्तन 5 दिन, 7 दिन, 9 दिन अथवा 11 दिन करवाना चाहिए। चन्द्रायण व्रत करे, पीपल वृक्ष की स्थापना कर गौ दान करें एवं भूमि का दान करें, ऐसा करने से इस दोष की शांति होती है।

5. **मातुल श्राप पितर दोष का निवारण** - इस दोष के निवारण के लिए घर में विष्णु भगवान की स्वर्ण की मूर्ति स्थापित कर उसकी नित्य पूजा करें, कुएं, तालाब बनवाएं, पानी की प्याऊ लगवाएं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❖ **ब्राह्म श्राप दोष का निवारण** - इस दोष की निवृत्ति के लिए चंद्रायण व्रत बारह मास तक करें, अंत में ब्राह्मण को दक्षिणा सहित गौ का दान करें एवं अन्न दान करें।

❖ **पत्नी श्राप पितर दोष का निवारण** - इस दोष की निवृत्ति के लिए कन्या का दान करें, लक्ष्मी नारायण की स्वर्ण की मूर्ति दान करें, गौ दान करें, सपत्नीक किसी श्रेष्ठ ब्राह्मण को शैय्या एवं आभूषण दान करें।

❖ **प्रेत श्राप पितर दोष का निवारण** - इस दोष की निवृत्ति के लिए त्रिपिण्डी श्राद्ध (त्रिपिण्डी श्राद्ध का विवरण आगे के पृष्ठों में दिया गया है) करें, गया श्राद्ध करें, रुद्राभिषेक कराएं, गाय, चांदी के पात्र, नीलम का दान ब्राह्मण को करें।

फोटो से पितर दोष निवारण

जिन जातकों की जन्मकुण्डली में मौजूद किसी भी प्रकार के पितर दोष अथवा श्राप के कारण उनकी जिन्दगी नरक के समान बन गई हो और समस्त कार्यों में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन नंबर **09828535525** सम्पर्क कीजिये। आपके अनुरोध पर हम सिर्फ आपकी फोटो के माध्यम से ही समस्त प्रकार के पितर दोष, श्राप, प्रेत बाधा अथवा अन्याय अदृश्य बाधाओं के निवारण हेतु विधि पूर्वक प्रयोग सम्पन्न करवाकर जातक को गले में पहनने के लिए शुद्ध सोने से बना ताबीज मंत्र सिद्ध करवाकर भिजवा देंगे। इस **अद्भुत चमत्कारी ताबीज** को गले में हमेशा के लिए पहनना होगा। इस प्रकार आप सरलता से अपनी समस्त बाधाओं पर विजय प्राप्त कर सकेंगे। फिर सोचिये मत अभी तुरंत हमारी हैल्पलाइन नम्बर पर सम्पर्क कीजिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनुष्य जीवन में पंच महायज्ञ का महत्व

प्रत्येक गृहस्थ के परिवार में पांच स्थान ऐसे पाए जाते हैं जहां प्रतिदिन न चाहते हुए भी जीव हत्या होने की संभावना निरन्तर बनी रहती है। वे पांच स्थान निम्न हैं -

- चूल्हा (अग्नि जलाने के स्थान में)
- चक्की (अनाज पीसने में)
- झाड़ू निकालने में
- ऊखल (कूटने के स्थान में)
- जल रखने के स्थान (जल पात्र रखने पर उसके नीचे जीवों के दबकर मरने में)

इन पांच स्थानों में जो अनचाही जीव हिंसा होती है, उससे मुक्त होने के लिए शास्त्रों ने पांच प्रकार के यज्ञों का विधान किया है, इन यज्ञों को मनुष्य को प्रतिदिन करने के लिए कहा गया है। वे पांच महा यज्ञ निम्न हैं।

- **ब्रह्म यज्ञ** - इसके लिए वेद, पुराण आदि धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करना चाहिए।
- **पितृ यज्ञ** - इसके लिए पितरों का तर्पण व श्राद्ध करना चाहिए।
- **देव यज्ञ** - इसके लिए देवताओं का पूजन करना चाहिए एवं हवन करना चाहिए।
- **भूत यज्ञ** - त्रिवेवयदेव एवं पंचबली करनी चाहिए।
- **मनुष्य यज्ञ** - घर आए अतिथि का सत्कार करना चाहिए।

इस प्रकार से इन पांच यज्ञों का मनुष्य को प्रतिदिन पालन करना अनिवार्य है। चूंकि लेखन का विषय पितृ दोष है, अत: हम यहां केवल पितृ यज्ञ से संबंधित तर्पण एवं श्राद्ध की विधियों पर ही चर्चा करेंगे।

तर्पण का विधान :

शास्त्रों में कहा गया है कि एक-एक पितर को तिल मिश्रित जल की तीन-तीन अंजुलियां प्रदान करे, इस प्रकार से तर्पण करने से जन्म से आरंभ कर तर्पण के दिन तक किए गए पाप उसी समय नष्ट हो जाते हैं।

तर्पण का विधान :

भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा से आश्विन कृष्ण अमावस्या तक सोलह दिन पितरों को तर्पण करना चाहिए। सर्वसुलभ जल, काले तिल, यव (जौ) कुश और श्वेत पुष्प

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

से तर्पण करें। पहले देवताओं का तर्पण करना चाहिए। देवताओं का तर्पण करते समय जनेऊ बायें कंधे पर ही डाले रहें। देवगण को आवाहन कर कुश पर आसन दें और उन पूर्वाग्र कुशों द्वारा दायें हाथ की समस्त अंगुलियों के अग्र मात्र, अर्थात् देव तीर्थ से ब्रह्मादि देवताओं के लिए पूर्वोक्त पात्र में एक-एक अंजलि चावल मिश्रित जल लेकर दूसरे पात्र में गिरावें और देवताओं के नाम मंत्र पढ़ते रहें।

ॐ ब्रह्मा तृप्यताम्। ॐ विष्णुस्तृप्ताम।

ॐ वेदास्तृप्यन्तातम्। ॐ ऋषयस्तृप्यन्ताम।

ॐ पुराणाचार्मास्तुप्तयन्ताम्।

ॐ नागास्तृप्यन्ताम्। ॐ देव्यस्तृप्यन्ताम्।

ॐ आप्सरसस्तृप्यन्ताम्। देवानुगास्तृप्यन्ताम्।

ॐ देवानुगास्तृत्यन्ताम।

ॐ नागास्तृत्यन्ताम। ॐ सागरास्तृप्यन्ताम।

ॐ पर्वतास्तृप्यन्ताम।

ॐ सरितस्तृप्यन्ताम। ॐ मनुएमस्तृप्यन्ताम। ॐ मक्षास्तृप्यन्ताम्। ॐ रक्षां सितरयन्ताम्। ॐ सुपर्णास्तृप्यताम्। ॐ भूतानि तृप्यन्ताम। ॐ पशवस्तृप्यन्ताम्।

ॐ वनरूपतमस्तृप्यन्ताम।

ॐ ओषधभस्तृप्यन्ताम।

ॐ भूतग्रामश्रतुर्विथस्तृप्यताम्।

(अब जनेऊ को माला की भांति गले में डाल कर, ऋषि पुत्रों का तर्पण करें)

ॐ मरीचिस्तृप्यताम्। ॐ अत्रिस्तृप्यताम्।

ॐ अंदिरास्तृप्यताम। ॐ पुलस्त्य स्तृप्यताम। ॐ पुनहस्तृप्यताम्।

ॐ क्रुतुस्तृप्यताम्। ॐ वसिष्ठस्तृप्यताम्।

ॐ प्रचोतस्तृप्यताम। ॐ भृगुस्तृप्यताम।

ॐ नारदस्तृप्यताम।

(इसके बाद जनेऊ को, माला की भांति गले में धारण किये रहें। पूर्वोक्त कुशों को दायें हाथ की कनिष्ठा के मूल भाग में उत्तराग्र रख कर, स्वयं उत्तराभिमुख हो, निम्न अंकित मंत्र 2-2 बार पढ़ते हुए, दिव्य मनुष्यों के लिए प्रत्येक को 2-2 अंजलि यव सहित जल कनिष्ठा के मूल भाग से अर्पण करें)

ॐ सनकस्तृप्यताम्। ॐ सनातस्तृप्यताम। ॐ सनन्दनस्तृप्यताम। ॐ कपिल स्तृप्यताम्। ॐ आसुरिस्तृप्यताम। ॐ वोढुसतृप्मताम। ॐ

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पंचशिखरस्तृप्यताम। इसके बाद दोनों हाथों में कुशा धारण कर, जनेऊ को दायें कंधे पर रखकर, दक्षिणाभिमुख होकर, पवित्रभाव से, काला तिल मिलाकर, पितृतीर्थ (अंगूठा और तर्जनी का मध्य भाग) 3-3 अंजलि जल दें। जल देने से पहले 3 पितृगणों का नाम, गोत्र आदि उच्चारण करते हुए, तृप्याम कह कर तर्पण करना चाहिए।

तर्पण न करने का पाप - अंतर्पिताः शरीराद्रुधिरं पिवन्ति।

अर्थात् ब्रह्मादिदेव एवं पितृगण तर्पण करने वाले मनुष्यों के शरीर का रक्त पीते हैं, इससे यह सिद्ध होता है कि सुख की कामना वाले मनुष्य को नित्य ही तर्पण करना चाहिए।

तर्पण के लिए पात्र - तर्पण करने के लिए सदैव स्वर्ण, रजत, ताम्र अथवा कांसे का पात्र ही लें, मिट्टी या लोहे का नहीं।

(इस प्रकार से यहां हमने संक्षिप्त रूप से तर्पण का उल्लेख किया, पाठक गण अधिक जानकारी के लिए विधान से संबंधित पुस्तकों का अध्ययन करें अथवा विद्वान ब्राह्मण से तर्पण करने को विधियों को जाने इस छोटी-सी पुस्तक में तर्पण का संपूर्ण विधान देना संभव नहीं है। किंतु आप स्वयं यदि तर्पण कर पाने में कठिनाई का अनुभव करें तो अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन **नंबर 09828535525** पर सम्पर्क कीजिये। हम आपके लिए पूर्णतः विधिपूर्वक तर्पण करवाने की सम्पूर्ण व्यवस्था कर देंगे)

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्राद्ध कर्म का महत्व

पितरों की प्रसन्नता के लिए अन्न आदि भोज्य पदार्थों का हविष्यान्न पिण्ड प्रदान करना ही श्राद्ध कहलाता है। श्राद्ध से पितरों को तृप्ति मिलती है और वे अपने वंशजों को धन, पुत्र, ऐश्वर्य, स्त्री आदि एवं आरोग्यता देते हैं। स्कंद पुराण में श्राद्धों के मुख्यतया तीन भेद बताए गए हैं, पहला नित्य श्राद्ध, दूसरा नेमेत्तिक श्राद्ध तीसरा काम्य श्राद्ध।

- **नित्य श्राद्ध** - प्रतिदिन अपने पितरों के निमित्त किया गया श्राद्ध नित्य श्राद्ध कहलाता है।
- **नेमेत्तिक श्राद्ध** - विभिन्न अवसरों पर शास्त्रोक्त रीति से किया गया श्राद्ध नेमित्तिक श्राद्ध कहलाता है।
- **काम्य श्राद्ध** - कोई विशेष कामना को लेकर किया गया श्राद्ध काम्य श्राद्ध कहलाता है। नारायण बली, नागबलि, त्रिपिण्डी ये तीनों श्राद्ध काम्य श्राद्ध कहलाते हैं।

जो व्यक्ति जिस तिथि को देह त्यागता है, उसी माह को उसी तिथि को किया गया श्राद्ध, '**और्ध्वदैविक श्राद्ध**' कहलाता है, इसे ही '**सांवत्सरिक श्राद्ध**' भी कहते हैं। भादो मास के कृष्ण पक्ष में किया गया श्राद्ध '**महालय श्राद्ध**' कहलाता है, इसे पार्वण श्राद्ध भी कहते हैं। एक ही उद्देश्य के लिए किए गए श्राद्ध को '**एकोदिष्ट श्राद्ध**' कहते हैं इसे ही '**त्रिपिण्डी श्राद्ध**' भी कहते हैं। किसी तीर्थ स्थान में किया गया श्राद्ध '**तीर्थ श्राद्ध**' कहलाता है।

इसी प्रकार श्राद्ध के अन्य अनेक भेद सपिण्डी श्राद्ध आदि और भी है, किन्तु विस्तार भय से यहां सबका वर्णन संभव नहीं किया जा रहा है।

श्राद्ध का महत्व - जो मनुष्य इस धरती पर जन्म लेता है, वह तीन प्रकार के ऋण अपने प्रारब्ध में ही लेकर आता है, पहला देव ऋण दूसरा ऋषि ऋण, तीसरा पितर ऋण। देव ऋण, देव पूजन हवन, यज्ञ आदि कर्म से चुकाता है, ऋषि ऋण से ब्राह्मण और संतों को पूजा अर्चन, सत्संग का श्रवण कर मुक्त होता हैतथा पितरों के ऋण में मनुष्य पितरों के तर्पण, श्राद्ध, पितर पूजन कर्म कर मुक्त होता है, अतः तर्पण और श्राद्ध प्रत्येक मनुष्य को करने ही चाहिए।

'**श्रद्धया यत् क्रियते तत् श्राद्धम्**' अर्थात् श्रद्धा नाम की सूरज की किरणें भी हैं, वह मध्याह्न काल में रहती हैं, भगवान भास्कर इन किरणों से अन्न का रस सोख लेते हैं और इस रस से वह हमारे पितरों को तृप्त करते हैं इसलिए पितरों का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

श्राद्ध सदैव मध्याह्न के समय किया जाना चाहिए। इस समय किया गया तर्पण और श्राद्ध पितरों को अक्षय तृप्ति देता है।

श्राद्ध पक्ष में पितरों का श्राद्ध अवश्य ही किया जाना चाहिए, यह अवधि आश्विन मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या तक होती है, इस अवधि में पितरगण, पितरलोक से अपनी संतानों के घर आते हैं तथा अपने वंशजों से तर्पण-श्राद्ध की आशा करते हैं। यदि पुत्रों द्वारा शास्त्रोक्त श्राद्ध कर्म नहीं किया जाता है तो वे निराश लौट जाते हैं और लौटते वक्त श्राप देकर जाते हैं, इसलिए पितरों की प्रसन्नता के लिए श्राद्ध कर्म आवश्यक है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

त्रिपिण्डी श्राद्ध

यदि किसी मृतात्मा का लगातार तीन वर्षों तक श्राद्ध कर्म न किया जाए तो वह जीवात्मा प्रेत योनि में चली जाती है। ऐसी प्रेतात्माओं की संतुष्टि के लिए शास्त्रों ने **त्रिपिण्डी श्राद्ध** का विधान किया गया है। इस श्राद्ध का नाम त्रिपिण्डी क्यों पड़ा ? उसका कारण यह है कि प्रेत, योनियां तीन प्रकार की होती है, तमोगुणी, रजोगुणी और सतोगुणी। पृथ्वी पर निवास करने वाली प्रेतात्माओं तमोगुणी, आकाश में रहने वाले प्रेत रजोगुणी तथा वायुमण्डल पर निवास करने वाले प्रेत सतोगुणी होती हैं। इन तीनों प्रकार के प्रेतों की पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए ही शास्त्रों में **त्रिपिण्डी श्राद्ध** का विधान किया है।

जो लोग अपने पितरों के निमित्त शास्त्रोक्त तर्पण और श्राद्ध नहीं करते हैं, उन्हें राक्षस, भूत-प्रेत, पिशाच, शाकिनी-डाकिनी, ब्रह्म राक्षस, गंधर्व आदि विभिन्न प्रकार से पीड़ित करते हैं। ऐसे-ऐसे रोग शरीर में हो जाते हैं जो आधुनिक डॉक्टरी जांच से भी पकड़ में नहीं आते हैं। व्यवसाय चौपट हो जाता है। संतान या तो होती ही नहीं है अथवा बीमार रहती है। विवाह योग्य संतान का विवाह नहीं हो पाता है। परिवार के किसी व्यक्ति या सभी को पिशाच पीड़ा से नारकीय जीवन भोगना पड़ता है। इस प्रकार की पीड़ा को समाप्त करने के लिए और पितर दोष से मुक्त होने के लिए '**श्राद्ध चिंतामणि**' नामक ग्रंथ में त्रिपिण्डी श्राद्ध का विधान किया गया है, इस श्राद्ध को करने से मनुष्य उपरोक्त बाधाओं से मुक्ति पा लेता है, ऐसा शास्त्र निर्देश है।

त्रिपिण्डी श्राद्ध विवाहित पति-पत्नी के साथ-साथ करना चाहिए। जिस मनुष्य की पत्नी जीवित नहीं हो। वह भी इस श्राद्ध को कर सकते हैं एवं जिनका विवाह नहीं हुआ हो वह भी **त्रिपिण्डी श्राद्ध** करने का अधिकारी है।

त्रिपिण्डी श्राद्ध करने से पूर्व किसी पवित्र नदी अथवा तीर्थ में स्नान करना चाहिए। इस कार्य को करने के लिए तीन विद्वान ब्राह्मणों की आवश्यकता होती है। ब्रह्मा, विष्णु, महेश तीनों देवों की मूर्ति तैयार करवा कर तीनों ब्राह्मणों से इनकी प्रतिष्ठा और पूजा तथा तप करवाया जाता है। जिस प्रेतात्मा के लिए यह श्राद्ध किया जाता है। उसके नाम का उच्चारण संकल्प में किया जाता है, यदि उसका नाम और गोत्र मालूम न हो तो 'अनारिष्ट गोत्र' का उच्चारण किया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जौ, तिल और चावल के आटे में घी-शक्कर मिलाकर तीन पिण्ड तैयार किए जाते हैं (जौ का पिण्ड सात्विक होता है) वासना के साथ गई प्रेतात्मा को यह पिण्ड दिया जाता है।

चावल का पिण्ड रजोगुणी होता है यह पिण्ड अंतरिक्ष में निवास करने वाले रजोगुणी प्रेत को दिया जाता है।

तिल का पिण्ड तमोगुणी होता है यह पृथ्वी पर निवास करने वालों प्रेतों के निमित्त दिया जाता है।

उपरोक्त तीनों पिण्डों का पूजन किया जाता है और जामुन, छुआरा, नींबू आदि फलों का अर्घ्य देकर देवताओं को समर्पित किया जाता है, इसके बाद प्रार्थना की जाती है जो हमारे परिवार में पीड़ा देने वाली प्रेत योनि को प्राप्त जीवात्माओं को इस श्राद्ध कर्म से सद्गति प्राप्त होवे। इसके बाद ब्राह्मणों को, जौ, तिल, उड़द, वस्त्र, गाय आदि का दान करना चाहिए। इस प्रकार से यह **त्रिपिण्डी श्राद्ध** सम्पन्न हो जाता है।

विशेष सूचना

जो पाठक पितर दोष से पीड़ित हों तथा उसके निवारण हेतु त्रिपिण्डी श्राद्ध को स्वयं करवा पाने में किसी भी प्रकार की कठिनाई का सामना कर रहे हों तो अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर सम्पर्क करके हमें आदेश कीजिये। हमारे विशेषज्ञ आपकी अनुपस्थिति में सिर्फ आपकी फोटो के माध्यम से ही आपके पूर्वजों, पितरों अथवा प्रेतादि गणों की शांति हेतु आपको लिए सम्पूर्ण विधि-विधान सहित **त्रिपिण्डी श्राद्ध** सम्पन्न करवा देंगे और इसका लाभ आपको घर बैठे ही मिलने लग जायेगा। तो फिर अब सोचिये मत ..... अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन पर हमें सम्पर्क स्थापित कीजिये।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नारायण बली कर्म

यदि किसी जातक की जन्मकुण्डली में पितर श्राप अथवा प्रेत श्राप के ग्रह योग पाए जाएं, अथवा किसी परिवार में आग लगने से, मकान गिरने, करंट लगने से अथवा जल में डूबने से किसी की मृत्यु हो जाए और वह जीवात्मा प्रेत योनि को प्राप्त होकर परिवार में अशांति का वातावरण निर्मित कर रहा हो तो उसकी शांति के लिए शास्त्रों ने **नारायण बली कर्म** को प्रशस्त किया है अत: मनुष्य को ऐसी परिस्थितियों में नारायण बली कर्म अवश्य ही करना चाहिए।

नारायण बली के लिए उचित स्थान - वैसे तो नासिक के पास त्र्यंम्बकेश्वर नामक स्थान पर नारायण बली अधिकतर की जाती है क्योंकि यहां पर तीन नदियों का संगम होता है। लेकिन यह कर्म बहते पानी के लिए किनारे वाले स्थान पर (जहां श्मशान भी हो) हो सकता है, ऐसा शास्त्र निर्देश है।

नारायण बली कर्म - इस कर्म में संकल्प के बाद पांच कलशों पर ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, यम तथा प्रेत की मूर्तियों की स्थापना की जाती है एवं पांचों देवों की प्रतिष्ठा कर पूजन किया जाता है, मुख्य देवताओं की प्रसन्नता के लिए आहुति दी जाती है। स्त्री को अपने निकट रखते हुए विष्णु श्राद्ध किया जाता है और पंच देवों को संबोधन कर पिण्डदान दिया जाता है। इस प्रकार विष्णु श्राद्ध के 10 व पंचदेव के 5 कुल 15 पिण्ड दिए जाते हैं। प्रत्येक पिण्ड पर दक्षिणा अवश्य रखी जाती है।

इसके पश्चात् उबले चावल के ढेर को एक पत्तल में रखकर उस पर रुई की मोटी बत्ती बनाकर उसे घी से भिगोकर रखकर जला दी जाती है, यह बलि प्रेतात्मा को सद्गति के लिए दी जाती है, यजमान के द्वारा इस बली का पूजन कर परिवार में शांति के लिए प्रार्थना की जाती है और पांचों देवों को नमस्कार किया जाता है। इसके बाद यजमान इस बली को पत्तल सहित एक खुले स्थान पर रख देता है, जब कोई कौआ आकर इसमें चोंच मार देता है तो बली पूर्ण मानी जाती है।

इस बली के पूर्ण होने के बाद ढाक की लकड़ी एवं नारियल से मनुष्य की आकृति का निर्माण होता है। इस पर आटे का गुंथा हुआ एक गोला रखकर इस मनुष्य आकृति को पूर्ण किया जाता है। उस पुतले में प्रेत का निवास मानकर उसे नारायण नाम दिया जाता है। यजमान सपत्नीक इस पुतले के सामने बैठकर ब्राह्मण के द्वारा पुतले की विधिवत प्राण प्रतिष्ठा कर उसकी पूजा की जाती है। विधि को पूर्ण कर यजमान उस पुतले को श्मशान ले जाता है और विधि पूर्वक उस पुतले का अग्नि संस्कार किया जाता है। पुतले को अग्नि देने के बाद जल का

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कलश लेकर उस चिता की तीन बार उलटी परिक्रमा की जाती है। इसके बाद पास पड़े पत्थर पर उस कलश को इस प्रकार पटका जाता है कि वह टूट जाए। इस क्रिया के पश्चात् तिलांजली दी जाती है, फिर अवयव श्राद्ध किया जाता है, अवयव श्राद्ध के पश्चात् विषम श्राद्ध किया जाता है। उसके उपरांत श्मशान में निवास करने वाले देवताओं की प्रसन्नता के लिए पिण्ड दान किया जाता है। अंत में वधिकर्ता कुशा, पिण्ड आदि को एकत्र कर जल में प्रवाहित कर देता है। इस विधि में एक दिन का सूतक रहता है। पति-पत्नी इसके बाद स्नान करते हैं तथा वस्त्र आदि बदलते हैं।

उपरोक्त विधि पूर्ण कर उस दिन विश्राम किया जाता है। दूसरे दिन वहां जाते हैं जहां एक दिन पहले पुतले का अग्नि संस्कार किया था। उस भस्म को एकत्र करके जल में प्रवाहित कर देते हैं। इस प्रकार से दूसरे दिन अनेक क्रियाएं सम्पन्न होती हैं (विस्तार भय से सम्पूर्ण विधान देना संभव नहीं)

सर्प श्राप नामक पितर दोष की शांति के लिए नागबली कर्म - यदि किसी की जन्म कुण्डली में सर्प श्राप के योग हो अथवा किसी से जाने-अनजाने सर्प की हत्या हुई हो तो **नारायण बली कर्म के साथ नाग बली कर्म भी किया जाता है।** यदि इस बात का पक्का भरोसा हो कि पीड़ा नाग बाधा के कारण ही है तो केवल **नाग बली कर्म** ही संपन्न करना चाहिए।

नाग बली विधान में गेहूं, चावल, तिल अथवा राई इनमें से किसी एक के आटे से एक नाग प्रतिमा का निर्माण किया जाता है। एक चौकी पर लाल कपड़ा बिछाकर नाग की स्थापना की जाती है। इस नाग देव के सामने यजमान सपत्नीक पूर्वोमुखी होकर विराजता है तथा ब्राह्मण उससे संकल्प करवाता है कि "मेरे द्वारा पूर्व जन्मों अथवा इस जन्म में सर्प हत्या हुई हो अथवा मेरे परिवार के किसी सदस्य के हाथों सर्प हत्या हुआ हो तो उस नाग हत्या के श्राप से मुक्त होने के लिए और आपकी उचित गति प्राप्त हो इसलिए यह **नाग बली विधि कर्म** अष्ट नागों को संबोधित करते हुए कर रहा हूँ।"

संकल्प के बाद आह्वान होता है जो कुछ इस प्रकार से है, "हे पूर्व दिशा में हत्या द्वारा मारे गए राज आप इस सर्प मूर्ति में प्रकट होईए। मैं आपके संस्कार हेतु भक्तिपूर्वक प्रार्थना कर रहा हूँ।"

इस आवाहन के बाद नाग की प्राण प्रतिष्ठा और पूजा की जाती है। नागपूजा **नाग गायत्री मंत्र** से की जाती है। इसके बाद बली दी जाती है। बलि में चावल का ढ़ेर पत्तल पर रखकर उस पर एक रुई को बत्ती जलाकर उसे खुले स्थान पर रख देते हैं तथा काक स्पर्श होने पर बली पूर्ण मानी जाती है। बली देते समय

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रार्थना की जाती है, ''हमारे परिवार में से किसी ने आपको मारा हो अथवा मरवाया हो, उसके लिए हम प्रार्थी हैं और निवेदन करते हैं कि आप इस बली को स्वीकार कीजिए और हमारे परिवार को शांति प्रदान कीजिए।''

इसके पश्चात् नाग को श्मशान में ले जाकर उसका अग्नि संस्कार करते हैं, नाग का दहन कर नाग, सर्प, अनंत, कालिया, शंखपात, शेष, भूधर, तक्षक, इन आठ नामों से संबोधन कर आठ पिंड देते हैं। इसके बाद स्नान आदि कर्म होते हैं। इस विधि में एक दिन का सूतक रहता है।

अगले दिन उस स्थान पर जाते हैं, जहां नाग दहन किया था। उस भस्म को एकत्र कर जल में प्रवाहित कर देते हैं। तत्पश्चात् स्नान आदि करने से सूतक समाप्त होता है। इसके पश्चात् ब्राह्मणों को भोजन कराते हैं और उन्हें वस्तु और दक्षिणा आदि देकर संतुष्ट करते हैं। इसके बाद मंदिर जाकर भगवान के दर्शन कर ईश्वर से कार्य की सफलता की कामना करते हैं।

यदि आप इस प्रकार के **नारायण बलि** अथवा **नाग बलि कर्म** को स्वयं कर पाने में किसी भी प्रकार की कठिनाई का अनुभव करें तो अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर हमें सम्पर्क कीजिये। हम आपके अनुरोध पर तथा आपकी अनुपस्थिति में, सिर्फ आपकी फोटो के माध्यम से ही सम्पूर्ण विधि-विधान पूर्वक **नारायण बलि / नागबलि** करवा देंगे और यह सब कुछ आपके लिए तो बस घर बैठे ही हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

देव पितरादि शांति स्तोत्र

❖ इस स्त्रोत का नित्य पाठ करने से पितर दोष तो शांत होते ही हैं, साथ में देव दोष का भी शमन होता है। ० इस स्त्रोत के घर में पाठ होने से घर का वातावरण सुखद होने लगता है। ० इस स्त्रोत के पाठ करने से समस्त मनोकामनाएं स्वत: ही सिद्ध होने लगती हैं। ० इस स्त्रोत के पाठ करने से पितरों को परम शांति मिलती है और वे प्रसन्न होते हैं। ० यदि कोई देव बाधा घर में अशांति कर रही हो तो वह स्त्रोत के पाठ से शांत होती है। ० इस स्त्रोत के पाठ करने से इष्ट सिद्धि मिलती है।

शांति स्त्रोत पाठ करने का विधान :

❖ इस स्त्रोत में कुल 27 श्लोक हैं, इसमें 22वें, 23वें और 24वें श्लोकों का पाठ तीन-तीन बार होता है अर्थात् पाठ पूर्ण होने के बाद 22वें, 23वें और 24वें श्लोकों का पाठ पुन: दो-दो बार और किया जाता है। इस प्रकार से इस स्त्रोत का पाठ पूर्ण होता है। ❖ इस स्त्रोत में 22वें, 23वें और 27वें श्लोक पितर शांति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है, अत: पाठ करते समय इन श्लोकों पर अधिक मन लगाएं।

❖ एक बार पाठ पूर्ण होने के बाद पुन: इस स्त्रोत के श्लोकों से हवन करें।

❖ हवन शुद्ध घी मिश्रित काले तिलों से करें।

❖ हवन में भी 22वें, 23वें और 24वें श्लोकों से आहुति तीन-तीन बार दी जाती है। ० हवन करते समय 9, 22, 23, 24वें श्लोकों में स्वाहा की जगह स्वधा का उच्चारण करें। ० इस स्त्रोत का पाठ और हवन दक्षिण मुखी होकर ही करे।

❖ इस प्रकार एक बार संपूर्ण स्त्रोत का पाठ और एक बार हवन करें।

❖ हवन करते समय अग्नि प्रज्वलित कर निम्न प्रकार से अग्नि का ध्यान करें।

ॐ चत्वारि श्रृङ्ग जयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सात हस्तासो अस्य।
त्रिधा वद्धो वृषभो शेरवीति महो देवो मत्यो-मत्यो आ विवेश॥
ॐ मुखं य: सर्वदेवानां हव्य मुक कव्य मुक् तथा।
पितृणां च नमस्तम्यै विष्णवे पावकात्मने॥

❖ इस प्रकार ध्यान करने के बाद निम्न प्रार्थना करें।

ॐ अग्ने शाण्डिल्य गोत्र मेषध्वज प्राङ्गमुख यम, सम्मुखो भव।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

❖ इसके बाद स्त्रोत के श्लोकों में नियमानुसार आहुति दें।

❖ हवन के अन्त में निम्न वाक्य बोलकर हवन कर्म भगवान को अर्पित करें।

अनेन नित्य होमकर्मणा श्रीपरमेश्वरः प्रीयताम् न मम। ॐ तत्सद् ब्रह्मार्पणयस्तु। नमो वः पितरो, यच्छित तस्मै नमो वः पितरो यतृस्योन तस्मै।

नमो वः पितरः स्वधा व पितरः ॥ 1 ॥

नमोऽस्तुते निर्ऋतु, तिग्मतेजोऽयस्यमयान विचृता बन्धपाशान यभो मह्यं पुनरित् त्वां ददाति, तस्मै दमाय नमोऽस्तु मृत्यवे ॥ 2 ॥

नमोऽस्त्वसिताय, नमस्तिराश्चराजये।
स्वजाय बभ्रवे नमो, नमो देवजनेश्यः ॥ 3 ॥
नमः शीताय, तक्मने नमो, रूराय शोचिषे कृणोमि।
यो अन्येधुरुभयधुरभ्येति, तृतीय कायं नमोऽस्तु तक्मने ॥ 4 ॥
नमस्ते अधिवाकाय, परावाकाय ते नमः।
सु-मत्यै मृत्यो ते नमो, दुर्मत्यै त इदं नमः ॥ 5 ॥
नमस्ते यातुधानेभ्यो, नमस्ते भेषजेभ्यः।
नमस्ते मृत्यो मूलेभ्यो ब्राह्मणेभ्य इदं मम ॥ 6 ॥
नमो देववद्येभ्यो, नमो राज-वधेभ्यः।
अथो ये विश्नानां वधास्तेभ्यो मृत्यो नमोऽस्तु ते ॥ 7 ॥
नमस्तेऽस्तु नारदा नुष्ठ विदुषे वशा।
कसमासां भीमतमा याम दत्वा पराभवेत ॥ 8 ॥
नमस्तेऽस्तु विध्रते नमस्ते स्तनयिन्नवे।
नमस्तेऽस्तु वश्यने येना दूड़ाशे अस्यसि ॥ 9 ॥
नमस्तेऽस्त्वायते नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते प्राण तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥ 10 ॥
नमस्तेऽस्त्यायते नमोऽस्तु पराय ते।
नमस्ते रूद्र तिष्ठत, आसीनायोत ते नमः ॥ 11 ॥
नमस्ते जायमानायै, जाताय उत ते नमः।
वालेभ्यः शकेभ्यो रूपायाहन्ये ते नमः ॥ 12 ॥
नमस्ते प्राणक्रन्दाय नमस्ते स्तनयित्नवे।
नमस्ते प्राणविद्युते नमस्ते प्राणवर्षते ॥ 13 ॥
नमस्ते प्राण-प्राणते, नमोऽस्त्वपान ते।
परा चीनाय ते नमः प्रतीचीनाय ते नमः, सर्वस्मै न इदं नमः ॥ 14 ॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नमस्ते राजन्! वरूणास्तु मन्यवे विश्वह्याग्र निचिकेषि दुग्धम।
सहस्त्रमन्यान् प्रसुवामि, साकं शतं जीवाति शरद स्तवांय॥ 15॥
नमस्ते रुद्रास्य ते, नमः प्रतिहितायै।
नमो विसृज्य मानायै, नमो निपतितापै॥ 16॥
नमस्ते लाङ्गलेभ्यो, नमः ईषायुगेभ्यः।
वीरूत् क्षेत्रिय-नाशन्यप क्षेत्रियमुच्छतु॥ 17॥
नमो गंधर्वस्य नमस्ते नमो भामाय चक्षुषि च कृष्मः।
विश्वावसो ब्रह्माणा ते नमोऽभि जापा अप्सरसः परेहि॥ 18॥
नमो यमाय, नमोऽस्तु मृत्यवे, नमः पितरत्य उतये नयन्ति।
उत्पारणस्य यो वेद, तमग्नि पुरो दधेऽस्याः अरिष्ट तातये॥ 19॥
नमो रुद्राय, नमोऽस्तु तक्मने, नमो राज्ञ वरुणायं त्विणीमते।
नमो दिवे, नमः पृथिव्ये, नमः औषधीभ्यः॥ 20॥
नमो रूरायच्यवनाय रोदनाय घष्णवे।
नमः शीताय पूर्वकाम कृत्वने॥ 21॥
नमो वः पितर उर्जे, नमोः वः पितरो रसाय॥ 22॥
नमो वः पितरो भामाय, नमो वः पितरो मन्धव॥ 23॥
नमो वः पितरां पदघोरं, तस्मै नमो वः पितरो, यत क्रूरं तमै॥ 24॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चमत्कारी पितर बीसा

इस चमत्कारी पितर बीसा का पाठ करने से पितर अत्यन्त प्रसन्नता का अनुभव करते हैं और अपनी वंशजों को समस्त ऐश्वर्य देते हैं। यदि पितर दोष हो तो वह भी इसके पाठ करने से शांत हो जाता है। पाठ करने से पूर्व शुद्ध घी का दीपक जलाएं, धूप जलाएं, पितरों की पुष्प, गंध आदि से पूजा करें, फिर ग्यारह दफा पाठ करे।

पितर बीसा

दोहा : पितरदेव करो कृपा, करो हृदय में वास।
मनोकामना सिद्ध करो, पुरवहु मेरी आस॥

चौपाई :

पितर परम पर्वता विराजे, हम कर जोड़ खड़े सकारे॥ 1॥
होम धूप की होये अग्यारी, पितर देव दरबार तुम्हारी॥ 2॥
पितर मनावे घर द्वार मे, बरकत बरसे वार-वार मे॥ 3॥
आज मैं अपने पितर मनाऊँ, सातो सात ही सिर ही नवाऊं॥ 4॥
सातो नित्य पितर हमारे, अपने घर को आये सम्हारे॥ 5॥
मोही अनाथ की सुधि अब लीजे, संकट काटी सुख संपत्ति दीजे॥ 6॥
भूल-चूक करो क्षमा हमारी, दर्शन दीजे दशा निहारी॥ 7॥
नहि मोहि ज्ञान बुद्धि है तन में, सब जान हो अपने मन में॥ 8॥
तुम सम प्रबल शक्ति वही आनि, कह लो महिमा करो बखानी॥ 9॥
मन क्रम वचन करे सेवकायी, इन इच्छित वांछित फल पाई॥ 10॥
वसु रूपी पितर हमारे, क्षण में ही सब काज संवारे॥ 11॥
रूद्र रूपी पितर हमारे, भारी से भारी संकट टारे॥ 12॥
आदित्य रूपी पितर संत है, इनकी कृपा से ग्रीष्म वसंत है॥ 13॥
पितर महिमा बुद्धि बड़ाई, शेष सहस मुख सके न गाई॥ 14॥
मैं मतिहीन मलीन दुखारी, करहु कौन विधि विनय तुम्हारी॥ 15॥
चौदस मावस तिथि अति प्यारी, भोग लगावे दुनिया सारी॥ 16॥
पितरों को जो गंगा नहावे, रोग क्लेश घर में न आवे॥ 18॥
पितरों के लिए तर्पण जो करते, पितर उनके भण्डार हैं भरते। 19॥
पितर अब दया दीन पर कीजे, अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजे॥ 20॥

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यहि मोर अरदास हाथ जोड़ विनती करूं
सब विधि करो सुवास जय पितर देवताओं।

अंत में निम्न पाठ करें।

ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय, नमो वः पितरो जीवाय, नमो वः पितरः माये, नमो वः पितरो घोराय, नमो वः पितरो मन्यवे, नमो वः पितरः पितरो नमो वो ग्रहान्न, पितरो दस सतो वः देष्यमैतद्धः पितरो वास आधत्त।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध शाबर मंत्र प्रयोग

शाबर मंत्र इस कलियुग में शीघ्र और चमत्कारी लाभ देते हैं, क्योंकि अन्य मंत्र कीलित होते हैं, जबकि शाबर मंत्र कीलित नहीं है। शाबर मंत्र जप मात्र से ही फल देने वाले होते हैं। शाबर मंत्रों के खजाने में **पितर दोष निवारण मंत्र** भी पाए जाते हैं। इसी खजाने में से एक चमत्कारी मंत्र प्रयोग यहां प्रस्तुत है।

मंत्र :

''सतगुरु गोरख भाखे वानी देव पितर हम देवत पानी सत गवाही सूरज करे।
पूनम चंदा मावस सेर पितर हो शुकर मनावे गंगा मैया सुरग पठावे।
कौन-कौन से पितर सुरग गए परसन्न भए बाल ब्रह्मचारी।
निपुतरी नाग पितर गिरस्त न्याए-ठ्याऐ
रंडुआ-भंडुआ छोटे-बड़े खोटे-खरे ऊँचे-नीचे, आगले-पीछले
पितरपरसन्न भऐ विरामन, छतरी परसन्न भऐ वनिक, चण्डाल परसन्न भऐ
सवन को सुरग पठावे लोना जोगन विमान चढ़ाये जाओ जाओ पितर देव
सुरग सुख भोगो हमें न सताओ जो सताओ तो हनुमान का घोटा खाओ
मेरी भक्ति गुरु की शक्ति मंत्र सांचा पिण्ड का कांचा फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।''

मंत्र प्रयोग संख्या एक - यदि उपरोक्त मंत्र को पढ़ते हुए पितरों को तिल मिश्रित जल से तर्पण किया जाए तो पितर प्रसन्न होते हैं। जल में थोड़ा गंगाजल लें तो प्रयोग अधिक सफल रहता है, लेकिन एक बात सदैव याद रखे घर में केवल अमावस्या अथवा पितर श्राद्ध वाले दिन ही तिल मिश्रित जल में तर्पण कर सकते हैं, अन्य दिनों में नहीं। अत: यह कार्य किसी नदी किनारे अथवा कूप पर जाकर वहीं स्नान आदि से निवृत्त होकर किया जाए तो श्रेष्ठ रहेगा।

मंत्र प्रयोग संख्या दो - प्रत्येक अमावस्या अथवा पितरपक्ष के 15 दिनों की अर्धरात्रि के समय यदि चावल के चार पिण्ड बनाकर उन्हें अपने सामने रखकर एक माला उपरोक्त मंत्र की जपें। इसके पश्चात् उन पिण्डों को अर्धरात्रि के समय किसी एकांत स्थान पर उक्त मंत्र को बोलते हुए रख आवे तो पितरो की शांति होती है और पितर प्रसन्न होकर अपने वंशजों की सुख समृद्धि प्रदान करते हैं।

मंत्र प्रयोग संख्या तीन - यदि पितर प्रतिमा को स्थापित कर उसका भली-भांति पूजन विधान करके उपरोक्त मंत्र का एक माला जप एक मास तक किया

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

जाएं, खीर का भोजन का भोग लगावें। उसके पश्चात् पितर प्रतिमा को गंगा स्नान किसी पवित्र तीर्थ में कराया जाए। पितरों के निमित्त पिण्डदान एवं तीर्थ स्थान पर ही श्राद्ध कर्म, तर्पण आदि किया जाए तो पितर दोषों का शमन होता है, पितर प्रसन्न होते हैं और यदि पितर दोषों के कारण संतान प्रतिबंधन योग बन रहा हो तो वह समाप्त हो जाता है। यदि विवाह योग्य संतानों का विवाह होने में बाधा उत्पन्न हो रही हो तो वह बाधा समाप्त हो जाती है एवं व्यापार में यदि कोई अवरोध आ रहे हो तो वह भी समाप्त हो जाता है।

शाबर मंत्र का विशिष्ट प्रयोग - मंत्र प्रयोग के लिए आवश्यक सामग्री

- एक लकड़ी की चौकी
- सवा मीटर सफेद कपड़ा
- गंगाजल का पात्र
- कच्चा दूध
- श्वेत सुगन्धित पुष्प (मोगरा, चमेली आदि)
- धूप, अगरबत्ती
- प्रसाद के लिए चावल की खीर
- चांदी का ऐसा पत्थर जिस पर सात पुतलों की आकृति उभरी हुई हो अथवा यदि पितर नाग योनि में है तो चांदी का बना एक छोटा-सा नाग।

मंत्र प्रयोग का समय - यह मंत्र प्रयोग आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में जब सूर्य कन्या राशि पर होता है तब किया जाता है। आश्विन के कृष्ण पक्ष को पितर पक्ष अथवा कनागत भी कहा जाता है। यह अवधि वर्ष में केवल एक बार ही आती है।

मंत्र प्रयोग विधि - आश्विन मास के कृष्ण पक्ष को प्रतिपदा से एक दिन पहले पड़ने वाली पूर्णिमा के दिन चांदी के पत्तर पर सात पुतलियां खुदवाकर ले आवें। उन्हें घर पर पूजा घर में एक लकड़ी की चौकी पर सफेद कपड़ा बिछाकर स्थापित कर दे एवं प्रतिपदा तिथि से प्रयोग शुरु करे। प्रात: स्नान के बाद पिछले पृष्ठ पर दिए गए शाबर मंत्र को पढ़ते हुए तिल (काले) मिश्रित जल से पितरों का तर्पण करे। इसके पश्चात् मंत्र पढ़ते हुए पत्तर को पहले जल में से स्नान कराएं। उसके बाद कच्चे दूध से और बाद में गंगाजल से स्नान कराकर, उन्हें पुन: चौकी पर स्थापित करें। इसके पश्चात् धूप-दीप आदि से पितरों का पूजन कर उन्हें सुगन्धित सफेद पुष्प अर्पित करें। फिर खीर के प्रसाद का भोग अर्पण करे। इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रक्रिया को पूर्ण करने के बाद शांत चित्त से उपरोक्त शाबर मंत्र की एक माला का जप करे। जप पूर्ण होने के बाद पितरों से शांति-समृद्धि की कामना करे और नमस्कार करे।

यही प्रक्रिया कनागत के प्रतिपदा से लेकर अमावस्या तक के पंद्रह दिनों तक चलती है। यदि विधान पूर्वक यह कार्य संपन्न कर लिए जाए तो पितर दोष से निश्चित् रूप से मुक्ति मिल सकती है। हमने स्वयं अनेकानेक पितरदोष पीड़ित जातकों को इसके सफल प्रयोग कराकर पितरदोष से मुक्ति दिलवाई है।

यदि पितरदोष से पीड़ित कोई जातक किसी कारणवश स्वयं वह प्रयोग करने में सक्षम नहीं है तो वह हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर सकता है। नियमानुसार हमारे केंद्र के विद्वानों द्वारा जातक की अनुपस्थिति में भी यह क्रिया पूर्ण रूप से विधिपूर्वक सम्पन्न करवाकर उसे पितरदोष पीड़ा से मुक्ति दिलवाई जा सकती है। अन्य अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आप हमारी हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर अभी तुरंत सम्पर्क कीजिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर शांति के लिए श्रीमद्भगवद्गीता

महाभारत में भगवान वेद व्यास जी ने कहा है-

गीता सुगीता कर्तव्या किमन्यैः शास्त्र संग्रहैः।
या स्वयं पद्मनाभस्य मुखंपद्माद्विनिः सृता॥

अर्थात् गीता का ही भली प्रकार से श्रवण, कीर्तन, पठन-पाठन मनन और धारण करना चाहिए, अन्य शास्त्रों के संग्रह की क्या आवश्यकता है ? क्योंकि वह स्वयं पद्मनाभ भगवान के श्रीमुख-कमल से निकली हुई है।

महाभारत ग्रंथ में ही कहा गया है कि सर्वशास्त्रमयी गीता ? परन्तु इतना कहना ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि समस्त शास्त्रों की उत्पत्ति वेदों से हुई है और वेद श्री ब्रह्मा जी के मुख से प्रकट हुए हैं और स्वयं ब्रह्माजी भगवान के नाभि-कमल से उत्पन्न हुए हैं। किन्तु गीता जी तो स्वयं भगवान के मुखारविन्द से निकली है इसलिए इसे सभी शास्त्रों से ऊपर रखा जाए तो कोई बड़ी बात नहीं।

गीता गंगा से बढ़कर है। शास्त्रों में गंगा स्नान का फल मोक्ष बताया गया है। परंतु गंगा में स्नान करने वाला खुद मुक्त हो सकता है, वह औरों को तारने की सामर्थ्य नहीं रखता। परन्तु गीता रूपी गंगा जी में गोते लगाने वाला स्वयं तो मुक्त होता ही है, वह औरों को भी तारने में समर्थ हो जाता है।

गीता स्वयं भगवान से भी बढ़कर है, भगवान ने स्वयं वराह पुराण में कहा है कि -

गीताश्रयेऽहं तिष्ठामि गीता मे चोत्तमं ग्रहम्।
गीताज्ञान मुपाश्रित्य त्रील्लोकान् पालयाम्यहम्॥

अर्थ - मैं गीता के आश्रय में रहता हूं, गीता मेरा श्रेष्ठ घर है, गीता के ज्ञान का सहारा लेकर ही मैं तीनों लोकों का पालन करता हूं।

गीता भगवान का श्वांस है, हृदय है और मूर्ति है, जिस मनुष्य के हृदय में, वाणी में, शरीर में एवं समस्त इन्द्रियों एवं उनकी क्रियाओं में गीता रम गयी है। यह पुरुष साक्षात गीता की मूर्ति है, उसके दर्शन, स्पर्श, भाषण एवं चिंतन से भी दूसरे मनुष्य परम पवित्र बन जाते हैं। फिर उसके आज्ञा पालन और अनुसरण को कर ले, उसकी तो बात ही क्या है ? वास्तव में गीता के समान संसार में यज्ञ, दान, तप, तीर्थ, व्रत, संयम और उपवास आदि कुछ भी नहीं है।

गीता में कुल अट्ठारह अध्याय हैं, जिनमें कुल सात सौ श्लोक हैं। गीता जी के प्रत्येक अध्याय का एक-एक श्लोक परम पुण्यों को देने वाला है। (यहां हम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

केवल गीता के ग्यारहवें अध्याय की चर्चा करेंगे। क्योंकि इस अध्याय का पाठ करने से **पितर दोषों की समाप्ति होती है** और वे मोक्ष को पाते हैं।) ग्यारहवें अध्याय में भगवान ने अर्जुन के निवेदन करने पर अपने विश्व रूप के दर्शन कराए हैं। इस अध्याय में अधिकांश में केवल विश्वरूप और उस रूप का स्तवन का ही प्रकरण है, अत: इस अध्याय का नाम **'विश्वरूपदर्शनयोग'** रखा गया है।

ग्यारहवें अध्याय के पाठ करने की विधि - प्रात: स्नान कर एक लकड़ी के पट्टे पर सफेद कपड़ा बिछाकर उस पर एक घी का दीपक जलाकर पितर देवताओं से विनती करें कि वो अपना स्थान ग्रहण कर परम पवित्र गीता का श्रवण करें और फिर पाठ करे। पाठ के प्रारंभ और अंत में ग्यारहवें अध्याय के 36वें श्लोक का सम्पुट लगाएं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

पितर दोष निवारण हेतु पीपल पूजा

पीपल का वृक्ष समस्त वनस्पतियों में राजा और पूजनीय माना गया है, गीता में भगवान श्रीकृष्ण ने कहा है कि-

''अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां''

अर्थात् मैं सब वृक्षों में पीपल का वृक्ष हूँ। स्पष्ट है भगवान ने पीपल के वृक्ष को स्वयं का ही स्वरूप माना है।

पुराणों में भी पीपल का बड़ा ही माहात्म्य माना गया है, स्कंद पुराण में कहा गया है कि-

मूले विष्णुः स्थितो नित्यं स्कन्धे केशव एव च।
नारायणस्तु शाश्वासु पत्रेषु भगवान हरिः॥
फलेऽच्युतो न सन्देहः सर्वदेवैः समन्वित।
स एव विष्णुर्द्रम एव मूर्तो महात्मभिः सेवितपुण्यमूलः।
यस्माश्रयः पापसहस्त्रहन्ता भवेन्नृणां कामदुधो गुणाढयः॥

अर्थात् : पीपल की जड़ में विष्णु, तने में केशव, शाखाओं में नारायण, पत्तों में भगवान हरि और फल में सब देवताओं से युक्त अच्युत सदैव निवास करते हैं। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है, यह वृक्ष मूर्तिमान श्री विष्णु स्वरूप है। महात्मा पुरुष इस वृक्ष के पुण्य मय मूल की सेवा किया करते हैं। पीपल का गुणों से युक्त और कामनादायक आश्रय मनुष्यों के हजारों पापों का नाश करने वाला होता है।

प्रयोग संख्या एक - यदि सूर्योदय के समय स्नान से निवृत्त होकर एक लोटा जल पीपल वृक्ष की जड़ में चढ़ाएं तो पितर दोषों का निवारण होता है। इसके साथ ही एक दीपक अवश्य ही लगाना चाहिए।

प्रयोग संख्या दो - यदि एक नारियल के गोले में सूराख कर काले तिल कुटे हुए, बूरा और घी तथा जौ का आटा, चावल का आटा मिलाकर गोले में भरकर कृष्ण पक्ष की चर्तुदशी को सायंकालीन समय में पीपल वृक्ष की जड़ में इस प्रकार गाढ़ दिया जाए कि चींटी आदि जीव गोले में घुस कर उसमें भरे मिश्रण को खा सके। इस प्रयोग को एक वर्ष तक प्रत्येक कृष्ण पक्ष की चर्तुदशी की सायं को किया जाए तो निश्चित् रूप से पितर दोषों से मुक्ति मिलती है, साथ ही लक्ष्मी की प्रसन्नता भी होती है। यह अनुभूत सफल प्रयोग है।

प्रयोग संख्या तीन - यदि सात शनिवार लगातार एक लोटे में जल, थोड़ा-सा कच्चा दूध, एक चुटकी सिन्दूर, एक बताशा और दूर्वा डालकर, सूर्योदय के समय पीपल की जड़ में चढ़ाएं, दीपक जलाकर सात परिक्रमा लगाकर बिना पीछे देखे, घर वापस आ जाए। ऐसा करने से पितर स्वप्न में आकर अपनी इच्छाओं को बताते हैं, फिर उसके अनुरूप कार्य करने से **पितर शांति** होती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

हनुमान उपासना और पितर दोष

गोस्वामी तुलसीदास जी से सभी परिचित है। जिन्होंने रामचरित मानस की रचना की, वही तुलसीदास जी के एक बार बाहुओं में वात-व्याधि की गहरी पीड़ा हुई थी और फोड़े-फुंसियों के कारण उनका सारा शरीर वेदना से भर गया था। कोई भी औषध यंत्र, मंत्र, टोटका काम न आया। असहनीय कष्टों से हताश होकर तुलसी दास जी ने हनुमान जी की वंदना प्रारंभ की और अंजनी कुमार की कृपा से उनकी सारी पीड़ा नष्ट हो गई। जिस स्त्रोत से गोस्वामी जी ने श्री हनुमान जी की स्तुति की, वह 44 पद्यकों का स्तोत्र हनुमान बाहुक स्तोत्र के नाम से प्रसिद्ध हुआ। यही हनुमान बाहुक स्तोत्र सम्पुट सहित विधिपूर्वक पाठ करने से पितर दोषों की भी शांति होती है।

हनुमान बाहुक के पाठ का विधान - यह प्रयोग प्रातः सूर्योदय से पूर्व अथवा रात्रि को नौ बजे के उपरान्त ही किया जाता है। प्रयोगकर्त्ता स्नान शुद्धि के बाद पूर्वमुखी होकर बैठे, आसन ऊन का हो, अगरबत्ती, दीपक, प्रसाद पास में रखे। दास हनुमान का चित्र (जिसमें वे आशीर्वाद मुद्रा में बैठे हुए हैं) अपने सामने लकड़ी के पट्टे पर लाल सूती कपड़े पर रखे। इसके बाद हनुमान जी की आरती कपूर अथवा घी की बत्ती जलाकर करें, हनुमान जी की आरती यहां दी जा रही है।

इसके बाद हनुमान बाहुक का विधिपूर्वक सम्पुटित पाठ करे जिसकी विधि और सम्पुट का विवरण निम्न प्रकार से है।

हनुमान बाहुक में कुल 44 पद हैं। जिसमें पहले दो पद छप्पय नामक पद है, तीसरा पद झूलना है, चौथे से पंद्रहवा पद घनाक्षरी है, सोलहवें से उन्नीसवां पद सवैया है, 20वें पद से 35वें पद तक घनाक्षरी है, 36वां पद सवैया है, इसके बाद 37 से लेकर 44 तक घनाक्षरी है, इस प्रकार से हनुमान बाहुक पूर्ण होता है।

पितर दोष, प्रेत दोष, नाग दोष, देव दोष आदि दोषों के निवारण के लिए हनुमान बाहुक का पाठ करते समय 32वें, 33वें और 38वें पद का सम्पुट विभिन्न पदों से पहले और बाद में लगाया जाता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मनोकामनापूरक भाग्यशाली लॉकेट

मनुष्य का जीवन भले ही समाप्त हो जाए किन्तु उसकी लालसाएँ, कामनाएँ और आकांक्षाएँ कदापि समाप्त नहीं होती हैं। यदि मनुष्य का अपनी विशिष्ट आकांक्षापूर्ति से पूर्व ही देहावसान हो जाए तो मृत्योपरांत भी उसके सूक्ष्म शरीर को उस कामनापूर्ति के लिए भटकना पड़ सकता है। सच ही है कि ''जीवन है तो मन है और मन है तो स्वाभाविक रुप से कामनाएँ भी होगी और जब कामनाएँ होगी तो उनको पूरा करने के लिए प्रयत्न भी करने पड़ते हैं।''

ज्योतिष में ग्रहानुकूलन, दोष निवारण तथा मनोकामना पूर्ति हेतु विभिन्न-विभिन्न मतानुसार रत्न धारण करने का विधान है और पृथक-पृथक ज्योतिषी अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर जातक को अलग-अलग रत्न धारण करने का परामर्श देते हैं। किन्तु ज्ञातव्य तथ्य है कि प्राय: एक ही जन्मकुण्डली का अध्ययन करने के पश्चात् दो अलग-अलग ज्योतिषियों का रत्न निर्धारण में मतैक्य नहीं होता है और जातक खुद भी वहम का शिकार हो जाता है।

प्रत्येक मनुष्य अपने भाग्य को जाग्रत करने, धन-समृद्धि प्राप्त करने, व्यापार वृद्धि, संतान प्राप्ति, गृह क्लेश का अंत, शीघ्र विवाह, रोजगार प्राप्ति, शत्रुओं का विनाश, उच्च शिक्षा, प्रेम विवाह, मुकदमों में विजय एवम् विदेश यात्रा जैसी अनेकानेक मनोकामनाओं की पूर्ति के लिए दर-दर भटकता हुआ तथाकथित व्यवसायी ज्योतिषियों एवं तांत्रिकों के चुंगल में फँसकर अपना सर्वस्व लुटा बैठता है। फिर भी नतीजा 'ढाक के तीन पात' ही निकलता है।

जन्मपत्री के प्रमुख स्थानों (यथा: लग्न, धनभाव, पंचम भाव, नवम भाव, दशम भाव और एकादश भाव) का अध्ययन किसी विद्वान ज्योतिषी से करवाकर तदानुसार उचित रत्नों का चयन करके तथा उन्हें संयुक्त रूप से लॉकेट में जड़वाकर तथा शास्त्रोक्त विधिनुसार शुभ-मुहूर्तकाल में मंत्रसिद्ध चैतन्य एवं प्राण-प्रतिष्ठित करके जातक यदि इस **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण कर लें तो आश्चर्यजनक रुप से मनोवांछित सफलता प्राप्त होती है। शीघ्र भाग्योदय तथा सफलता प्राप्ति हेतु आप अपने जन्मलग्न के अनुसार **भाग्यशाली लॉकेट** का चयन करके मनोवांछित लाभ प्राप्त कर सकते है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मेष लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

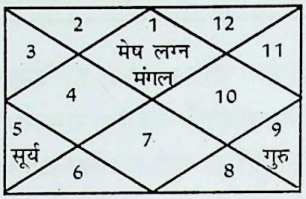

मेष लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश(मंगल), पंचमेश(सूर्य) तथा भाग्येश(गुरु) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीन मुख्य भावों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं ग्रहों के कारण ही पड़ता हैं। हमारे अनुभवानुसार **मूंगा + माणिक्य + पीला पुखराज** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा वैदिक रीति से निर्मित और प्राण-प्रतिष्ठित **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते हैं और जीवन में सफलता प्राप्ति के अवसर प्राप्त होते है। मेष लग्न के जातकों को अपने भाग्योदय हेतु इस **अद्‌भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

वृष लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

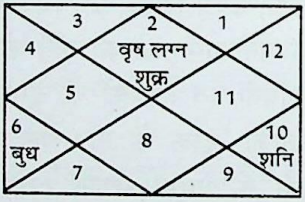

वृष लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश(शुक्र), पंचमेश(बुध), और भाग्येश(शनि) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभानुसार **हीरा + पन्ना + नीलम** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एकसाथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते हैं और जीवन में सर्वत्र सफलता प्रांप्ति के अवसर भी प्राप्त होते हैं। वृष लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्‌भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मिथुन लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

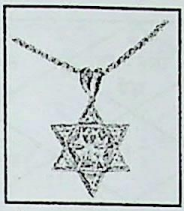

मिथुन लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (बुध), पंचमेश (शुक्र), और भाग्येश (शनि), को माना जाता है। जन्म कुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **पन्ना + हीरा + नीलम** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधि पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और सर्वत्र सफलता प्राप्ति के अवसर भी प्राप्त होते हैं। मिथुन लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

कर्क लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

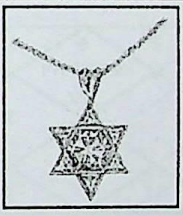

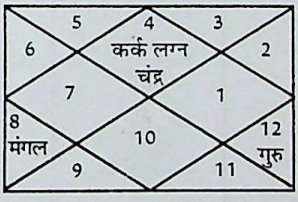

कर्क लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (चंद्रमा), पंचमेश (मंगल), और भाग्येश (गुरु), को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **मोती + मूंगा + पीला पुखराज** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीवन में सर्वत्र सफलता प्राप्ति के अवसर भी प्राप्त होते हैं। कर्क लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिंह लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

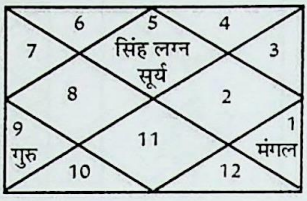

सिंह लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (सूर्य), पंचमेश (गुरु) और भाग्येश (मंगल) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **माणिक्य + पीला पुखराज + मूंगा** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चांदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीवन में सर्वत्र सफलता प्राप्ति के अवसर भी प्राप्त होते हैं। सिंह लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्‌भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

कन्या लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

कन्या लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (बुध), पंचमेश (शनि), और भाग्येश (शुक्र) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **पन्ना + नीलम + हीरा** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधि पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और सफलता प्राप्ति के अवसर भी प्राप्त होते हैं। कन्या लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्‌भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

तुला लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

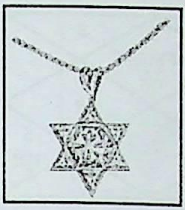

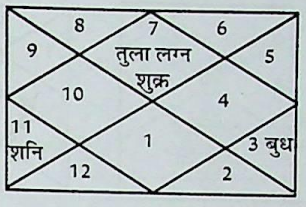

तुला लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (शुक्र), पंचमेश (शनि), और भाग्येश (बुध) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **हीरा + नीलम + पन्ना** को अथवा उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति में निर्मित और विधि पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीव में सर्वत्र सफलता प्राप्ति के अवसर भी प्राप्त होते हैं। तुला लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

वृश्चिक लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

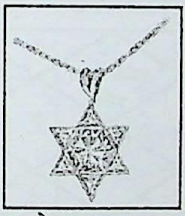

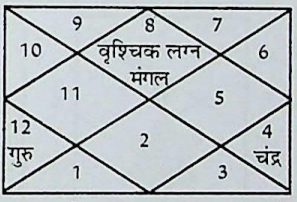

वृश्चिक लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (मंगल), पंचमेश (गुरु) और भाग्येश (चंद्रमा), को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **मूंगा + पीला पुखराज + मोती** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीवन में सफलता के अवसर भी प्राप्त होते हैं। वृश्चिक लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

धनु लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

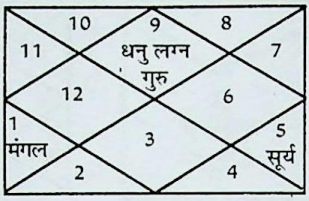

धनु लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (गुरु), पंचमेश (मंगल), और भाग्येश (सूर्य) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **पीला पुखराज** + **मूंगा** + **माणिक्य** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीवन में सफलता के अवसर भी प्राप्त होते हैं। धनु लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्‌भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

मकर लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

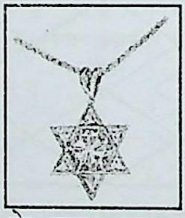

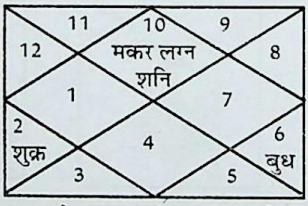

मकर लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (शनि), पंचमेश (शुक्र) और भाग्येश (बुध) को माना जाता है। जन्म कुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **नीलम** + **हीरा** + **पन्ना** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधि पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीवन में सफलता के अवसर भी प्राप्त होते हैं। मकर लग्न को जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्‌भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कुम्भ लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

कुम्भ लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (शनि), पंचमेश (बुध), और भाग्येश (शुक्र) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी सर्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **नीलम + पन्ना + हीरा** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधि पूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है और जीवन में सफलता के अवसर भी प्राप्त होते हैं। कुम्भ लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

मीन लग्न और भाग्यशाली लॉकेट

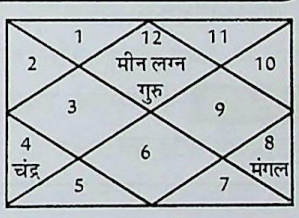

मीन लग्न के मुख्य कारक ग्रह लग्नेश (गुरु), पंचमेश (चंद्रमा), और भाग्येश (मंगल) को माना जाता है। जन्मकुण्डली के तीनों मुख्य त्रिकोण स्थानों के स्वामी होने के कारण जीवन और भाग्य पर भी स्वाधिक प्रभाव इन्हीं तीन ग्रहों के कारण ही पड़ता है। हमारे अनुभवानुसार **पीला पुखराज + मोती + मूंगा** को अथवा इनके उपरत्नों को शुद्ध चाँदी अथवा सोने में एक साथ सैट करवाकर तथा शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित और विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित मंत्रसिद्ध चैतन्य **भाग्यशाली लॉकेट** को अपने गले में धारण करने से जातक की भाग्योन्नति के स्वर्णिम द्वार खुल जाते है। मीन लग्न के जातकों को अपने शीघ्र भाग्योदय हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी लॉकेट** को अवश्य ही धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

ज्योतिष में ग्रहानुकूलन, दोष निवारण तथा मनोकामना पूर्ति हेतु विभिन्न-विभिन्न मतानुसार रत्न धारण करने का विधान है और पृथक-पृथक ज्योतिषी अपने अनुभव और ज्ञान के आधार पर जातक को अलग-अलग रत्न धारण करने का परामर्श देते हैं। किंतु ज्ञातव्य तथ्य है कि प्राय: एक ही जन्मकुण्डली का अध्ययन करने के पश्चात् दो अलग-अलग ज्योतिषियों का रत्न निर्धारण में मतैक्य नहीं होता है और जातक खुद भी वहम का शिकार हो जाता है।

हमने अपने जीवन में हजारों जन्मकुण्डलियों का अध्ययन-मनन और गहन विश्लेषण करने के पश्चात् निष्कर्ष निकाला है कि बिना किसी ज्योतिषी से परामर्श किये कोई भी व्यक्ति अपनी जन्मपत्री के लग्नेश - पंचमेश और नवमेश के रत्नों/उपरत्नों को संयुक्त रुप से जड़वाकर सोने अथवा चाँदी के लॉकेट में प्राण-प्रतिष्ठादि करवाकर आजीवन धारण करके मनोवांछित लाभ प्राप्त कर सकता है। अनेकानेक परेशान व्यक्तियों को **भाग्यशाली लॉकेट** धारण करवाकर स्वयं हमने उनके भाग्योदयकारी समय के साक्षी बनने का गौरव प्राप्त किया है। आप भी इस **अद्भुत शक्तिशाली लॉकेट** को आजमाकर लाभ उठा सकते हैं।

यदि आप भी अपने जीवन में सफलता प्राप्ति एवं भाग्योदय हेतु अपने जन्मलग्नानुसार **भाग्यशाली लॉकेट** को धारण करने के इच्छुक हों तो इस प्रकार के शास्त्रोक्त वैदिक रीति से निर्मित एवम् विधिपूर्वक मंत्रसिद्ध चैतन्यवान एवं प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त रत्नजड़ित **भाग्यशाली लॉकेट** को घर बैठे ही प्राप्त करने के लिए अभी तुरंत हमारे केन्द्र की 24 घंटे हैल्पलाईन **09828535525** पर सम्पर्क स्थापित करें और अपना शीघ्र भाग्योदय करने में सफलता प्राप्त करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

चमत्कारी पारद शिवलिंग

लिंगकोटिसहस्त्रस्य यत्फलं सम्यगर्चनात्।
तत्फलं कोटिगुणितं रसलिंगार्चनाभ्दवेत॥
ब्रह्महत्या सहस्त्राणि गौहत्यायाः शतानि च।
तत्क्षणाद्विलयं यांति रसलिंगस्य दर्शनात्॥
स्पर्शनात्प्राप्यत मुक्तिरिति सत्यं शिवोदितम्।

अर्थात् - करोड़ों शिवलिंगों के पूजन से जो फल प्राप्त होता है, उससे भी कई करोड़ गुणा अधिक फल रसलिंग **पारद शिवलिंग** की पूजा और उसके दर्शन मात्र से ही प्राप्त हो जाता है। हजारों ब्रह्म हत्याओं और सैकड़ों गौहत्याओं के महापाप तो सिर्फ **पारद शिवलिंग** के दर्शन मात्र से ही दूर हो जाते हैं। **पारद शिवलिंग** (रसलिंग) के स्पर्श मात्र से मोक्ष प्राप्ति होती है। ऐसे सत्य वचनों को स्वयं श्री महादेव जी ने कहा है।

शिव तथा शक्ति दोनों के संयोग से ही सृष्टि का निर्माण होता है, इसी का प्रतीक शिवलिंग है। भारतवर्ष में द्वादश ज्योर्तिलिंगों का विशेष महत्त्व है। शिवलिंग की पूजा सिद्धिदायक होती है। हमारे प्राचीन ग्रन्थों, पुराणों में **पारद शिवलिंग** की पूजा को ही सर्वश्रेष्ठ बताया गया है। इस समग्र ब्रह्माण्ड में सर्वश्रेष्ठ दिव्य वस्तु के रुप में पूजित रससिद्ध **पारद शिवलिंग** के प्रभाव से समस्त दैहिक, दैविक और भौतिक प्रगति स्वयंसिद्ध हो जाती है।

भगवान भोलेनाथ महादेव शिव शंकर के शरीर में उत्पन्न हुए इस श्रेष्ठतम वीर्य रस पारद की तुलना ब्रह्माण्ड के किसी भी पदार्थ से नहीं की जा सकती है। पारद शब्द की व्याख्या करें तो प = विष्णु, अ = कालिका, र = शिव, तथा द = ब्रह्मा के बीजाक्षर आश्चर्यजनक चमत्कारिक तथा सिद्धि प्रदायक पदार्थों में **पारद शिवलिंग** का विशेष महत्त्व है।

भगवान शंकर के पारा अत्यधिक प्रिय है तथा रसराज पारद भोले बाबा का शक्ति रुपी विग्रह होने के कारण ही समस्त सुरासुर तथा देवी-देवताओं के लिए अनुकरणीय एवं वन्दनीय है। इस अद्भुत गुणों के कारण ही **पारदलिंग** को मृत्युजंय तथा अमृतेश्वर भी कहा जाता है।

पारद शिवलिंग के दर्शन एवं पूजनादि करने से मनुष्य को अति आनन्द की अनुभूति होती है एवं समस्त संसारिक बाधाओं से भी मुक्ति मिल जाती है, अर्थात् यह काया (दैहिक), वाणी (वाचिक) तथा मानसिक पापों को हरने वाला है। यह

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दैहिक, दैविक तथा भौतिक रोगों से रक्षा करता है। यह वात, पित्त तथा कफ जनित दोषों को भी दूर रखता है। यह सुख-शांति, समृद्धि, धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य, यश, कीर्ति, सफलता, विद्या, ज्ञान और बुद्धि प्रदान करने वाला है। अतएव ऐसे महिमा युक्त, दिव्य तथा अद्भुत अलौकिक गुण सम्पन्न तथा महिमामयी रसराज, रससिद्ध भगवान पारदेश्वर **पारद शिवलिंग** के नित्य दर्शन और पूजन सर्वश्रेष्ठ है। इससे जीवन आनन्दमयी, निरोगी तथा धन-धान्य से भरपूर रहेगा और मनुष्य की समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होंगी।

दिव्य रसलिंग **पारद शिवलिंग** का नित्य पूजन और दर्शन करने से **धर्मार्थ काम मोक्षाणाम् आरोग्यं प्रदायकं** - अर्थात् धर्म, काम, मोक्ष के साथ आरोग्यता की प्राप्ति सहज में हो जाती है।

पारद एक विशिष्ट तरलरूपी धातु है और स्वयंसिद्ध पदार्थ है। यह धातु भी है तथा द्रव्य भी है। विशिष्ट शास्त्रोक्त व तांत्रोक्त गोपनीय विधियों से अनेक संस्कार युक्त **पारद शिवलिंग** का निर्माण किया जाता है। कहा गया है कि यदि पारा सिद्ध हो जाए और उसका विग्रह **पारद शिवलिंग** बनाकर विधिवत् पूजनादि किया जावे तो संसार भर में से रोग-दोष, द्वैष तथा दरिद्रता से सहज मुक्ति प्राप्त होती है।

पारद की उत्पत्ति भोलेनाथ शंकर के वीर्य (रस) से हुई है। इस पारद की प्रशंसा में देवतुल्य मनीषियों, महर्षियों और रससिद्ध आचार्यों ने अनेकों दुर्लभ ग्रन्थों की रचना की है। अशुद्ध और दोषी पारा विभिन्न संस्कारों द्वारा शोधित हो जाने पर दैव-सिद्ध, देह-सिद्धि और लौह-सिद्धि प्रदायक होता है। विशिष्ट विधि से संस्कारित इस अद्भुत पारद को बंधित करके जिस देवी-देवता का विग्रह बनाया जाता है। वह स्वयं सिद्ध और **चमत्कारी** होता है।

पारद के प्रचलित मान्यता के अनुसार अट्ठारह संस्कार माने जाते हैं। सम्पूर्ण अट्ठारह संस्कार युक्त पारा **पारस** में परिवर्तित होकर लौह-सिद्ध अर्थात् लोहे को सोने में बदल देने वाला बन जाता है। किंतु आधुनिक काल में इन सम्पूर्ण संस्कारों ज्ञाता रसायन योगी कोई नजर में नहीं आया।

सामान्यत: पारद का शोधन अत्यन्त कठिन कार्य है, और इसे ठोस बनाने के लिए मूर्छित, खेचरित, कीलित, शम्भू, विजित और शोधित जैसी अनेकों कठिन प्रक्रियाओं में से गुजरना पड़ता है कि तब जाकर कहीं पारा ठोस आकार ग्रहण करता है और उससे **दिव्य पारद शिवलिंग** निर्माण होता हैं।

शिवलिंग निर्माण के बाद कई तांत्रिक क्रियाओं से गुजरने पर ही **पारद शिवलिंग** रस-सिद्ध एवं चैतन्य हो जाता है, जिससे वह पूर्ण सक्ष्म एवं प्रभाव युक्त बनाता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

है। इसलिए तो कहा गया है कि जिसके घर में **पारद शिवलिंग** है, वह अगली कई पीढ़ियों तक के लिए ऋद्धि-सिद्धि एवं स्थायी लक्ष्मी को अपने घर में स्थापित कर लेता है। संसार के सुप्रसिद्ध योगी पूज्य गुरुदेव स्वामी सच्चिदानन्द जी ने कहा है कि जो साधक **पारद शिवलिंग** को अपने घर में रखकर उसकी पूजा करता है या मात्र उसके दर्शन ही करता है, वह सभी पापों से मुक्त होकर अनेक सीढ़ियाँ और धनधान्य को प्राप्त करता हुआ पूर्ण सुख प्राप्त करता है। संसार में जितने भी शिवलिंग हैं उन सबकी पूजा का फल केवल मात्र **पारद शिवलिंग** के पूजन से ही प्राप्त हो जाता है।

शास्त्रों के अनुसार रावण रससिद्ध योगी था, उसने **पारद शिवलिंग** की पूजा कर शिव को पूर्ण प्रसन्न कर अपनी लंका नगरी स्वर्णमयी बनाने में सफल हो सका था। वाणासुर ने **पारद शिवलिंग** की पूजा कर उनके मनोवांछित वर प्राप्त किया था। यह विवरण 'रुद्र-संहिता' में स्पष्ट रूप से उल्लिखित है।

मैंने पिछले पांच वर्षों में इस प्रकार के रससिद्ध पारे को ठोस बना कर कई पारद शिवलिंग बनाये हैं और जिन-जिन शिष्यों को या परिचितों को दिये हैं, वे सभी आज अच्छे स्तर पर हैं, और आश्चर्यजनक उन्नति की तरफ अग्रसर है, साधकों को इससे अपनी साधनाओं में पूर्ण सफलता मिली है और व्यापारियों को इसकी वजह से जो आश्चर्यजनक उन्नति प्राप्त हुई है, वह उनके स्वयं के लिए भी चकित कर देने वाली हैं।

जो मनुष्य पारदेश्वर विग्रह **पारदलिंग** की भक्तिपूर्वक पूजा-अभिषेक तथा नित्य दर्शन करता है। उसे तीनों लोकों में स्थित समस्त ज्योर्तिलिंगों एवं शिवलिंगों के पूजन का फल मिलता है। इस अद्भुत तथा **दिव्य पारद शिवलिंग** का मात्र नित्य दर्शन करना ही महापुण्यदायी है। पारदेश्वर विग्रह के दर्शन से सौ अश्वमेघ यज्ञ करने, करोड़ों गायों का दान करने तथा सहस्त्रों मन स्वर्णदान करने से भी अधिक फल मिलता हैं।

पारद शिवलिंग संसार में एक अद्वितीय, अलौकिक, अद्भुत, अकल्पनीय, अवर्णनीय और अप्रत्याशित रुप से चमत्कारिक अत्यन्त दुर्लभ दिव्य वस्तु है।

इस मिथ्या संसार में बहुत कुछ है जो कि प्रयत्न करने पर मिल भी जाता है। लेकिन मंत्रसिद्ध, संस्कारित, चैतन्यवान, प्रबल ऊर्जावान तथा प्राण-प्रतिष्ठित युक्त दोष-मुक्त शुद्ध संस्कारित पारद से निर्मित **पारद शिवलिंग का प्राप्त होना तो परम सौभाग्य का सूचक है।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रदोष व्रत काल और श्रावण मास में प्रत्येक सोमवार को प्रातः इस दिव्य **पारद शिवलिंग** की विशेष पूजा तथा लिंगाभिषेक करने से समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होती है। जहाँ पारदेश्वर विग्रह **पारद शिवलिंग** है, वहां पर रिद्धि-सिद्धि, शुभ-लाभ, सुख-शांति, धन-सम्पत्ति, ऐश्वर्य, कीर्ति और स्वयं भू-महालक्ष्मी का वास होता है। यह **अलौकिक पारद शिवलिंग** जिस किसी भी घर, ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री, व्यापार स्थल अथवा पूजा स्थल में स्थापित होता है और प्रतिदिन इसकी पूजा तथा अभिषेक किया जाता है, उस स्थान से अनिष्ट-आपदाऐं, रोग-दोष, द्वैष-क्लेश, दरिद्रता और भूत-प्रेतादि ऊपरी बाधाऐं स्वतः ही दूर रहती है। उस जगह पर किसी भी प्रकार के तांत्रिक प्रयोगों का दुष्प्रभाव कतई भी नहीं पड़ सकता है।

शताश्वमेद्येन कृतेन पुण्यं गौकोटिभीः स्वर्णसहस्प्रदानात्।
नृणां भवेत्सूतक दर्शनेन यत्सर्वतीर्थेषु कृताभिषेकात्॥

अर्थात् - जो पुण्य सौ अश्वमेघ यज्ञ करने से तथा करोड़ों गायों का दान करने से एवं एक हजार तोला सोने का दान करने से तथा समस्त तीर्थों का स्नान करने से प्राप्त होता है। वही पुण्य **पारद शिवलिंग** के दर्शन मात्र से सहज में ही प्राप्त हो जाता है।

मेरे स्वयं के अनुभव के आधार पर मैं यह कहने में सक्षम हूँ कि **पारद शिवलिंग** अपने आप में **दुर्लभ शिवलिंग** है, बिना सिद्ध गुरु के इस प्रकार का शिवलिंग प्राप्त नहीं हो पाता है और भाग्य से ही **रस-सिद्ध पारद शिवलिंग** घर में स्थापित हो पाता है।

आज के इस युग में भी **पारद शिवलिंग** एक चमत्कार है, एक श्रेष्ठ साधना है, एक आश्चर्यजनक सफलतादायक उपाय है।

वस्तुतः पारद हमारे जीवन की श्रेष्ठ धातु है और यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है कि नागार्जुन के बाद अब पुनः पारे के महत्व को और उसकी क्रियाओं को लोगों ने जाना है, तथा साधकों ने पुनः परिश्रम, प्रयत्न करके पारद के समस्त संस्कार सम्पन्न करने में पूर्ण सफलता प्राप्त की है।

इस लुप्त विद्या का पुनर्जीवन अपने आप में इस शताब्दी की अन्यतम घटना है और अब मुझे विश्वास है कि हमारे आगे की पीढ़ी का इस विद्या को कदापि विस्मृत नहीं होने देगी।

पारद शिवलिंग आज से नहीं हजारों-हजारों वर्षों से संसार का श्रेष्ठतम वरदायक प्रभुत्व रहा है और यह हमारी पीढ़ी का सौभाग्य है कि हमें जीवन में

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

इस प्रकार का अद्भुत चमत्कारी **पारद शिवलिंग** प्राप्त है।

शास्त्रों के अनुसार **पारद शिवलिंग को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाया जा सकता है।** मेरे जीवन में ऐसे हजारों अनुभव हैं, यदि उन्हें लेखनीबद्ध किया जाए, तो पूरा एक विशाल ग्रन्थ बन सकता है कि **पारद शिवलिंग** के पूजन से लोगों ने उन कार्यों को भी संभव कर दिखाया है, जो उनके लिए संभव नहीं थे।

पारद शिवलिंग का पूजन सर्व कामप्रद, मोक्षप्रद तथा शिव स्वरुप बनाने वाला है। यह अद्भुत पारदलिंग समस्त पापों का नाश करके जीवों को संसार के समस्त सुख-ऐश्वर्य, वैभव तथा मोक्ष प्रदान करता है। इस **अद्भुत शिवलिंग** को घर, ऑफिस, दुकान, फैक्ट्री, कार्यालय, संस्थान, व्यापार स्थल अर्थात् किसी भी स्थान पर विधिपूर्वक स्थापित करके नित्य इस **पारदेश्वर** का दर्शन-पूजन करने से समस्त प्रकार के वास्तुदोष स्वयं ही समाप्त हो जाते हैं।

जीवन में जो मनुष्य सर्वश्रेष्ठ बने रहना चाहते हैं, जो व्यक्ति सामान्य घर में जन्म लेकर, विपरीत परिस्थितियों में बड़े होकर सभी प्रकार की बाधाओं, कष्टों और समस्याओं के होते हुए भी जीवन में अपने लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, या जो व्यक्ति आर्थिक, व्यापारिक और भौतिक दृष्टि से पूर्ण सुख प्राप्त करना चाहते हैं उन्हें अपने घर में अवश्य ही **पारद शिवलिंग** की स्थापना करनी चाहिए। संसार के सभी साधक और योगी इस बात को एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि वे व्यक्ति जो **पारद शिवलिंग** की पूजा करते हैं, उनके समान अन्य कोई व्यक्ति सौभाग्यशाली नहीं कहा जा सकता। **पारद शिवलिंग** के पूजन से जहां पूर्ण भौतिक सुख-सुविधाएँ प्राप्त होती है। वही उसे जीवन में मोक्ष-प्राप्ति भी निश्चित रुप से सुलभ रहती है।

रत्न समुच्चय में **पारद शिवलिंग** की अपार महिमा के विषय में विषद् उल्लेख है कि पारदेश्वर विग्रह की नियमित आराधना करने से समस्त रोग-दोषादि का नाश होता है। इस ग्रन्थ के अनुसार मानव को वृद्धावस्था में रोग-रहित रखने में कोई भी वनस्पति या धातु समर्थ नहीं हैं क्योंकि सभी वस्तुएं पानी में गीली होती हैं, आग में जलती हैं, ताप से सूखती हैं। किन्तु पारद ही एकमात्र वस्तु है जो इन सबसे प्रभावित नहीं होता है। यदि पारद को विशेष प्रक्रिया से बांधकर, स्थिरिकरण प्रदान करने से सक्षम हो जाए तो वह अमृत हो जाता है और इस बद्ध पारद के द्वारा शिवलिंग का निर्माण किया जाए तो ऐसे रससिद्ध पारदेश्वर विग्रह की आराधना करने वाला साधक को विद्या, बुद्धि, धन-सम्पत्ति, सुख-शांति, समृद्धि, ऐश्वर्य, लोकप्रियता और समस्त सिद्धियाँ स्वत: ही प्राप्त हो जाती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रसेन्द्र चूड़ामणि के अनुसार 'रस-रस' ऐसा कहने मात्र से ही मनुष्य समस्त पापों से मुक्त हो जाता है। विशुद्ध तथा प्रबल ऊर्जावान पारद शिवलिंग के दर्शन कर कल्याणप्रद धर्म को प्राप्त करता है। विशेष शास्त्रीय तथा तांत्रोक्त विधियों से बद्ध पारद द्वारा निर्मित **पारद शिवलिंग** की नियमित पूजा-अर्चना करने वाले मनुष्य के लिए इस भौतिक जगत में कुछ भी अप्राप्य नहीं है। पारद रोगों को समाप्त करने वाला तथा दरिद्रता का नाश करने वाला है तथा सांसारिक मनुष्यों को, वृद्धावस्था नष्ट करके यह नवयौवन तथा नवजीवन प्रदान करता है। इसके साथ-साथ यह अष्टसिद्धियों को भी देने वाला है।

पारदेश्वर शिवलिंग संसार का एक अद्वितीय और देवताओं की तरफ से मनुष्यों को मिला हुआ वरदान है। संत-महर्षियों ने कहा है कि सब कुछ प्राप्य है लेकिन शास्त्रोक्त विधि से सिद्ध, शोधित, संस्कारित तथा स्वर्णग्रास युक्त प्राण-प्रतिष्ठित यह अद्‌भुत **चमत्कारी पारद शिवलिंग** स्वरुप मिलना अत्यन्त कठिन तथा सौभाग्य का ही सूचक है।

इस **पारदलिंग** के दर्शन मात्र से ही समस्त पापों का क्षय होकर, सौभाग्य जाग्रत होने लग जाता है। शास्त्रों के अनुसार परम प्रतापी, योगीराज महाबलशाली लंकेश्वर रावण तंत्र द्रष्टा, वैज्ञानिक, वेदपाठी, विद्वान पण्डित तो था ही, वह रससिद्धयोगी भी था और **पारद शिवलिंग** का निर्माता भी था। उसने इसकी पूजा-आराधना करके ही समस्त दिव्य शक्तियों तथा अकूत सम्पदा को प्राप्त किया और अपनी लंका को स्वर्णमयी भी पारदेश्वर की कृपा से ही बना सका। इसलिए कि पारद से स्वर्ण निर्माण तब भी किया जाता है और आज भी किया जाता है।

जो भी व्यक्ति इस **पारद शिवलिंग** की विधिपूर्वक स्थापना अपने घर, निवास, दुकान, फैक्ट्री, ऑफिस, फार्म हाऊस अथवा व्यापार स्थल में करके प्रतिदिन दर्शन-पूजन करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर अनेक सिद्धियों और धन-सम्पत्ति तथा ऐश्वर्यादि प्राप्त करके सुखशांति पाता है।

आधुनिक वर्तमान मशीनी युग में भी रससिद्ध तथा **प्रबल चैतन्यवान पारदेश्वर शिवलिंग** चमत्कारी प्रभाव लिए एक श्रेष्ठ साधना तथा आश्चर्यजनक रुप से शीघ्र सफलतादायी सहज उपाय है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

समग्र ब्रह्माण्ड की सर्वाधिक प्रभावशाली दिव्य वस्तु **पारद शिवलिंग** प्रत्येक हिन्दू परिवार के लिए एक अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य धरोहर है। हमने दिव्य रससिद्ध **पारद शिवलिंग** के अनेकों सफल प्रयोग स्वयं भी किये तथा अन्य लोगों को भी कराकर आशानुकूल परिणाम प्राप्त किये हैं।

विवाह बाधा निवारण हेतु प्रयोग

विवाह न हो पाने अथवा विवाह में अनावश्यक विलम्ब या बाधा उत्पन्न होने की समस्या हरेक परिवार में बनी हुई है। घर में अविवाहित लड़का अथवा लड़की के विवाह बाधा निवारणार्थ मंत्रसिद्ध चैतन्य **पारद शिवलिंग** को इच्छित कामना के साथ इक्कीस दिनों तक **मंत्रसिद्ध चैतन्य रुद्राक्ष माला** से **पारद शिवलिंग** की पूजा-उपासना, आराधना तथा अभिषेक करते हुए श्रद्धापूर्वक साधना करे तो चमत्कारी रुप से विवाह सम्बन्ध तय हो सकता है। यह सिद्ध अनुभूत प्रयोग हैं।

तांत्रिक दोष निवारण हेतु प्रयोग

कई बार ईर्ष्यावश, लोभवश द्वैषवश अथवा अन्य किसी भी दुर्भावनावश कोई शत्रु अथवा प्रतिद्वन्दी अभिचार-कर्म या तांत्रिक प्रयोग (टोना-टोटका) करा देते हैं, जिसके कारण जन-धन हानि, आर्थिक-मानसिक तथा शारीरिक पीड़ा और मृत्यु तुल्य कष्टों का सामना करते हुए जीवन नरक के समान हो जाता है। यदि आपको लगता है कि ऐसा ही कुछ आपके साथ भी हुआ है तो आप शीघ्र ही मंत्र सिद्ध, चैतन्य, प्रबल ऊर्जावान **दिव्य पारद शिवलिंग** को घर में स्थापित करके योग्य ब्राह्मणों से उस पर रूद्राभिषेक करवाकर नित्य पूजा-उपासना करना आरंभ कर देवें। चूंकि समस्त भूत-प्रेतादि बाधाऐं तथा अमानवीय दुष्ट शक्तियाँ स्वयं शिव के अधीन हैं अतएव पारद शिवलिंग की साधना से आपके ऊपर किये गये तांत्रिक प्रयोग का दुष्प्रभाव तत्काल समाप्त हो जाएगा।

वास्तुदोष निवारक प्रयोग

यदि किसी घर, दुकान, फैक्ट्री, ऑफिस, प्लॉट फार्महाउस, कारखाना अथवा व्यापार स्थल में वास्तुदोष हो तथा उसके निवारण हेतु तोड़-फोड़ किया जाना ही एकमात्र उपाय हो तो ऐसे में किसी भी प्रकार से **मंत्रसिद्ध चैतन्य पारद शिवलिंग** कहीं से प्राप्त करके उस स्थान पर विधिपूर्वक स्थापित करके नित्य पूजा-अभिषेक करें तो उस स्थान में मौजूद वास्तुदोष के दुष्प्रभाव समाप्त हो जाते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

मंत्र सिद्ध चैतन्य रूद्राक्ष माला

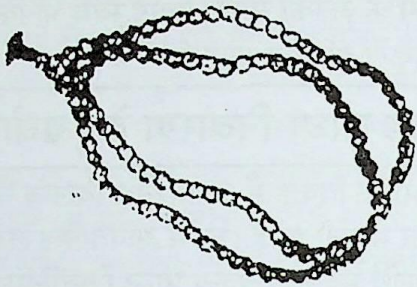

रूद्राक्ष मालिनं दृष्ट्वा शिवो विष्णुः प्रसीदति।
देवी गणपतिः सूर्यः सुराश्चान्येऽपि पार्वती॥
(शिव पुराण)

पूर्णतः विधिपूर्वक निर्मित शुद्ध रूद्राक्ष के मनकों की **मंत्रसिद्ध चैतन्य रूद्राक्ष माला** को जो कोई भी भाग्यवान पुरुष अपने गले में धारण किये रहता है, उसे देखकर देवी पार्वती स्वयंशिव, विष्णु, ब्रह्मा, गणेश, सूर्य तथा अन्यान्य समस्त देवगण प्रसन्न होकर उस पर कृपा अमृत की वर्षा करते हैं।

शिव प्रिय रूद्राक्ष अथवा **रूद्राक्ष माला** की महत्ता के विषय में कुछ भी लिखना मानो सूरज को दीपक दिखाने के समान है। अनेकानेक वर्षों पूर्व ही हमारे ऋषि-महार्षियों ने रूद्राक्ष के महत्त्व, उपयोगिता और इसकी विभिन्न विशेषताओं का गुणगान करते हुए अनेकों ग्रन्थों की रचना कर डाली, किंतु फिर भी सम्पूर्ण व्याख्या नहीं कर सके।

मेरा स्वयं का भी अनुभव है और मैंने अपने जीवनकाल में अनेकानेक मित्रों, रिश्तेदारों, परिचितों, शिष्यों एवं अन्यान्य साधकों को स्वयं प्राण-प्रतिष्ठित करके ऊर्जावान रूद्राक्षों तथा **मंत्र सिद्ध चैतन्यवान रूद्राक्ष मालाएं** धारण कराई हैं और उनके सौभाग्यशाली समय का मैं स्वयं साक्षी भी रहा हूँ। मंत्र जप सहित स्वास्थ्य लाभ, सर्वबाधा निवारण, साधनाओं में सफलता प्राप्ति, आध्यात्मिक विकास एवं भौतिक उन्नति सहित जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में वांछित सफलता प्राप्त हेतु किसी भी साईज के शुद्ध व असली रूद्राक्ष के मनकों से विधिपूर्वक निर्मित **मंत्रसिद्ध चैतन्य रूद्राक्ष माला दुर्लभ किंतु चमत्कारी है।** अतएव सदैव अपने गले में इसे धारण किए हुए रहनी चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्य कामदेव पैकेट

प्राय: यह देखने में आया है कि अधिकांश पुरूष एवम् युवा शारीरिक दृष्टि से तो पूर्णत: सुगठित एवम् सुडौल दिखाई देते हैं, किंतु कदाचित् बचपन की नादानियों तथा कुव्यसनों इत्यादि के चलते पर्याप्त शक्ति के अभाव में **यौन सुख** का भरपूर आनंद नहीं ले पाते और परिणामस्वरूप उनका वैवाहिक जीवन दुष्कर बन जाने के साथ-साथ मन में हीन भावना उत्पन्न हो जाती है। ऐसे निराश और शक्तिहीन पुरूषों के लिए **परम पूजनीय सद्गुरूदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** ने अपनी वर्षों की कठिन साधना और गहन अनुसंधान के पश्चात विभिन्न दुर्लभ सामग्रियों का कॉम्बिनेशन बनाकर **दिव्य कामदेव पैकेट** तैयार किया और समग्र विश्व में फैले हुए लाखों निराश और शक्तिहीन पुरूषों पर इसका **सफलतम प्रयोग** किया है। अब यह चमत्कारी पैकेट सर्वप्रथम आप सभी के लिए सार्वजनिक रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है। इस **दिव्य कामदेव पैकेट** के अंदर आपको मिलेगी निम्नांकित **चमत्कारी** एवम् **दिव्य वस्तुएँ**-

दिव्य कामदेव कवच

शारीरिक रूप से सुडौल पुरूष भी अक्सर वैवाहिक जीवन में पूर्ण संतुष्टी प्राप्त नहीं कर पाते और पर्याप्त यौन सुख के अभाव में उनके दाम्पत्य जीवन की मधुरता भी नष्ट हो जाती है। इस दुष्कर परिस्थिति में विशेष रूप से निर्मित एवम् प्राण-प्रतिष्ठित **दिव्य कामदेव कवच** को सदैव के लिए अपने गले में धारण करने से चमत्कारी लाभ दृष्टिगोचर होते हैं। इस शक्तिशाली कवच को **दिव्य कामदेव माला** के साथ पहनने पर शीघ्रातिशीघ्र मनोवांछित लाभ होते दिखाई देते हैं।

दिव्य कामदेव माला

कामदेव मंत्रों से अभिमंत्रित इस प्रचण्ड शक्तिवान **दिव्य कामदेव** माला का प्रत्येक दाना मंत्रसिद्ध चैतन्यवान होने के साथ-साथ पूर्ण विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठादियुक्त होता हैं। इस **अद्भुत चमत्कारी दिव्य कामदेव माला** को गलें में धारण करने मात्र से जहाँ एक ओर शरीर में शक्ति और स्फूर्ति का संचार होने लगता है तो दूसरी ओर धारणकर्त्ता के समग्र व्यक्तित्व में भी आकर्षण शक्ति उत्पन्न होने लग जाती हैं और इसका प्रत्यक्ष लाभ भी होता दिखाई देता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दिव्य कामदेव गुटिका

प्राचीन तंत्र शास्त्रों में वर्णित अत्यंत गोपनीय एवम् दुर्लभ **अनंग मदन सिद्धि** प्रयोग द्वारा विशिष्ट धातु संयुग्मन से निर्मित एवम् अनंग मदन स्त्रोत एवम् कामदेव मंत्रों से अभिमंत्रित अत्यधिक **चमत्कारी दिव्य कामदेव गुटिका** को सदैव अपने पास रखने मात्र से ही मन, मस्तिष्क और शरीर में प्रबलतम पौरूष शक्ति का निरंतर संचार होता रहता है। इस दुर्लभ गुटिका के प्रभाव से धारणकर्त्ता में **मोहिनी शक्ति** भी बढ़ जाती हैं और आंतरिक शारीरिक पौरूष शक्ति भी बढती है।

दिव्य कामदेव तैल

प्राकृतिक स्वास्थ्य विज्ञान और प्राचीन तांत्रिक ग्रंथों में वर्णित विभिन्न प्रकारेण पौरूष शक्तिवर्धक तैलादि की विधियों पर वर्षों तक गहनतम अनुसंधान के पश्चात् **सद्गुरूदेव श्री श्री** ने अत्यंत गोपनीय विधि द्वारा विभिन्न दुर्लभ जड़ी-बूटियों को हिमालय से एकत्र करके विधिपूर्वक इस **प्रचण्ड शक्तिशाली** एवम् तुरंत शक्तिदायक **दिव्य कामदेव तैल** का निर्माण करके वैवाहिक जीवन से निराश हो चुकें लाखों पुरूषों पर सफलतापूर्वक आजमाकर मनोवांछित परिणाम प्राप्त किये हैं।

दिव्य कामसुधामृत

इस **दिव्य चमत्कारी कामसुधा अमृत** के महत्व और उपयोगिता के विषय में कुछ भी वर्णन करना तो मानो सूरज को दीपक दिखाने के समान होगा। जिन विवाहित पुरूषों ने अपने आपको चिकित्सकीय दृष्टिकोण से पूर्णत: शक्तिहीन मानकर निराशा का दामन ओढ़ लिया था। उन व्यक्तियों पर भी इस **दिव्य चमत्कारी कामसुधामृत** के चमत्कारी प्रभाव से पुन: **वैवाहिक जीवन में यौन तृप्ति** की प्रत्यक्षानुभूति होते हुए हमने स्वंय आजमाकर देखा है।

आप भी आजमाकर देखियेगा दुनिया के लाखों निराश और शक्तिहीन पुरूषों ने इस **अद्भुत चमत्कारी दिव्य कामदेव पैकेट का प्रयोग करके मनोवांछित लाभ प्राप्त किया है** और आज तक भी इस दिव्य पैकेट की चमत्कारी वस्तुओं का प्रत्यक्ष लाभ देखते चले आ रहे हैं। संपूर्ण विश्व भर से हमारे पास इस **दिव्य कामदेव पैकेट** के लिए **वर्षभर निरंतर डिमांड** बनी रहती है। आप भी अपने मुरझाये हुए जीवन मे जोश और शक्ति का संचार कर सकते हैं। तो फिर अब देर मत कीजिये.....

इस चमत्कारी पैकेट के विषय में अन्य अधिक जानकारी प्राप्त करने अथवा इसे घर बैठे ही प्राप्त करने के लिए आप हमारी हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर अभी तुरंत सम्पर्क कीजियें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्युत सम्मोहन यंत्र

श्रीं	गु	व
धै	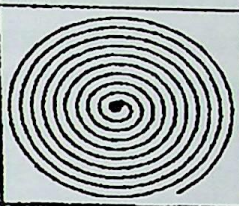	कि
अ	वा	श

सम्मोहन वशीकरण सिद्धि में सफलता एवम् प्रवीणता हासिल करने के लिए विद्युत चुम्बकीय शक्ति युक्त इस **विद्युत सम्मोहन यंत्र** पर नियमित त्राटक साधना करने से अपेक्षित लाभ प्राप्त होता है। नवकोष्ठकों में धातु के पतरे पर उत्कीर्ण अष्टसिद्धियों व नवशक्तियों से युक्त यह **विद्युत सम्मोहन यंत्र** शास्त्रोक्त विधि के अनुसार निर्मित किया गया हैं। इस दिव्य यंत्र पर नियमित त्राटक व ध्यान करने से वशीकरण शक्ति में वृद्धि होने के साथ-साथ आपकी सुप्त **अलौकिक आध्यात्मिक शक्तियाँ** आंदोलित हो जाती हैं, जिससे स्वत: ही अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण होने लग जाता है और आपके **जीवन तथा भाग्य में आश्चर्यजनक रुप से परिवर्तन आने आरंभ हो जाते हैं।** इस यंत्र में निहित सिद्धियाँ निम्न हैं जिन्हें नियमित साधना से प्राप्त किया जा सकता है -

(श्रीं) - धन, ऐश्वर्य व लक्ष्मी की प्राप्ति
(कि) - यश, कीर्ति व लोकप्रियता की प्राप्ति
(गु) - गुरु का सान्निध्य तथा गुप्त धन की प्राप्ति
(अ) - परिस्थितियों में अनुकूलता का निर्माण
(व) - वशीकरण/आकर्षण शक्ति का उदय
(वा) - वाक्सिद्धि/वचन सिद्धि की प्राप्ति
(धै) - धैर्य व साहस की प्राप्ति
(श) - शक्ति और शिव का सानिध्य

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

यह यंत्र भोलेनाथ औघड़दानी शिव तथा आदि शक्ति माँ की समस्त शक्तियों से युक्त होने के कारण अत्यन्त शक्तिशाली होने के साथ साथ शीघ्र ही अपना प्रभाव दिखाने लग जाता है।

साधना विधि - सर्वप्रथम इस यंत्र को शुद्ध तांबे धातु के पतरे पर विधिपूर्वक उत्कीर्ण करवाकर प्राण-प्रतिष्ठित करवा लें। फिर एक स्वच्छ, पवित्र व शांत स्थल अथवा कमरे में एक बाजोट (लकड़ी का पट्टा) चौकी/स्टूल/टेबिल पर इस यंत्र को विधिपूर्वक स्थापित करके यंत्र का पंचोपचार पूजनादि संपन्न करें।

प्रतिदिन अपनी सुविधानुसार प्रात: अथवा सायं (अथवा दोनों समय ही) के समय नहा धोकर तथा स्वच्छ वस्त्र धारण करके इस यंत्र से कुछ दूरी पर आसन बिछाकर बैठ जाए और कुछ देर प्राणायाम का अभ्यास करें। तत्पश्चात् शांतचित्तता तथा एकाग्रता के साथ यंत्र के बीच में बने हुए चक्र के मध्य बिंदु पर दृष्टि एकाग्र करें तथा मन ही मन **ॐ नम: शिवाय** अथवा **ॐ मणि पद्मे हुँ** अथवा **ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डाये विच्चै** का जाप करते रहें। निरंतर मानसिक जाप करते रहने के पश्चात् तथा यंत्र के मध्य बिंदु पर त्राटक करने से कुछ दिनों पश्चात् मन की गुप्त अलौकिक शक्तियाँ तथा विद्युत लहरें आंदोलित होने लग जाएगी और सिर में भारीपन के साथ व्यक्ति को तंद्रा आने लग जाएगी। कुछ दिनों के अभ्यास के पश्चात् मन का भटकना बंद हो जायेगा और दृष्टि स्थिर होने लग जाएगी। इस प्रकार से जब आपका अभ्यास बढ़ जायेगा तो यंत्र के मध्य चक्र की गोल रेखाएँ प्रकाशित होने लग जाएगी और चक्र घूमने लग जायेगा। मध्य बिंदु के इर्द-गिर्द एक तेजोवलय दिखाई देने लग जाएगा। चित्तवृत्तियाँ शांत हो जाती है और आत्मिक **गुप्त अलौकिक शक्तियाँ जाग्रत होकर अपना कार्य आरंभ कर देती है।** मन की इस सर्वोच्च अवस्था में इच्छित अभिलाषाएँ तुरंत पूर्ण होने लग जाती है। इस चमत्कारिक यंत्र को निर्मित करवाने में यदि पाठक कठिनाई महसूस करें तो हमारे केंद्र की हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर सम्पर्क करके विधिनुसार चैतन्य शक्ति युक्त इस **अद्भुत यंत्र** को नियमपूर्वक प्राप्त कर सकते हैं।

इस यंत्र की साधना करने वाले साधक को अपना आहार-विहार सात्विक रखना चाहिए तथा साधना के दिनों में पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए। इस साधना में शीघ्र सफलता प्राप्त करने हेतु अतिरिक्त साधन के रुप में विद्युत आकर्षण शक्ति युक्त **विद्युत माला को अपने गले में धारण करने से मनोवांछित लाभ होता है।**

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध चमत्कारिक तांत्रिक वस्तुएँ

सर्वविदित तथ्य है कि भली प्रकार से निर्मित/शोधित/पूजित तथा प्राण प्रतिष्ठित किये हुए सिद्ध यंत्रों में अद्भुत मगर **चमत्कारिक शक्तियाँ** छिपी हुई रहती हैं। इन **अद्भुत चमत्कारी तांत्रिक वस्तुओं** के माध्यम से आम मनुष्य अपनी परेशानियों से निजात पा सकता है और अपने समस्त कष्टों का निवारण करके अपने लिए सौभाग्य का सृजन सहज ही कर सकता है। इन ताबीज/यंत्रों/अंगूठियों/लॉकेट इत्यादि में वह अमोघ शक्ति छिपी हुई रहती है जो कि समस्त कष्टों को दूर करने के साथ-साथ भौतिक तथा अभौतिक जगत को समान रुप से प्रभावित कर सकती है। इनका प्रयोग करके असंभव को संभव में भी बदला जा सकता है। यहाँ हम कुछ ऐसी ही विशिष्ट सामग्री का वर्णन प्रस्तुत कर रहे हैं जिन्हें हम पिछले कई वर्षों में अनेकानेक लोगों पर सफलतापूर्वक आजमा चुके हैं। इन सामग्रियों को शुभ-मुर्हूत में पूर्ण विधि-विधान से निर्मित करवाकर घर बैठे ही उपलब्ध कराने की पूर्ण व्यवस्था है।

सिद्ध महाशक्ति कवच

जीवन में समस्त प्रकार की संफलताएँ प्राप्त करने के लिए इस महाशक्तिशाली व शीघ्र प्रभावी **सिद्ध महाशक्ति कवच** को विधिपूर्वक सोने अथवा चाँदी की चेन में गले में धारण करना श्रेयस्कर रहता है। इस सिद्ध कवच को धारण करने के पश्चात् जहां तक एक ओर धारणकर्त्ता के आत्मविश्वास में वृद्धि होगी वहीं धारणकर्त्ता को अपने अंदर एक अद्भुत व **अलौकिक शक्ति** जागृत होती महसूस होने लगेगी। हमने प्रायोगिक रूप से देखा है कि श्रद्धालुओं द्वारा इस **सिद्ध कवच** को धारण करने के पश्चात् उन्हें अपने प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती नजर आई।

सिद्ध हनुमान माला

हनुमान जी को **मूंगे की माला** सर्वाधिक प्रिय है और यही कारण है कि हनुमत् उपासना करने वाले साधक व तांत्रिक हनुमान की कृपा प्राप्ति हेतु **मूंगे की माला** धारण किये हुए किये रहते हैं। वर्तमान भौतिकवाद के युग में भाग-दौड़ की जिन्दगी के चलते जब मनुष्य अपने इष्टदेव की विधि-विधान से पूजा-उपासना करने में भी असर्मथता महसूस करता है तो किसी ऐसे सरल-सुलभ साधन की आवश्यकता महसूस होती है जिससे इष्टदेव की कृपा बनी रहे।

हमारे केन्द्र ने इन्हीं सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए शुद्ध व असली मूंगे के दानों से **सिद्ध हनुमान माला** को विधिपूर्वक निर्मित तथा प्राण-प्रतिष्ठा करके सफलतापूर्वक प्रयोग किये है। इस सिद्ध माला को धारण करने वाले पर हनुमान जी की असीम कृपा बनी रहती है। हनुमानजी की सर्वकामना सिद्धि हेतु इस **अद्भुत चमत्कारी माला** को अवश्य धारण करना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध चन्द्रमुक्ता यंत्र

यदि किसी मनुष्य की जन्म कुण्डली में चंद्रमा निर्बल हो, नीच राशिस्थ हो, अशुभ भावस्थ हो, पाप ग्रहों से दृष्ट हो, कुण्डली में केमद्रुम योग हो अथवा जातक की हथेली में मस्तिष्क रेखा विकृत तथा चंद्रपर्वत दबा हुआ हो तो उसके जीवन और मन पर चंद्रमा के कुप्रभाव स्पष्ट नजर आने लग जाते हैं। इन कुप्रभावों को समाप्त करने तथा मानसिक शांति प्राप्त करने हेतु शुभ मुर्हूत में शुद्ध चांदी के चंद्रमा में शुद्ध असली मोती जड़वाकर गले में **चन्द्रमुक्ता यंत्र लॉकेट** पहनने से आश्चर्यजनक रुप से शुभ परिणाम दृष्टिगोचर होने लगते हैं।

सिद्ध सम्मोहन यंत्र

कभी-कभी कोई मनुष्य सुन्दर व्यक्तित्व का स्वामी होते हुए भी अन्य लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने में प्राय: असफल रहता है अथवा उनकी उपेक्षा का शिकार रहता है। ऐसे निराश जातक यदि विशेष **सिद्ध सम्मोहन यंत्र** को लॉकेट की भाँति विधिपूर्वक गले में धारण करें तो मनोवांछित सफलता प्राप्त करते देखे गए हैं। इसके अतिरिक्त फिल्म, गायन, एक्टिंग, इण्टरव्यू उच्चाधिकारी से मुलाकात व अनजाने लोगों के मध्य लोकप्रियता एवम् सफलता प्राप्ति हेतु इस **सिद्ध सम्मोहन यंत्र लॉकेट** का विधिवत् प्रयोग परमोपयोगी सिद्ध हुआ है।

सिद्ध शनि मुद्रिका

संसार में प्रत्येक तीन में से एक व्यक्ति शनि के कुप्रभावों से परेशान है। इसे शनि की ढैय्या, साढेसाती का प्रकोप अथवा **शनि की पनौती** कहते हैं। इसके अतिरिक्त किसी मनुष्य के हाथ में शनि रेखा विकृत हो, शनि पर्वत अस्पष्ट अथवा दबा हुआ हो तो कार्यों में बाधा, शत्रुओं से परेशानी, आर्थिक कष्ट, मानसिक क्लेश जैसी रुकावटें जीवन को अव्यवस्थित कर देती हैं। इन सबके निवारण हेतु शनिपुष्य के शुभ-मुहूर्त में निर्मित तथा विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित चमत्कारी **सिद्ध शनि मुद्रिका** धारण करने से शनि का कुप्रभाव कम हो जाता है और शनि की पनौती लाभदायक साबित होने लगती है।

सिद्ध वशीकरण माला

जो महिला अथवा पुरुष अपने व्यक्तित्व और सौन्दर्य में कमी को लेकर निराश हो चुके हों अथवा सम्मोहक और प्रभावशाली व्यक्तित्व के स्वामी बनने के इच्छुक हों तो उन्हें विशेष रुप से तांत्रोक्त विधिनुसार निर्मित **सिद्ध वशीकरण माला** को अपने गले में अवश्य धारण करनी चाहिए। इस वशीकरण माला के सम्पर्क में आने वाला प्रत्येक धारणकर्त्ता से प्रभावित हो जाएगा।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध गजकेसरी लॉकेट

जिन लोगों की जन्मकुण्डली में गजकेसरी योग बनता हो उन्हें यह लॉकेट अवश्य ही धारण करना चाहिए। जिन्हें परिश्रमोपरांत भी उचित फल नहीं मिलता हो अथवा जिनका प्रमोशन व पदोन्नति नहीं हो पा रही हो अथवा जिनको अपने सामाजिक व राजनैतिक सम्पर्क का पूरा लाभ नहीं मिल पा रहा हो तो शुद्ध **मोती** व **पुखराज** जड़ित (बीसा यंत्र के साथ) इस **सिद्ध गजकेसरी लॉकेट** को गले में धारण करने से उनका पराक्रम व प्रभुत्व बढ़ जाता है।

सिद्ध बगलामुखी यंत्र

बगलामुखी विद्या प्राचीन भारत की दस महाविद्याओं में से एक है। कलियुग में इसका प्रभाव हर कहीं पर देखा जा सकता है। शत्रुबाधा, भूत-प्रेत बाधा, ऊपरी व्याधि तथा कोर्ट-कचहरी मुकद्दमेबाजी में सफलता प्राप्ति तथा इन समस्याओं से निजात पाने हेतु **सिद्ध बगलामुखी यंत्र** को लॉकेट/अंगूठी/इत्यादि किसी भी रुप में विधिपूर्वक प्रयोग करने से जातक प्रत्येक स्थान पर विजय प्राप्त करता है। इसका धारणकर्त्ता मुकद्दमे इत्यादि में निश्चित सफलता प्राप्त करता देखा गया है।

सिद्ध नवग्रह यंत्र

कभी-कभी मनुष्य की जिंदगी की चलती हुई गाड़ी को अचानक ब्रेक लग जाता है और उसके 'स्वप्न संसार' में भूचाल सा आ जाता है। जिसके परिणामस्वरुप उसकी हँसती-खेलती जिंदगी पर दु:खों की काली छाया पड़ जाती है। वास्तव में ऐसा सब कुछ ग्रहों की कुदृष्टि मनुष्य के भाग्यचक्र पर पड़ने के कारण होता है। ऐसे में शुभ मुर्हूत में तैयार **सिद्ध नवग्रह यंत्र** को यदि विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित किया हुआ गले में धारण कर लिया जाए तो जातक की कुण्डली में स्थित ग्रहों का दोष समाप्त होकर परेशानियों का निवारण कर देते हैं।

स्पेशल त्रिशक्ति लॉकेट

शारीरिक एवम् मानसिक स्वास्थ्य लाभ एवम् जीवन में उन्नति हेतु सरल उपाय के रुप में महाशक्तिशाली **स्पेशल त्रिशक्ति लॉकेट** को चांदी की चेन में पिरोकर गले में धारण करने से आश्चर्यजनक लाभ होता है। इस सिद्ध लॉकेट में शुद्ध चांदी में **मोती, पन्ना** तथा **गोमेद** रत्न संयुक्त रुप से जड़वा कर इसे शुभमुर्हूत में निर्मित करके इस लॉकेट पर नवग्रहों के मंत्र का पाठ करके इसको सिद्ध किया जाता है। मानसिक तनाव, शारीरिक कमजोरी, कार्यों में रुकावटें, विरोधियों का प्रबल होना तथा अनेकानेक शारीरिक व्याधियों से निजात पाने तथा सर्वत्र सफलता प्राप्ति हेतु **इस स्पेशल लॉकेट** को धारण करना लाभदायक रहता है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्लभ हत्था जोड़ी

यह अत्यंत ही दुर्लभ तथा सर्वजन वशीकरण में प्रभावी एक महत्वपूर्ण तांत्रिक वस्तु है। **दुर्लभ हत्था जोड़ी** एक पौधे की जड़ होती है और यह पौधा हिमालय की तराईयों तथा सुन्दर पर्वतीय प्रदेशों में पाया जाता है। सिर्फ तांत्रिक, अघोरी तथा आदिवासी लोगों को ही इस पौधे की पहचान होती है। **दुर्लभ हत्था जोड़ी** दिखने में बंद मुट्ठियां लिए हुए हाथों जैसे होती है। **दुर्लभ हत्था जोड़ी** में साक्षात चामुण्डा देवी का वास होता है। धन प्राप्ति तथा वशीकरण में यह सर्वाधिक प्रभावशाली सिद्ध हुई है।

सिद्ध वशीकरण मुद्रिका

हरेक मनुष्य की लालसा होती है, उससे मिलने वाला कोई शख्स अथवा महिला प्रभावित होनी चाहिए। इस हेतु विधिपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित **सिद्ध वशीकरण मुद्रिका** को धारण करने से धारणकर्त्ता के सम्पर्क में आने वाले सभी लोग आकर्षित होने लग जाते हैं।

रत्नजड़ित धनलक्ष्मी यंत्र

जिन लोगों की कुण्डली में मंगल व चंद्र की युति हो अथवा कुण्डली में ये दोनों ग्रह एवं दूसरे के सामने हों अथवा परस्पर केन्द्र में हो तो उन्हें यह सिद्ध यंत्र अवश्य ही धारण कर लेने चाहिए। यह **धनलक्ष्मी यंत्र** शुद्ध चांदी अथवा सोने में निर्मित किया जाता है तथा उसमें शुद्ध मूंगा तथा शुद्ध **मोती** को संयुक्त रुप से **बीसा यंत्र** के साथ जड़ा जाता है। बीसा यंत्र के साथ ये दोनों रत्न **धनलक्ष्मी योग** को प्रबल करके जातक को निरंतर धन लाभ पहुँचाते हैं।

नवरत्न बगलामुखी लॉकेट

शास्त्रोक्तिनुसार शुद्ध रजत धातु अथवा शुद्ध सोने में निर्मित बगलामुखी यंत्र के चारों और विंशोत्तरी क्रमानुसार असली नवरत्न जड़वाकर **नवरत्न बगलामुखी यंत्र** तैयार किया जाता है। इस यंत्र को लॉकेट रुप में धारण करने से जातक समस्त विरोधी शत्रु व आलोचकों को नष्ट करने में समर्थ हो जाता है। इस **चमत्कारी यंत्र** लॉकेट के धारणकर्त्ता के साथ साक्षात **बगलामुखी की शक्तियाँ** अदृश्य रुप से सदैव ढाल बनकर कवच का काम करती है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिद्ध नवरत्न अंगूठी

दुनिया के प्रत्येक देश, हरेक कोने और हर मजहब/जाति/धर्म से संबंधित व्यक्तियों में एक बात समान रुप से देखी गई है कि नवग्रहों की चाल पर वे भरोसा करते हैं और यह भी मानते हैं कि नवरत्नों का प्रयोग करके इन नवग्रहों को अपने अनुकूल बनाया जाना संभव है। यही कारण है कि अधिकाशंत: लोग शुद्ध चांदी अथवा सोने में असली नवरत्न जड़वाकर अंगूठी के रुप में प्रयोग करके नवग्रहों से लाभ प्राप्त करके देखे गये हैं। आप भी इस **सिद्ध नवरत्न अंगूठी** को अवश्य आजमा कर देखें और वांछित लाभ प्राप्त करें।

कालसर्प दोषनाशक यंत्र

यदि किसी मनुष्य की जन्म कुण्डली में सभी ग्रह राहु और केतु के मध्य स्थित हों तो यह कालसर्प योग नामक अशुभ दोष होता है। ऐसे अशुभ योग वाले जातकों का भाग्य प्राय: अवरुद्ध रहता है। अनेकानेक प्रयत्नों तथा उपायों के बावजूद भी मनोवांछित लाभ प्राप्ति असंभव बनी रहती है। ऐसे जातक बिना किसी विशेष कारण के भी मानसिक क्लेश, विवाद, अशान्ति, आर्थिक तंगी जैसी समस्याओं से घिरे रहते हैं। इन सभी समस्याओं तथा **कालसर्प दोष नाशक मुद्रिका** तथा **कालसर्प दोष नाशक लॉकेट** का विधिपूर्वक प्रयोग करने से इस अशुभ दोष का कुप्रभाव समाप्त हो जाता है और चमत्कारी लाभ मिलना प्रारम्भ हो जाता है।

दरिद्रतानाशक मुद्रिका

जीवन में प्राय: रुपये पैसों की आवश्यकता सभी को पग-पग पर पड़ती रहती है जन्मकुण्डली के दोष अथवा भाग्य रेखा की विकृति के परिणामस्वरुप धन का आगमन बाधित हो जाता है और मनुष्य कंगाली के कगार पर पहुंच जाता है। इस प्रकार की कष्टप्रद स्थिति से मुक्ति प्राप्त करने हेतु तांत्रिक ग्रंथ 'शारदा तिलक' में वर्णित **दरिद्रता नाशक मुद्रिका** को विधि पूर्वक निर्माण करवाकर धारण करने से जातक के समय के समस्त ऋण चुकता हो जाते हैं और उसकी आर्थिक तंगी भी समाप्त हो जाती है। हमने अपने जीवन में अनेकानेक परेशान जातकों को इस महाशक्तिशाली और शीघ्र प्रभावी **अद्भुत मुद्रिका** को विधिपूर्वक धारण करवाकर उनके जीवन में कई चमत्कार होते स्वयं देखे गये हैं। आप भी अपने **शीघ्र भाग्योदय** और दरिद्रता निवारण हेतु इस **प्रचण्ड शक्तिवान मुद्रिका** को अवश्य ही धारण करके लाभ उठाना चाहिए।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

नवरत्न श्री यंत्र लॉकेट

शास्त्रोक्त विधिनुसार शुद्ध रजत पत्र (चांदी) अथवा शुद्ध स्वर्ण (सोने) में निर्मित श्रीयंत्र के चारों ओर असली नवरत्नों तो जड़वा दिया जावे तो यह **नवरत्न जड़ित श्री यंत्र** कहलाता है। इस प्रकार से निर्मित **श्रीयंत्र लॉकेट** में निम्नांकित विशोन्तरी दशा क्रमानुसार नवरत्नों को सैट किया जाता है।

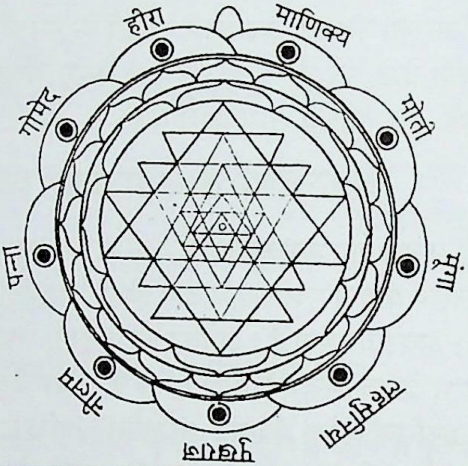

यथा - 'आ चं भौ रा जी श बु के शु' (विंशोत्तरी दशा क्रमानुसार)
आ - आदित्य, सूर्य (माणिक्य), चं - चंद्रमा (मोती), भौ - भौम, मंगल (मूंगा)
रा - राहु (गोमेद), जी - जीव, बृहस्पति (पुखराज), श - शनि (नीलम)
बु - बुध (पन्ना), के - केतु (लहसुनिया), शु - शुक्र (हीरा)

इस '**नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र लॉकेट**' को पूर्णात: विधि-विधानपूर्वक प्राण-प्रतिष्ठित करके मंत्रों तथा श्रीसूक्त का जाप करके चैतन्य किया जाता है। इस प्रकार से '**मंत्रसिद्ध चैतन्य नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र लॉकेट**' को धारण करने के धारणकर्त्ता को अतुलित धन-सम्पत्ति, सुख, शांति, ऐश्वर्य, वैभव, आरोग्य तथा मोक्ष की प्राप्ति होती है, ऐसा शास्त्रोक्त वचन है। नवरत्नों के रुप में नवग्रह श्रीयंत्र से बंधे हुए होने के कारण धारणकर्त्ता पर ग्रहों की प्रतिकूल दशा का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है। साथ ही लॉकेट के रुप में गले में रहने से यंत्र पवित्र रहने के साथ-साथ स्नान के समय यंत्र व रत्नों से जल स्पर्श होने के कारण '**रत्न स्नान**' भी हो जाता है जो कि अत्यन्त लाभदायक रहता है। इस प्रकार का लॉकेट अवश्य धारण करना चाहिए।

यदि आप इस प्रचण्ड शक्तिशाली लॉकेट को प्राप्त करने के इच्छुक हों तो अभी तुरंत हमारी हैल्पलाईन **09828535525** पर सम्पर्क स्थापित करें।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रचण्ड शक्तिमान दिव्य कवच

जीवन है तो सुख-दुख भी है। किन्तु भागदौड़ की जिंदगी और मशीनी युग में आम आदमी परेशानियों के जंजाल में इतना बुरी तरह से जकड़ चुका हैं कि सुख तो दूर-दूर कोसों तक भी नहीं दिखाई देता। परेशान आदमी अपनी समस्याओं के समाधान हेतु दर-दर भटकता रहता है और प्राय: तथाकथित तांत्रिकों और ढोंगी व छद्मवेशी ज्योतिषियों के चक्कर में आकर अपना सर्वस्व गँवा बैठता है, किंतु फिर भी उसे समाधान नहीं मिलता। इन्हीं समस्याओं को देखते हुए हमारे तंत्र-मंत्र विशेषज्ञों ने वर्षों के गहन अनुसंधान के पश्चात् विशिष्ट मुहूर्त में **प्रचण्ड शक्तिशाली कवचों** का निर्माण किया और अनेकानेक लोगों पर सफलतापूर्वक प्रयोग भी किया। आप भी इन्हें एकदफा आजमाकर देख सकते हैं।

तंत्ररक्षा कवच

यदि आप किसी भी प्रकार की भूत प्रेतादि ऊपरी बाधा के शिकार है अथवा किसी शत्रु ने दुर्भावनावश तांत्रिक अभिचार कर्म अथवा टोना टोटका करवा दिया है और आप लाख प्रयत्नों के बावजूद भी उन से छुटकारा नहीं पा सके हो तो शीघ्र ही आप हमारे केन्द्र के तंत्र विशेषज्ञों के द्वारा वर्षों की साधना और अलौकिक दिव्य शक्तियों के संयोग से सिद्धिकाल में विशेष रुप से निर्मित तंत्र रक्षा कवच को मंगवाकर सदैव के लिए अपने गले में धारण करके वांछित लाभ प्राप्त कर सकते है। इस **दिव्य कवच** पर किसी भी प्रकार का जादू टोना असर नहीं डाल सकता है। जीवन में समस्त ऊपरी बाधाओं से रक्षा हेतु सदैव के लिए इस **प्रचण्ड शक्तिशाली कवच** को अपने गले में धारण अवश्य ही करना चाहिए।

भूतबाधानाशक कवच

कभी-कभी असावधानीवश, दुर्घटनावश, अपवित्र स्थिति में अथवा अन्य किसी कारणवश किसी कुँवारी लड़की या किसी भी महिला पर यकायक भूत/जिन्न/प्रेत/आसेब इत्यादि का साया हो जाता है जो कि उस स्त्री का जीवन नरक समान बना देता है। ऐसी परिस्थितियों में यदि उसे **भूत बाधानाशक कवच** गले में धारण करा दिया जावे तो **चमत्कारिक लाभ** दिखाई देने लग जाते है। इस अद्भुत कवच को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केंद्र से सम्पर्क कर सकते है।

विदेश यात्रा कवच

उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु, नौकरी करने अथवा रोजगार प्राप्ति हेतु, उद्योग धन्धों एवं व्यवसाय में वृद्धि हेतु अथवा अपनी उच्च महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति एवं असीम धन कमाने हेतु भारत से कई गुना ज्यादा अवसर पाश्चात्य देशों में मिलते है। यही कारण है कि महत्वाकांक्षी युवा वर्ग लक्ष्मी प्राप्ति हेतु विदेश जाने हेतु लालायित एवं निरन्तर प्रयासरत रहता है। किन्तु जन्मपत्री में सभी मनुष्यों को विदेश यात्रा योग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

बन पाना तो संभव नहीं होता। कुछ बिरले लोगों ही की हस्तरेखाओं अथवा जन्मकुण्डली में **विदेश यात्रा योग** पाये जाते है। किन्तु भारतीय प्राचीन तंत्र विज्ञान में इस हेतु भी अनेक गोपनीय एवं तीव्रतम प्रभावशाली उपाय वर्णित है। उन्हीं गोपनीय सूत्रों के आधार पर सिद्धिकाल के शुभ मुहूर्त में विशिष्ट तांत्रिक विधियों से **विदेश यात्रा कवच** का निर्माण किया जाता है। इस दिव्य कवच को अपने गले में धारण करके विदेश यात्रा योग को प्रबल किया जा सकता है। कवच प्राप्ति हेतु आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

जुआ विजय कवच

मनुष्य को अपने जीवन में सभी आवश्यक कर्मों को संपादित करने के अतिरिक्त आत्मिक सुख प्राप्ति के लिए अपने निजी शौक भी पूरे करने ही पड़ते है। इनमें से भी मुख्यत: **'द्यूत अथवा जुआँ'** एक ऐसा शौक है जो कि परम्परागत रुप से युगों-युगों से चला आ रहा है। आधुनिक युग में जुआँ, रेसकोर्स, लॉटरी, सट्टा, मटका, कैसिनो घर के रुप में प्रचलित है। जुए में विजय के लिए सभी मनुष्य प्रयासरत रहते है किन्तु भाग्यशाली लोग ही जुए में जीत पाते है। ऐसे में जुआ-सट्टा इत्यादि में आश्चर्यजनक विजय प्राप्ति के लिए विशिष्ट तांत्रिक विधियों से शुभलग्न में निर्मित चमत्कारी **जुआ विजय कवच** को हमारे केन्द्र से मंगवाकर तथा गले में धारण करके अभूतपूर्व परिणाम प्राप्त किये जा सकते है। इस **अद्भुत कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

महादेव कवच

विदेश जाने के लिए जहाँ एक ओर पासपोर्ट का होना आवश्यक है वहीं दूसरी ओर किसी भी देश में जाने के लिए पासपोर्ट के अतिरिक्त उस देश का वीजा लेना भी आवश्यक है। बिना वीजा के उस देश की यात्रा असंभव है। वीजा मिलना एक अत्यंत कठिन कार्य है और प्राय: काफी देर से और मुश्किलों से ही वीजा मिलता है। इस समस्या के शीघ्र समाधान के रुप में विशिष्ट विधि से निर्मित **महादेव कवच** को यदि धारण कर लिया जावे तो शीघ्र वीजा मिलने की संभावनाएँ उत्पन्न हो जाती है। इस चमत्कारी कवच को आप हमारे केन्द्र से संपर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।

गणपति कवच

वर्तमान दौर में अथक परिश्रम के उपरांत भी अपने देश में उचित मात्र में धन प्राप्ति संभव नहीं है। आम आदमी दिन रात मेहनत करके भी पेट भरने लायक ही धन कमा सकता है। लेकिन जीवन की अन्यानेक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रचुर मात्रा में धन की आवश्यकता पड़ती है और इतना प्रचुर मात्रा में धन तो सिर्फ विदेश जातक नौकरी अथवा रोजगार करने पर ही संभव हो सकता है। लेकिन भारत से बाहर किसी भी देश में जाने के लिए उस व्यक्ति के पास पासपोर्ट होना

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

परम आवश्यक है। किंतु कानूनी कार्यवाही एवं पेचीदगी के चलते शीघ्रता और आसानी से पासपोर्ट नहीं बन सकता है। हमारे विशेषज्ञों ने तंत्र शास्त्रों का गहन अध्ययन करके एक ऐसे दिव्य अलौकिक **गणपति कवच** का निर्माण किया। इस कवच में प्रथम पूज्य गणेश जी की **अद्भुत शक्तियाँ** और आशीर्वाद होता है। जो कि शीघ्र पासपोर्ट बनने में सहायता कर सकता है। आप हमारे केन्द्र से संपर्क करके इस **चमत्कारी कवच** को प्राप्त कर सकते है।

यक्ष कवच

विदेश जाने हेतु प्रथम सीढ़ी के रुप में पासपोर्ट तैयार करना आवश्यक है। किंतु पूर्ण प्रक्रिया उस देश का वीजा मिलने पर ही संपन्न होती है और उस देश का वीजा मिलना सहज संभव नहीं होता। वीजा प्राप्ति के लिए उस देश के दूतावास में इण्टरव्यू होता है और प्राय: इण्टरव्यू में असफलता होने पर उस व्यक्ति को वीजा नहीं मिल पाता। किंतु अब वीजा के इण्टरव्यू में सफलता प्राप्ति हेतु हमने **चमत्कारी यक्ष कवच** का निर्माण किया है। जिसे धारण करके आप इण्टरव्यू में सफलता प्राप्त करके विदेश जाने का वीजा आसानी से प्राप्त कर सकते हैं।

नवनाथ कवच

यदि आप विदेश जाकर नौकरी अथवा रोजगार करके प्रचुर धन कमाने की लालसा रखते है। तो इसके लिए आपको विदेशों में वीजा का वर्क परमिट प्राप्त करना पड़ेगा। तभी जाकर आप विदेश में नौकरी/रोजगार कर सकते हैं। लेकिन वर्क परमिट आसानी से प्राप्त नहीं होता है। किंतु अब हमारे केन्द्र के तंत्र विशेषज्ञों ने एक ऐसे अद्भुत शक्तिशाली नवनाथ कवच का निर्माण किया है। जिसमें शाबर विद्या के नौ नाथों की अलौकिक शक्तियाँ सम्मिलित है। इस **प्रचण्ड शक्तिमान कवच** को धारण करने से आश्चर्यजनक सहायता मिलती है। आप इस दिव्य कवच को प्राप्त करने के लिए हमारे केंद्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

कुबेर कवच

लक्ष्मी चंचला है और किसी एक स्थान पर टिककर नहीं बैठती, तभी तो शास्त्रों में इसे 'अस्थिरा' भी कहा है। कल का धनी एक ही झटके में निर्धन हो जाता है। तो कोई दरिद्र लक्ष्मी कृपास्वरुप यकायक उत्तरोत्तर प्रगति करके धनवान बन जाता है। यह सब लक्ष्मी की चंचल प्रवृत्ति के कारण ही है। यह अकाट्य सत्य है कि जीवन जीने के लिए रुपयों (धन) की आवश्यकता पड़ती है। लक्ष्मी को सिर्फ श्रेष्ठतम प्रयासों से ही स्थिर किया जा सकता है। उनमें से भी देवताओं के कोषाध्यक्ष और लक्ष्मी के कृपापात्र यक्षराज कुबेर की कृपा से आकस्मिक एवं **प्रचुर धन प्राप्ति** संभव होती है। हमने गहन अनुसंधान के परिणाम स्वरुप आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु **कुबेर कवच** का निर्माण किया है जिसके आश्चर्यजनक परिणाम

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सामने आए है। इस कल्पवृक्ष स्वरुप **अद्भुत कवच** को प्राप्त करने के लिए आज ही हमारे केन्द्र से सम्पर्क करें और लक्ष्मी की कृपा प्राप्त करें।

रिद्धि सिद्धि कवच

कई बार अच्छा चलता व्यापार अचानक ही मंदा हो जाता है। एक ही व्यवसाय से संबंधित कई दुकानें आस पास होने पर सामने वाले का व्यापार चलता रहता है और आपकी दुकान पर कोई भी नहीं आता है। इसका प्रभाव आर्थिक स्थिति पर पड़ता है और स्थिति धीरे धीरे खराब होने लगती है। जिस व्यापार में कभी लाभ ही लाभ होता था वहां आज हानि हो रही है। क्या आपने कभी सोचा है कि यह सब आपके साथ में ही क्यों हो रहा है ? अपने व्यापार को पुन: चालू करने और उसमें वृद्धि करने के लिए आपको चाहिए कि व्यापार वृद्धि के लिए **रिद्धि-सिद्धि कवच** को मंगाकर अपने गले में धारण करें अथवा लाल कपड़े पर रखकर अपने गल्ले में रखे। हमारे केन्द्र से संपर्क करके इस **चमत्कारी कवच** को प्राप्त किया जा सकता है।

शीघ्र विवाह कवच

मनुष्य जीवन की परिपूर्णता विवाह के पश्चात् ही मानी गई है। जीवन गाड़ी को सुचारू रुप से चलने के लिए दोनों पहियों का संतुलन बनाकर ही जीवन यापन किया जा सकता है। विवाह की एक काल्पनिक तौर पर तयशुदा उम्र मानी गई। किंतु उस उम्र के निकल जाने अथवा नजदीक आने पर भी विवाह नहीं हो पाना चिंता का विषय बन जाता है। अविवाहित युवक/युवतियों के शीघ्र विवाह हेतु एवं बाधा निवारण हेतु अत्यन्त शक्तिशाली **शीघ्र विवाह कवच** मंगवाकर गले में धारण करके आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं। इस प्रकार से विधिपूर्वक निर्मित इस **अद्भुत चमत्कारी कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

कालसर्प दोषनाशक कवच

यदि जन्म कुण्डली में स्थित सर्वाधिक दुष्प्रभावकारी कालसर्प दोष को लेकर आप अपने अमूल्य जीवन में पग-पग पर संकट और बाधाओं का सामना कर रहे हैं तथा अनेकानेक प्रकार के प्रयत्न करने के उपरांत भी कोई लाभ नहीं मिल रहा हो तो हमारे केन्द्र के तांत्रिकों द्वारा विशेष रुप से निर्मित **कालसर्प दोष नाशक कवच** को मंगवाकर शीघ्र ही अपने गले में धारण करके यथोचित लाभ प्राप्त करना परम आवश्यक है। चूंकि हमने अपने दीर्घकालीन अनुभव में पाया है कि प्राय: हरेक पाँचवी जन्मकुण्डली में यह दुष्प्रभावकारी दुर्योग **कालसर्प दोष** विद्यमान होता है और परेशान हाल मनुष्य तथाकथित पंडितों के चक्कर में आकर

Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

कालसर्प शांति के नाम पर बीस-पच्चीस हजार रुपये तक ठगा बैठता है और नतीजा वही ढाक के तीन पात। ऐसे में हमारे केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा निर्मित इस अद्भुत **चमत्कारी कवच** को प्राप्त करके श्रद्धापूर्वक धारण करके इस दुर्योग के दुष्प्रभाव को समूल नष्ट किया जा सकता है।

वशीकरण कवच

लोग आपको देखकर खिचें चले आए यह कामना हर इंसान के अंदर मौजूद होती है। आपके व्यक्तित्व का आकर्षण ऐसा हो कि लोग चुम्बक की तरह आपकी ओर दौड़े आयें। यह सब संभव है **वशीकरण कवच** से। इसे गले में धारण करके आप किसी को भी वशीकृत कर सकते हैं। विधिपूर्वक निर्मित इस **अद्भुत चमत्कारी कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते है।

त्रिकाल सिद्धि कवच

यदि आप ज्योतिष जैसी गूढ़ विद्या को सीखने और इसे व्यवसाय बनाने में पर्याप्त रुचि रखते है तथा सफल भविष्यवक्ता बनकर नाम और पैसा कमाने के इच्छुक हैं तो वर्षों के सतत् व गहन अध्ययन के साथ गुरु का आशीर्वाद और अदृश्य अलौकिक शक्तियों की साधना की भी आवश्यकता होती है। हमारे केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा गोपनीय तांत्रोक्त विधि से ग्रहण काल में निर्मित **त्रिकाल सिद्धि कवच** को मंगवाकर अपने गले में धारण करें और ज्योतिष के क्षेत्र में अभूतपूर्व सफलताएँ प्राप्त कर सकते हैं।

पंचांगुली कवच

आज पूरी दुनिया के पुस्तक बाजारों में सुप्रसिद्ध हस्तरेखा विशेषज्ञ कीरो द्वारा लिखित अनेक पुस्तकों को करोड़ों पाठक खरीदकर पढ़ते है और उनके जैसा ही पामिस्ट बनने का प्रयास करते हैं। किन्तु सिर्फ पुस्तकें पढ़कर ही कोई सफल हस्तरेखाविद् नहीं बन सकता। अपितु निरंतर अभ्यास, हजारों हाथों का प्रैक्टिकल अध्ययन और माँ पंचांगुली देवी की साधना के बिना यह सब असंभव है। स्वयं **कीरो** ने भी भारत में रहकर पंचांगुली देवी की साधना की थी। हमारे केन्द्र द्वारा निर्मित **पंचांगुली कवच** को धारण करके आप भी पामिस्ट्री की दुनिया में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

गोरखनाथ कवच

यदि आप तंत्र मंत्र के क्षेत्र में अगाध रुचि रखते हैं और साधना सिद्धि प्राप्त करके जनकल्याण करने के प्रबल इच्छुक हैं, तो सर्वप्रथम आपको मंत्र साधना के क्षेत्र में सिद्धहस्त होना परम आवश्यक है और इसके लिए सतत् अभ्यास, गुरु का आशीर्वाद और **दिव्य अलौकिक शक्तियों** के सहयोग की परम आवश्यकता

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

होगी। यदि आप मंत्र साधना के क्षेत्र में गंभीरतापूर्वक प्रवेश करके सफलता प्राप्त करने के प्रबल आकांक्षी हैं तो भगवान गोरखनाथ की अद्भुत अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण **गोरखनाथ कवच** को हमारे केन्द्र से प्राप्त करके शीघ्र ही अपने गले में धारण करें और सफल मांत्रिक बनने की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

शनि दोष निवारक कवच

इस दुनिया में प्रत्येक तीन में से एक व्यक्ति शनि के कुप्रभावों से अत्यधिक परेशान है। शनि की पनौती, ढैया अथवा साढेसाती के दुष्प्रभाव के कारण सभी कार्यों में बाधा, शत्रुओं से परेशानी, मुकद्दमों में पराजय, आर्थिक एवं शारीरिक कष्ट एवं मानसिक क्लेश जैसी दुविधाओं का सामना करना पड़ता है। ऐसे में यदि शनि शांति के अचूक उपाय के रुप में तांत्रोक्त विधि से निर्मित **शनि दोष निवारक कवच** को गले में धारण किया जाए तो प्रत्यक्ष रुप से चमत्कारिक लाभ देखें जा सकेगें। शनि की ढैया, शनि की पनौती, शनि की शाढ़ेसाती एवम् जन्मकुण्डली में शनि की स्थिति से उत्पन्न दुष्प्रभावों के समूल नाश हेतु इस **प्रचण्ड कवच** को अवश्य ही धारण करना चाहिए। इस कवच को स्त्रियाँ भी धारण करके मनोवांछित लाभ प्राप्त कर सकती हैं। इस **अद्भुत कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

नवग्रह दोष निवारक कवच

कभी-कभी अचानक ही मनुष्य की चलती हुई जीवन गाडी में ब्रेक लग जाता है जिसके परिणामस्वरुप जीवन में भूचाल सा आ जाता है और उसके जीवन, दिनचर्या, आपसी संबंधों और रोजगार सहित सभी कार्यों में अकारण बाधा उत्पन्न होने लग जाती है। वास्तव में यह सब कुछ ग्रहों की चाल के कारण ही होता है। ऐसी परिस्थितियों में शीघ्र प्रभावशाली उपाय के रुप में शुभ मुहूर्त में निर्मित **नवग्रह दोष निवारक कवच** को अपने गले में धारण करके नवग्रहों की कृपा दृष्टि प्राप्त की जा सकती है। हमने अपने जीवन काल में अनेकानेक पुरुषों/स्त्रियों को इस चमत्कारी कवच को विधिपूर्वक धारण करवाकर मनोनुकूल लाभकारी परिणाम प्राप्त किये है। हमारी व्यक्तिगत सलाह है कि प्रत्येक मनुष्य को नवग्रहों की कृपा प्राप्ति हेतु इस **प्रचण्ड शक्तिशाली कवच** को आवश्यक रुप से सदैव के लिए अपने गले अथवा बाजू में धारण करना चाहिए।

महामृत्युंजय कवच

मृत्यु पर किसी का वश नहीं होता है, परन्तु मौत भी अपने निश्चित समय से पहले नहीं आती है। हर मनुष्य की कुण्डली में उसकी मृत्यु का समय लिखा होता है। परन्तु कई बार अकस्मात् ही बिना मृत्यु योग के ही मृत्यु हो जाती है। इसे अकाल मृत्यु कहा जाता है। हर समय मन में मौत का एक भय सा लगा रहता है। मन एक आशंका से भरा रहता है। आपकी इस आशंका के निवारण के लिए

Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

उपाय के रुपमें शुभ मुहूर्त में निर्मित **महामृत्युंजय कवच** को गले में धारण करके अकाल मृत्यु के भय से छुटकारा पाया जा सकता है। इस **शक्तिशाली कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

शत्रुंजय बगलामुखी कवच

महाविद्या बगलामुखी (पीताम्बरा देवी) भारत की प्रमुख प्राचीन दस महाविद्याओं में सर्वाधिक शक्तिशाली मानी जाती है। शत्रुनाश, भूत-प्रेत, बाधा निवारण, मुकद्दमेबाजी तथा वाद-विवाद एवं कोर्ट-कचहरी में विजय प्राप्ति हेतु तथा जीवन के समस्त प्रकार के ज्ञात एवं अज्ञात शत्रुओं के विनाश एवं उनसे रक्षा हेतु हमारे केन्द्र में तन्त्र विशेषज्ञों ने सिद्धिकाल के शुभ मुहूर्त में शत्रुनाशक **बगलामुखी कवच** को विशेष विधि से निर्मित किया है। इस दिव्य कवच को अपने ग़ले में धारण करके मुकद्दमों एवं शत्रुओं पर विजय प्राप्त करना आसान हो सकता है। इस **अद्भुत चमत्कारी कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

महालक्ष्मी कवच

आधुनिक काल में धन की इच्छा सभी को होती है। इस वैज्ञानिक युग में धन की उपयोगिता और महत्व सभी को बखूबी मालूम है। प्रत्येक मनुष्य असीम धन प्राप्ति की इच्छा तो रखता है, किन्तु उसे यह पता नहीं है कि यह धन उसे कब कहां और कैसे प्राप्त हो सकेगा ? आम आदमी को लक्ष्मी का सानिध्य प्राप्त कराने हेतु हमारे तंत्र विशेषज्ञों ने शुभ मुहूर्त में विशेष रुप से निर्मित **महालक्ष्मी कवच** का निर्माण करके अनेकों व्यक्तियों पर इसके सफल प्रयोग किये है। आप भी इस **दिव्य कवच** को अपने गले में धारण करके अवश्य लाभ प्राप्त करें।

गुरुकृपा कवच

मनुष्य के अंदर ज्ञान और शक्तियों का अपार भण्डार छुपा हुआ है परन्तु वह यह सब कुछ नहीं जानता। यदि उसे अपने अंदर छिपी अद्भुत चमत्कारी शक्तियों और ज्ञान का पता चल जाए तो वह सारे साम्राज्य पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर सकता है। परन्तु किसी ने सही कहा है कि गुरु के बिना ज्ञान की प्राप्ति संभव नहीं है। यदि आप भी अपने अंदर छिपे ज्ञान और **अद्भुत चमत्कारी शक्ति** को जाग्रत करना चाहते है और पहचानना चाहते है तो हमारे तंत्र विशेषज्ञों द्वारा शुभ मुहूर्त में निर्मित **गुरुकृपा कवच** को अपने गले में धारण कर लाभ प्राप्त करें। इस दिव्य कवच को घर बैठे ही प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

ऋणमोचन कवच

मनुष्य अगर एक बार कर्ज तले दब जाए तो जीवन भर इससे मुक्त नहीं हो पाता है, कर्ज एक ऐसा शब्द है जिसके नाम से ही व्यक्ति कांपने लगता है। कर्ज

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

के बोझ तले दबा व्यक्ति सदैव मानसिक तनाव और उलझन से घिरा रहता है। उसका सुख चैन, नींद, खुशी सब उड़ जाते हैं। मन में कर्ज चुकाने की चिंता और भय सताते रहते हैं। यदि आप भी कर्ज के बोझ तले दबे हुए है और कहीं भी राह नहीं सूझ रही हो तो हमारे केन्द्र में निर्मित **ऋण मोचन कवच** को मंगवाकर अपने गले में धारण करें। इस **अद्भुत कवच** का निर्माण हमारे तंत्र-विशेषज्ञों द्वारा अथक परिश्रम के बाद शुभ मुहूर्त में किया गया है।

संकटमोचन कवच

कई दफा निर्बाध गति से चल रहे जीवन में यकायक चारों ओर से अनेकों परेशानियों, समस्याओं, बीमारियों, दुखों और संकटों का पहाड़ टूट पड़ता है कि मनुष्य 'किंकर्त्तव्यविमूढ' जैसी दुविधाजनक स्थिति में फँस जाता है और दूर-दूर तक भी समाधान नजर नहीं आता है। ऐसे में यदि विशिष्ट तांत्रिक विधियों से निर्मित प्रचण्ड शक्तिमान **संकटमोचन कवच** को यदि विधिपूर्वक धारण कर लिया जावें तो चमत्कारिक रुप से मनोवांछित लाभ प्राप्त किये जा सकते हैं।

सीताराम कवच

आपका व्यापार व्यवसाय ठीक चलता हो, रुपये पैसे की आमदनी भी हो रही हो, समाज में मान प्रतिष्ठा भी बढ़ रही हो, दिन दूनी रात चौगुनी तरक्की भी हो रही हो, स्वास्थ्य भी उत्तम हो, किन्तु यदि घर में सदैव क्लेश और कलह का वातावरण बना हुआ हो तो उपरोक्त समस्त बातें और उपलब्धियाँ बिल्कुल बेकार हो जाती है। दाम्पत्य जीवन को सुचारु रूप से चलाने और गृहस्थी की गाड़ी को सही पटरी में दौड़ाने के लिए परिवार के सभी सदस्यों में परस्पर तालमेल, स्नेह और सहयोग की भावना होना परम आवश्यक है। किन्तु गृहक्लेश इन सब चीजों पर पानी फेर देता है। इस विकट समस्या का अचूक समाधान अद्भुत प्रभावशाली **सीताराम कवच** है जिसे पूजा स्थल में रखकर अथवा स्वयं धारण करके भी घर में सुख शांति प्राप्त की जा सकती है। इस **दिव्य कवच** को हमारे केन्द्र से प्राप्त किया जा सकता है।

कामदेव कवच

कभी-कभी कुछ स्त्री-पुरुष शारीरिक दृष्टि से तो सुडौल और सुगठित दिखाई देते है किन्तु विवाह पश्चात् पर्याप्त शक्ति के अभाव में यौन सुख का भरपूर आनन्द नहीं ले पाते और इसी कारण उनका वैवाहिक जीवन दुष्कर बन जाता है तथा मन में हीन बोध उत्पन्न हो जाता है। यंत्र शास्त्रों में **अनंग मदन सिद्धि** के विधिवत् प्रयोग से यौन संतुष्टि प्राप्त की जा सकती है किन्तु आधुनिक युग में साधारण मनुष्य के लिए तो यह असंभव है। इन्हीं परेशानियों को ध्यान में रखते हुए कामशक्ति में संतुलन के लिए अत्यधिक शक्तिशाली **कामदेव कवच** मंगवाकर गले में धारण करके **चमत्कारी लाभ** प्राप्त किये जा सकता है। इस

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अद्भुत **दिव्य कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

मोहिनी कवच

फिल्म लाइन, टेलीविजन, कला, मॉडलिंग, ग्लैमर जगत, पॉप सिंगर बनने, प्लेबैक सिंगर बनने, अभिनय क्षेत्र, रंगमंच, इन्ट्रव्यू में सफलता एवं उच्चाधिकारियों से मुलाकात करने सहित सार्वजनिक जीवन में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने के लिए हमारे तंत्र विशेषज्ञों ने वर्षों की साधना के फलस्वरुप ग्रहणकाल के स्वयं सिद्ध मुहूर्त में **मोहिनी कवच** को विशेष तांत्रोक्त विधियों से निर्मित किया है। अतएव उपरोक्त ग्लैमर की दुनिया में धारण प्रवेश पाने अथवा सफ़लता प्राप्ति हेतु इस दिव्य कवच को अपने गले में धारण करके लाभ उठाया जा सकता है। इस अद्भुत **चमत्कारी कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

मंगली कवच

किसी भी लड़के या लड़की की जन्मपत्री में मंगली दोष का होना ज्योतिष की दृष्टि से असामान्य माना जाता है। मंगली योग वाले जातक का विवाह भी मंगली योग वाले जातक से ही किया जा सकता है अन्यथा ज्योतिषीय दृष्टि से अनिष्ट की आशंका बनी रहती है। यही **मंगली दोष** विवाह में विलम्ब का कारण भी बन जाता है और माता पिता की परेशानी का सबब भी। किन्तु हमारे केन्द्र के विशेषज्ञों ने वर्षों के अनुसंधान के उपरान्त **मंगली दोष** वाले जातकों के लिए मंगली दोष निवारणार्थ मंगली कवच का निर्माण किया है जिसे धारण करने के पश्चात् मंगली दोष के दुष्प्रभाव समाप्त हो सकते है। इस **अद्भुत दिव्य कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते है।

सरस्वती कवच

स्कूल या पढ़ने का नाम लेते ही बच्चे टाल-मटोल करने लगते है। उनका सारा ध्यान खेलकूद या टी.वी. देखने में लगा रहता है। वर्तमान प्रतिस्पर्धा के युग को देखते हुए बच्चे को प्रारम्भ से ही शिक्षा के प्रति गम्भीर होना जरुरी है। अन्यथा आगे जाकर यह उसके लिए कष्टदायी हो सकता है। हर बच्चा पढ़ाई के प्रति लापरवाह हो यह भी संभव नहीं परन्तु कई बार अथक परिश्रम और लग्न के पश्चात् भी परिणाम अच्छा नहीं आता। ऐसे में यदि उस बच्चे के गले में **सरस्वती कवच** शुभकाल में धारण करवाया जाए तो इस समस्या से निजात पाई जा सकती है। हमारे केन्द्र में निर्मित इस कवच को धारण करवाकर आप अपने बच्चे का भविष्य उज्जवल बना सकते हैं। इस **अद्भुत कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

प्रज्ञावर्धक कवच

आज हर मनुष्य मानसिक तनाव में जकड़कर कार्य करता रहता है। इस प्रतिस्पर्धा के दौर में हर किसी से आगे बढ़ना चाहता है। इसके लिए वह व्यापार, नौकरी अथवा हर जगह, क्षेत्र में उन्नति के लिए नई-नई योजनाएँ बनाता रहता है। इसका नतीजा यह निकलता है कि वह मानसिक दबाव और परेशानी महसूस करने लगता है। इसका उसके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ने लगता है। हर समय उसका मिजाज खराब रहता है। यदि आप भी ऐसी ही स्थिति से रूबरू हो रहे है तो देर ना करें। शीघ्र ही हमारे यहां निर्मित **प्रज्ञावर्धक कवच** को मंगाकर अपने गल में धारण करें। यह कवच आपकी परेशानी को कम कर धीरे-धीरे दूर कर देगा। इस अद्‌भुत **दिव्य कवच** को प्राप्त करने के लिए आप हमारे केन्द्र से सम्पर्क कर सकते हैं।

बालरक्षक कवच

छोटे-छोटे बच्चों को लेकर उनके माता-पिता प्राय: परेशान बने ही रहते हैं। कभी शारीरिक बीमारी तो कभी नजरदोष लग जाना। कभी पढ़ाई में मन नहीं लगना तो मानसिक पीड़ा उत्पन्न हो जाना। कभी-कभी तो ऊपरी बाधाओं की परेशानी इतनी अधिक हो जाती है कि बच्चों की जान आफत में पड़ जाती है। अब ऐसे में माता पिता अपना व्यवसाय संभालें अथवा घर को संभालें या बच्चों की बीमारियों को संभालें। अब इन समस्त परेशानियों का अचूक उपाय हमने खोज निकाला है और हमारे केन्द्र के विद्वानों ने गहन अनुसंधान के पश्चात् बच्चों की तमाम परेशानियों के संकटमोचन के रुप में **बाल रक्षक कवच** का निर्माण करके अनेक बच्चों पर सफलतम परीक्षण भी किये है। आप भी शीघ्र ही हमारे केन्द्र से सम्पर्क करके अपने बच्चों को इस **अद्‌भुत दिव्य कवच** को धारण करवा कर सदैव के लिए निश्चित हो जावें।

अप्सरा कवच

यदि आप सुंदर एवम् आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी है और मॉडलिंग के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करके पैसा, नाम और शौहरत प्राप्त करने के प्रबल इच्छुक हैं, तो हमारे द्वारा निर्मित दिव्य अलौकिक **अप्सरा कवच** को हमारे केन्द्र से प्राप्त करके गले में धारण करके शीघ्र ही माडलिंग की दुनिया में अपना मुकाम हासिल कर सकते हैं।

तानसेन कवच

यदि आप सुर और ताल की अच्छी समझ रखने के साथ-साथ सुमधुर और लयबद्ध आवाज के धनी भी है, किन्तु चाहकर भी गायन और संगीत के क्षेत्र में प्रवेश नहीं कर पा रहे है, तो कतई भी निराश होने के आवश्यकता नहीं है। हमारे

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विद्वान तंत्र विशेषज्ञों द्वारा गुप्त तंत्रोक्त विधियों से निर्मित अद्भुत **तानसेन कवच** हमारे केन्द्र से मंगवाकर शीघ्र ही अपने गले में धारण करें और गीत-संगीत के क्षेत्र में सफलता के शिखर को छूने को तैयार हो जावें। फिल्मी दुनिया के अनेक लोगों ने इसका **चमत्कारी लाभ** उठाकर देखा है।

लक्ष्मीनारायण कवच

आजकल के युवक-युवतियों का टी.वी. और फिल्म जगत के प्रति आकर्षण किसी से भी छिपा हुआ नहीं है। अकेले मुंबई में देश भर से हजारों लड़के-लड़कियाँ प्रतिदिन फिल्म एक्टर बनने के लिए आते है किन्तु प्रतिभा और योग्यता होते हुए भी किस्मत के अभाव में दर-दर की ठोकरें खाने को मजबूर हो जाते हैं। लाखों में किसी एकाध भाग्यवान् को ही चांस मिल पाता है। किन्तु वर्षों के गहन अनुसंधान के पश्चात् अनेकों सफलतम परीक्षण करके हमारे विद्वान तंत्र विशेषज्ञों ने प्रचण्ड शक्तिशाली **लक्ष्मी नारायण कवच** का निर्माण किया है। इस अद्भुत कवच को हमारे केन्द्र से मंगवाकर शीघ्र ही अपने गले में धारण करके टी.वी. और फिल्म लाइन में आप भी अपनी किस्मत आजमा सकते है।

सर्वरोग निवारक कवच

यदि जीवन है तो बीमारियाँ भी है। बीमारियाँ है तो विभिन्न चिकित्सा पद्धतियों में वर्णित उनके अनेकों प्रकार के इलाज भी है किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि किसी भी बीमारी को समूल नष्ट किया जा सके। संभवतया कुछेक रोगों की संपूर्ण चिकित्सा किसी न किसी चिकित्सा पद्धति में अवश्य ही मिल जाती है किन्तु समस्त रोगों का संपूर्ण निदान किसी भी चिकित्सा पद्धति में नहीं हो पाताहै। परन्तु हमारे प्राचीन तंत्रोक्त ग्रंथों में **सर्वरोगनिवारक कवच** वर्णित हैं जिसको अपनाकर जहां एक ओर रोगनाश किया जा सकता है तथा रोगों से बचाव भी किया जा सकता है।

नजरदोष निवारक कवच

प्राय: छोटे बच्चे बीमार बने रहते है। एकदम से हंसता-खेलता स्वस्थ बच्चा अचानक पस्त नजर आने लगता है। वह लगातार रोता रहता है या बिल्कुल शांत और निरीह सा हो जाता है। ऐसा प्राय: बच्चों को नजर लगने पर होता है। कई बार ऐसा होता है कि घर पर कोई जानकार मिलने आया और बच्चे को स्वस्थ देखकर कह उठता है कि आपका बच्चा तो बड़ा ही तंदुरुस्त और खुशमिजाज है। बस इतना कहने कि देर कि बच्चा निढ़ाल सा हो जाता है। यही सब देख सोचकर बच्चों को नजर व टोने से बचाने के लिए इस **नजरदोष नाशक कवच** का निर्माण किया गया है। इस **अद्भुत कवच** को बच्चे के गले में पहनाकर उसकी सुरक्षा कर सकते है।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्घटनानाशक कवच

यदि आपकी नौकरी अथवा व्यवसाय इस प्रकार का है कि जिसमें आपको प्राय: लगातार निकट दूर की यात्राएँ करनी पड़ती है तो ऐसे में यात्रा के दौरान आपको अपनी सुरक्षा पर विशेष ध्यान रखना आवश्यक होगा। इसके अतिरिक्त यदि आप किसी भी प्रकार का वाहन चलाते है तो भी दुर्घटनाओं से रक्षा के लिए अचूक उपाय करना आपके लिए परम आवश्यक है। यदि आप विशिष्ट शुभ मुहूर्त में तंत्रोक्त विधियों से निर्मित **दुर्घटनानाशक कव**च हमारे केन्द्र से मंगवाकर अपने गले में धारण कर लेवें तो वाहन चलाते समय तथा यात्रा के दौरान भी आप समस्त प्रकार की दुर्घटनाओं से बचे हुए अर्थात् सुरक्षित रहेंगे। यह अनुभूत **प्रयोगात्मक कवच** है।

बंधनमुक्ति कवच

कई बार अच्छा चलता हुआ व्यापार अचानक मंदा हो जाता है और धीरे धीरे बंद सा हो जाता है। जिसके कारण उसकी आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है और परिवार के सदस्यों का जीवन निर्वाह कठिन हो जाता है। ऐसा प्राय: किसी के द्वारा व्यापार, दुकान या धंधे को बांधने से होता है और यह काम प्राय: उस व्यक्ति के रिश्तेदार या किसी व्यावसायिक प्रतिद्वन्दी का होता है। यदि आपके साथ भी यही स्थिति हो रही है तो शीघ्र ही हमारे तन्त्र विशेषज्ञों द्वारा शुभ काल में निर्मित **बंधन मुक्ति कवच** को मंगवाकर लाभ उठाये। इसे चाहे तो आप गले में धारण करें अथवा अपने गल्ले में लाल वस्त्र के ऊपर स्थापित करें। इससे आपके व्यापार पर बंधा हुआ बंध कट जाएगा और व्यापार में निरन्तर प्रगति होती चली जाएगी।

अष्टलक्ष्मी कवच

आजकल विदेशों में नौकरी अथवा रोजगार पाने के लिए इतनी होड़ मची हुई है कि प्रत्येक दसवाँ व्यक्ति येन-केन-प्रकारेण भारत से बाहर किसी अन्य देशों (यथा: कनाडा-अमेरिका-ब्रिटेन-यूरोप तथा सउदी अरब एवं दुबई इत्यादि) में नौकरी अथवा रोजगार करने का प्रबल इच्छुक है और इन्हीं महत्वाकांक्षाओं के चलते वह विदेश भेजने के नाम पर ठगी करने वाले दलालों और एजेन्टों के चंगुल में फँसकर मेहनत से कमाया हुआ लाखों रुपये बर्बाद कर बैठता है, किन्तु फिर भी नतीजा वही ढाक के तीन पात और बेचारा ठगी का मारा रो पीटकर रह जाता है। किन्तु अब इस समस्या का **अचूक समाधान** हमारे विद्वान तांत्रिकों ने गहन अनुसंधान के पश्चात् खोज निकाला और तंत्रोक्त विधियों से **अष्टलक्ष्मी कवच** का निर्माण किया है। जिसे धारण करके विदेशों में नौकरी अथवा रोजगार प्राप्ति के सहज में ही योग बनने की प्रबल संभावना उत्पन्न हो जाती है। इस अद्भुत **दिव्य कवच** को हमारे केन्द्र से सम्पर्क करके प्राप्त कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

दुर्लभ चौंसठ योगिनी कवच

विश्वप्रसिद्ध राजा विक्रमादित्य के अद्भुत, अलौकिक सिंहासन से भला कौन अभागा अपरिचित होगा। किंतु कम ही साधक जानते होंगे कि उस चमत्कारी सिंहासन में प्रतिष्ठित थी। इन्हीं चौंसठ योगिनियों की **अद्भुत शक्तियों** के कारण राजा विक्रमादित्य को सर्व प्रकार की सुख-समृद्धि, ऐश्वर्य, धन-सम्पत्ति, राज्य और न्याय की शक्ति प्राप्त हुई थी। इन चौंसठ योगिनियों के नाम निम्नांकित हैं -

महायोगिनी, दिव्ययोगिनी, सिद्धयोगिनी, प्रेताक्षी, काली, कालरात्रि, डाकिनी, गणेश्वरी, हुंकारी, निशाचरी, रूद्रवैताली, खर्परी, भूतयामिनी, ऊर्ध्वकेशी, विरूपाक्षी, शुष्कांगी, मांसभोजनी, फेत्कारी, वीर भद्राक्षी, धूम्राक्षी, कलहप्रिया, रक्ता, घोररक्ताक्षी, विरूपाक्षी, भयंकरी, चौरिका, मारिका, चंडी, वाराही, मुंडधारिणी, भैरवी, चक्रिणी, क्रोधा, दुर्मुखी, प्रेतवाहिनी, कंटकी, दीर्घलंबौष्ठी, मालिनी, मंत्रयोगिनी, भुवनेश्वरी, कालाग्नि, मोहिनी, चक्री, कंकाली, कुंडलाक्षी, जूही, लक्ष्मी, यमदूती, घोरा, भक्षिणी, यक्षी, कौशिकी, कौमारी, करालिनी, कामुकी, विशाला, धूर्जटा, विकटा, प्रेतभूषणी, यंत्रवाहिनी, व्याघ्री, कपाला, यक्षिणी, लांगली।

इन चौंसठ योगिनियों की **अद्भुत चमत्कारिक शक्तियों** के बल पर ही तो सम्राट विक्रमादित्य ने असंभव कार्यों को भी संभव कर दिखाकर प्रसिद्धि प्राप्त की थी और निष्पक्ष न्यायिक शक्ति भी इन्हीं चौंसठ योगिनियों के प्रताप से थी।

प्राचीन तांत्रिक ग्रंथों यथा - रूद्रयामल तंत्र, योगिनी तंत्र, वृहद्योगिनी तंत्र तथा महायोगिनी तंत्र इत्यादि में चौंसठ यागिनियों के विषय में विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है, साथ ही इनकी संपूर्ण साधनाओं का उल्लेख भी किया गया है। इन चौंसठ योगिनियों में असाध्य व असंभव कार्यों का भी सिद्ध करने की **अद्भुत चमत्कारी सामर्थ्य** होती है।

इन योगिनियों के माध्यम से सर्वबाधा निवारण तथा सर्वत्र सफलता प्राप्ति के साथ-साथ **सर्वमनोकामना सिद्धि** सहज में ही संभव है। प्राचीन काल में तांत्रिकों ने इन चौंसठ योगिनियों की सम्पूर्ण शक्तियों को एक साथ एक ही कवच में आबद्ध करके दुर्लभ कवच का निर्माण किया था। हजारों वर्षों तक इस कवच की निर्माण विधि को पूर्णत: गोपनीय रखा गया, किंतु वर्षों के गहन अनुसंधान के पश्चात् अब हमने **दुर्लभ चमत्कारी गोपनीय कवच** को विधिपूर्वक निर्माण तथा प्राण-प्रतिष्ठित करने में सफलता प्राप्त कर ली है। जीवन में सर्वमनोकामना सिद्धि एवं सर्वत्र विजय प्राप्ति हेतु आप भी इस **अद्भुत कवच** को अपने गले में धारण करके आश्चर्यजनक लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

मैंने स्वयं इस प्रचण्ड शक्तिशाली एवम् गोपनीय **दुर्लभ चौंसठ योगिनी कवच** को अपने गले में धारण करके अपने जीवन में सर्वसुख और सफलताऐं प्राप्त की हैं और इसके पश्चात् पूर्ण विश्वास के साथ मैंने पुन: शुभ अमृतकाल की महानिशा में इस **अद्भुत चमत्कारी कवच** का निर्माण करके अनेकानेक राजनीतिज्ञों, व्यापारियों, अभिनेताओं, फिल्म निर्माताओं के अतिरिक्त तंत्र साधकों को भी विधिपूर्वक धारण करवाकर उनके जीवन में भी पूर्ण सफलता प्राप्ति के साथ-साथ सर्वमनोकामना सिद्धि होते हुए साक्षात् अनुभव किया है।

चूंकि यह दुर्लभ गोपनीय कवच अत्यंत मूल्यवान होने के अतिरिक्त प्रचण्ड शक्तिशाली होता है। अतएव इसका दुरुपयोग होने की आशंका के चलते सामान्यत: हम इस प्रचण्ड कवच को आमजनों के लिए उपलब्ध नहीं करा सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

संकटमोचक हनुमंत रक्षा कवच

समस्त प्रकार के संकटों से निवारण प्राप्ति हेतु, भौतिक सुख-समृद्धि प्राप्त करने, भयमुक्ति, तेज-बल-पराक्रम प्राप्त करने, भूत-प्रेतादि बाधा से मुक्ति पाने, मुकद्दमे आदि में विजय प्राप्त करने, टोने-टोटकों से बचाव तथा किसी भी तांत्रिक प्रयोग से रक्षा करने एवं महावीर हनुमान जी की कृपा प्राप्त करने के लिए श्रद्धा और विश्वास के साथ **संकटमोचक हनुमंत रक्षा कवच** को विधिपूर्वक धारण करने से समस्त कष्टों का निवारण होता है और मन की सभी इच्छाएँ पूर्ण होती हैं।

इस अद्भुत चमत्कारी **संकटमोचक रक्षा कवच** को हमारे केन्द्र द्वारा शुभ तिथि-मुहूर्त में बनवाकर हमने अनेकानेक समस्याग्रत व्यक्तियों पर इस कवच का सफल प्रयोग किया है। इस रक्षा कवच के विभिन्न प्रयोग निम्नांकित है।

बाधा मुक्ति हेतु

निम्नांकित मंत्र की एक माला किसी भी मंगलवार को जप करके इस **रक्षा कवच** को लाल धागे में पिरोकर गले में धारण करने से समस्त बाधाओं से मुक्ति मिल जाती है।

ॐ हं हनुमते नमः॥

बल तथा पराक्रम में वृद्धि हेतु

दैनिक जीवन की भागदौड़ से परेशान होकर प्रायः मनुष्य अपने आपको असहाय और शक्तिहीन समझने लगता है। ऐसे में **रक्षा कवच** को किसी लाल धागे में पिरोकर इस पर निम्नांकित मंत्र का एक सौ आठ बार किसी भी मंगलवार अथवा शनिवार को जाप करके अपनी दाहिनी बाजू में बांध लें। इस कवच के प्रभाव से धारणकर्त्ता के पराक्रम में अपूर्व वृद्धि होने लग जाती है।

ॐ नमो भगवते आंजनेयाय महाबलाय स्वाहा॥

सुख सम्पत्ति व धन-धान्य में वृद्धि हेतु

आर्थिक समस्या चहुं ओर एक विकराल रुप धारण कर चुकी है। प्रायः हर व्यक्ति आर्थिक तंगी से परेशान नजर आता है। अगर इस समस्या से छुटकारा पाना हो तो हनुमंत कवच की सहायता से आर्थिक परेशानियों से मुक्ति पाई जा सकती है।

संकटमोचक हनुमंत रक्षा कवच के साथ ग्यारह कौड़ियां किसी शुद्ध पात्र में स्थापित करके उनकी पूजन-प्रतिष्ठा करें। तत्पश्चात् कमलपुष्प अथवा कमलगट्टे के बीज अर्पित करें। अब निम्नांकित मंत्र का कम से कम एक माला जाप करें। मंत्र जाप पूर्ण होने के पश्चात् इस कवच को गले में धारण कर लें तथा कमल पुष्पों/बीजों को किसी शुभवृक्ष की जड़ में अर्पित कर दें तथा ग्यारह कौड़ियों को किसी लाल वस्त्र में लपेटकर

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अपने गल्ले, तिजोरी अथवा आलमारी में रख दें। रक्षा कवच के प्रभाव से धन-धान्य में अपूर्व वृद्धि होने लग जाएगी।

ॐ नमो हनुमते महाविपत्ति निवारणाय धन-धन्यादि विविध सम्पत्प्रदायरामदूताय स्वाहा।

भूत-प्रेतादि व अन्य ऊपरी बाधाओं के निवारण हेतु

भूत-प्रेत-जिन्न-आसेब-पिशाच-डाकिनी-शाकिनी इत्यादि न जाने कितने प्रकार की ऊपरी बाधाएँ होती हैं। जो कभी भी किसी भी मनुष्य को अपने आगोश में ले लेती हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान इतनी उन्नति कर चुकने के बावजूद आज तक भी इन ऊपरी बाधाओं का कोई इलाज नहीं खोजा सका है। इस प्रकार की व्याधियों से मुक्ति दिलाने में सर्वाधिक समर्थ देव मात्र हनुमान जी हैं।

एक लकड़ी के पट्टे पर लाल वस्त्र बिछाकर उस पर **रक्षा कवच** स्थापित करके उस पर सिंदूर चढ़ाएं तथा **मूंगे की माला** से एक माला **हनुमान चालीसा** का पाठ करें। यह प्रयोग मंगलवार से आरंभ करके अगले मंगलवार तक नित्य प्रतिदिन करें। प्रतिदिन कवच पर सिंदूर अवश्य चढ़ाएँ। तत्पश्चात् यह कवच सिद्ध हो जाएगा। अब इस कवच तथा मूंगे की माला को बाधाग्रस्त मनुष्य के गले में पहना दें तथा प्रतिदिन उसे सिंदूर का तिलक लगाएं तो वह ऊपरी बाधाओं से अवश्य मुक्ति पा जाएगा।

बालकों को नजरदोष से मुक्ति दिलाने हेतु

प्राय: प्रत्येक बच्चे को नजरदोष का शिकार होते देखा गया है। चिकित्सा विज्ञान में नजरदोष ग्रस्त बालक का कोई उपचार नहीं हैं। परन्तु आध्यात्मिक रुप से नजरदोष का नाश किया जाना संभव है। यदि किसी बालक को इस **रक्षा कवच** को काले धागे में पिरोकर मंगलवार के दिन निम्न मंत्र का जाप करते हुए गले में पहना दिया जाए तो सदैव वह बालक नजरदोष से सुरक्षित रहेगा।

ॐ श्री महाअंजनाय पवनपुत्र वेशयावेशय ॐ श्री हनुमते फट्॥

विवाद तथा मुकद्दमें आदि में विजय प्राप्ति हेतु

किसी भी विवाद अथवा किसी मुकद्दमें में विजय प्राप्त करने के लिए मंगलवार के दिन इस **रक्षा कवच** को काले धागे में पिरोकर गले में धारण करने से सफलता तथा विजय प्राप्ति अवश्य होती है।

इस अद्भुत चमत्कारी संकटामोचक हनुमंत रक्षा कवच को यदि आप घर बैठे ही प्राप्त करने के इच्छुक हों तो हमारे केन्द्र की हैल्पलाईन नंबर 09828535525 पर कभी-भी सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अब आप घर बैठे ही प्राप्त कर सकते हैं सद्गुरुदेव से

फोटो द्वारा गुरुदीक्षा

"गुरु गोविन्द दोऊ खडे, काके लागूं पायं ?
बलिहारी गुरु आपनों, गोविंद दियो बताय॥"

सद्गुरु की शक्ति और उसका महत्त्व किसी से भी छिपा हुआ नहीं है। आदिकाल से ही सामान्य मनुष्य से लेकर बड़े-बड़े राजा-महाराजाओं, महापुरुषों, ऋषि-मुनियों, देवताओं तथा स्वयं भगवान के अवतारों को भी सद्गुरु की परम आवश्यकता रही है और उन्होंने भी उचित व समर्थवान **सद्गुरु श्री** से जीवन में **गुरुदीक्षा** प्राप्त करके अपना जीवनलक्ष्य प्राप्त करके अपना भाग्योदय किया औ जीवन में समस्त सफलताएं प्राप्त की थी। यह सब **सद्गुरु श्री के आशीर्वाद** और उनके द्वारा प्रदत्त **गुरुदीक्षा** के कारण ही संभव हो सका था।

मानव मन के अंदर अद्भुत, चमत्कारी, अलौकिक शक्तियों का अथाह भंडार सुप्तावस्था में पड़ा रहता है, किंतु जब कोई समर्थ गुरु अपने शिष्यों को शक्तिपात **गुरुदीक्षा** प्रदान करता है तो वही सुप्त **अलौकिक शक्तियाँ** आंदोलित हो उठती हैं और मनुष्य को महामानव बनाने की दिशा में प्रेरित करने लग जाती है।

अब आप भी ऐसा ही स्वर्णिम अवसर घर बैठे ही प्राप्त कर सकते हैं। आप **परम पूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** का दिव्य वरदहस्त पाकर **फोटो द्वारा गुरुदीक्षा** प्राप्त करके अपनी सोई हुई अलौकिक शक्तियों को जगाकर उन्नति और सफलता के द्वार स्वयं ही खोल सकते हैं।

इसके लिए आपको अपना एक रंगीन फोटोग्राफ + अपना नाम + पिता का नाम (महिलाएँ पति का नाम लिखें) + जाति + गौत्र + जन्मस्थान + और **गुरुदक्षिणा** हमारे केंद्र को भेजनी होगी। आपकी सामग्री हमें मिलते ही शुभ अमृतकाल में **सद्गुरुदेव श्री** द्वारा आपको फोटो द्वारा **गुरुदीक्षा** प्रदान करके **गुरु प्रसादी** डाक द्वारा भेज दी जावेगी। अन्य अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आप हमारी 24 घंटे हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर कभी भी सम्पर्क कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

सिर्फ फोटो द्वारा आप भी ले सकते हैं

अद्भुत चमत्कारी दीक्षाऐं

इस घोर कलियुग और कठिनतम प्रतिस्पर्धा के युग में निरंतर उन्नति और सफलता प्राप्ति हेतु एक सामान्य मनुष्य में अपेक्षाकृत अधिक योग्यताओं, विशेष गुणों और अद्भुत शक्तियों का होना परम आवश्यक है अन्यथा साधारण जीवनयापन करते हुए जीवन के हाशिये पर ही जिंदगी गुजारनी पड़ती है।

शीघ्र सफलता प्राप्ति और भाग्योदय हेतु प्राचीन तंत्र विद्या और सद्गुरु के आशीर्वाद का सहारा लेकर ही प्रगति की राह पर चलना संभव हो पाता है। यदि किसी मनुष्य के भाग्य में कुछ भी नहीं लिखा हो तो भी सिर्फ **सद्गुरु श्री के दिव्य आशीर्वाद** से ही वह साधारण मनुष्य से महामानव बन सकता है। सद्गुरु की वर्षों तक तलाश करना और फिर उनका वरदहस्त प्राप्त करना संभवतया सर्वाधिक दुष्कर तपस्या मानी जाती है। किंतु आधुनिक युग की दिव्य अलौकिक शक्ति संपन्न विभूति और विश्वप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य एवं तंत्र विशेषज्ञ **परमपूजनीय सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** के पुण्याशीर्वाद से अब आप भी **अद्भुत शक्तियाँ** घर बैठे ही जाग्रत कर सकते हैं। **सद्गुरुदेव श्री श्री प्रमोद सागर जी** जिज्ञासु साधकों को अलौकिक सिद्धिदायक दीक्षाऐं सिर्फ फोटो द्वारा ही प्रदान करते हैं।

प्राचीन ग्रंथों में लिखा हुआ है कि ऐसी दुर्लभ, चमत्कारी, अद्भुत, अलौकिक, दिव्य और अमूल्य सिद्धिदात्री दीक्षाऐं सिर्फ भाग्यवान साधकों को वर्षों की घोर तथा कठिन तपस्या के पश्चात् ही प्राप्त हो सकती है। ये वही दीक्षाऐं तो होती है जो कि किसी भी साधारण मनुष्य को विशेष गुणों से युक्त **महामानव** बनने की ओर अग्रसर करके उसके जीवन में चहुँदिशी सफलता और उन्नति के द्वार खोल देती है। ये **तेजस्वी दिव्य दीक्षाऐं** प्राप्त करके मनुष्य अपने जीवन की समस्त बाधाओं का सामना करने की अद्भुत तथा **अलौकिक शक्तियाँ** प्राप्त करता है। आप भी ऐसा करके आज ही अपने सौभाग्य के द्वार घर बैठे ही खोल सकते हैं।

ये **अद्भुत चमत्कारी दीक्षाएँ** निम्नांकित हैं :-

- गुरुदीक्षा
- साधना सिद्धि दीक्षा
- महाकाल दीक्षा
- पंचांगुली दीक्षा
- महाकाल दीक्षा
- नवग्रह शांति दीक्षा
- दश महाविद्या दीक्षा
- महाशक्ति दीक्षा
- सम्मोहन दीक्षा
- कामना सिद्धि दीक्षा
- इच्छापूरक दीक्षा
- महामानव दीक्षा
- महामाई दीक्षा
- तंत्र ज्योतिष दीक्षा
- शाबर सिद्धि दीक्षा
- आत्मकल्याण दीक्षा
- नवदुर्गा दीक्षा
- अष्ट सिद्धि दीक्षा
- बन्धन मुक्ति दीक्षा
- बुद्धिवर्धक दीक्षा

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

- विद्या प्राप्ति दीक्षा
- शत्रुंजय दीक्षा
- पद्मावती दीक्षा
- महावशीकरण दीक्षा
- कायाकल्प दीक्षा
- वाक्सिद्धि दीक्षा
- सौन्दर्य दीक्षा
- कुंडलिनी दीक्षा
- कुबेर दीक्षा
- पत्नी वशीकरण दीक्षा
- कालभैरव दीक्षा
- स्वर्णाकर्षण भैरव दीक्षा
- ग्रह शांति दीक्षा
- शमशान काली दीक्षा
- मुकदमा विजय दीक्षा
- लक्ष्मी गणेश दीक्षा
- महामृत्युंजय दीक्षा
- कालसर्प शांति दीक्षा
- दरिद्रतानाशक दीक्षा
- सरस्वती दीक्षा
- बगलामुखी दीक्षा
- णमोकार दीक्षा
- महालक्ष्मी दीक्षा
- रोग निवारक दीक्षा
- कामदेव दीक्षा
- अप्सरा दीक्षा
- त्रिकाल सिद्धि दीक्षा
- महायक्षिणी दीक्षा
- सर्वमोहिनी दीक्षा
- बटुक भैरव दीक्षा
- नवग्रह सिद्धि दीक्षा
- शमशान भैरव दीक्षा
- संतान प्राप्ति दीक्षा
- भाग्योदय दीक्षा
- सिद्धि विनायक दीक्षा
- शनि शांति दीक्षा
- शीघ्र विवाह दीक्षा
- व्यापार वृद्धि दीक्षा

उपरोक्त में से आप आवश्यकतानुसार एक अथवा **एक से अधिक दीक्षाएँ एक साथ ही सिर्फ फोटो द्वारा ही घर बैठे प्राप्त कर सकते है।** इसके लिए आपको अपना रंगीन फोटो + अपना नाम + पिता का नाम (महिलाएँ पति का नाम लिखें) + जाति + गौत्र + जन्म स्थान और **गुरु दक्षिणा** हमारे केंद्र तुरन्त को भेजनी होगी। आपकी सामग्री मिलते ही शुभ अमृत काल में आपको फोटो द्वारा दीक्षा प्रदान करके **गुरु प्रसादी** डाक द्वारा घर बैठे ही भेज दी जावेगी। अन्य अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए आप हमारी 24 घंटे हैल्पलाईन नंबर **09828535525** पर कभी भी सम्पर्क कर सकते हैं।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh